प्रगट कर्त्ता.

श्रावक भीमसींह माणेक
मांडवी
जैन पुस्तक वेचनार
मुंबई. ३.

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पंडित श्रीकांतिविजयजी विरचित

शील सत्त्व माहात्म्यमय

श्री महाबल मलया सुंदरीनो रास.

यथामति शुद्ध करीने

सम्यक् दृष्टि जनोने वांचवाने अर्थे

श्रावक भीमसी माणकें

श्री मोहमयी पत्तन मध्यें

शान्ति सुधाकर प्रेसमां छपावी

प्रसिद्ध कर्यो छे.

(आवृति बीजी)

संवत् १९६३ महासुद १ सने १९०७

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ॐ श्रीपरमगुरुभ्योनमः ॥

॥ अथ पंडित श्रीकांतिविजयजी कृत ॥
॥ श्री महाबल मलयसुंदरीनो रास प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री सुख संपदा, पूरण परम उदार ॥ आ दीसर आनंद निधी, प्रणमु प्रेम अपार ॥ १ ॥ फणी मणि मंडित नील तनु, करुणारस नरपूर ॥ पारस जलधर पल्लवो, बोध बीज अंकूर ॥ २ ॥ शासन ना यक साहेबो, गिरुउ गुण विलसंत ॥ हरिलंछन हियमे धरुं, महावीर नगवंत ॥ ३ ॥ गणधर मुख मंरूप व से, अविहड महिमा जेह ॥ अंतर तिमिर विनासिनी, समरुं सरसति तेह ॥ ४ ॥ चउमंगल वरत्यां हवे, प्रगट्यो वचन प्रकाश ॥ निज इछा पूर्वक पणे, नाषुं वारू नास ॥ ५ ॥ धर्म सहित कौतुक कथा, कवि ता कहेतो सार ॥ निज जीहा पावन करे, विकसे मति परिचार ॥ ६ ॥ ॐकार धुर संठ्यो, चउवेदा चोसाल ॥ तिम पुरुषारथ धुर धरयो, धर्म एक सु र साल ॥ ७ ॥ डुरगति पडता जीवने, धारणथी ते ध

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

र्म ॥ नाणादिक त्रण रत्नमय, कहीयें ताहि सुमर्म ॥
॥ ८ ॥ नाणादिक जिन उपदिस्या, निर्मलता गुण
हेतु ॥ पण विशेष नाणज कह्यो, सोधितणो संकेतु
॥ ए ॥ अकल पदारथ सोधियै, परमारथथी नाण ॥
निरुपाधिक लोचन नवुं, त्रीजुं नाण प्रमाण ॥ १० ॥
निःकारण बंधव समो, नवजल तरण उपाय ॥ ख
लता डुरगति खाडमें, आलंबन निरपाय ॥ ११ ॥
अंतर तिमिरने नेदवा, नाण दीप निरबाध ॥ नरता
दिक नृप नाणथी, नवजल तस्या अगाध ॥ १२ ॥
नाण विपदथी उद्धरे, नाण दीये सवि थोक ॥ मल
यसुंदरी जिम सुख लही, चित्त धरी एक सलोक ॥१३॥
किम आपदथी उतरी, किम पामी सुख ठाय ॥ तास
चरित्र चौपै कहुं, सुणजो सहु चित्त लाय ॥ १४ ॥
आलश निद्रा परिहरी, ठंडी विकथा मित्र ॥ सुणतां
मलयानी कथा, करजो करण पवित्र ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अजित जिणंदसुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ जंबूद्वीप सोहामणो, सोहे सोहे हो सवि
द्वीप विचाल के, लवण समुद्रें वींटीउ, लाख जोय
णहो वरतुल जिम थालके ॥ जं० ॥ १ ॥ तेमांहे क्षेत्र
नरत अछे, खटखंडे हो मंडित सुविशाल ॥ नव नव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संपद भूमिका, ते साधे हो चक्री ठेगाल ॥ जं० ॥ २ ॥ दक्षण भाग चंद्रावती, नगरी तिहां हो गाजे निकलं क ॥ अलकापुरि उपर गई, लंकावली हो सायर जस संक ॥ जं० ॥ ३ ॥ विस्तर चहुटा चिहुं दिसें, चोरासी हो चावा जिहां खास ॥ सायर तजी जल दूष णें, जाणे लखमी हो तिहां कीधो निवास ॥ जं० ॥ ॥ ४ ॥ फटिक रतनमय सौधनी, रुचि उज्जल हो पसरे अभिराम ॥ अंधारें पख पण नहीं, तिणे रहेवा हो हण तिमिरनो ठाम ॥ जं० ॥ ५ ॥ किहां कणें घर चंद्रकांतनां, पडिबिंबे हो तिहां चंद्र मरीच ॥ अस्खल जल परनालना, वरसालो हो परगट करे सीच ॥ जं० ॥ ६ ॥ गयणंगणतल पूरती, अटारी हो उंची कैलाश ॥ गोखें गोखें रहे गोरडी, जाणे अपछर हो करे रंग विलास ॥ जं० ॥ ७ ॥ मरकत विद्रुम कांचने, कै रचिया हो मंदरना जाल ॥ दिसि दिसि तेज जलामले, होये दिन दिन हो सुर धनुष अकाल ॥ ॥ जं० ॥ ८ ॥ कुंकुम मृगमद वासीया, जलपूरें हो दगगें प्रनाल ॥ भमर भमे रसीया परें, रस लंपट हो करता ढक चाल ॥ जं० ॥ ९ ॥ गढविंटी चिहु दिसि पुरी, परिपूरी हो सुखी ए सविलोग ॥ डुखिया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आलंबन लहे बहु, पामे पामे हो नव नवला जोग ॥ जं० ॥ १० ॥ कंटक कंटक तरु रह्या, दो जीहा हो विषहर कहेवाय ॥ खल दाखीजे खेतमां, रूंधीजे हो सुर मंदिर गाय ॥ जं० ॥ ११ ॥ करछेदन नृप जे ग्रहे, तिम कुसुमे हो बंधन उपचार ॥ कुटिल पणो केसें ठव्यो, नव दीसे हो कोइ लोक मजार ॥ जं० ॥ ॥ १२ ॥ निर्मल सरवर जल जरयां, के दर्प्पण हो दिसिनां मनुहार ॥ जोगी जमर जीले घणा, घण महके हो कमलोनो सार ॥ जं० ॥ १३ ॥ वनवाडी आरामनी, छबि नीली हो अरूती चिहुं उर ॥ स्वर्गपुरी जीतण ज णी, कसी जीड्यो हो बखतर हठ जोर ॥ जं० ॥ १४ ॥ अतुलबली बली नृप समो, रिपुमृगने हो त्रासन जे सींह ॥ दाता ताता साहसी, न्याये धोरी हो गुण वंत अबीह ॥ जं० ॥ १५ ॥ सबल प्रतापें तापव्या, रिपु वसीया हो सीतल गिरि कूंज ॥ वनफल जखी निजर पीयें, मुनिवृत्तें हो जीवे दुःख पूंज ॥ जं० ॥ ॥ १६ ॥ लखमी करकमलें वसी, मुख पहने हो स रसती विलसंत ॥ विण आदर रहवो किशो, जस कीरति हो गइ कोपी दिगंत ॥ जं० १७ ॥ हेलें धनुष नमाडतां, शिर नमिया हो अरिनां तत

काल ॥ वीरधवल नामे तिहां, करे राजा हो निज राज संजाल ॥ जं० ॥ १७ ॥ देशावर नृप जेटणा, बहु आवे हो हय गय रथ कोमि ॥ चतुरंगी सेनाधणी, नवि आवे हो तेहनी कोइ जोमि ॥ जं० ॥ १ए ॥ कोमल चंपक दल जिसी, घर राणी हो रतिने अनुहार ॥ चंपकमाला तेहने, शीलादिक हो गुण मणि जंमार ॥ ॥ जं० ॥ २० ॥ बीजी कनकवती अछे, सोहागिण हो नृप प्रेम निधान ॥ विलसे रंगे रायसुं, सुखलीणी हो बे चढते वान ॥ जं० ॥ २१ ॥ पुर वर्णनी परगमी, इम कांते हो कही पहेली ढाल ॥ सुणो श्रोता जीजी करी, आगल बे हो अतिवात रसाल ॥ जं० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पालें प्रजा, निज संतति परें तेह ॥ डुःख दोहग दूरें करे, दिनदिन धरतो नेह ॥ १ ॥ एक दिन चिंतातुर थइ, बेठो तेह जूपाल ॥ अतिहिं आमण दूमणो, नीची दृष्टि निहाल ॥ २ ॥ आदर नवि दे केहने, दिलगिरी दिल मांह ॥ गेमी बयलें नवनवी, रागरंगनी चाह ॥ ३ ॥ वदनकमल जांखुं थयुं, डुरबल थयुं शरीर ॥ चिंता मायणी आगलें, धीरज कुंण सहे धीर ॥ ४ ॥ चिंता मायणि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मनवसी, क्षण क्षण पंजर खाय ॥ तिलतिल करी जे संचीउं, ते तोले तोले जाय ॥ ५ ॥ संतापें ताप्यो घणुं, न सुणे केहनी वात ॥ अन्न उदक रुची परिहरि, जोगीसरज्युं ध्यात ॥ ६ ॥ चंपकमाला पेखीउं, इणे अवसर नरनाह ॥ आइ तुरत पणे तिहां, सभ्रम जर चित्तचाह ॥ ७ ॥ राय आगल उनी रही, धरती राग विशेष ॥ करजोमी बोली प्रिया, इणीपरें अवर उवेख ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ करजोमी मंत्रि कहे ॥ ए देशी ॥

॥ करजोमी राणी कहे, अरज सुणो महाराज हो प्रीतम ॥ पूछुं हुं ठंदे रह्या, कहेतां मत करो लाज हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १ ॥ बोलो नहीं मन मेलवी, खोलो नहीं सदभाव हो ॥ प्री० ॥ आवतां आव कहो नहीं, जातां कहो नहीं जाव हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ २ ॥ थइबेठा अण उलखू, न धरो कांइ सनेह हो ॥ प्री० ॥ वारी जाउं लखवार हूं, मुजरो ल्यो गुण गेह हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ३ ॥ दासी हुं पायें पमुं, थें म्हारा सिरराा मोम हो ॥ प्री० ॥ थें जीवणरी उंषधी, कुंण करे तुमची होम हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ४ ॥ किम सरसे बोल्या विना, प्रगटे ठे अ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

म ताप हो ॥ प्री० ॥ मौन लीउं केणे कारणे, चिं
तातुर थइ आप हो ॥ प्री० कर० ॥ ५ ॥ केणे तु
म कथन कीउं नहीं, कुणे डुहव्या महाराय हो ॥
प्री० ॥ के कांता कोइ दिल वसी, चिंतो तास उपा
य हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ६ ॥ के कोइ अरिअण
जागीउं, चिंता पेठी तास हो ॥ प्री० ॥ के जोगी
जंगम मल्यो, कीधा तेणे उदास हो ॥ प्री० ॥ क
र० ॥ ७ ॥ के कोइ बाधा उपनी, अंगे जीवन प्रा
ण हो ॥ प्री० ॥ के इणे वेला सांजरयो, अरिअण
वयरी पुराण हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ८ ॥ कवण अ
छे ते राजीउं, जे बांधे तुमसुं तेग हो ॥ प्री० ॥ पं
चायण गिरि गाजते, मृग नासें करे वेग हो ॥ प्री०
॥ कर० ॥ ए ॥ के केणे डुरजने जाखीउं, अणहूंतो
अम दोष हो ॥ प्री० ॥ के किणहिक अपहरि
लीउं, नवलो लखमी कोश हो ॥ प्री० ॥ कर०
॥ १० ॥ के मनमान्यो सांजरयो, परदेशी कोइ मित्त
हो ॥ प्री० ॥ सुरत समयनुं बोलकुं, के खटक्यो को
इ चित्त हो ॥ प्री ॥ कर० ॥ ११ ॥ के मारग सं
वेगनो, जेदाणुं सरवंग हो ॥ प्री० ॥ मनमेलु साचुं
कहो, आशय एह अजंग हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

१२ ॥ यद्यपि न जांजे अम थकी, चिंता मोटी कां य हो ॥ प्री० ॥ तो पण एकांगे रही, समतायें विं हचाय हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १३ ॥ एम सुण्या ध रणी धवे, हृदयें स्त्रीना बोल हो ॥ प्री० ॥ सरिसा मन जेदन जला, मधुरा अमृतनें तोल हो ॥ प्री० ॥ ॥ कर० ॥ १४ ॥ कहेसे हवे राणी प्रतें, ए थइ बी जी ढाल हो ॥ प्री० ॥ कांति कहे धन ते त्रिया, जे लहे पति चित्त चाल हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी उढेग जर, बोल्यो तव जूपाल ॥ चिं ता कारण चित्तधरी, सुण सुंदरी सुकुमाल ॥ १ ॥ जे तें पूब्या विविध परें, नहीं तेहनी मुज चिंत ॥ शुरू स्वजावे सर्वथा, तिण वातें निश्चिंत ॥ २ ॥ ए मुज चिंता उमटी, अकस्मात बलवंत ॥ मूल थकी मांफी कहूं, सुपरें सवि विरतंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ धिगधिग विषय विटंबना ॥ ए देशी ॥

॥ इण पुरमां व्यवहारिया, निवसे बे गुणवंतो रे ॥ लोजनंदी लोजाकरा, बे जाइ धनवंतो रे ॥ १ ॥ धि गधिग लोज विटंबना, लोजे लक्षण जाय रे, लोजे नर पीमा लहे, लोजे डुरगति थाय रे ॥ धि० ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बांधव नेह धरे घणुं, मांहो मांहे बेहो रे, जेद न पामे ए कदा, खीर नीर परें तेहो रे॥ धि० ॥ ३ ॥ लोजाकरने सुत थयो, नाम दीउं गुणवर्म्मा रे ॥ लोजनंदी परण्यो फरी, पण सुत नहीं पूरव कर्म्मा रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ एक दिवस बेठा मली, हाटें बेहु जेवारो रे ॥ परदेशी एक पंथीयो, आयो तेथ तिवारो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ जड प्रकृति उजो रह्यो, तेहने को न पिछाणे रे ॥ दीठो शेठें एकलो, उत्तम पुरुष प्रमाणे रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ बोलाव्यो गौरव पणे, आगत स्वागत कीधो रे ॥ आदरसुं आगल जलो, आसण बेसण दीधो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ पूछे शेठ किंहां रहो, किम आव्या इण गामे रे ॥ जात किसी छे तुमतणी, नीकलिया किणे कामे रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ कहे पंथी क्षत्रि अछुं, परदेशी असहायो रे ॥ देश देशावर देखतो, फरतो हुंतो इहां आयो रे॥ धि० ॥ ए ॥ शेठें निजघर तेडीउ, जोजन जगत जलेरी रे ॥ कीधी वली केइ दिन लगें, राख्यो जातो घेरी रे ॥ धि० ॥ १० ॥ विश्वासें हलि मलि रह्यो, अंतर कांइ न राखे रे ॥ देश विदेश तणी घणी, वात जली ज ली जाखे रे ॥ धि० ११ ॥ अन्य दिवस कहे पंथी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

यो, ए तुंबी मुज लीजे रे ॥ पाछी देजो शेठजी, जि
ण दिन फरी मागीजे रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ मुखमुद्रा
गाढी करी, शेठ तणे कर दीधी रे ॥ ऊंची बांधी तुंब
डी, हाट मांहे तेणे सीधी रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ बे नाइने
तेणे कह्यो, करजो एहनी संनाल रे ॥ ते कहे हुं जीव
न समो, एह छे तुमचो माल रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ चतुर
विदेशी चूकीउं, रोप्यो अनरथ मूल रे ॥ कांति विजय
कहे ढाल ए, त्रीजी थइ अनुकूल रे ॥ धि० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ तुंबी लागो ताप, अवर वस्तुनो आकरो ॥ वाध्यो
रसनो व्याप, जरवा लागी जटकसुं ॥ १ ॥ दोहा ॥
तुंबीमांथी रस गली, हेठ बंधायें बंद ॥ लोह कोश नीचें
पडी, सिंचाणी निरसंद ॥ २ ॥ लोह दिशा लघु बांडी
ने, हेम हूउं द्युतिमंत ॥ हाट कोण जलिमलि रह्यो,
मोड्यो तिमिर तदंत ॥ ३॥ दृष्टि पड्यो दो सेठने, सो
वन साचे रंग ॥ चमत्कार चित्त पामीउं, जाण्यो रस
नो संग ॥ ४ ॥ अतिलोनें आंधा हूआ, तुंबी ले नि
स्संक ॥ गुपत पणें मूकी गृहे, न गण्यो काल कलंक ॥
॥ ५ ॥ मायावी मन हरखीया, लोनें वाह्या छुरु ॥
कुलवट वहेती मूकीने, कीधो कारज नुंरु ॥ ६ ॥ अ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ति उछक पंथी थयो, साचो चालण संच ॥ तुंबी मा गी ते कन्हें, विनय वचन परपंच ॥ ७ ॥ मायावी मृडु वचनसुं, बोल्या बे डुरबुद्धि ॥ व्यग्रपणे तुज तुंबिनी, कीधी कांइ न सुद्धि ॥ ८ ॥ उद्भूत उंदर आफले, ग म गाम प्रचंड ॥ काढ्यो बंधण तुंबिका, पडी थइ श तखंड ॥ ए ॥ कोइक दिन तसु कटकडा, दीठा पड्या अनेक ॥ अम दिलमें अति डुःख हुउं, चिंताये व्यति रेक ॥ १० ॥ समसगरां करी साचज्युं, कृतिम करे डुःख जार ॥ अपर तुंबीना खंड ले, देखाड्या तेणी वार ॥ ॥ ११ ॥ वैदेशिक विलखो थयो, खोइ सघली आथ॥ हाहा दैव किशुं कीयो, नूमि पड्या बे हाथ ॥ १२ ॥ दृढ पणे जाएयो तेणे, ए नहीं तेहना खंड ॥ जिम तिम तुंबी उलवी, सम काढे ठे लंड ॥ १३ ॥ किहां जाउं केहने कहुं, किशो करुं हुं सूल ॥ दगो दिउ डुष्टें बुरो, लीधो तुंब अमूल ॥ १४ ॥ कहुं कदाचित राय ने, तोपण रस ले तेह ॥ चिंति चुंपे चित्तमें, इम बोले गुण गेह ॥ १५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ विंठियानी देशी ॥

॥ मोरी तुंबी दीउ शेठजी, हुंतो कहुंबुं गोद बि गय रे ॥ काम न कीजें कांइ तेहवो, जेणे मान महा

त्तम जाय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ अरे परदेशीनुं ठंलवी, एह जीवन लीधो मुज्ज रे ॥ जण वीससीआ नीसा समो, दुःख होसे सही तुज्ज रे ॥ मो० ॥ २ ॥ वली तुम सरिखा जो इम करे, जन निंदित माठां काम रे ॥ तो संतति विना जू लोकमां, सत्य रहेवानो कुंण ठाम रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ जलनिधि रहे मर्यादमां, धरणि शिर शेष वहंत रे ॥ अति सूर तपे नहीं आकरो, ते महिमा छे सत्यवंत रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ सत्यें सुर सानिध करे, होय सत्यें पुरुष प्रमाण रे ॥ जग उत्तम सत्य राखण जणी, निज प्राण करे कुरबाण रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ कांइ हांसुं न कीजें हेलथी, ए घर खोयानुं ठाम रे ॥ पछतावो होसे तुम मने, इण वातें खोसो माम रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ इम जूठा सम खातां थकां, नाठी तुमची किहां लाज रे ॥ नर उत्तम होम वहे नहीं, करतां जूंठां एहज काम रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ हवे लोज वसें लहेता नथी, एह वावो छो विष वेलि रे ॥ तुम अनरथ फल देसें घणा, हुं कहुं छुं लज्जा मेलि रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ बिहुं शेठ कहे सुण पंथिया, कांइ सुद्धि गइछे तुज्ज रे ॥ जग वाह्नि न चोरे चीजनां, दिल बूज विचारि अबूज रे ॥ मो० ॥ ए ॥ इम जूठो दोष

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चढावीने, तुं खोवे कां निज गाम रे ॥ किहां सुणिया शाह शिरोमणी, ए करतां शुंका काम रे ॥ मो० ॥ १० ॥ फिट लाजे नहीं कां बोलतो, अणहुंति एम गमार रे ॥ जो होंस होये राउल नणी, तो जइ आवीयें ए वार रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ अति काठो उत्तर इम दीउं, शेठें करी कपट जिवार रे ॥ ते पंथिक निरास पणो ग्रही, कोप्यो अति जोर तिवार रे ॥ मो० ॥ १२ ॥ कांइ साची सीखामण द्युं हवे, इम बोल्यो तेणीवार रे ॥ एक विद्या ठोकी थंजणी, ते थंन्या घरने बार रे ॥ ॥ मो० ॥ १३ ॥ तव संधे संधे बंधित थया, न खिसे त्यांथी तिल मात रे ॥ बिहुं चित्र लिखित परें थिर रह्या, मन मांहे घणुं अकुलात रे ॥ मो० ॥ १४ ॥ तेह ऊठी चल्यो परदेशियो, दुःखजाल बंधाणा बेह रे ॥ इहां चोथी ढाल सोहामणी, इम कांतिविजय कही एह रे ॥ मो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शोरठी ॥

॥ सोचें सूधा शेठ, बेहु ऊना बारणे ॥ दैवें दीधी वेठ, पेट मसली पीका करी ॥ १ ॥ आव्या लोक अनेक, थंज जिशा थिर देखीने ॥ ठेतरिया ठल ठेक, इम बोले अचरिज नरया ॥ २ ॥ सुणतां लोक सुजाण ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शेठ कहे संकट पड्या ॥ करुणा करी को जाण, अमने छोडे इहां थकी ॥ ३ ॥ अमे न जाण्यो एह, आपद पडसे आकरी ॥ दुःखज्वर दाधी देह, प्राण हुआ छे प्राहूणा ॥ ४ ॥ कीजे कवण उपाय, मरतांने मार्या दिवें ॥ जो किम छूट्यो जाय, तो काम न कीजे एहवो ॥ ५ ॥ लोक हसे लख कोडि, कै रोवे कै कूकुए ॥ देता दह दिसि दोड, कौतुक निरखे कइ जणा ॥ ॥ ६ ॥ हुउ ते हाहाकार, पुर मांहे प्रबल पणे ॥ वात तणो विस्तार, जाण्यो सघले जुगतिसुं ॥ ७ ॥ दोहा ॥ गुणवर्म्मा इणे अवसरे, ग्रामांतरथी गेह ॥ आयो वात कुटुंबथी, जाणी सघली तेह ॥ ८ ॥ पिता पिताबांधव बेहु, द्वारे थंभ्या देखि ॥ लाज्यो मनमांहे घणो, दुःख पाम्यो सविशेष ॥ ए ॥ कुमर कहे सुणो तातजी, म करो चिंता कांय ॥ विधिसुं तुम छोडण भणी, करसुं कोडी उपाय ॥ १० ॥ चींतातुर तव कुमर ते, सोधे नवनव बुद्धि ॥ कार न आवी कांइ तिणे, जोवे तांत्रिक सिद्ध ॥ ११ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ अबला किम उवेखीये रे ॥ एदेशी ॥

॥ कुमर हवे उनमत थयो रे, सोधे नवनव ठाय रे ॥ मांत्रिक तांत्रिक मेलवा रे, मांडे कोडि उपाय रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तातने ढोमवा ॥ करता ढील न कांय रे, पुरमांहे फरे ॥ जोवे जुगति बनाय रे, बंधण तोमवा ॥ पण नावे को य दाय रे, तातने ढोमवा ॥ १ ॥ गाम नगर पुर क ब्बमे रे, नमतो नासे रे आम ॥ जे अम तातने ढो मवे रे, तो मुंह माग्या द्युं दाम रे ॥ ता० ॥ २ ॥ व चन सुणी उठ्या तिसे रे, विविध वैद्यना पुत्र ॥ सिद्ध बुद्ध औषधी धरा रे, नणता निज निज सूत्र रे ॥ ता० ॥ ३ ॥ केइ जंगम केइ जोगीया रे, केइ तापस अवधूत ॥ जाप जपंता आविया रे, चाढी शीस विजूत रे ॥ ता० ॥ ४ ॥ कै कापिल कै कापमी रे, कै सन्यासी नक्त ॥ कै बांनण वली वेदीआ रे, कै ध्याता शिव शक्ति रे ॥ ता० ॥ ५ ॥ ब्रह्मचारी केता मिल्या रे, केताइक श्रीपा त ॥ केइ निरंजन पंथना रे, केइक चरक कहात रे ॥ ता० ॥ ६ ॥ केइ दिगंबर दोमीया रे, नरमाने नगवंत ॥ केइ त्रिदंमी मुंमिया रे, आगल कीध महंत रे ॥ ता० ॥ ७ ॥ राउल रंगे उमट्या रे, दोड्या केइ दरवेश ॥ जगने फंदे पामवा रे, करता नवनव वेश रे ॥ ता० ॥ ८ ॥ इष्टधरा अनिचारका रे, जतन करावे को मि ॥ आवी विध विध उपचरे रे, करता होमा होम रे ॥ ता० ॥ ए ॥ एक कहे आहुति दियो रे, बलि द्यो एक

कहंत ॥ इष्ट मनावो कोइ कहे रे, मंगल को विरचंत रे ॥ ता० ॥ १० ॥ एक कहे धूणावीयें रे, एक कहे दीजे झंप ॥ एक कहे शिर मूंकीने रे, करियें तंत्र अचंप रे ॥ ता० ॥ ११ ॥ एक कहे जल गंटीयें रे, मंत्री एहने अंग ॥ एक कहे ए यंत्रथी रे, थासे पहेला चंग रे ॥ ता० ॥ १२ ॥ एक कहे ग्रह पूजिने रे, करसुं साजा आंहिं ॥ एम अनेक शब्दे करी रे, कोलाहल हूउ त्यां हिं रे ॥ ता० ॥ १३ ॥ उद्यम सवि निःफल थयां रे, कोइ न आव्यो तंत ॥ रणनी ऊखर भूमिका रे, जिम जलधर वरसंत रे, ॥ ता० ॥ १४ ॥ जिम जिम युगति उपच रया रे, तिम तिम वाधे पीम ॥ सायर जल उंमा जि हां रे, तिहां वमवानल नीम रे ॥ ता० ॥ १५ ॥ दुर्ज न परे मंत्रादिकें रे, कीधा तेह निरास ॥ ऊठी गया निज निज थले रे, साथ मनोरथ तास रे ॥ ता० ॥ १६ ॥ कुमर इस्यो मन चिंतवे रे, उठी जेहथी आग ॥ समसे तेहथी तेहने रे, आणुं उद्यम लाग रे ॥ ता० ॥ १७ ॥ उपलक्षक साथें लीउ रे, तव नर एक सखाय ॥ चाल्यो नर सोधण भणी रे, कुमर करी चित्त ठाय रे ॥ ता० ॥ १८ ॥ शेठ रह्या बांध्या तिहां रे, करशे कुमर सहाय ॥ ढाल कही ए पांचमी रे, कांतिविजय सुख दायरे ॥ ता० ॥ १९ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ वनगिरि गुहिर पुर नगर, निसदिन तेह नमं त ॥ पग पग पूछे पंथमें, पण खबर न कोइ कहं त ॥ १ ॥ विकटपंथ असमर्थी पड्यो, मांदो तेह स हाय ॥ मूकी कोइक नगरमां, कुमर चल्यो असहा य ॥ २ ॥ पुर अटवी उल्लंघतो, पोहोतो एकण दे श ॥ निरमानुष मोटो तिहां, (मनुष्यनी वस्तिविना नो) दीठो नगर विशेष ॥ ३ ॥ उंचां मंदिर जलहले, जाणे गिरि कैलास ॥ ठाम ठाम सुंनी पडी, मणिमा णिकनी रासि ॥ ४ ॥ धानपूंज पंखी चणे, वस्त्र उ डाडे वाय ॥ श्रीफल फोडीने वांनरां, खांत करीने खाय ॥ ५ ॥ त्रूटा ध्वज धरणी पड्यां, ढोल्या मदिरा माट ॥ फूलपगर ठबे जड्यां, सुंना दीसे हाट ॥ ६ ॥ कुमर तव विस्मित पणे, कीधो नगर प्रवेश ॥ दीठो नर तिहां एक अति, सुंदर तरुणे वेश ॥ ७ ॥ बोल्यो तरुणो कुमरनें, कुण छे तुं महाजाग ॥ आव्यो कि हांथी किहां रहे, साचो कहे अम आग ॥ ८ ॥ कु मर कहे सुण मोहनां, हुं पंथी असहाय ॥ पंथकरी थाको घणुं, आव्यो छुं इणे ठाय ॥ ९ ॥ तुं कुण दीसे एकलो, बेठो छे किण काम ॥ रुद्धिजरी सुंनी

क्सिं, कुण नगरीनुं नाम ॥ १० ॥ ततक्षण नर बोल्यो इशुं, सुण बांधव गुणवंत॥ मूलथकी कहुं मांमीने, सकल परें विरतंत ॥ ११ ॥

॥ ढाल ७ठी ॥ कपूर होये अतिउजलुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुशवर्द्धन पुर ए न्नलुं रे, स्वर्ग पुरी उपमान ॥ राजासूरें शोन्नतो रे, दिन दिन चढते वान ॥ सुगुण नर सांन्नल मोरी वात ॥ १ ॥ पुत्र हुआ बे सूरनें रे, जयचंद्र ने विजयचंद्र ॥ बे बांधव वाला घणुं रे, कुवलयने जेम चंद्र ॥ सु० ॥ २ ॥ मुज बांधव जयचंद्रने रे, ताते दीधुं राज ॥ लाजे लाज्यो हुं रहुं रे, न लहुं काज अकाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्वर्गें तात सधारियो रे, मुज मन बेठी चींत ॥ सघला दिन नहिं सारिखा रे, जग सहु एम कहंत ॥ सु० ॥ ४ ॥ बांधव आणा किम वहूं रे, आणी एम अंदेश ॥ अन्निमाने हुं नीसरयो रे, जोवा देशविदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥ जोतो जोतो नवनवा रे, देश विदेश चरित्त ॥ एक दिवस चंद्रावती रे, पुरी वन मांहे पहुत्त ॥ सु० ॥ ६ ॥ सोम्य सुरूप सोहामणो रे, कोइक विद्या सिद्ध ॥ दीठो नर में ततखणें रे, प्रणपति विनयें कीध ॥ सु० ॥ ७ ॥ पीमा तनु तस आकरी रे, रोग विकट अतिसार ॥ दी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ण अंग लागे नहीं रे, उठण सक्ति लगार ॥ सु०॥ण॥ मुज मन करुणा उपनी रे, कीधा बहु उपचार ॥ थो न्मा दिन मांहे थयो रे, रोग सकल परिहार ॥ सु० ॥ ॥ ए ॥ प्रसन्न थई मुज पुढीउं रे, नामादिक सवि तेण ॥ विद्या बे दीधी नली रे, नक्ति विमोहे एण ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ थंनकरी एक वशिकरी रे, बीजी सूधी पाठ ॥ विगत बताई जूजूई रे, जोम्मी जाचा गाठ ॥ सु०॥११॥ रस तुंबी दीधी वली रे, सेवा साची जाण ॥ चतुर तु रत इम बोलीउं रे, मुज उपर हित आण ॥ सु० ॥१२॥ गाढी खप करतां लह्यो रे, अति डुर्लन रस एह ॥ लोह थकी कांचन करे रे, तिलनर फरश्यो जेह ॥ सु० ॥ १३ ॥ ते आप्यो ठे तुज्जने रे, करजे कोम्मी ज तन्न ॥ फिरि फिरि लहेतां दोहिलो रे, जेहवो दिव्य र तन्न ॥ सु० ॥१४॥ मात पिता जिम बालने रे, देई सीख सुजाण ॥ श्रीपरवत नेटण नणी रे, तेह गयो गुण खाण ॥ सु०॥ १५ ॥ तिहांथी हुं चाल्यो वली रे, जो वा देश विशेष ॥ कौतुक रंगे नवनवां रे, अचरज दीठ अलेख ॥ सु० ॥ १६ ॥ फिरि आव्यो चंद्रावती रे, केतक दिवस अटंत ॥ जोग मले नवितव्यनुं रे, विधिना जेह घटंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ पुरनां कौतुक निरखतो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, आयो मध्य बाजार ॥ लोजाकर लोजनंदीनेरे, हाट गयो सुविचार ॥ सु० ॥ १८ ॥ दद्रूपणे बेहु बांधवें रे, हरी लीधो मुज मन्न ॥ हली मली तस घर हुं रह्यो रे, विश्वासें निसदिन्न ॥ सु० ॥ १९ ॥ ते तुंबी थापण धरी रे, जाणी साचा शाह ॥ केता दिवस विलंबीयो रे, पुर पेखणरी चाह ॥ सु० ॥ २० ॥ जननी दर्शन उमह्यो रे, कीधो चालण संच ॥ पहेलो शेठे जाणीयो रे, तुंबीनो परपंच ॥ सु० ॥ २१ ॥ तुंबी मागी ततखणे रे, करता निजपुर सिद्ध ॥ लोजप्रसित बे बांधवें रे, कूडो उत्तर दीध ॥ सु० ॥ २२ ॥ कही न शकुं जोरें किस्युं रे, दीप्यो क्रोध अपार ॥ जुगतो कूडाने शीरें रे, कीधो में प्रतिकार ॥ सु० ॥ २३ ॥ आयो इण पुर वेगशुं रे, दीठो शून्य समग्र ॥ मुज मन ताप वधारणी रे, पेठी चींता उदग्र ॥ सु० ॥ २४ ॥ रति नाठी दुःख उमट्यो रे, विरुउ विरह निपट्ट ॥ ढाल बठी कांती कही रे, कुमर वचन परगट्ट ॥ सु० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणवर्मा चींते इस्युं, ए नर तेहिज होय ॥ विद्याबले जेणे कोप करि, बांध्या बांधव दोय ॥ १ ॥ समग्रपरें जाणुं नहीं, ज्यां लगे सघली वात ॥ त्यां ल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गें प्रगट करुं नहीं, आतम गत अवदात॥ २ ॥ इम निश्चयकरी चित्तसुं, पूछे वली ससनेह ॥ पछी थयो सुं साहेबा, हितकरी सर्व कहेह ॥ ३ ॥ कुमर कहे हुं दुःख जरयो, फरियो नगर अशेष ॥ विस्मय सहित कुटुंबनी, व्यापि चिंत विशेष ॥ ४ ॥ शून्यपुरी सब निरखतो, नृपकुल पोहोतो जाम ॥ राजजुवन रमणिय द्युति, उपरें चढीउं ताम ॥ ५ ॥ दीन वदन विछाय तनु, करती चिंत अपार ॥ बेठी दीठी एकली, तिहां वरु बांधव नार ॥ ६ ॥ में बोलावी हेजसुं, आवी साहमी धाय ॥ नयणे श्रावण जरी लगी, हीयमें दुःख न समाय ॥ ७ ॥ मधुर लपा मुज आगलें, मूके बेसण पीठ ॥ वात विगत पूछण जणी, हुं तस निकट बईठ ॥ ८ ॥ रीति कीसी एह नगरीनी, डुरवस्थित किम आम ॥ इंम पूछ्यो में ततखिणें, बोली वात विराम ॥ ए ॥

ढाल सातमी ॥ मोरासाहेबहोश्रीशीतलनाथके॥ एदेशी

॥ मोरा देवर हो सुण दुःखनी वात के, कहेतां हइडुं थरहरे ॥ वाल्हाने हो आगें अवदात के, कह्या विण कहो किम सरे ॥ १ ॥ एक दिवसें हो इण पुर उद्यान के, तापस कोइक आवीयो ॥ रक्तांबर हो धर

तो शिव ध्यान के, मास दिवस तप जावीयो ॥ २ ॥ तस सांजलि हो महिमा निरपाय के, लोक सकल आवी नमे ॥ केइ चरचे हो जक्तें करी पाय के, केशर चंदन कुंकुमे ॥ ३ ॥ केताएक हो सेवे तस पास के, अहर्निशि शिष्य जेम तेहनां ॥ केताएक हो स्तुति मांझी खास के, लोक ते गहेला नेहना ॥ ४ ॥ आमंत्रे हो केइ जोजन हेत के, पण नावे तेहने घरे ॥ तुज बांधव हो एकदिन सुचि चेत के, पारण काजे नुंहतरे ॥ ५ ॥ ते तापस हो मानी नृप वयण के, आव्यो पारण कारणे ॥ नृप बोले हो इम विकसित नयण के, अंब फल्यो अम बारणे ॥ ६ ॥ ते बेठो हो जिमण जेणी वार के, मुजने इम नृपें कह्यो ॥ जो नाखे हो तुं पवन प्रचार के, ए तापस पुण्ये लह्यो ॥ ७ ॥ में जुगतें हो वींज्यो ऋषी वाय के, रागें आगें बेसके ॥ जाणंती हो करुणानिधि आज के, प्रसन्न करुं दिल पेसके ॥ ८ ॥ ते पापी हो मुज रूप निहाल के, पाखंडी चित्तमां चल्यो ॥ चाहंतो हो मुज संगम व्याल के, कामाकुल मन टलवल्यो ॥ ९ ॥ निज थानक हो पोहोतो दृढ शोग के, शाल वस्यो मन आकरो ॥ संकल्पें हो मलवानो योग के, योग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सकल मूक्यो परो ॥ १० ॥ निशि आव्यो हो कीर ले
ई गोह के, नांखी मंदिर उपरें ॥ करी संचो हो चढी
ने तव जोह के, चोर परें गृह संचरे ॥ ११ ॥ मुज
पासें हो आव्यो ततकाल के, प्रारथना मांकी घणी,
॥ बीवरावे हो करतो चकचाल के, शक्ति देखाके आ
पणी ॥ १२ ॥ प्रतिबोध्यो हो में दृढता काज के, पा
प तणा फल दाखीने, ते बोले हो विरमुं नहीं आज
के, काम सिद्धा विण चाखीनें ॥ १३ ॥ इंम मसलत
हो करतां सवि तेह के, नृप सुणी आव्यो बारणे ॥ मु
नि दीठो हो उंलखीयो तेह के, घर तेड्यो जे पारणे
॥ १४ ॥ फिट पापी हो धूरत शिरदार के, काम करे
तूं एहवा ॥ तुज प्रगट्यो हो ए पाप अपार के, फल
पामीस हवे तेहवा ॥ १५ ॥ एम कहीने हो बंधाव्यो
तेम के, राजायें सेवक कने ॥ अपराधें हो गोधाने जे
म के, जीकें जूके तेहने ॥ १६ ॥ परजातें हो फेरयो
पुरमांहिं के, सेरी सेरी कूटता, खर चाढ्यो हो दुःख
पामे त्यांहिं के, चट चट आमिष चूंटता ॥ १७ ॥ निं
दितो हो राजायें जोर के, पुरजन वरग हसी जतो ॥
ताकीतो हो नमिउं चिहुं उंर के, मलमूत्रें सिंची जतो
॥ १८ ॥ आक्रोस्यो हो सविलोक विकंब के, चोर मा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रें ते मारीउ ॥ बलपुरयो हो योगिणना तुंब कें, नूपे काम इस्यो कीयो ॥ १ए ॥ ते ऊपनो हो राक्स अव सान के, निज आतम विद्या करी ॥ संनारी हो पूर व अपमान के, वैर जाग्यो मत उंसरी ॥ २० ॥ अ ति नीषण हो विरुउ विकराल के, कोपाकुल गलगा जतो ॥ वलगाड्या हो कंठे विष व्याल के, गिरिवर वन तरु नाजतो ॥ २१ ॥ मुख वमतो हो विश्वानल जाल के, पिंगल लोचन हठ नर्यो ॥ कर लीधो हो तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचरयो ॥ २२ ॥ धस मसतो हो आव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें कहे ॥ मुज मारक हो पापी नूपाल के, किम सातायें तुं रहे ॥ २३ ॥ तुज बांधव हो सरणे गयो तास के, तोपण जटकसुं मारियो, पापीयरू हो आवी एक शा सके, नृपनो वैर उतारियो ॥ २४ ॥ नय देखी हो पु रना सविलोक के, जीव लेई नासी गया ॥ केइ मा रया हो करता घणुं शोक के, पण नावी पापी दया ॥ २५ ॥ पुरुषनो हो देखी नयनूत के, नासंती मु जने महीं ॥ इम बोल्यो हो धरी राग प्रतीत के, नडे जावे किहां वही ॥ २६ ॥ मुजसाथें हो नोगव सुखनोग के, मत बीहे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरिखो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

योग के, जाग्ये लहीयें जामनी ॥ २७ ॥ एम कहि हूं हो राखी तेणे जूंग के, आप वसे सुख लंपटें, निशि आवे हो मंदिरमां रंग के, दिवसें किहां किण ते अटें ॥ २८ ॥ देवरजी हो अम एहवा हवाल के, जे जाणो ते करो हवे ॥ इम कांतें हो कही सातमी ढाल के, वात कही विजया सवे ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर निसासो नांखीने, पूछे मर्म्म विचार ॥ किम जीतीने एहने, वालुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मर्म्म कहे विजया हवे, सांजल शुजट पुरोग ॥ राज चिंत तुज शिर अछे, तिणे दाखुंबुं योग ॥ २ ॥ सूतां राहु सनां चरण, घृतशुं जो मरदाय ॥ मृतक समो अति निंद वश, तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निद्रित हुवे, स्त्री फरसे नवि थाय ॥ जो नर जेद लहे वली, नांखे शिस उजाय ॥ ४ ॥ बांधव नारी मुख थकी, सांजली सर्व सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चाल्यो हुं अजिरूप ॥ ५ ॥ तेटले मुजनें तुं मल्यो, जाग्य योग गुणवंत ॥ तें पूछी मुज वात ते, में जाखी सहु तंत ॥ ६ ॥ कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥ वली गुणवर्म्माने इसी, अरज करे तेणे गाम ॥ ७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल आठमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे करजोमीने रे, सांजल सुगुण सुजाण ॥ मनरा मान्या ॥ तुज दरिशण करतां हूउं रे, मानव जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ म० ॥ अतिमाठा हो सकल दुःख नाठा, जयत्राठा म्हारा राज अति काठा, घाठा अरियण मान ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ हियडुं हेजे गहगहे रे, उत्तम नरने संग ॥ म० ॥ अणचिंत्या साजन मले रे, ते आलसमां गंग ॥ म० ॥ २ ॥ सज्जन सहेजे परगजूरे, दुखीआ व्ये आधार ॥ म० ॥ बलिहारी व्युं लखगमें रे, घमिया जेणे किरतार ॥ म० ॥ ३ ॥ विधि सघली दूषण धरी रे, चूको सघली सृष्ट ॥ म० ॥ पण साजन घमतां करी रे, चतुराई उत्कृष्ट ॥ म० ॥ ४ ॥ स्वारथ तजी पर कारजे रे, समरथ सुगुण हुवंत ॥ म० ॥ चंद्रधवल जस शासतूं रे, दिन दिन ते प्रसवंत ॥ म० ॥ ५ ॥ परजन सुखीया देखीने रे, संत लहे संतोष ॥ म० ॥ दूहव्या जूठे माणसे रे, पण नाणे मन रोष ॥ म० ॥ ६ ॥ तरु तटनी घण धेनुका रे, संत शशी दिणकार ॥ म० ॥ मित्त कह्या विण स्वारथें रे, करता जग उपगार ॥ म० ॥ ७ ॥ कर साहज तुं माहरो रे, थासे सु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जस अनंत ॥ म० ॥ दुरवस्थित पुर देखतां रे, कि
म तुज दुःख न वहंत ॥ म० ॥ ८ ॥ शेठ कुमर चिं
त इस्यो रे, कठण करेवो काज ॥ म० ॥ पण उपकार
करया पछी रे, ए करसे प्रतिकार ॥ म० ॥ ए ॥ अंगि
करयो शिर चाढीने रे, विजय वचन निरधार ॥ म० ॥
विनय सहित हवे शेठने रे, बोल्यो विजय कुमार ॥
म० ॥ १० ॥ राक्षसना पग मरदजो रे, घृतसुं हो
साहस धार ॥ म० ॥ सहस जपन करि मंत्रनो रे,
थंजावीस तेणीवार ॥ म० ॥ ॥ ११ ॥ राक्षसने हुं व
श करी रे, करसुं चिंत्यां काम ॥ म० ॥ इम विचारी
मेलवी रे, सामग्री पर ताम ॥ म० ॥ १२ ॥ गुप्त प
णे आवी रह्या रे, मंदिरमां एकंत ॥ म० ॥ गुणव
म्मायें पहेरियो रे, विजया वेश सुतंत ॥ म० ॥ १३ ॥
रयणी पमी रवि आथम्यो रे, प्रगटयो घण अंधार ॥
म० ॥ राक्षस रमतो आवियो रे, रंगे रमे तिणिवार
॥ म० ॥ १४ ॥ रयणीचर कहे नरतणी रे, आज अ
ठे सी वास ॥ मननी मानी ॥ हणतां जे रह्यो जी
वतो रे, करशुं तास विनास ॥ मननी० ॥ १५ ॥ प्रि
या बोले हो धरचारी रे, मनुष नारी हुं खास ॥ म० ॥
महाराज ते वासें घणुं रे, अवर नही कोई पास ॥ म०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥१६॥ अवगणतो उद्भट पणे रे, सूतो सेजें तुरंग ॥ म०
॥ कुमर बहु मिस आवीने रे, मरदे पय निरजंग ॥ म०
॥ १७ ॥ विजय कुमर विधिसुं जपे रे, थंजन मंत्र वि
शेष ॥ म० ॥ ते पण नरना गंधथी रे, ऊठे करी अं
देश ॥ म० ॥ १८ ॥ जिमजिम ऊठे सेजथी रे, राक्षस
मारण हेत ॥ म० ॥ तिम तिम फरस तणे सुखें रे, लो
टि पमे गत चेत ॥ म० ॥ १९ ॥ मंत्र जाप पूरण थयो
रे, मूक्यो मरदन जाम ॥ म० ॥ कुमर बिहुने मा
रवा रे, ऊठ्यो राक्षस ताम ॥ म० ॥ २० ॥ थंज्यो
अनोपम मंत्रथी रे, सक्ति थइ विछिन्न ॥ म० ॥ दास
थयो करजोमीने रे, जाखें एम वचन्न ॥ म० ॥२१॥
रेरे साहस मंमणी रे, कुमर सुणो एक वात ॥ म० ॥
मुज महिमा मंत्रे हस्यो रे, जिम घन दक्षण वात
॥ म० ॥ २२ ॥ किंकर हुं कीधो खरो रे, मंत्र श
क्तिसुं आज ॥ म० ॥ सेवक साचो जाणीने रे, द्यो सा
हिब कोइ काज ॥ म० ॥ २३ ॥ कुमर कहे सुण तें
करी रे, मुज नगरी निरलोक ॥ म० ॥ गत मंगल वि
धवा जिसी रे, दीसे आज सशोक ॥ म० ॥ २४ ॥ म
णि माणिक कण कंचणे रे, पूरण जरी घर हाट ॥
म० ॥ रचि तोरण स्वस्तिक जलें रे, सुरजित कर स

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वि वाट ॥ म० ॥ २५ ॥ तहत्ति करी क्षणमें करी रे, नगरी नवले रूप ॥ म० ॥ लोक गया दह दिशि जिके रे, ते तेड्या सवि नूप ॥ म० ॥ २६ ॥ विजय कुमर मलि मंत्रवी रे, थाप्यो राज सनूर ॥ म० ॥ अनमी अरियण नामिया रे, वाध्यो जस महि मूर ॥ म० ॥ २७ ॥ विजय नृपति करशे हवे रे, थंज्या वणिक नो सूल ॥ म० ॥ कांतिविजय पूरी करी रे, आठमी ढाल अमूल ॥ म० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विजय कुमर पाले प्रजा, दिन दिन परम प्रमोद ॥ शेठ कुमर संगे चतुर, करतो रंग विनोद ॥ १ ॥ एक दिवस गुणवर्म्मनें, नूप कहे सदनाव ॥ राजगयुं जे में लह्युं, ते सवि तुज परनाव ॥ २ ॥ अतिदुक्कर पणो आदरी, कीधुं मोटुं काज ॥ प्रत्युपकार करण नणी, ल्ये द्युं बुं तुज राज ॥ ३ ॥ अवसर निरखी बोलीउं, शेठ कुमर एम वाच ॥ में धरा फिरते निरखीउं, तुं मणि बीजा काच ॥ ४ ॥ सुगुणा तेह सराहियें, जे जगमांहें कृतज्ञ ॥ प्रत्युपकार करे जिके, ते सघला धुरि विज्ञ ॥ ५ ॥ राज्य वधो दिन दिन घणो, हुं सेवक तुं स्वामि ॥ जो मानो मुज वीनती, तो सारो एक काम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ६ ॥ लोन्नाकर बांधव सहित, चंद्रपुरीनो शाह ॥ त्रिद्या थंज्यो तात मुज, ते ठोमो नरनाह ॥ ७ ॥ अ विनय सहियें साहेबा, करियें ए उपचार ॥ जां जी वुं तां तुम तणो, गणसुं ए उपकार ॥ ८ ॥ विगत पणे वृत्तांत सवि, न्नाखे करी मनुहार ॥ करतां नृपने वीनती, रीज्यो चित उदार ॥ ए ॥

ढाल नवमी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो॥ए देशी ॥

॥ जीहो राय अचंन्नो पामीउ, जीहो बोल्यो शीस धुंणाय ॥ जीहो विषथी अमृत ऊपनो, जीहो अकथ कथा कहेवाय ॥ १ ॥ कुमर वारी धन धन तुम अव तार ॥ जीहो आप सहित दुःख दोहिलो, जीहो की धो मुज उपकार ॥ कुमर० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो ते तेहवा तुं एहवो, जीहो उपकारक पवीत्र ॥ जीहो अ ञूत रचना दैवनी, जीहो दीठी आज विचित्र ॥ कुम० ॥ २ ॥ जीहो कारण गुण कारज श्रहे, जीहो ए हवुं शास्त्र प्रसिद्ध ॥ जीहो तात तणा दुरगुण विधि, जीहो पण तुज अंग न कीध ॥ कुम० ॥ ३ ॥ जीहो काम अठे ए केटलुं, जीहो करवो में निरधार ॥ जी हो पण कारण तुज हाथ ठे, जीहो जेहथी न लागे वा र ॥ कुम० ॥ ४ ॥ जीहो इणे पुर परिसर बाहरें, जी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हो एक सिंगगिरि नाम ॥ जीहो देवाधिष्ठित छे तिहां,
जीहो कूई एक सुठाम ॥ कुम० ॥ ५ ॥ जीहो गुप्त र
हे गिरि कूपिका, जिहो सुरसानिध दिन रयण ॥ जी
हो क्षण मले क्षण ऊघडे, जीहो तस मुख जिम नर
नयण ॥ कुम० ॥ ६ ॥ जिहो सिद्धोषध जल तेहनुं,
जिहो पूर्णहि लहेरां खाय ॥ जिहो काम पडे विद्या
निलो, जिहो कोइक लेवा जाय ॥ कुम० ॥ ७ ॥
जिहो उत्तर साधक शिर रहे, जिहो साधक पेसे
त्यांहि ॥ जिहो जल लेइने नीकले, जीहो जो न
डरें दिलमांहिं कुम० ॥ ॥ ८ ॥ जीहो ते जलनो
महिमा घणो, जीहो त्रांजे त्रीड निदान ॥ जीहो
थंज्यो नर छूटे सही, जीहो जो सुत छांटे आण
॥ कुम० ॥ ए ॥ जीहो जेहने सुत नहीं आपणो,
जीहो ते नर नवि छूटंत ॥ जीहो वार तीन छांटे
सही, जीहो बंधन चट विघटंत ॥ कुम० ॥ १० ॥
जीहो कारण ए छूटा तणो, जीहो एहनो अन्य न को
य ॥ जीहो आरति कुमरें अनुमन्यो, जीहो दुःक्कर का
रज जोय ॥ कुम० ॥ ११ ॥ जीहो सामग्री सुसहा
यसुं, जीहो कुमर गयो गिरि शृंग ॥ जीहो आप कूई
मां उत्तरे, जीहो जिम पंकज मांहे भृंग ॥ कु० ॥ १२ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीहो निर्जय जल तूंबी जरी, जीहो बेठो मांची संच॥ जीहो कूई बाहिर काढीउं, जीहो जूपें त्यांथी खंच ॥ ॥ कुम० ॥ १३ ॥ जीहो अती साहसथी रीजीउं, जी हो तव कूईनो देव ॥ जीहो प्रसन्न प्रगट आवी रह्यो, जीहो आगल करवा सेव ॥ कुम० ॥ १४ ॥ जीहो अश्वरूप कीधो सुरें, जीहो बे बेठा तस पीठ ॥ जीहो आव्या पुर चंद्रावती, जीहो थंज्या बेहु दीठ ॥ कुम० ॥१५॥ जीहो कुमरें जलसुं सिंचीउं, जीहो लोजाकरनो अंस ॥ जीहो जटक बूटी अलगो रह्यो, जीहो पास थकी जिम हंस ॥ कुम० ॥ १६ ॥ जीहो लोजनंदी बूटो नहीं, जीहो पाके मुख पोकार ॥ जीहो पुत्रविना कोण तेहने, जीहो दुःखथी ठोरूण हार ॥ कुम० ॥ १७ ॥ जीहो विजयचंद्रने वीनवी, जीहो गुणवर्म्मे ते शेठ ॥ जीहो घरमांहे पेसण दीउं, जीहो बीजा शिर रही वेठ ॥ कुम० ॥ १८ ॥ जीहो मंत्री पद मुद्रा जणी, जीहो आमंत्रे नरपाल ॥ जीहो गुणवर्म्मा नवी आदरे, जीहो जाणी पाप कराल ॥ कुम० ॥ १९ ॥ जीहो केतेक दिन पूंठें नृपें, जीहो निजपुर कीध प्रयाण ॥ जीहो विरहव्यथा हीयके वधी, जीहो कुमरसुं बांध्या प्राण ॥ कुम० ॥ २० ॥ जीहो करी सत्कार अनेक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धा, जीहो तूंबी दीधि काढि, जीहो नृपति वली पा
डी दीए, जीहो कुमर लीए शिर चाढि ॥ कुम० ॥ २१ ॥
जीहो माया घोटक ऊपरें, जीहो बेसी विजय नरिंद ॥
जीहो निजपुर पोहोतो वेगशुं, जीहो जिम विद्याधर
इंद ॥ कुम० ॥ २२ ॥ जीहो गुणवम्र्मायें आवीने, जी
हो रात्रि समय एकांत ॥ जीहो मुज आगें जेटण ध
स्यो, जीहो नाख्यो सवि वृत्तांत ॥ कुम० ॥ २३ ॥ जीहो
प्राण पियारी आगलें, जीहो राखीजें सुं गुज्ज ॥ प्रीयें
सुण चिंता कारण मुज्ज ॥ ए आंकणी ॥ जीहो काका
नो निज तातनो, जीहो आपण मोसा दोष ॥ जीहो
कुमरें खमाव्यो मुज्जने, जीहो विनय विविध परे पोष
॥ प्री० ॥ २४ ॥ जीहो राज्य गयुं वाल्युं फरी, जीहो
वाल्युं वैर दुरंत ॥ जीहो विजय कुमर निज तातने,
जीहो चाढी शोज्ञ अनंत ॥ प्री० ॥ २५ ॥ जीहो मर
ण पणु पण आगमी, जीहो शेठ सुतें निज तात ॥
जीहो आपदमांथी उद्धर्यो, जीहो जूर्ज सुतनां अवदा
त ॥ प्री० ॥ २६ ॥ जीहो पुत्र पाखें कुण कामनी,
जीहो धण कंचणनी रासि ॥ जीहो सोच दिसा पामे स
दा, जीहो पुत्र रहित आवास ॥ प्री० ॥ २७ ॥ जीहो
धन्य ते कृत पुण्य ते, जीहो जेहने नवला पुत्र ॥ जीहो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लाज वधारे वंशनी, जीहो राखे घरनां सूत्र ॥ प्री० ॥२८॥ जीहो लोचनंदी संकट सह्यो, जीहो देखी सयल कुटुंब ॥ जीहो जो सुत होवे एहने, जीहो ठो भावे अविलंब ॥ प्री० ॥२९॥ जीहो हुं जगमां निरभा गीयो, जीहो माहारे पोतें पोत ॥ जीहो पुत्र रहित सरज्यो किस्यो, जीहो वाळ्यो चिंता पोत ॥ प्री० ॥ ३० ॥ जीहो कुंण पूजे गुरु देवने, जीहो कुंण उरू रे धर्म ठाण ॥ जीहो कुंण धारे कुल आपणुं, जीहो पुत्रविना हित आण ॥ प्री० ॥ ३१ ॥ जीहो वंसल ता फरसी समो, जीहो सरज्यो कां जगदीश ॥ जीहो ए चिंता मुज स्वामिनी, जीहो बीजी राव न रीस ॥ प्री० ॥ ३२ ॥ जीहो नवमी ढाल पूरी थई, जीहो राय कही ए वात ॥ जीहो कांति कहे पुण्यें हवे, जीहो घर संतति सुख सात ॥ प्री० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंपकमाला चित्तमां, दुःखपूरी दिलगीर ॥ इम बोली प्रीतम प्रत्यें, नयण जरंती नीर ॥ १ ॥ धन्य जनम तस लहीजीयें, जेहने आगल बाल ॥ हंसे रमे रोवे लुटें, चाले चाल मराल ॥ २ ॥ घूघर पग घम कावतो, करतो विविध टकोल ॥ माय तणो ठेभो भ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ही, बोले मण मण बोल ॥ ३ ॥ शुभग शिखा शिर फरहरें, धूलें धूसर देह ॥ लघुदंता आंकें पके, हेलवी या करि वेह ॥ ४ ॥ सुतविण ऊंचां मालियां, प्रत्य क्ष खरा मसाण ॥ निजकुल कमल विकाशवा, पुत्र क ह्यो नव भाण ॥ ५ ॥ में पाम्यो नहीं एक पण, धि गधिग मुज अवतार ॥ पुत्र विहुणी दुःखणी, कां स रजी किरतार ॥ ६ ॥ पूरव पुण्य किया विना, क्यां थी संतति होय ॥ सुकृत करीजें दुःख तजी, ते जाणी आपण दोय ॥ ७ ॥ चींता दूरें छोमियो, हृदय थकी हे कंत ॥ पुत्र हेतें आराधशुं, देव कोई सतवंत ॥ ८ ॥ प्रसन्नथयो सुर पुरशे, वंछित नवलो एह ॥ सुरसेवा सा ची करी, निःफल न होवे केह ॥ ९ ॥ राय कहे सुण सुंदरी, मुजमन भावी वात ॥ शुभदिनथी आराधशुं, कोइक सुर विख्यात ॥ १० ॥

ढाल दशमी ॥ राजाने परधान रे ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे अवसर नृप नारि रे, वली बोले इश्युं, धर ते दिलमां दुःख घणुंए ॥ वदन थयुं विछाय रे, चिंता ऊमटी, दीसे अंग दयामणुंए ॥ १ ॥ थरहर थरके गात्र रे, विनय विव्हल थई, चटपट लागी आकरीए ॥ रति नाठी संताप रे, व्याप्यो पाणीउं, चतुराइ पण

उंसरीए ॥ २ ॥ फरके जमणी आंख रे, प्रीतम मा
हरी, कुंण जाणे से कारणेए ॥ नावि कोइ अनर्थ रे,
फरि फरि सूचवे, मुज मन न रहे धारणेए ॥ ३॥ था
शे कोइ उतपात रे, नूतादिक तणुं, डुःखदाई मुजने
सहीए ॥ अथवा विद्युत्पात रे, थाशे मुज शिरे, के
उलका पम्शे वहीए ॥ ४ ॥ के जासे सर्वस्व रे, जी
वन माहरो, कुशल होजो तुमने सदाए ॥ के थाशे मु
ज रोग रे, शोक अशुन्न कर, के पम्शे कांइ आपदा
ए ॥ ५ ॥ प्राण तणो संदेह रे, होशे माहरे, निश्चय
लोचन एम कहेए ॥ हुं नवि जाणुं कांइ रे, नोली
नामिनी, दैवगति ज्ञानी लहेए ॥ ६ ॥ रति नाठी मु
ज तेण रे, हरुं कम कमे, अधृति धरुंबुं काहिलीए
॥ वीरधवल नूपाल रे, वलतुं एम वदे, कां नामिनी
डुःखमां नलीए ॥ ७ ॥ चिंता म करिस लगार रे, मु
ज बेठां किसी, शंका शंकटनी कहेए ॥ रवि तपते अ
तितीव्र रे, तिमिर नरम समो, लोक मांहे केम थिति
लहेए ॥ ८ ॥ जो होसे तुज कांइ रे, बाधा अणजा
णी, विरह व्यथा डुःख कारणीए ॥ तो मुजने तुज सा
थें रे, शरण अगनी तणो, होशे सही सुण नामि
नीए ॥ ए॥ इणीपरें धरणी नाहरे, आश्वासी प्रिया,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सिंहासन जई बेसियो ए ॥ फिरिफिरि फरके नयण रे, राणीनो वली, तिमतिम थरके तस हीयोए ॥ १० ॥ मंदिरमांथी उठी रे, वनिकामां गई, अरति लहे तिण पण घरूीए ॥ वनिकामांथी तेम रे, आवी मंदिरे, त्यां थी बाहिर वन जाणीए ॥ ११ ॥ वनथी पुरमां आई रे, सहियर परवरी, देवकुलें जावे वलीए ॥ न लहे रति लवलेश रे, क्लेश सहे घणु, जिम शूके जल मा छलीए ॥ १२ ॥ इम वोल्या मध्यान्ह रे, आवी निज घरें, सूती पण मन वाउलोए ॥ अल्प अल्प तव निंद रे, आवी तिणे समे, जेह थयो ते सांजलोए ॥ १३ ॥ वेगवती नामेण रे, दासी तेतलें, हाथांसुं शिर कूटती ए ॥ आंशुधार प्रवाह रे, मारग सिंचती, केश चटा चट चूंटतीए ॥ १४ ॥ विलवंती दुःखपूर रे, आवी दोरूी ने, राय कन्हे रोती घणुए ॥ हा हा शुं थयो तुज रे, सामणि माहरी, दीधुं दैव विगोवणुए ॥ १५ ॥ फिटरे धीठा दैव रे, इम कही ढली पूरूी, निरखी चक्यो नृप चिंतवेए ॥ आपद दीसे कांय रे, राणीने पूरूी, हा हा सुं करवुं हवेए ॥ १६ ॥ उठ्यो व्याकुल राय रे, दीनवदन थई, पूछे दासीने इस्युंए ॥ ऊठ ऊठने ऊठ रे, कहेने सुं थयुं, सूल अंतेउरनुं किस्युं

ए ॥ १७ ॥ फाटे हीयडुं मुज रे, धीरज सहुं नहीं, कहेतां वार म लावीयेए ॥ वेगवती तव ऊठी रे, रडती इम कहे, हे सुं दुःख उदलावीयेंए ॥ १८ ॥ कहेवा सर खी वात रे, नहीं हो साहेबा, कहेतां न वहे जीजडी ए, वीर शिरोमणी देव रे, हृदय कठण करो, वज्र वि षम छे वातडीए ॥ १ए ॥ चंपकमाला देव रे, प्रनु हृदयें सरी, दाहिण लोयण फुरकंतेए ॥ वेला गालण काज रे, चिंतातुर नमी, बाहिर अंतर जत ततेंए ॥ ॥ २० ॥ लहति अरति अपार रे, मंदिर आवीने, सूती एकांते जईए ॥ मुजने पान निमित्त रे, मूकी हुं पण, पान लई पाछी गईए ॥ २१ ॥ बोलावी नर हे ज रे, मुख बोले नहीं, दीठी काठ परें पडीए ॥ जीव रहित निश्चेष्ट रे, जांखी देहडी, मीचाणी दोय आं खडीए ॥ २२ ॥ के सोसी कुंण प्रेत रे, के साकिण ग्रसी, के कांइ सापणी डसी गईए ॥ अथवा उत्कृष्ट रोग रे, जीव लेई गयो, के निज हत्या करी मुईए ॥ ॥ २३ ॥ निरखी माठा सूल रे, पडियो ध्रासको, पण न कलाय ए सुं थयुंए ॥ आई दोडी एथ रे, शुद्धि स वे गई, जीवडलो ऊडी गयोए ॥ २४ ॥ वयणसुणी नूपाल रे, कडुआ विष जिस्यां, मूर्छांगत धरणी ढ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ध्योए ॥ वींज्यो सीतल वाय रे, सींच्यो चंदने, कष्टें मूर्छार्थी वळ्योए ॥ २५ ॥ लागो दुख अछेह रे, नेह विवस थयो, विलपण लागो एणीपरेंए ॥ ॥ रे हत्या रा दैव रे, कहेने किहां गयो, जीवन माहारुं अप हरिए ॥ २६ ॥ जो मुज देवा दुरक रे, समरथ तुं हू ॐ, मुने कां प्रथम न मारियोए ॥ करुणा हीणा दुष्ट रे, देईने दगो, विण हथियारे विदारियोए ॥ २७ ॥ जाहि जाहि जाहि रे, मत रहे जीजमा, मन मेलूं सीधारतांए ॥ हा हा हूॐ संताप रे, विरहानल त णु, सुंदरी विण तुज धारतांए ॥ २७ ॥ रे रे कुलनी देवीरे, अवसर आजने, कांइ उवेखो परिथईए ॥ ते ऋषीनी आसीस रे, सुकृत फलें नरी, ते पण निःफल केम गईए ॥ २ए ॥ हा गोरी गुणवंत रे, किम न कही मुज्ज, मरण दिसा जाणी तरेए ॥ जो जाणत ए रीत रे, पहेली ताहरी, तो राखत हइमा उपरेंए ॥ ३० ॥ हाहा हुं अज्ञान रे, मूढ शिरोमणि, नावि आपद सांसहीए ॥ दीनवदन विछाय रे, धुरतें मुजने, हुं नारी आपद कहीए ॥ ३१ ॥ निंद्या करतो आप रे, नृपति विलपतो, परिजननें दुःखियां करेए ॥ क्षण हिंरुं गति मंद रे, क्षण धरणी ढले, क्षण आंसू नय

णें नरेए ॥ ३१ ॥ क्षण बेशे मन शून्य रे, क्षण ऊठे धसी, क्षण वली करतो विलंबनाए ॥ ठांमी नर म र्याद रे, धीरज हारियो, ऐऐ मोह विटंबनाए ॥ ३३ ॥ मलिया सचिव अनेक रे, दुःखनर नंगुरा, गदगद व चने वीनवे ए ॥ चालो हो महाराज रे, लायक सा हेबा, तुरत पणे जइयें हवेए ॥ ३४ ॥ ढील तणो न ही काम रे, देवी देखीजे, कवण दिसायें आक्रमीए ॥ जो विष व्यापि होय रे, तोपण जीवको, रहे ते ना नीमां संक्रमीए ॥ ३५ ॥ करतां कोइ उपाय रे, जो जीवे कदी, तो तुज नाग्य प्रशंसीयेंए ॥ वचन सुणी नूनाथ रे, चाले वेगशुं, वींटयो परियण दासीयेंए ॥ ॥ ३६ ॥ आव्या राणी गेह रे, दीठी काठसी, दव दाधी जिम वेलमीए ॥ शब्द रहित निश्चेष्ट रे, नील वदन ठबी, दंत नीमी सेजें पमीए ॥ ३७ ॥ मूर्छाणो क्षतिकंत रे, भ्रांत नयण थयां, नेह दावानल वली जग्योए ॥ सींच्यो सीतल नीर रे, ऊठ्यो निज प्रिया, देखी वली मूर्छा लग्योए ॥ ३० ॥ फरी ऊठे फरी तेम रे, मूर्छे नरपति, फरी ऊठे एम दुःख लहेए ॥ मंत्री मलीने अंग रे, देखी राणीनुं, मांहो मांहे इम कहेए ॥ ३ए ॥ अंग नहीं डे कोई रे, व्रण घातादिक,

अकृत दीसे सर्वथाए ॥ के सुर मारी केण रे, के म न पीमायें, साजी तनु केम अन्यथाए ॥ ४० ॥ मरशे निश्चें राय रे, देवी मोहियो, राज्य नंग थाशे सहीए ॥ करवो कोण प्रकार रे, इम मंत्री सहू, अणबोल्या रह्या कहीए ॥ ४ १ ॥ मंत्री नाम सुबुद्धि रे, बोल्यो तत्क्षणे, काल विलंब न कीजीयेंए ॥ तो होये कोइ उपाय रे, जेहथी नृपने, मरण थकी राखीजीयेंए ॥ ४ २ ॥ मंत्री बोल्यो एक रे, वली एम चित्तधरी, कालक्षेप केणी प रें हूवेए ॥ राजा देवी मोहें रे, घाल्यो परवशें, काज अ काज नवी जूवे ए ॥ ४ ३ ॥ वली कहे मंत्री सुबुद्धि रे, विषनी विक्रिया, बे देवी ए जीवसेए ॥ मणिमंत्रोषध योग रे, विष टलशे परहो, राणी अति सुख पामसे ए ॥ ४ ४ ॥ जूठो कहीने एम रे, नृपने आश्वासी, क रत अकाज निवारीयेंए ॥ गुप्तमंत्री करे सर्व रे, मंत्री सर बोल्या, राजन विष उपचारियेंए ॥ ४ ५ ॥ कांइ क रो महाराज रे, निपट अधिरता, नवलां मंगल वर तशेए ॥ सांजली एम नरेश रे, विकश्वर लोयने, हर्ष सुधा नाह्यो तिसेंए ॥ ४६ ॥ करशे कोकी उपाय रे, नृपने जोलवी, मंत्रीसर मति आगला ए ॥ वृक्षमी

ढाल रसाल रे, कांतिविजय कहे, मोहें नकिया नल नलाए ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे रे ल्यावो धाइने, विषधर ओौषध यंत्र ॥ आमं त्रो मंत्रिक प्रतें, धारे विष मणिमंत्र ॥ १ ॥ नृप आ देशे मेलवी, सामग्री ततकाल ॥ आरंने मांत्रिक क्रि या, उचित कह्या सवि चाल ॥ २ ॥ एकांते देवी ठवी, करे चिकित्सा तेम ॥ मांत्रिक मंत्रीसर सहित, जाणे नृप जेम एम ॥ ३ ॥ हमणां देवी ऊठसे, करशे ने त्र विकाश ॥ हवणां कांइक बोलशे, वलशे वली उ सास ॥ ४ ॥ वोली एम नृप चिंतता, अर्द्धदिवसने रात्र ॥ सचिवादि निरुपाय सवी, करे विचार प्रनात ॥ ५ ॥ नृपने केम उगारसुं, मरण दिशाथी आज, नेह ग्रस्यो जाणे नहीं, करतो चतुर अकाज ॥ ६ ॥ राज्य देश गढ सुंदरी, सेना लोक हिरण्य ॥ सचिव प्रमुख दिन आजथी, सकल थया अशरण्य ॥ ७ ॥ इम चिंता सायर पड्या, मंत्रीसर नयवाम ॥ एक ए क साहामुं जूवे, जिम मृग चूका ठाम ॥ ८ ॥ दीठी कांता तिण समे, पूर्वपरें नृप आप ॥ आपूस्यो अति दुःखसुं, इणिविध करे विलाप ॥ ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल अगीआरमी ॥ रे रंगरत्ता करहला रे, मो
पीउ विरतो जाण ॥ हुंतो ऊपर काढीने रे,
प्राण करुं कुरबाण ॥ सुरंगा करहा रे ॥ मो
पीउ पाछो वाल, मजीठा करहा रे ॥ ए देशी ॥

॥ रे गुणवंति गोरमी रे, कांइ रही रे रीसाय ॥ वि
ण बोल्यां मुज जीवमो रे, प्राहुणमा परें जाय ॥ प्रि
यारी बोलो हो, अइ प्रीतमशुं एक वार ॥ १ ॥ ह
ठीली बोलो हो, विरत्त थइ कुण कारणे रे, एवमो
छेह दिखाय ॥ प्रि० ॥ ए आंकणी ॥ तुज न घटे गजगाम
नी रे, करवो मान अपार ॥ जीवतणी तुं औषधी रे,
तुंहिज प्राणाधार ॥ प्रि० ॥ २ ॥ जक न लहे पल जी
वमो रे, तुज विरहें प्रजलाय ॥ हासुं न कीजें तेहवुं
रे, जिणे हासें घर जाय ॥ प्रि० ॥ ३ ॥ ऊठ प्रिया
दिन बहु चढ्यो रे, लोक लगे व्यवसाय ॥ पण प्रित
मने उवेखती रे, तुं बोले नहीं कांय ॥ प्रि० ॥ ४ ॥
तुं कहेती मुजने सदा रे, रुदय वसो छो मुज्झ ॥ ते
मुज आज वीसारतां रे, वात लही में तुज्झ ॥ प्रि० ॥
॥ ५ ॥ एक घमी मुज तुजविना रे, मुजने वरस स
मान ॥ तो दिन ए केम वोलसे रे, गोरी कहे गुण खा
ण ॥ प्रि० ॥ ६ ॥ केइ विलसे केइ हसे रे, सुखीयां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुर नर नार ॥ आज अवस्था मुज नणी रे, दीधी ए किरतार ॥ प्रि० ॥ ७ ॥ मो तनु दुःख दुर्बल थइ रे, जो तुं आंख उघारु ॥ ग्रीषम पवने आकरी रे, जिम तरु नांख्या जारु ॥ प्रि० ॥ ८ ॥ तुं चतुरा चंद्रानना रे, जीव रहणनी वारु ॥ पण इण वेला पदमणी रे, हीयरुं नाख्युं जारु ॥ प्रि० ॥ ए ॥ हरिलंकी हसी बोलनें रे, निंद रयणरी छांमि ॥ कर करुणा मुज कामनी रे, मननी पूर रुहामि ॥ प्रि० ॥ १० ॥ तुज कारण कीधा घणा रे, सबल जुगति उपचार ॥ हा हा पण उठे नहीं रे, कीजें कवण प्रकार ॥ प्रि० ॥ ११ ॥ निश्चे दीसे छे हवे रे, पोहोती तुं परलोक ॥ नहिंतो मुख बोले सही रे, वालम करते शोक ॥ प्रि० ॥ १२ ॥ धिग प्रभुता धिग चातुरी रे, धिग जीवन धिग राज्य ॥ संकट मांहेथी तुजने रे, हुं राखी शक्यो नहिं आज ॥ प्रि० १३ ॥ हे मुगधे हे कोपनें रे, हे प्रमदे गई केथ ॥ तुज मुख निरखण उमह्यो रे, हुं पण आवुं तेथ ॥ प्रि० ॥ १४ ॥ हवे सूधे छेमी हवे रे, तुजने पण निरधार ॥ सांसि सकी नहिं सोकने रे, फिट फिट तुज आचार ॥ प्रि० ॥ १५ ॥ इम कहीने धरणी ढल्यो रे, मूर्छावशें नूपाल ॥ शीतल जल सिंच्यो घणु

रे, उठ्यो वली करुणाल ॥ प्रि० ॥ १६ ॥ हा हा मं त्रीसर सुणो रे, नूमि पड्या मुज हाथ ॥ परलोकें जातां प्रिया रे, जाइस हुं पण साथ ॥ १७ ॥ सलुं णा मंत्रि हो, ढील करो मत कांइ, सुरंगा मंत्रि हो ॥ ए आंकणी ॥ गालानदीने कांठडे रे, हुं प्रजलीस संघा थ ॥ सलुं० ॥ सीघ्र करावो चय तिहां रे, काठें पुरो पूर्ण ॥ अंग बालीने आपणो रे, निर्वृत्ति थाइस तूर्ण ॥ स० ॥ १८ ॥ नयणे श्रावण जडीलगी रे, बोल्या एम प्रधान ॥ हाहाहा अनरथ किस्यो रे, मांड्यो ए राजा न ॥ १ए ॥ रंगीला राजन हो ॥ समजो हीयडा मांहे, ठबीला राजन हो ॥ मत करो आतम दाह, हठीला राजनहो ॥ कहीयें गोद बिछायने रे, साहेबजी रढ मान ॥ रंगी० ॥ कमल जिस्यां रवि आथमे रे, जल सूके जिम मीन ॥ माय ताय विण बालज्युं रे, कांइ करो जगदीन ॥ रंगी० ॥ २० ॥ मत ल्यो रिपु एह रा ज्यने रे, पामो प्रजा मत पीड ॥ वसुधा मत अशरण हुउ रे, न पडो अममां नीड ॥ रंगी० ॥ २१ ॥ तुम स रिखा महाराजवी रे, धीर पणुं मत ठंड ॥ तो किहां रहेसे लोकमां रे, थानक ते देखाड ॥ रंगी० ॥ २२ ॥ मरण लही देवी प्रजो रे, ते तो कर्म निदान

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ एह अवस्था ध्रुव कही रे, सघलाने अवशान ॥ रं
गी० ॥२३ ॥ राजा खेचर केशवा रे, चक्रधरा देवेंद्र॥
कर्मथकी नवि बूटीआ रे, गणधर देव जिनेंद्र ॥ रंगी०
॥ २४ ॥ जीवित अथिर संसारमां रे, जाज अणी ज
ल बिंद ॥ संपद् चपल स्वज्ञावथी रे, जेहवी त्री स्वछं
द॥ रंगी० ॥ २५ ॥ सयण कह्यां सवि कारमां रे, जे
हवा सुपन जंजाल ॥ काया काचघटि जिसी रे, यौव
न संध्या काल ॥ रंगी० ॥ २६ ॥ जन्म जरा मरणे ज
स्यो रे, ए संसार असार ॥ इम जाणीने साहेबा रे,
मतकरो डुःख लगार॥ रंगी० ॥२७॥ संजालो निज रा
ज्यने रे, टालो मननो शोक ॥ गालो अरियण माननें
रे, पालो पीकित लोकं ॥ रंगी० ॥ २७ ॥ राय कहे मं
त्रीसरो रे, साची तुमारी वात ॥ पण देवी मोहें मढ्यो
रे, तेजणी रह्यो न जात ॥ सलुं० ॥ २ए ॥ में पूर्वें अं
गी कस्यो रे, साथें मरणनो बोल ॥ जो न करुं तो कि
म रहे रे, सत्यवादीनो तोल ॥ सलुं० ॥ ३० ॥ आजल
गें में निरवह्यो रे, सूधो सत्य वचन्न ॥ ते अंतरावे
बोकतां रे, न वहे माहरुं मन्न ॥ सलुं० ॥ ३१ ॥ निज
मुखथी जे आदरी रे, बे सम प्रतिज्ञा काय ॥ अवसर
वहेती मूकतां रे, सहसा सत्य लजाय ॥ सलुं० ॥ ३२ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जिण सत्य कारण होमीउं रे, वह्निजन पणे निजदेह ॥ मूउं पण जग जीवतो रे, शास्त्रें कह्यो नर तेह ॥ ॥ सलुं० ॥ ३३ ॥ क्षिप्र करोने सजाता रे, म्हारी देवी साथ ॥ देशुं डुःखने जलांजली रे, ए निश्चय अम आथ ॥ सलुं० ॥ ३४ ॥ इम कहेतां नृप वारिउं रे, बहु परे सर्व प्रधान ॥ पण विरमे नहीं मरणथी रे, देवी मोह निदान ॥ रंगी० ॥ ३५ ॥ अनरथ करतां नवि चले रे, कोइ मंत्रीनुं मन्न ॥ ते जाणी मौन लेई रह्या रे, रोता मंत्री रतन्न ॥ रंगी० ॥ ३६ ॥ पूरी ढाल इग्यारमी रे, कांति विजय कहे एह ॥ मोह शुभट जीते जिके रे, होय नर सुखिया तेह ॥ रं० ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें मंत्रीशने, देखी करता ढील ॥ प्रेस्या पुरुष बीजा वली, करवा साज हठील ॥ १ ॥ तुरत मंगावी पालखी, रयण जडित मनुहार ॥ नवरावे कलेवर नारिनुं, कनक कलश जलधार ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन मृगमदे, कर्पूरें करी लेप ॥ कुसुम सरसुं पूजिकें, कस्यो धूप उत्क्षेप ॥ ३ ॥ शिबिका मांहे थापिउं, राणीनो देह चाले नृप गोलो तटें, शिबिका आगें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करेह ॥ ४ ॥ पुरथी जव नृप नीकले, तव दुखिया सविलोक ॥ जूरे विलपे हूबकें, रोवे करता शोक ॥५॥

॥ ढाल बारमी ॥ उलगडी उलगडी तो कीजे मुनिसुव्रत स्वामीनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ परिजन परिजन दुःखियो सहु रोवे घणु रे, नृप विरहो न खमाय ॥ करुणें करुणें शब्दें बोले आवीने रे, वदन हूआ विछाय ॥ १ ॥ रायजिम रायजिम छोडो अमने साहेबा रे, विण शरणें गुणवंत ॥ तुममुख तुम मुख दीठे सुख पामुं सदा रे, छेह न द्यो क्षितिकंत ॥रा०॥२॥ तुमविण तुमविण अमने कहो कुंण राखशे रे, शंकटथी महाराय ॥ मनना मनना मनोरथ हवे कुंण पूरसे रे, बहुला लाड लडाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ न शक्यो न शक्यो देखी देव अटारडो रे, अमचो सुख निरधार ॥ नहींतो नहींतो समजु पण केम चूकीउ रे, मूके विण आधार ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिणदिन तिण दिन बाल तरुण घरढा मली रे, करे घणा आक्रंद ॥ अन्न न अन्न न त्नावे नाठी निंदडी रे, वाध्यो दिल दुःख दंद ॥ रा० ॥ ५ ॥ हणीया हणीया वज्रकें विष व्यापिया रे, घूमे पडिया केई ॥ हृदय हृदय सुंनाहत सर्व स्वजुं रे, गहिला केइ फिरेई ॥ रा० ॥ ६ ॥ हा वत्स

हा वत्स हा निधि हा कुल दीवमा रे, कुलमंमण कुल मो
रू ॥ हा नृप हा नृप अमने ऊंची चढावीने रे, धसका
ई विण गेरू ॥ रा० ॥ ७ ॥ कुलनी कुलनी वृद्धा इम
विलपे घणुं रे, नाठी रति दिलगीर ॥ मनमें मनमें खू
तो नेह नरिंदनो रे, जिम तीखेरो तीर ॥ रा० ॥ ७
धिगधिग धिगधिग अमची बुद्धिने रे, जे नावी कोइ
काम ॥ सहज सहज सनेहो अमने गेमीने रे, जो
जावे डे आम ॥ रा० ॥ ए ॥ मुजरो मुजरो अमचो
कुंण लेशे हवे रे, कुंण देसे सनमान ॥ आतम आ
तम निचिंतायें वाउला रे, इम निंदे परधान ॥ रा०
॥ १० ॥ हा जिणे हा जिणे रूपें काम हरावीयो रे,
वली हूउ निर्देह ॥ सुंदर हो सुंदर हो प्रज्ञु नारी कार
णे रे, किम बालीश ते देह ॥ रा० ॥ ११ ॥ कदीहो
कदीहो रूप मनोहर पेखशुं रे, परगट पूनम चंद ॥
इमकही इमकही नयणे जल ऊवे रे, पुरनारिनां वृंद ॥
रा० ॥१२॥ जनक जनक तणी परें पाल्या प्रेमथी रे, ए
सघला पुर लोक ॥ रुलसे रुलसे दैव विगोह्या बापमा
रे, जिम दिणयर विण कोक ॥ रा० ॥ १३ ॥ नगरी
नगरी दीसे आज दयामणी रे, जिम दवदाधुं वन्न ॥
इमकेइ इमकेइ संचरता नृप मारगेंरे, जाखें दीन वचन्न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ रा० ॥ १४ ॥ सींचिय सींचिय धण कंचण मणि माणि कें रे, मोह्होटा कीधा आप ॥ तुमविण तुमविण तरु सम अमचो टालशे रे, कुण डुःख दव संताप ॥ रा० ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक जणे नृप आगलें रे, आपणो डुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां केह्नो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा करुणा दाक्षिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥ कविता कविता सत्य सुजग गंजीरता रे, निरुपम ज्ञा न विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्र चंम उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ ए सवि ए स वि गुण निरधारी आजथी रे, कीधा ते विण मर्म्म ॥ रा० ॥ १८ ॥ रंमित रंमित पंमित कीधा विण गुने रे, खंमित दैवे एण ॥ मंमित मंमित विद्यायें तुम सा रिखा रे, पमिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे, ढोरे पंखी चूण ॥ तो नर तो नर देखी जातो राजवी रे, डुःख पामे नहीं कूंण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर अणघटतुं इंम राजीया रे, हाहा धींगम धीर ॥ इंमपुर इंमपुर वासी वचन उवेखतो रे, पोहोतो गोला तीर ॥ रा० ॥ २१ ॥ ते शब ते शब तीरें तव उतरावीने रे, मंमावे चय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्यांहिं ॥ देतो देतो दान याचकने ऊतरे रे, न्हावा लागो मांहिं ॥ रा० ॥ २२ ॥ जूधव जूधव नाहें त्यां जल जेतले रे, रमते लोक समग्र ॥ जलने जलने पूरें तव एक तांणियो रे, आव्यो काठ उदग्र ॥ रा० ॥ २३ ॥ निरखी निरखी मंत्रीसर तव बोलीया रे, रे रें तारक जाहु ॥ लाकरू लाकरू जलमां सनमुख आव तुं रे, वेगें काढी ल्याहु ॥ रा० ॥ २४ ॥ एह ठे एह ठे योग्य चिताने इंम सुणी रे, धीवर पेसी त्यांहिं ॥ बाहिर बाहिर काढ्यो ताणी तत्क्षणे रे, जलऊंडुं अवगाहिं ॥ रा० ॥ २५ ॥ बंधन बंधन बहुले बांध्यो चिहुं पखें रे, त्रापा परें ते थंत्र ॥ दीसे दीसे स्थूल कठिन आगें पड्यो रे, जाणे वाहण थंत्र ॥ रा० ॥ २६ ॥ आदेशें आदेशें नृपने सेवकें रे, काप्यो छुरियें बंध ॥ जटक जटकसु अर्द्ध जुदो उघमी पड्यो रे, त्रूटीगया सविसंध ॥ रा० ॥ २७ ॥ तेहमां तेहमां मृगमदें केशर चंदने रे, अरची सुंदर अंग ॥ चरची चरची घनसारादिक गंधशुं रे, माल ठवि बहुरंग ॥ रा० ॥ २८ ॥ कंठे कंठे लहके हार मनोहरू रे, निद्रित लोचन चंग ॥ जलमां जलमां ठांनि रति आवी रही रे, ठेतरी आंणी अनंग ॥ रा० ॥ २९ ॥ चंपक चंपक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

माला नृप मनमोहनी रे, दीठी दैव संयोग ॥ पेखवी पेखवी नृपतिनो दिल जागीउं रे, जागो विरह वियो ग ॥ रा० ॥ ३० ॥ अचरिज अचरिज पाम्या पुरजन सवे तिहां रे, दूरगया जंजाल ॥ इणी परें इणीपरें कांति विजयें कही बारमी रे, सुंदर ढाल रसाल ॥रा० ॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक सकलवस्थित पणे, नृपने बोले आम ॥ चंपकमाला जीवती, लही सुकृतथी स्वाम ॥ १ ॥ पालखीयें पोढामीने, राणी आणी गेह ॥ खरी एह के तेह ठे, के कोइ छल ठे एह ॥ २ ॥ नृपति कहे सेवक प्रतें, निरखो शिबिका मांहिं ॥ तेह देह तिमाहिंज अठे, के विध धरिउं आंहिं ॥ ३ ॥ जब सेवक जइ निरखीउं, आवी शिबिका पास ॥ तब ते शब हरु हरु हसत, उमी गयो आकाश ॥ ४ ॥ हैहै हुं वंच्यो खरो, ठेतरतां नृप ठेल ॥ नारि कारण जे नर मरे, ते जग साचा बेल ॥ ५ ॥ इम कहेतो चलतो नर्ने, जलकार मय देह ॥ दंत मसत करतल घसत, थयो उलका सम तेह ॥ ६ ॥ थरहरता सेवक सवे, आव्या नृपने पास ॥ वीतक व्यतिकर नृपनें, दाख्यो सकल प्रकाश ॥ ७ ॥ राय कहे ए वातनो, कोइ न लहे वि

रयाम ॥ ते माटे पूछे हवे, राणीने इण ठाम ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ सोनानी आंगीहे, सुंदर मारा साहेबाने अंग, विच विच रतन जमाव, कोमी सूरज करुं वारणेजी ॥ ए देशी ॥

मृगा नयणी राणी हे, सुंदर हवे नयण उघारु ॥ ऊठो राणी आलश ठोमी, कपको प्रीतम अलजो करे जी ॥ १ ॥ प्रिया मोरी बोलो हे, हसित मुखें मीठमा बोल ॥ कहो राणी वीतक वात, धुरथी जाणीजे जिण परेंजी ॥ २ ॥ वयणा ते सुणी हे, राणी कहे निद्रा ठांम ॥ कहो पीउ जगाडो केम, जीना वशन ए पहेरीनेंजी ॥ ३ ॥ लखगमे जगा हे, निकट चय पाखलें लोक ॥ कहो पीउ शिबिका मांहें, ठवीय ला व्या ठो केहनेजी ॥ ४ ॥ नृपति कहे माहरी हे, सुंदर पछे कहेसुं वात, कहो तुमचो विरतंत, जिम अम मन सांसो टलेजी ॥ ५ ॥ क्यां गइ क्यां रही हे, नव ल किहां पाम्यो हार ॥ कहो किम पेठी काठ, किणे वा ही गोला जलेंजी ॥ ६ ॥ पदमणी प्रेमे हे, कहे एणे वमनी ठांहिं ॥ चालो पीउ थाउं सुछ, संजलावुं अ म वातमीजी ॥ ७ ॥ नृपति तव आव्यो हे, सकल ज न विंट्यो तेय ॥ अमें जरी कोमल काय, तमकें तपी

थइ रातडीजी ॥ ८ ॥ राणी कहे वाणी हे, प्रीतम प
ण जाणो ठो तेह ॥ दाहिण मुज फुरक्यो जे नयण,
सूचक अशुभ निमित्तनोजी ॥ ए ॥ भमी वन वाडी
हे, आवी फरी मंदिर मांहे ॥ दासी गइ लेवा पान,
वेगवती चंचल तनुजी ॥ १० ॥ निद्राभर तेणे हे,
सूती जव सेज हुं आय ॥ दुष्ट कोइ आयो पास, तुरत
उपाडी लेई गयोजी ॥ ११ ॥ सूंने गिरि टूंके हे, मूकी
मुज नाठो धीठ ॥ भयें घण थरकित गात, सकल दि
श जोउं सुं थयोजी ॥ १२ ॥ दीसे नही कोइ हे, पा
ठल मुख आगल पास ॥ सुएयुं कोइ विषम आक्रं
द, विरुआ वनचरना घणाजी ॥ १३ ॥ वाघ सिंह
धडूके हे, सबल दीये चित्ता फाल ॥ रमे रींठ देतां दो
ट, किहां कणे मृग करे खेलणाजी ॥ १४ ॥ जाउं कि
ण आगें हे, सुणे कोण दुःखनी वात ॥ चिंता चयसुं
लगी चित्त, क्षणएक दुःख पूरें भरीजी ॥ १५ ॥ सा
हस धरी साचो हे, चाली दिशि एक निहाल ॥ किहां
पिउ किहां वन केणि, वैरी अकारण अपहरिजी ॥ १६ ॥
चढी गिरि टुंके हे, करुं निज आतम घात ॥ चित चिं
ती एहवुं त्यांहिं, चाली लक थकते पगेंजी ॥ १७ ॥
दीठो तस सिंगे हे, वारू एक नवल प्रासाद ॥ उंचो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अति जलहल ज्योति, जलके अंबर तल लगेंजी ॥ १८ ॥ ऋषभ प्रभु राजे हे, मोहन जिहां जगनो नाथ ॥ देखी मणि मूरत खास, अंतर आतम उल्लस्योजी ॥ १९ ॥ कीधी स्तुति मोटी हे, ललित पद अर्थ गंभीर ॥ लागो जिनसुं एकतान, दुःख सयल मनथी खिस्योजी ॥ २० ॥ कांतें कही रुमी हे, सरस ए तेरमी ढाल ॥ मीठी जिम साकर डाख, सुणतां काने अमृत वस्योजी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विधिविवेक पूर्वक पणें, कीधी में जिन सेव ॥ भगति निरखी हरखित थई, बोली शासन देव ॥ १ ॥ हुं शासन रखवालिका, चक्केसरी मुज नाम ॥ आदि भुवन रक्षा करुं, मलयाचल शुभ ठाम ॥ २ ॥ मलय देवी मुज नाम छे, बीजुं ठाण गुणेण ॥ साहमी धर्म भणी चरण, प्रणमुं छुं तिणे एण ॥ ३ ॥ कठिण हीयुं करी कामनी, मनमां कांइ म बीह ॥ पक्के अवस्था माणसा, न टले सुख दुःख लीह ॥ ४ ॥ पूछ्युं में कहे मावडी, किणे आणी मुज आंहिं ॥ कहियें सवि निरत्तसुं, तव सा बोली त्यांहिं ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल चौदमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥
॥ वीरधवल तुज नाहने रे, वीरपाल हुउं बंधु ॥ वच्चे सांजलो ॥ निर्गुण लोजी राज्यनो रे, कूरू कपटनो सिंधु ॥ व० १ ॥ वरू बांधव हणवा जणी रे, चिंते विविध उपाय ॥ व० ॥ अन्य दिवस वध कारणें रे, पेठो मंदिर आय ॥ व० ॥ २ ॥ खड्ग घाय मूके खरो रे, नृप साहामो अति धीठ ॥ व० ॥ एक घायें वरू बांधवें रे, पाड्यो धरणी पीठ ॥ व० ॥ ३ ॥ शुजजावें अंते मरी रे, एणे गिरि ए थयो जूत ॥ व० ॥ अतुल बली परिवारमें रे, दीठी माहरे दूत ॥ व० ॥ ४ ॥ गत जवें ते पापीउं रे, संजारे निज वयर ॥ व०॥ ठल जोतो नरनाहनां रे, विचरे वनगिरि नयर ॥ व० ॥ ५ ॥ पुण्यबलें न सके करी रे, नृपने कांइ विरूप ॥ व० ॥ चिंते नृपने नारिशुं रे, प्रेम निवरू ठे अनूप ॥ व० ॥ ६ ॥ जो मारुं नृप नारिने रे, तो मरसे नृप आप ॥ व० ॥ खस जासे सीतल जलें रे, टलसे सर्व संताप ॥ व० ॥ ७ ॥ ठानो ठल ताके रसी रे, लागो रहे नित पूठ ॥ व० ॥ सूती सेजें तूं एकली रे, ऊपाडी तेणे डुठ ॥ व० ॥ ८ ॥ इणगिरि टूंकें मूकीने रे, आप थयो विसराल ॥ व० ॥ पूरव पुण्यें जेटीया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, तें श्रीकृषत्न कृपाल ॥ व० ॥ ए ॥ तूठी हुं जिन त्न
क्तिथी रे, आपुं तुं वर माग ॥ व० ॥ डुलहो दर्शन दे
वनो रे, दीठो द्ये सोत्नाग ॥ व० ॥ १० ॥ देवीने में
वीनव्युं रे, जो तूठी मुज माय ॥ व० ॥ संतति नहीं
महारे किस्यो रे, कीजें तास उपाय ॥ व० ॥ ११ ॥
चंपकमालाने कहे रे, निसुणी वाणी एम ॥ व० ॥
चक्केसरी देवी वली रे, बोली धरी अती प्रेम ॥ व०
॥ १२ ॥ पुत्र पुत्रीने जोमले रे, थाशे तुज संतान
॥ व० ॥ गत्न रोध तहारे थयो रे, तेतो त्नूत निदान
॥ व० ॥ १३ ॥ हवे डुःख देतां वारशुं रे, निज सेव
कने त्नूत ॥ व० ॥ शिक्षा देसुं आकरी रे, खल न करे
करतूत ॥ व० ॥ १४ ॥ नृप कहे मति तुज रूअमी रे,
माग्यो वारू एह ॥ व० ॥ चिंता माहारी उऊरे रे,
तुज विण कुण गुण गेह ॥ व० ॥ १५ ॥ प्रिया कहे खिति
कंतनें रे, परम कृपा परजूंज ॥ प्रीतम सांत्नलो ॥ हार
दीधो ए देवीयें रे, नामें लक्ष्मी पूंज ॥ प्री० ॥ १६ ॥
सप्रत्नाव सुर संक्रम्यो रे, हार रयण बहु मूल ॥ प्री० ॥
सयल मनोरथ पूरसे रे, करशे जग अनुकूल ॥ प्री० ॥
॥ १७ ॥ एहथकी सपराक्रमी रे, होशे तुज संतान
॥ प्री० ॥ अतुल विघन जाशे परां रे, वधशे जगमां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मान ॥ प्री० १८ ॥ पूछ्यो वली देवी कहे रे, भूत त
णो संबंध ॥ प्री० ॥ चंड्रावतीयें ते गयोरे, तुज छवि
गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १९ ॥ तुज ठामें तुज सारिखो
रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही द
यिता गणी रे, घणुं दुःख पाम्यो भूप ॥ प्री० ॥ २० ॥
सात पोहोरने अंतरें रे, मलशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
तिण वेला एक खेचरी रे, नज्जपंथथी आवंत ॥ प्री०
॥ २१ ॥ अदृश्य जाव देवीलहे रे, खगनारी हुई संग
॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखीनें रे, पूछ्युं वचन विज्जं
ग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, जाख्यो
सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मित बोली तिका रे,
मुज दुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर
जामिनी रे, करशुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंड्रावतीयें
मूकशुं रे, जिहां तुज प्राणाधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इम
आसासें खेचरी रे, वचन अमृत सुरसाल॥ प्री० ॥ कांति
विजय इम चौदमी रे, जाखी निरूपम ढाल॥ प्री० २५॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांजल गुण
खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इणे ठाण ॥१॥
स्त्री लंपट मुज पति इहां, आवे बे मुज पूठ ॥ जो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुज रूप निहालशे, शील खंमशे ऊठ ॥ २ ॥ सोक धरम माहरे हसे, जनमां वधे छुःखदाय ॥ खोइश तुं कुल वट्टमी, परवश वास वसाय ॥ ३ ॥ नवरस लोत्नी नाहलो, अवगणशे कुल लाज ॥ आवी तुरत जिम ताहरो, विषम सुधारुं काज ॥ ४ ॥ एम कही करतल ग्रही, खग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल जर वहे, आवी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ घोमीतो आई थां ॥
रा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

गुहीर नदी जल उबले ॥ वारुजी ॥ ठटके पवन नी गंट हो, मृगा नयणीरा जमर सुणो वातमी, मारुजी ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥ वा० ॥ हीयमुं नाखे काट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेचरी ॥ वा० ॥ हणसे सही इंणि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु माखें बांधशे ॥ वा० ॥ के जाशे खिति दाट हो ॥ मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहशे ॥ वा० ॥ इम मन मुज छुःख घाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेचरी ॥ वा० ॥ सुक कठिन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ विद्या बलें ते खेचरी ॥ वा० ॥ कीधो फामी छुत्नाग हो ॥ मृ० ॥ ठिद्र कस्यो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष प्रमा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णे माग हो ॥ मृ० ॥ ४ ॥ मुज तनु चरच्यो चंदने ॥ वा० ॥ करी मृगमद छिरकाव हो ॥ मृ० ॥ अगर प्रमुख शुन्न वस्तुयें ॥ वा० ॥ कीधी मुने गरकाब हो ॥ मृ० ॥ ५ ॥ काठ विवरमां मुज धरी ॥ वा० ॥ ढांके ऊपर फाल हो ॥ मृ० ॥ तदनंतर न लहुं किस्युं ॥ वा० ॥ गर्न्न रही जेम बाल हो ॥ मृ० ॥ ६ ॥ नयणें दीठ हवे नाथजी ॥ वा० ॥ पूरवपुण्य संयोग हो ॥ मृ० ॥ नृप कहे तुज विरहण डुखें ॥ वा० ॥ मेलविउ ए योग हो ॥ मृ० ॥ ७ ॥ चयमांकी गोला तटें ॥ वा० ॥ वारण मिलिया लोग हो ॥ मृ० ॥ डुःख सुख लाने लोकमां ॥ वा० ॥ न टले पूरवकृत नोग हो ॥ मृ० ॥ ७ ॥ मंत्रि कहे तेणे खेचरी ॥ वा० ॥ शोक सबल डुःख नालि हो ॥ मृ० ॥ काठ डुवलविवरें धरी ॥ वा० ॥ वहेती करी जल बाल हो ॥ मृ० ॥ ए ॥ मारे ते जो खेचरी ॥ वा० ॥ तो विद्या होये आल हो ॥ मृ० ॥ पोहोर दिवस चढते मल्यां ॥ वा० ॥ सात पोहोर सवि काल हो ॥ मृ० ॥ १० ॥ नृप कहे मुज दयीता तणो ॥ वा० ॥ हरण हूउं सुख हेत हो ॥ मृ० ॥ कुलदयकारी नूतनो ॥ वा० ॥ बंध कस्यो संकेत हो ॥ मृ० ॥ ११ ॥ देवी जल मंदिर तलें ॥ वा० ॥ काठ धस्यो शुन्नठाम हो ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मृ० ॥ इणे अवसर बिरुदावली ॥ वा० ॥ बोल्यो वे तालीक ताम हो ॥ मृ ॥ १२ ॥ प्रबल प्रतापी वि श्रमां ॥ वा० ॥ कमला त्रासण जेह हो ॥ मृ० ॥ जय जय ते जग शिर ठव्यो ॥ वा० ॥ प्रजुपरें दिन कर एह हो ॥ मृ०॥ १३ ॥ मंत्री त्रणे अवशर लही ॥ वा० ॥ पत्रधारो पुर नाह हो ॥ मृ० ॥ नाहण जोय ए पाणथी ॥ वा० ॥ वीसारो डुःख दाह हो ॥ मृ० ॥ १४ ॥ तहत्ति करी नृप ऊठीयो ॥ वा० ॥ आवे नयरी वाट हो ॥ मृ० ॥ शब्द पंच नादेंकरी ॥ वा०॥ बीहिना दिसि गज थाट हो ॥ मृ०॥१५॥ मांगलिआ जय रव त्रणे ॥ वा० ॥ नाचे गणिका कोमि हो ॥मृ०॥ द्ये आसीश सोहामणी ॥ वा० ॥ गुणीजन होमा होमि हो ॥मृ० ॥ १६ ॥ लेतो सहुअ वधामणा ॥ वा० ॥ देतो दान उदार हो ॥ मृ० ॥ जोतो पुरनां व्य वहारिया ॥ वा० ॥ सणगास्या बाजार हो ॥ मृ० ॥ १७ ॥ नूपति लखनां त्रेटणां ॥ वा० ॥ ग्रहतो हय गय घाट हो ॥ मृ० ॥ सुणतां याचकनी स्तुति घणी ॥ वा० ॥ करतो अरि मुख दाट हो ॥ मृ० ॥ १८ ॥ मंदिर पोहोतो महिपति ॥ वा० ॥ त्रेटे निज परिवा र हो ॥ मृ० ॥ सचिव प्रमुख नमी नूपने ॥ वा० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पोहोता निज निज गार हो ॥ मृ० ॥ १९ ॥ नाहण करी नरपति गृहें ॥ वा० ॥ पूजे अरिहंत बिंब हो ॥ मृ०॥ नोजन विविध प्रकारनां ॥ वा० आरोगे अ विलंब हो ॥मृ० ॥ २० ॥ नुपति दयीता संगतें ॥ वा० ॥ विलसे नवनव नोग हो ॥ मृ० ॥ पुण्यथकी दिशा पाधरी ॥ वा० ॥ लहेसे सकल संयोग हो ॥ मृ० ॥ २१ ॥ गर्नधरे ते दिनथकी ॥ वा० ॥ पटराणी गजगेल हो ॥ मृ० ॥ कांति कहे ए पनरमी ॥ वा० ॥ ढाल सरस रस रेल हो ॥ मृ० ॥ २२॥

॥ दोहा ॥

॥ युगल गर्न जिम जिम वधे, तिम तिम नृप मनमोद ॥ राणी नाग्य सोनाग्य नर, धारे विविध विनोद ॥ १ ॥ तन रक्षा रूमी परें, नुप करावे तास ॥ करे कृतारथ दोहला, पूरे मननी आस ॥ २ ॥ दयिता मुख केते दिनें, केतेक दल ठवी हुंत ॥ तनु डुर्बल सणगार रस, अल्प अल्प नावंत ॥ ३ ॥ मुख परिमल रस लालचें, चिहुंदिसि नमर नमंत ॥ सहज सुरनि उसासथी, पंकज कुल लाजंत ॥ ४ ॥ पूर्ण दिवस शुन वासरें, शुन मुहूर्त्त शुन वार ॥ पुत्र पुत्रिका रुप तिणे, प्रसव्यो युग्म उदार ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल शोलमी ॥ गेंडुमानी ॥ एदेशी ॥

॥ पटराणी प्रसव्यो तिहां रे हांजी, सुत तनूजानो युगल अनूप ॥ ए रूमोरे ॥ रतिपतिनो रंग, ए रूमोरे ॥ सरसतीनो अंग, ए रूमो रे ॥ जिम नंदन खितिथी हूवेरे हांजी, कल्पवृक्ष बे अंकूर रूप ॥ ए० ॥ १ ॥ वेगवती दासी धसी रे हांजी, दीये वधामणी नृपने आय ॥ ए० ॥ शिर न्हवरावे संतोषसुं रे हांजी, दास करम तस टाले राय ॥ ए० ॥ २ ॥ वेग करावो नयरमां रे हांजी, दशदिन नृप थितिपति काज ॥ ए०॥ पुत्रागमननां हर्षथी रे हांजी, हूउं अपूरव मन सुख साज ॥ ए० ॥ ३ ॥ नगर भुवन सवि चीतर्यां रे हांजी, बारण ठविया सोवन कुंभ ॥ ए० ॥ ध्वज पट लहकाविया रे हांजी, रोप्या टोर्के कदली थंभ ॥ ए० ॥ ४ ॥ रयणथंभ ऊभा कर्या रे हांजी, अति सुंदर पुर शोभा हेत ॥ ए० ॥ तोरण दल सहकारनां रे हांजी, बांध्या नव मंगल शंकेत ॥ ए० ॥ ५ ॥ पुरलोक हट सहेरमां रे हांजी, थापी सोवन दीपक उल ॥ ए० ॥ सेरी पंथी पूजावीने रे हांजी, कीधां सींचण चंदन घोल ॥ ए० ॥ ६ ॥ राज मारग त्रिक चाचरें रे हांजी, देवरावे मणि कंचन दान ॥ ए० ॥ वं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दि नवन सोधि विधि रे हांजी, मूक्यां सघला बंदी
वान ॥ ए० ॥ ७ ॥ वाज्यो पम्ह अमारनो रे हांजी,
देश मांहे नय नंजण नाग ॥ ए० ॥ कुसुम पगर नां
तें नख्या रे हांजी, धूपघटा पसरी नन्न माग ॥ ए०॥
ठ ॥ जनपद अकर कस्या हसें रे हांजी, ताड्या डुंडु
न्नि वाज्या घोर ॥ ए० ॥ नाच करी हाव नावथी रे
हांजी, वार वधू कुल चतुर चकोर ॥ ए० ॥ ए ॥
अक्षत पात्र नरी रंगथी रे हांजी, नृपने वधावे आ
वी नार ॥ ए० ॥ विकशित रंग वधामणां रे हांजी,
चतुर सचिव मलिया दरबार ॥ ए० ॥ १० ॥ नुवन
नुवन थापा दीया रे हांजी, सुरन्नी अगर कुंकुम घन
घोल ॥ए०॥ उत्सवमहोत्सव मांमिया रेहांजी, शोनावी
नगरनी पोल ॥ ए० ॥ ११ ॥ मांगलिआ मंगल नणे
रे हांजी, बंनण नणे बहुला स्तुति पाठ ॥ ए० ॥
मल्ल रमें बल माल्हता रे हांजी, नटुआ उंके उंचा
काठ ॥ ए० ॥ १२ ॥ जिन नुवन पूजा रचे रे हां
जी, सामी नक्ति करंत अनेक ॥ ए० ॥ अवसर क
र खेंचे नही रे हांजी, कहियें साचो तास विवेक
ए० ॥ १३ ॥ अशुचिकर्म वित्या पढी रे हांजी, सं
तोषे सुपरें कुटुंब ॥ ए० ॥ कर पंकज जोमी कहे रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हांजी, ते आगल नृपति अविलंब ॥ ए० ॥ १४ ॥ मया करी मलया सुरी रे हांजी, आप्यां मुजने बे संतान ॥ ए० ॥ तस नामे होजो बिन्हे रे हांजी, मलय सुंदरी अभिधान ॥ ए० ॥ १५ ॥ पंचधाइ पालीजता रे हांजी, कुमर कुमरी वधे ससनूर ॥ ए० ॥ दिनदिन नवल कला ग्रहे रे हांजी, बीज तणो जिम चंद्र अंकूर ॥ ए० ॥ १६ ॥ हसण लुठण चलणादिकें रे हांजी, जिम जिम साधे शैशव योग ॥ ए० ॥ तिम तिम नृप राणी लहे रे हांजी, हर्ष मनोहर फल संयोग ॥ ए० ॥ १७ ॥ निरुपम योवनने रसें रे हांजी, शिशुता रस मूके आस्वाद ॥ ए० ॥ कालें उचित कला ग्रहे रे हांजी, बुध संगें निज मति उनमाद ॥ ए० ॥ १८ ॥ किणदिन मदगज राजथी रे हांजी, खेल करे पण नृप सुत बांध ॥ ए० ॥ ख्यालकरे हयथी कदे रे हांजी, खड्ग रमें नाखें सरसांध ॥ ए० ॥ १९ ॥ कुमरी पण भमरी परे रे हांजी, वींटी परिकर अति अनुकूल ॥ ए० ॥ वनवाडी आराममां रे हांजी, रमण करे यौवन मद जूल ॥ ए० ॥ २० ॥ कांतिविजय बुद्ध शोलमी रे हांजी, ढाल कही उत्सवनी एह ॥ ए० ॥ पुण्यथकी जय मा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लिका रे हांजी, वाधे दिनदिन वधते नेह ॥ ए० ॥ २१ ए० ॥ र० ॥ स० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४२ ॥

॥ चोपाइ ॥ खंरुखंरु रस ठे नवनवा, सुणतां मीठा साकर लवा ॥ निर्मल मलयचरित्र जग जयो, प्रथम खंरु संपूर्ण थयो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनिमलयसुंदरिचरित्रे पंरुितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे मलयसुंदरीप्रशवनो नाम प्रथमः खंरुः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री गुरु जिन गिरा, गणधरने करजोरि ॥ बीजो खंरु कहुं हवे, आलश निद्रा ठोरि ॥ १ ॥ धुर मीठी जो होय कथा, कथक वचन निर्दोष ॥ मीठी सन्ना सुणे वली, तो होये रसनो पोष ॥ २ ॥ फोकट फोरवे चातुरी, विचमां करे बकोर ॥ रस नंजण विकथा करे, माणस नहीं ते ढोर ॥ ३ ॥ तेहनणी मन थिर करो, मूकी अलगो धंध ॥ कहेतां श्रोता सांनलो, सरस कथा संबंध ॥ ४ ॥ लही हवे कुमरी शुनग, यौवन पूर अनंग ॥ कालें काम समूद्रना, नगमें विविध तरंग ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल पहेली ॥ पनामारु यौवन आईजी पूर ॥ ए देशी ॥

॥ यौवन रस पूरें चढी रे, नवल गोरीरो गात ॥ जलकें करे छबिचंद्रिका रे, जाणु आसो पूनिमनी रात ॥ १ ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पूर, राजी रूपे लूटी लीधी रति राणी ॥ कन्यावारू यौवन आईजी पूर ॥ ए आंकणी ॥ वेणि निहाली शामली रे, नाखुं नागिण घोल ॥ वदन कमल रस लालचें रे, मानु बेठी जमरनी जेल ॥ क० ॥ २ ॥ जाल जलुं जाग्यें जस्युं रे, दीपे सबल सुघाट ॥ पुण्य रेख लिखवा जणी रे, विधि मांड्यो कनकनो पाट ॥ क० ॥ ३ ॥ वीछड्या मृगनां जिस्यां रे, लोचन तास वखाण ॥ तीखाई विधिना गऊी रे, जिम सर चाढ्या खुरसाण ॥ क० ॥ ४ ॥ सज्जन मन धारा जिसी रे, नासा सरल सुहाय ॥ चांचें लाज्या सूडला रे, ते लखि लखि वनफल खाय ॥ क० ॥ ५ ॥ अधर धरे रंग रातडो रे, नवपल्लव सुकुमाल ॥ वडवानल संगति मिसें रे, मानु पेठी विद्रुम जाल ॥ क० ॥ ६ ॥ बिहुं पख धारे अतिकला रे, तस मुख चंद्र हसाय ॥ निरखी खिंसाणो चंद्रमा रे, नित्य उदय लही खिसी जाय ॥ क० ॥ ७ ॥ सरल सुंहाली बांहडी रे, तेह छु ढावे बाल ॥ अजिनव उंपे जोडले रे, नमी आवी क

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल्पतरु माल ॥ क० ॥ ७ ॥ गोल कठिन कंचुक कश्या रे, कुच युग एम शोजाय ॥ काम नृपति जीतवा जणी रे, इहां तंबू दीधा आय ॥ क० ॥ ए ॥ उदर सकोमल पातलुं रे, जेहवुं पोयण पान ॥ जलकारें जाएयो पमे रे, आत कनक तबकने वान ॥ क०॥१०॥ गाजे सुंदर वाटलो रे, जीणो केमनो लंक ॥ देखतही वन गिरि गया रे, मृगराज थया साशंक ॥ क०॥११॥ जंघ युगल दीपे जलां रे, अचला कदली खंज ॥ मदन मालियें सिंचिया रे, जरी लावण्य अमृत कुंज ॥ ॥ क० ॥ १२ ॥ उंचा मांसल सुंदरू रे, पग काचब अनुहार ॥ तस तुलना करवा जणी रे, जाणे कमठ लीयो अवतार ॥ क० ॥ १३ ॥ कोमल कर पग आंगुली रे, ऊपर नख दीपंत ॥ माणिक मंमित लेखणी रे, रति पतिनी एहवी न हुंत ॥ क०॥ १४॥ पगें जांजर जम जम करे रे, कटि मेखल खलकार ॥ लक्ष्मी पूंज सोहामणो रे, तस कंठे गाजे हार ॥ क० ॥ १५ ॥ कर कंकण मणिमय जड्या रे, काने कुंमल जोम ॥ शोहे सवि शिणगारथी रे, गज गामणिआं शिर मोम ॥ क० ॥ १६ ॥ निपुणपणे दिन निगमी रे, वर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दायक ते बाल ॥ जाखी बीजा खंमनी रे, इम कांतें पहेली ढाल ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

हवे अठे एह जरतमां, पुरवर पुहवी ठाण ॥ सूरपाल नामे तिहां, राज्य करे खिति जाण ॥ १ ॥ पटराणी पद्मावती, रूप शील गुण वास ॥ सुत सुंदर तेहने हूउं, नाम महाबल तास ॥ २ ॥ विद्या साधक कोइक नर, सेव्यो कुमरे एण ॥ रूप पलट्टण कारणी, विद्या दीधी तेण ॥ ३ ॥ नाग दमण व्यामोहनी, जूत दमणि वशितंत ॥ मंत्र यंत्र कार्मण प्रमुख, शीख्यो कुमर अनंत ॥ ४ ॥ सूरपाल नृप कारजें, खासा आप खवास ॥ मिलणु आपी मोकले, वीर धवल नृप पास ॥ ५ ॥ कुमरें पण नृप वीनवी, कीधुं साथ प्रयाण ॥ केतेक दिन चंद्रावती, पोहोता सुगुण सुजाण ॥ ६ ॥ मूकी मुहगो जेटणो, उचित करी व्यवहार ॥ नृप आगल बेठा सहु, जाखे कुशल प्रकार ॥ ॥ ७ ॥ निरखी जूप कहे इस्यो, ए कुण तरुणो जेह ॥ एक सचिव माह्यो कहे, मुज लघु बांधव एह ॥ ८ ॥ कही काम निज स्वामीनां, ऊव्यो तेह प्रधान ॥ जूप दत्त मंदिर जई, उतास्था शुज थान ॥ ए ॥ राज कुम

र मन कौतुकी, निरखत पुर आवास ॥ जमतो जम
तो आवीउ, मलया मंदिर पास ॥ १० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ थाहारा मोहला ऊपर मेह जबूके
वीजली होलाल, जबूके वीजली ॥ ए देशी ॥
॥ कुमरी कुमरनुं रूप, निहाली तव तिहां होला
ल निहाली० ॥ मांझे मींट अनूप कुमर ऊजो जिहां
हो० ॥ कु० ॥ जक न पझे तिल मात्र, के विरहथी
परजली हो० ॥ के ॥ कामातुर अकुलात, के हुइ
मन आकली हो० ॥ के० ॥ १ ॥ निरखी सुंदर अंग
वखाणे तेहनां हो० ॥ व० ॥ फूल्या जासू रंग चरण
तल एहनां हो० ॥ च० ॥ तेज तणो अंबार रह्यो सु
रपात जिस्यो हो० ॥ र० ॥ मयगल सुंझाकार सुजंघा
युग तिस्यो हो० ॥ सु० ॥ २ ॥ सुंदर कटीनो लंक वि
राजे लंकथी हो० ॥ वि० ॥ मावे करतल माग जलो
मध्य अंकथी हो० ॥ ज० ॥ हृदय महा सुविशाल जु
जा जोगल जिसी हो० ॥ जु० ॥ रेखा त्रण गलनाल
कहुं उपमा किसी हो० ॥ क० ॥ ३ ॥ सूझा चंचु स
मान सुहावे नाशिका हो० ॥ सु० ॥ मणिदर्प्पण उप
मान कपोलें जासिका हो० ॥ क० ॥ कामणगारी का
नें अझी बिहुं आंखझी हो० ॥ अ० ॥ श्याम जमर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुमान शिखा रतिपति ऊमी हो० ॥ शि० ॥ ४ ॥ ब
लिहारी लउं तास घड्यो जेणे एहवो हो० ॥ घ० ॥
निरख्यो रूप निवास जनम सफलो हवो हो० ॥ ज०॥
नृप बाला नरी नयण पीये रस रूपनो हो० ॥ पी० ॥
लागो जइनें गयण उमाहो चूपनो हो० ॥ उ० ॥ ५ ॥
नृपसुत पण ते देखी थयो मदनाकुलो हो० ॥ थ० ॥
वाध्यो विरह विशेष अलेख उपांपलो हो० अ० ॥
अहो अहो रूप निहाली चतुर गुण धारिका हो० ॥
च० ॥ परणी अछे एह बाल के हजीअ कुंआरिका
हो० ॥ के० ॥ ६ ॥ इम चिंतवतां लेख लखीने बा
लिका हो० ॥ ल० ॥ नाखे नीचुं देखत लागी जा
लिका हो० ॥ त ला० ॥ कुमरें सकल उदंत चतुर प
णें वांचिया हो० ॥ च० ॥ पदपद अंग अनंतह ह
रख रोमांचिया हो० ॥ ह० ॥ ७ ॥ कवण अछे तुज
जाति रहे तुं किहां वली हो० ॥ र० ॥ नाम कवण कु
ण जाति जायो तुं महाबली हो० ॥ जा० ॥ वीरधवल
नी जाति अ हुं बुं कुमारिका हो० ॥ अ० ॥ मोही ता
हरु गात निहाली बारिका हो० ॥ नि० ॥ ८ ॥ तुम
विरहें मुज काय रही ए जलबली हो० ॥ रही० ॥ ने
ट देइ महाराय करो हवे सीअली हो० ॥ क० ॥ वां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ची इंम विरतंत कुमर मन वेधिउं हो० ॥ ने
ह निविम्नने तंत बिहुं मन साधिउं हो० ॥ बिहुं० ॥
ए ॥ कुमर थई थिरथंत्न निहाले वली जिहां हो० ॥
नि० ॥ कोइक नर निरदंत कहे आवी तिहां हो० ॥
क० ॥ कुमर संबाहो वेग पियाणो आज छे हो० ॥
पि० ॥ ढांमो निरखण नेग उतावलो काज छे हो० उ० ॥
॥ १० ॥ वैर वसाव्यो ध्याय तिणे तिहां आविने हो०
॥ ति० ॥ हठ नाएयो अकुलाय चल्यो विरचाइने हो०
॥ च० ॥ विरहो तास कठोर हियामां आथमे हो० ॥
हि० ॥ मांमे आघा जोर चरण पाछा पमे हो० ॥ च०
॥ ११ ॥ चिंते चित्तमां आप जणाव्यो में नही हो० ॥
ज० ॥ रहेसे मुज संताप मिलणनो ए सही हो० ॥
मि० ॥ चालणरी जो वार हसे एका घमी हो० ॥ ह०
॥ रहेसे पण निशिचार आविश हुं दमवमी हो० ॥
आ० ॥ १२ ॥ धारी इंम मनमांहे गयो निज थानकें
हो० ॥ ग० ॥ अवसर देखी त्यांहिं आव्यो उचानकें
हो० ॥ आ० ॥ किरणरूप थइ फाल दिये गढ उपरें
हो० ॥ दि० ॥ आव्यो पहेले माल विद्याधरनी घरें
हो० ॥ वि० १३ ॥ कनकवती नृपनारि निहाले पेस
तो हो० ॥ नि० ॥ कवण पुरुष इंणे ठाम आव्यो कि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

म हिंसतो हो० ॥ आ० ॥ अतिहूग दरबान सूता इं
णे वेचिया हो० ॥ सू० ॥ के कोइ मंत्र निदान तिणे
जन वंचिया ॥ हो० ॥ ति० ॥ १४ ॥ इम चिं
तवी ते तेह मोही रूपें घणुं हो० ॥ मो० ॥
नाखें धरती नेह मनोरथ आपणुं हो० ॥ म० ॥ आ
वो कुमर करार करो इंणे आसणें हो० ॥ क० ॥ ला
हो ल्यो मुज सार शरीरने फरसणें हो० ॥ श० ॥ १५ ॥
कुमर सुणी ते वाणी विचारे निज हियें हो० ॥ वि० ॥
पेसी एहवे ठाण विसास न कीजीयें हो० ॥ वि० ॥
कपट करी ए नारि करुं राजी खरी हो० ॥ क० ॥ बो
ले वचन विचार सुगुण तिहां अवसरी हो० ॥ सु० ॥ १६ ॥
सुण सुंदरी गुण रेख विदेशी आवीउ हो० ॥ वि० ॥
मलयानो एक लेख विगतसुं लावीउ हो० ॥ वि० ॥
देखाडे तसठाम देई ते तेहने हो० ॥ दे० ॥ तो वली
ताहारो काम करुं हुं थिर मने हो० ॥ क० ॥ १७ ॥
तव नृप दयिता आवी देखाडे वाटडी हो० ॥ दे० ॥
उंचो चढिउ धाय नारी नीचें खडी हो० ॥ ना० ॥
दीठी बाला दीन वदन करतल धरी हो० ॥ व० ॥
बेठी करी आकीन कुमर एक उपरें हो० ॥ १८ ॥ कु० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कुमरजणे सुण बाल करो चिंता किसी हो० ॥ क० ॥
करवा तुम संजाल आव्यो हुं उल्लसी हो० ॥ आ० ॥
देखो उघामो आंख हवे कां पांतरो हो० ॥ ह० ॥
नाखो विरहो तामी करो मत आंतरो हो० ॥ क० ॥
॥ १ए ॥ उठी बाला रंग मिलि मन मोदसुं हो० ॥ मि० ॥
माथुं अतिहें उमंग धरे तस गोदमां हो० ॥ ध० ॥ बीजे
खंमे ढाल थई बीजी इहां हो० ॥ थई० ॥ कांति
कहे वर बाल बिहुं मिलिया तिहां हो० ॥ बि० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ करे विविध तिहां गोठमी, बिहुं जण प्रेम धरंत
॥ कुमर कहे सवि आपणो, ते आगल विरतंत ॥ १ ॥
पुहवी ठाण तणो धणी, सूरपाल मुज तात ॥ पट
देवी पद्मावती, तेहनो हुं तन जात ॥ २ ॥ नाम महा
बल माहरो, देश निरखणनी खंत ॥ नृप कामे परि
वारशुं, इहां आव्यो गुणवंत ॥ ३ ॥ निरखत अचरज
पुरतणां, दीठो तें उपकंठ ॥ लेख लख्यो ते वांचतां,
जाग्यो नेह उल्लंठ ॥ ४ ॥ मलीउं हसि हवे शीख ले,
चालण मुख सहु साथ ॥ वचनसुणी बाला विलपि,
इम कहे जोमी हाथ ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल त्रीजी ॥ उत्ती जावलदे राणी अरज
करेछे, अबको वरसालो घर कीजें हो॥
गढबुंदी वाला ॥ ए देशी ॥

॥ मलया कहे विरहानल तापी, अवसर एह र
ह्यानो हो ॥ प्रनु धणारा हो लोजी, वाला चलण न देस्यां ॥ चलण तुमारो मोहन मरण हमारो, रहो र हो कह्युं मानो हो ॥ प्र० ॥ १ ॥ करुणा करीने मुज उपर विभुजी, पूरो मनोरथ रूमा हो ॥ प्र० ॥ लक्ष्मी पूंज मुक्ताहल मनजुं, एह ल्यो चातुर सूमा हो ॥ प्र० ॥ २ ॥ हार तणे मिसे ए वरमाला, कंठ ठवी इंम जाणो हो ॥ प्र० ॥ हवणाही गांधर्व विवाहें, परणी मुज सुख माणो हो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुमर कहे सुण चंद्र मुखी तें, वचन कह्युं ते वारू हो ॥ प्र० ॥ मात पिता आणा विण कन्या, वरवी नहीं विवहारू हो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ दुःख म धरिस रही दिन केताइक, बुद्धि करुं हुं तेहवी हो ॥ प्र० ॥ मात पिता जन जोते तु जनें, देसे मुज ततखेवी हो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पण बांध्यो ए में तुज आगें, मन रलीआयत कीजें हो ॥ प्र० ॥ ढील हुवे जावाने तेहथी, सीखमी सी हवे दीजें हो ॥ प्र० ॥ ६ ॥ कनकवती नीचें नृपराणी, वातसुणे र

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ही ठानें हो ॥ प्र० ॥ रीसाणी चिंते ए धूरत, लागो कन्याने कानें हो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ करी संकेत मळ्यो ए एहनें, मुज कारज नवि सीधुं हो ॥ प्र० ॥ दोमीने दादरने द्वारें, ठानेंसें तालुं दीधुं हो ॥ प्र० ॥ ८ ॥ कुमरी कहे मुज एह विमाता, मुज मातानी शोकि हो ॥प्र०॥ कनकवती इंणे कपट करीनें, राख्यांछे बिहुं रोकी हो ॥ प्र० ॥ ए॥ व्यतिकर सर्व सुणयो रीसाली, अनरथ करसे प्राहिं हो ॥ प्र० ॥ कुमर जणे एहनें हुं कूके, वंची आव्यो आहिं हो ॥ प्र० ॥ १० ॥ वात करे जई इंम तेणी वेला, कनकवती नृप पासें हो ॥ प्र० ॥ आवी प्रकाशे मुख रस वाही, दीठी वात उल्लासे हो ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कोपें लोचन रातां कीधां, हणवाने मन प्रेस्युं हो ॥ प्र० ॥ सुजट घटा वींटये नरनाथें, कन्या मंदिर घेस्युं हो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ कहे कुमरी हैहै विष कन्या, हुं सरजी कां नाथें हो ॥ प्र० ॥ मुज कारण अनरथ लहेसे, ए आयो परायें हाथें हो ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुमर जणे सुजगे कां बीहो, एहथी नहीं मुज पीमा हो ॥ प्र० ॥ परघर पेसे तेतो किहां किणे, राखे छलबल छींमा हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इंम कही आप शिखाथी काढी, गुटिका मुखमां धारी हो ॥ प्र० ॥ तस

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुजावें चंपक माला, थइ बेठो ते नारी हो ॥ प्र०
॥ १५ ॥ रूप निहाली निज जननीनुं, कुमरी अचर
ज न्नारी हो ॥ प्र० ॥ जांजी तालुं नरवर आव्यो, दे
खे सुताने नारी हो ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नृप बोल्यो क
नका मुख देखी, कूरुं इम कां नांखेहो ॥ प्र० ॥ अल
वे आल देई पर ऊपर, कां डुरगति फल चाखे हो ॥
॥ प्र० ॥ १७ ॥ आक्रोसी विलखी थई कुमरें, बोला
वी हसी आगें हो ॥ प्र० ॥ कहो बहेनी पीउ को
प्या केणे, इहां आव्या किण ठागें हो ॥ प्र० ॥
॥ १८ ॥ पुरनो लोक अनादर वयणे, कनका में निर
धारे हो ॥ प्र० ॥ कहे कनका जो हुं बुं जूठी, तो कि
हां हार देखाके हो ॥ प्र० ॥ १९ ॥ छल जननी निज
कंठथकी ते, ऊंचो हार उल्लाले हो ॥ प्र० ॥ नृप प्रमु
ख सहुने देखाके, कनकानो मद गाले हो ॥ प्र० ॥ २० ॥
तिण वेला कुमरीनी जननी, नर निद्रामांहें हूंती हो
॥ प्र० ॥ सुख निद्रायें निज पुत्रीनी, विगत लहे नहीं
सूती हो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ फरी आव्या हसंतां निज
थाने, नृपादिक सविलोक हो ॥ प्र० ॥ कनकवती
नी निंदा करतां, लोक वदन कह्यां बोक हो ॥ प्र० ॥
॥ २२ ॥ कूमी पमी कनका महाबलनो, विघन थयो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विसराल हो ॥ प्र० ॥ कांति कहे इंम बीजे खंमे, ए थइ त्रीजी ढाल हो ॥ प्र० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनका चित्त चिंता करे, नयणें नावे नींद ॥ मलया किम दुःख पामसे, मानी जेह महींद ॥ १ ॥ हवे कुमर मुख मांहेथी, काढे गुटिका रयण ॥ प्रगट हूउं नररूप त्यां, जाणे नवलो मयण ॥ २ ॥ कहे कुमर अनरथ वम्यो, हुउं एह विसराल ॥ जो वली रहियें तो हूवे, अणचिंत्यो को आल ॥ ३ ॥ तेमाटे तुम सीखथी, चालीश हुं निजदेश ॥ प्रीतलता संजालजो, जगी हृदय निवेश ॥ ४ ॥ कस्यो शुलन मेला वम्यो, आपण बिहुंनो जेण ॥ चिंता करशे तेह विधि, म करें चिंता तेण ॥ ५ ॥ वलि अनोपम तुजने कहुं, सुंदर एक सलोक ॥ सरवकाल ते चिंतवे, थाशे सघला थोक ॥ ६ ॥ तद्यथा ॥ विधत्तेय द्विधिस्ततूस्या, (चिमत्कारपामीने) न्नस्यात् हृदयचिंतितं ॥ एवमेवोत्सुकंचित्त, मुपायां श्चिंतयेद्वहून् ॥ १ ॥ दोहा ॥ वरण उकेस्या ढांकणे, इंम लागा तस चित्त ॥ तेह प्रशंसे चित्तचकी, ए श्लोक सबल सुपवित्त ॥ ७ ॥ सुखिया होजो साजना, कुशल्या होजो पंथ ॥ देजो वेग मेलावमो, महे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जो लखमी गंथ ॥ ० ॥ कहे बाला नरी लोयणां, रे ठयलां ठेगाल ॥ नेह नवल तुज खटकशे, जिम तन खूतो शाल ॥ ए ॥ गुप्त मोहोलथी नीसरी, आवी च ढ्यो केकाण ॥ नियत प्रयाणे चालतो, पोहोतो पु हवी ठाण ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ करेलणां घमिदे रे ॥ एदेशी ॥

॥ तात चरण आवी नम्यो, आपे अनोपम हार ॥ वीरधवल दीधो मुने, इम कही कूम तिवार ॥ १ ॥ नविक जन सांजलो रे, मलयानो आधकार ॥ न० ॥ एतो सु णतां हर्ख अपार ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ राय कहे तुज चातुरी, दीठी अधिक वदीत ॥ थोमा दिनमां जेहथी, वा धी एवमी प्रीत ॥ न० ॥ २ ॥ इम कहीने कंठे ठव्यो, कुमरें मायनें हार ॥ घणुं सराहे पुत्रने, राणी पण तेणीवार ॥ न० ॥ ३ ॥ राज कुमर इम चिंतवे, पण बांध्यो में जेह ॥ कन्या किम परणी हवे, साचो करशुं तेह ॥ न० ॥ ४ ॥ तिणे अवसर एक आविउ, वीरधवल नो दूत ॥ प्रणमी नृपनें वीनवे, सांजल नर पुरुहूत ॥ न० ॥ ५ ॥ पुत्री अमचा स्वामीनी, मलया सुंदरी नाम ॥ तास स्वयंवर मांमीउ, करीने प्रतिज्ञा आम ॥ न० ॥ ६ ॥ धनुष पूर्व परिया तणुं, वज्रसार बे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सार ॥ जे नर तेह चढावशे, वरशे तेह कुमार ॥ न०
॥ ७ ॥ देशदेशावर रायना, नंदन तेहण काज ॥ दू
त मोकल्या राजीये, हुं मूक्यो तुमराज ॥ न० ॥ ७ ॥
देव महाबल मोकलो, कुमर काम अवतार ॥ कुं
ण जाणे एहथी विधें, योग लिख्यो थानार ॥ न० ॥
ए ॥ ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी, आज थइ तिथि खास ॥
आगामी चौदशि दिने, होसे स्वयंवर तास ॥ न० ॥
१० ॥ वाटे हुं मांदो थयो, तेहथी हूउ विलंब ॥ क
री उतावलो मोकलो, लगन अछे अविलंब ॥न०॥ ११ ।
सनमानी ते दूतनें, शीख करे नूपाल ॥ कुमर सना
मां सांनली, चिंतवे इंम हरखाल, ॥ न० ॥ १२ ॥
देवें मुज करुणा करी, नीठा दुःख संयोग ॥ नुखमां
हे नोजन मले, तिम ए दीसे योग ॥ न० ॥ १३ ॥
काज हतुं सांसे पड्युं, सिखायलुं ते आज ॥ विश्वा
वीश दया करी, मुज ऊपर महाराज ॥ न० ॥ १४ ॥
तात दीए मुज आगन्या, तो तिहां जइ तत्काल ॥
राजपुत्र कुल अग्रगणी, हुं परणुं ते बाल ॥ न० ॥
॥ १५ ॥ तव नृप निरखी पुत्रने, कहे वछ तुं शुनका
ज ॥ बल वाहनना घाटस्यों, रातें सधावो आज ॥
न० ॥ १६ ॥ कहे कुमर विनयें नस्यो, तात वचन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

परमाण ॥ दल सज कीधुं तांवली, बोल्यो हरखें रा
य ॥ज॰ ॥ १७ ॥ लखमी पूंज मनोहरू, सुत ल्यो
साथें हार ॥ कुमर कहे ते हारनी, वात सुणो निर
धार ॥ ज॰ ॥ १८ ॥ सूतां मुज निशिनें समें, करें उ
पद्रव कोइ ॥ वस्त्र शस्त्र नूषण हरे, गुप्त बीहावें सोइ
॥ ज॰ ॥ १९ ॥ मात कनेथी में ग्रही, हार ठव्यो मुज कं
ठ ॥ आज रयणमां अपहरी, लीधो तेणे उल्लंठ ॥
ज॰ ॥ २० ॥ हार गयो जाणी हवे, माता धारे डुःक्ख ॥
करी प्रतिज्ञा में तिहां, माताने आजमुक्ख ॥ ज॰ ॥ २१ ॥
जो नापुं दिन पांचमां, ते मुक्तावली हार ॥ तो मुज
काया आगमां, दहेवी ए निरधार ॥ ज॰ ॥ २२ ॥ हार
कदापि नवि लहुं, तो मुज मरण सहाय ॥ करे प्र
तिज्ञा आकरी, डुःख धरती इंम माय ॥ ज॰ ॥ २३ ॥
अदृश नरु जे रातिमां, राक्षस के चूरेल ॥ पोहोर
एक बे रही इंहां, नाखुं तस पग जेल ॥ ज॰ ॥ २४ ॥
स्ववश करी तेह डुष्टनें, लेई हार नलिज्ञांति ॥ सुंपी
माताने पछें, चालीश पाछली राति ॥ ज॰ ॥ २५ ॥
राय प्रशंसे पुत्रनां, साहस सत्त्व विशाल ॥ बीजे खंमें
ए कही, कांतें चोथी ढाल ॥ ज॰ ॥ २६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर मंदिर गयो, अलवे त्यांथी ऊठ ॥ बार जरी खांडुं ग्रही, बेठो दीवा पूंठ ॥ १ ॥ मध्य रयणीनें आंतरें, चंचल सबल जस टेक ॥ गोख मार्गथी मलपतो, पेसें कर तिहां एक ॥ २ ॥ कुमर विचारे पूर्वपरें, करसे कांइ विरुद्ध ॥ तेह थकी पहेली जली, आपुं शिक्षा शुद्ध ॥ ३ ॥ सोवन चूडी खलखलें, उपें कंकण रेह ॥ तेह जणी कर नारिनो, ए छे निस्संदेह ॥ ४ ॥ देवी अथवा दानवी, आवी छे इहां कोय ॥ देव सक्तीनां बल थकी, दृष्टें नावे सोय ॥ ॥ ५ ॥ जो नांखुं खांडुं खरुं, तो वली जासे जागि ॥ चढशे हाथ न माहरे, नहीं आवे वली लाग ॥ ६ ॥ एम विचारी ऊठ्यो, त्रिवली जालें चाढि, चढि बेठो कर ऊपरे, ग्रही बे हाथें गाढि ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ तट यमुनानोरे अतिरलिया मणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मंदिरमांथी रे ते कर कंपतो रे, गयणें चढिउं आंटा खाय ॥ सुर असुरनां रे कुल बीवरावतो रे, उलट पलट करी चाल्यो जाय ॥ मं० ॥ १ ॥ निरजय बेठो रे कुमर ते ऊपरें रे, तेहनें जारें कर लचकाय ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पवने झकाव्यो रे ध्वज पटनी परें रे, हठ चढित चिहुं दिशि झोलाय ॥ मं० ॥ २ ॥ जटकि आठाटें रे नीचो नांखवा रे, पण आसण न करे चलचाल ॥ कुमरें थ काड्यो रे अलम केकाण ज्युं रे, तव प्रगटी देवी वि कराल ॥ मं० ॥ ३ ॥ एह रोशाली रे मुजनें नांखसे रे, विषम महावन गिरिवर ठेह ॥ इम निरधारि रे मारी आकरी रे, कुमरें करकश मुठी तेह ॥ मं० ॥ ४ ॥ दीन रमंती रे देवी इम कहे रे, रे करुणा वंत दयाल ॥ मुज अबलानें रे सबला कां नमें रे, मूक हवे न करुं तुज चाल ॥ मं० ॥ ५ ॥ मूकी कुमरें रे ते नासी गइ रे, ठेट्यो कानें कूकर जेम ॥ आप तिवारें रे पम्डित गयण थी रे, विद्या चूक्यो खेचर एम ॥ मं० ॥ ६ ॥ फलत्तर त्तारी रे वन आंबा शिरें रे, आवी रह्यो नृप नंदन वेग ॥ नयण निमेली रे क्षण मूरछा लह्यो रे, पवनें विंज्यो अति तेग ॥ म० ॥ ७ ॥ कुमर विमासे रे चे त वल्या पछें रे, किण थानक हुं आयो चालि ॥ रयणि अंधारें रे कर फरस्या थकी रे, जाण्यो तरु साही त स झालि ॥ मं० ॥ ८ ॥ क्षण एक मांहें रे तरुथी उ तरी रे, आवी बेठो तरुने खंध ॥ इम मन सोचे रे कुंण ए आपदा रे, दीधी तिण कुण वैर प्रबंध ॥ मं० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए ॥ किहां मुज माता रे किहां तात माहरो रे, किहां हुं ए किम थासे सूल ॥ हार न पामे रे जननी जो हवे रे, करशे जीवितनुं प्रतिकूल ॥ मं० ॥ १० ॥ माय वियोगें रे वली मुज तातजी रे, धरवा प्राण अछे अ समछ ॥ हैहै दीसे रे कुलक्षय माहरो रे, इम चिंता ऊर बेठो तछ ॥ मं० ॥ ११ ॥ खरखर वागो रे तव रव नूमिनो रे, नूपति सुत निरखे तरुमूल ॥ नारि ग लीने अरधी आवतो रे, नजर पड्यो अजगर एक थू ल ॥ मं० ॥ १२ ॥ कुमर विचारे रे ए प्राणी गली रे, आवे तरु आफलवा कोय ॥ ए विछोडावुं रे जो जोरो करी रे, तो मुज आतम सफलो होय ॥ मं० ॥ १३ ॥ साहस धारी रे तरुथी ऊतस्यो रे, बेठो छा नें आंबा गोढ ॥ अजगर आयो रे देवा विंटली रे, कुमर ग्रहे तस मुख अति प्रौढ ॥ मं० ॥ १४ ॥ व दन विदास्युं रे होठ बिन्हे ग्रही रे, ते मांहेंथी काढी एक नारि ॥ वचन कहंती रे माहारे इण समे रे, श रण होजो महाबल एक तारि ॥ मं० ॥ १५ ॥ ना म सुणीनें रे पोतानुं तिहां रे, विस्मय विकशित लो चन थाय ॥ दूरें ऊछाली रे अजगर नाखीउं रे, देखे अबला सुखगत छाय ॥ मं० ॥ १६ ॥ मलया सरखी रे निर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खी गोरमी रे, चित्त चमक्यो ढोले तिहां वाय ॥ चेतन वाल्युं रे तव बाला नणे रे, पूरवलो ते श्लोक सुणा य ॥ मं० ॥ १७ ॥ कुमर सुणीनें रे तिहां निश्चय करी रे, वीरधवल तनुजा ए होय ॥ कर पद सेवा रे कुमर करे वली रे, जिम पीमा तनु विरली होय ॥ मं० ॥ १८ ॥ कुमर पयंपे रे ऊठो सुंदरी रे, तुम विरहें मु ज मन शीदाय ॥ नयण ऊघामे रे निरखी पद्मणी रे, सेवापर नृप सुत चित्तलाय ॥ मं० ॥ १९ ॥ ला ज करंती रे नेहल मीटमां रे, कहे जीवन जीवामी आज ॥ संगम देवे रे किम मेल्यो इहां रे, नांखोजी नांखो महाराज ॥ मं० ॥ २० ॥ कुमर तिवारे रे क हे सरिता जलें रे, प्रथम पखालो तनु पंकाल ॥ वी तक बेहु रे कहेशुं वली पछे रे, इम कही आणी नदी यें बाल ॥ मं० ॥ २१ ॥ अंग पखाल्युं रे जल पीधुं गली रे, वली आव्या पाछा तरु तीर ॥ कुमरें सुणावी रे निज वीती कथा रे, सुणतां थरके तास शरीर ॥ मं० ॥ २२ ॥ नृप सुत तेहनेरे धणिने पूछशे रे, वीतक सयल करी चित्त चूप ॥ कांतें प्रकाशी रे खासी पांच मी रे, बीजे खंमे ढाल अनूप ॥ मं० ॥ २३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ जणे कुमर क्षीणोदरी, मांमी कहे तुं वात ॥ अजगर वदने किम पमी, राखीतीजटव्रात ॥ १ कहे कुमरी हुं नवि लहुं, अजगर वदन प्रवेश ॥ सुणो कठिण थइ जे कहुं, अवर वात लवलेश ॥ २ ॥ तेहवामां पग रव थकी, जाण्यो जन संचार ॥ कुमर विचारे रातमां, केहनो एह विहार ॥ ३ ॥ आवे ठे साहमो धस्यो, रसीयो के लूंटाक ॥ व्यसनी मद पीधो अठे, के कोइ जार लफाक ॥ ४ ॥ के कोइ परिचित नारिनो, आवे ठे इंणि वाट ॥ मीट न पारुं गोरमी, ए अवसर ते माट ॥ ५ ॥ एम विचारी शिर थकी, काढी गुटिका टाल ॥ आंबानां रसमां घसी, कस्युं तिलक तस जाल ॥ ६ ॥ पुरुष थयो नारि टली, कुमर कहे मत शंक ॥ रूप पालटयुं तुज मैं, आवत नर आशंक ॥ ७ ॥ ज्यां नहिं मांजुं थूंकथी, त्यां लगें तुज नर रूप ॥ पुरुष गया मांज्या पठी, थाशे मूल सरूप ॥ ८ ॥ आपण बेए एक ठे, सुखें पधारो आंहिं ॥ इंम कही निरखत वाटमी, दीठी नारी त्यांहिं ॥ ए ॥ तरुणी हरिणी परें धसी, आवे थिरकित गात ॥ नृप नंदन मधुरे स्वरें, पूठे तस अवदात ॥ १० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल ७ठी ॥ नदी यमुनाके तीर, उ
डे दोय पंखीया ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे तुं आंहिं, आवी कुण एकली; किम कं
पे तुज गात, चिंतातुर कां वली ॥ कुण तटनी ए नूप,
कवण नगरी किसी; इहां पाम्या सुखशात, अमें मन
मां वसी ॥ १ ॥ नारी जणे ए नीर, नदी गोला वहे;
चंद्रावती उपकंठ, पुरि अति गहगहे ॥ दशदिशि पस
री जास, महा कीरति ध्वजा; वीरधवल नूपाल, इहां
पाले प्रजा ॥ २ ॥ कुमर विचारे जेथ, आवण हुं
चाहतो, पडतो पडतो तेथ, आयो नज गाहतो ॥ अ
हो मुज पुण्य प्रमाण, प्रसन्न छे जगपती; जस मुखें
पेठी नारि, मली जे जीवती ॥ ३ ॥ कहे वली आ
गल वात, नारि अचरिज जरी; पुत्री हुइ ते नूपने,
मलया सुंदरी ॥ मंडप मांड्यो तास, स्वयंवर नूपतें;
मूक्या दूत निमंत्रणे, नृप नंदन प्रतें ॥ ४ ॥ आज
थकी विवाह, होसे त्रीजे दिनें; कीधी सामग्री सर्व,
अगाउ मेलीनें ॥ नृपने बीजी नारि, अछे कनकाव
ती; मलया साथें रोश, वहे ते डुर्मति ॥ ५ ॥ सोमा
माहरुं नाम, हुं तास महोलणी; सर्व रहस्यनुं ठा
म, घणुं विसवासणी ॥ मलयानां केइ छिद्र, जोवे मु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज सामिनी; पण नवि देखे कोइ, किहां अवगुण क
णी ॥ ६ ॥ नृप पुत्री नर रूप, रही पूछे इस्युं, ते साथें
इंम रोष, तणुं कारण किस्युं ॥ कुमर कहे संतान, हो
वे जो शोक्यनां, शोक्यतणे मनशाल, समा हुए सहेज
नां ॥ ७ ॥ नारी जाणे ए साच, कह्यो छे जेहवो; जो
तां तेहनां छिद्र, समय केतो हवो ॥ आजूनी अधरा
त, थइ कौतुक कथा, दीठी कहुं तुज आगें, नही ते
अन्यथा ॥ ७ ॥ नामे लखमी पूंज, गले कनका तणें;
हार ठव्यो किण आइ, गगनथी चुंग पणे ॥ कुमर
विचारे हार, ठव्यो तेणे व्यंतरी; निश्चय कोइक
नेह, कारणथी ऊतरी ॥ ए ॥ पामी नाहिं में शुद्ध,
किहां हमणां लगें; ते पाम्यो हवे वात, सवे होसे व
गें ॥ सोमा कहे मुज हार, देखाडी श्रीमुखें; वारी हु
ए लाज, किहां कहेती रखे ॥ १० ॥ हार रयण ब
हु मूल, बुपाडी एकमने; मुजनें साथें लेइ, गइ नू
पति कनें ॥ अवसर देखी दोष, ऊघाडे अतिघणा;
विरस पणे एम आल, लवे मलया तणा ॥ ११ ॥ स्वा
मी सुणो अवदात, कहुं पुत्रीतणा; नयणे दीठा आ
ज, निपट असुहामणा ॥ पुहवी ठाण नगरनो, नृप
वखाणियें; सूरपाल तस पुत्र, महाबल जाणियें ॥ १२

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ तेहनो किंकर एक, गुप्त मलया घरें; आवे छे नित्य रात, निशाचरनी परें ॥ हार रयण ते साथ, कुमरने पाठव्यो; लेखें लिखि संदेश, इस्यो वली सूचव्यो ॥ १३ ॥ मलशे नृपना नंद, अनेक स्वयंवरे; तेमिस तुं पण वेग, आवे आडंबरें ॥ मुज बुद्धियें राज्य, सकल हाथें करी; परणी मुज फलवंत, करे यौवन सिरि ॥ १४ ॥ राज्य ग्रहणनी चाहि, कुमारी धूरतें; धूतीए तिण बेहु, थया एकण मतें ॥ नारी हूए मति हीण, कपटनी कोथली; वाल्हाने द्ये छेह, सारें स्वारथ वली ॥ १५ ॥ अतिविरुद्ध रोशाली, वाघण जिम सुंदरी; साहसनो झंकार, अनृतनी छे दरी ॥ मुखमीठी मन धीठ, धरमणी दामणी; न हुवे केहनी नेट, संतोषी कामणी ॥ १६ ॥ एहनें संग विछुरुआ, जे नर बापडा; ते पामे दुःख लाख, थया रस लांपडा ॥ नाहिं करुणानो लेश, हीयामां नारीनें; मलतानें सविशेषें, मूके मारीनें ॥ १७ ॥ अनरथ ए हो नारि, कह्यो में छे जिस्यो; करतां पूर्व उपाय, पछे नही सोचसो ॥ जो मुज वचन विचार, भरोसों नवि करो; मांगो अमूलिक हार, न देसे तो खरो ॥ १८ ॥ इंम उदभाव्या दोष, अनेक मृषा कही, रोषारुण भूपाल, कह्यो देषें सही

॥ छठी ढाल रसाल, ए बीजा खंमनी; कांतें कही मीठास, जरी मधुखंमनी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोष गहिल नरपती तिहां, अमने करी विदाय ॥ चंपकमाला जामिनी, बोलावी विलखाय ॥ १ ॥ व्य तिकर सर्व सुणावियो, राणीने राजान ॥ निजपुत्री उपर तिका, थई रोष असमान ॥ २ ॥ मांगो हार मनोहरु, जो नवि देसे बाल ॥ तो व्यतिकर सघलो खरो, इंम कहे चंपक माल ॥ ३ ॥ कन्या तेमी मांगीयो, हार रयण ततकाल ॥ त्रमजूली मौनें रही, मनमां पेठी जाल ॥ ४ ॥ चित्त विकल्पी कूम इंम, उत्तर दीधुं एण ॥ तात हार मुज कंठथी, अपहरि लीधो केण ॥ ५ ॥ अवगुण इंधण अति सबल, वचन पवन नृप कुंम ॥ रोष अनल कुमरी दहन, वागो जई ब्रह्मंम ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जीणा मारुजीनी करहलमी, करहलमी केशररो कूपो मने आलाहो राज ॥ एदेशी ॥

॥ नृप कहे निज पुत्री जणी, फिट पापिणी हतियारी, मुखमुं कांइ देखामे होराज ॥ अलगी रहे मुज नयणथी, कुलखंपणी मति हीणी, मुजकां लाज लगामे होराज ॥ १ ॥ न्हानी पण दोषें जरी, जिम वि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

षहरनी दाढा, अलवें लागी मारे होराज ॥ कन्या रूपें वैरणी, थइ लागी उपरांठी, वैर विरोध वधारे होराज ॥ २ ॥ एवडुं तुज किणें सीखव्युं, चरित्र विषम अति ऊंडुं, सुंडुं सुणतां लागे होराज ॥ आज थकी जो इम करे, वधती वधती वली शुं, करशे जातां आगें होराज ॥ ३ ॥ दोष नहीं माहरे शिरें, कीधुं छे तें जेहवुं, तेहवां फल तुं चाखे होराज ॥ प्रत्यक्ष विषनी वेलडी, उखेडी हवे नाखी, सारसुं तुज पाखें होराज ॥ ४ ॥ तात वचन करुआ सुणी, माय रीसाणी जाणी, आई निज आवासें होराज ॥ बेठी आमण दूमणी, करीनें मुख नीचुं, मनमां एम विमासे होराज ॥ ५ अणगमतुं में तातनुं, विकल पणे सुं कीधुं, जेहथी तात रीसाणो होराज ॥ हार रयण खोया थकी, एवडो कोप किवारें, राजा मनमां नाणे होराज ॥ ६ ॥ स्यो अवगुण नृप माहरो, देखीने कडुषाणो, बोल्यो विरुआं वयणा होराज ॥ इम कुमरी चिंता भरी, मुखपंकज करमाणी, वरसे आसुं नयणा होराज ॥ ७ ॥ नृप कहे पटराणी प्रत्यें, तुज तनुजानां दीठां, चरित्र महाविष तोले होराज ॥ हार रयण तिण कुमरनें, इणे दीधो छे निश्चें, मुज मारणने कोलें होरा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज ॥८॥ वाल्ही पण वैरणी हूई, जिम विषधरीयें फंकी, आंगुली होय डुवालही होराज ॥ रिपुकुलने जां न वी मले, ते पहेली ए हणवी, पाप न गणवो काल्ही होराज ॥ ए ॥ डुःख न्नरी रयणीनें गमी, प्रह कालें नृप तेरुी, सेवकनें इंम न्नासे होराज ॥ मलयाने ह णजो तुमें, हुकम फरी मत पूठो, रखे किहां किण ए नासे होराज ॥ १० ॥ मंत्री सुबुद्धि सुणयो सवे, व्यति कर ए कन्यानो, आवी नृपने न्नेटे होराज ॥ करजोमी इंम वीनवे, असमंजस ए मांड्यो, नूप कहो किण खेटें होराज ॥ ११ ॥ सुं अपराधि कन्यका, नेह गयो क्यां पहेलो, धरता जे एह साथें होराज ॥ विषतरु वर पण कापवो, न घटे जेह उठेर्यो, धुरथी आपणें हाथें होराज ॥१२ ॥ देव विचारी कीजीयें, जिम न होवे पठतावो, पठे फल पाकंतां होराज ॥ सकल वि चार सुणावीउं, सचिव न्नणी नृप धुरथी, सचिव रू स्यो न्नाखंतां होराज ॥ १३ ॥ मौनधरी मंत्रि रह्यो, सेवक नृप आदेशें, मलया मंदिर आवे होराज ॥ गद गद कंठें इंम कहे, तुज उपर नृप रूठो, आणा वध फुरमावे होराज ॥ १४ ॥ दीन वदन कन्या कहे, वीरा नृप किम कोप्यो, ते कहे न लहुं कांई होराज ॥ क

न्या इंम विलपे तिहां, हाहा मुज किण नाख्या, अव गुण वैर वसाई होराज ॥ १५ ॥ मुज मुख निरखी हरखतो, ते पण थइ अतिवांको, नरपति मुजनें मारे होराज ॥ चंपकमाला मावडी, ऊपरांठी थई बेठी, नृ पने ते नवी वारे होराज ॥ १६ ॥ मलयकुमर मुज सुंदरू, ते पण आंखुं आडा, कान देईने बेठो होराज ॥ बंधु वरग हुं परिहरी, परिहरियें जिम मीठो, पण जे नोजन एठो होराज ॥ १७ ॥ पुण्य गयां किहां माह रां, प्रगट्यां क्यांथी प्रौढा, पाप पूरव नव केरां हो राज ॥ करुं धरणी तुज वीनती, द्ये मारग जिम पेसी, काढुं प्राण आघेरा होराज ॥ १८ ॥ महोल मांहे मलया रही, पूर्व कर्मने निंदे, कहेसे वली कांइ आगें होरा ज ॥ बीजे खंडे सातमी, ढाल सरस ए नाखी, कांतें इंम अति रागें होराज ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तेडावे मलया हवे, वेगवतीने वेग ॥ नृप आदेश सु णावीने, कहे निज कारज नेग ॥ १ ॥ सखी सिधा वो नृप कन्हें, कहेजो इंम संदेस ॥ तुम पुत्री इंम मुज मुखें, दीधो छे निर्देश ॥ २ ॥ वेगवती बाला थ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

की, आवे नृपनें पास ॥ कुमरीनां संदेसमा, इंम संज्ञ लावे तास ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ कोइलो परवत धूंधलो
॥ होलाल ॥ ए देशी ॥

॥ संदेसो मलया कहे होलाल, सांजल पुरना इस ॥ नरिंदजी ॥ गुनह करी में रावलो होलाल , अलवें पाई रीस ॥ न० ॥ १ ॥ सं० ॥ अवगुण खमजो माहरो होलाल, कीधा जे में अजाण ॥ न० ॥ मरण सरण में तें सिरें होलाल, दंरू कस्यो परमाण ॥ न० ॥ सं० ॥ २ ॥ आवुं प्रजु पद जेटवा होलाल, तुम वचनें महा जाग ॥ न० ॥ अतिथि हूआ परलोकना होलाल, लहेसुं ते वली लाग ॥ न० ॥ सं० ॥ ३ ॥ इंम न ग में तो इहां थकी होलाल, ग्रहेजो प्रणति अनेक ॥ न० ॥ प्रणति वली बिहुं मायने होलाल, कहेजो मु ज सुविवेक ॥ न० ॥ सं० ॥ ४ ॥ अनरथ जे में आच स्यो होलाल, ते जांखो निरसंक ॥ न० ॥ दोष देखा मी मारतां होलाल, न हुवे कालकलंक ॥ न० ॥ सं० ॥ ५ ॥ जूप विचारें देखजो होलाल, करी वैरीनां काम ॥ सुलोचनी ॥ गुनह पूढावे आपणो होलाल ॥ अण जाणी थइ आम ॥ सुलोचनी ॥ ६ ॥ चरित्र जलो मल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

या तणो होलाल ॥ ए आंकणी ॥ कपट मंजूस त्रिया कही होलाल, मुखमीठी धूतारि ॥ सु० ॥ मधु लिंपी वि ष गोलिका होलाल, एवी रची किरतार ॥ सु० ॥ च० ॥ ७ ॥ प्रणति म होजो एहनी होलाल, नहीं मुख दी ठे काम ॥ सु० ॥ मरण सरण वहेली करो होलाल, कन्या अवगुण धाम ॥ सु० ॥ च० ॥ ८ ॥ वेगवती व लतुं जणे होलाल, नरपतिने कुमणाय ॥ सु० ॥ गो ला नदी तट दाहिणे होलाल, अंध कूउ कहेवाय ॥ सु० ॥ च० ॥ ९ ॥ जंप देई कुमरी तिहां होलाल, कर से जीवित नास ॥ सु० ॥ इम करी रोती जूरती होला ल, आवे मलया पास ॥ सु० ॥ च० ॥ १० ॥ वेगव ती मलया जणी होलाल, जाख्यो तेह प्रबंध ॥ सु० ॥ तास वचन अविलंबीनें होलाल, ऊठे तिहांथी मुंध ॥ सु० ॥ च० ॥ ११ ॥ वज्रकठीन हीयडुं करी होला ल, साहस वस असमान ॥ सु० ॥ पूरवकर्मने निंदती होलाल, धरती नवपद ध्यान ॥ सु० ॥ च० ॥ १२ ॥ धारी मन निर्जय पणे होलाल, विंटी सुजट अनेक ॥ सु० ॥ पालें पग पंथें वहे होलाल, साही सबलो टे क ॥ सु० ॥ च० ॥ १३ ॥ पग पग पंथें आफले हो लाल, पडि पडि ऊठे तेम ॥ सु० ॥ दासी दास जदा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सीयां होलाल, पूछे बोले एम ॥ सु० ॥ च० ॥ १४ ॥ जो तुज मनमां एवमी होलाल, हुंती ताती रीस ॥ सु० ॥ कांइ स्वयंवर मांमीने होलाल, तें तेड्या अव नीस ॥ सु० ॥ च० ॥ १५ ॥ पाळ्या जे पोता वटें हो लाल, पहेलां पोषी लाम ॥ सु० ॥ ते किंकर कुलने हवे होलाल, घेठे कां डुःख हाम ॥ सु० ॥ च० ॥ १६ ॥ किम करशुं रहेसुं किहां होलाल, तुम विरहें तरसं त ॥ सु० ॥ लागे ए अलखामणो होलाल, फीटल प्राण रहंत ॥ सु० ॥ च० ॥ १७ ॥ लोक घणा नगरी तणा होलाल, विलख वदन कहे वेण ॥ सु० ॥ कु मरी रयण सीधावते होलाल, जगत हुउं गत रेण ॥ सु० ॥ च० ॥ १८ ॥ राय सुता पगमां चुने होलाल, तीखा कंटक कोम ॥ सु० ॥ माल रक्त रसिया मुखें होलाल, पैसे पगतल फोमि ॥ सु० ॥ च० ॥ १९ ॥ आई कूआ कंठमे होलाल, बोले इम मुख वाच ॥ सु० ॥ कुमर महाबलनो इहां होलाल, सरण हजो मुज साच ॥ सु० ॥ च० ॥ २० ॥ बाल जंपावे कूपमां होलाल, पमती जिम जलबाल ॥ सु० ॥ पुरजन तव हा हा रवें होलाल, पूरे गगन विचाल ॥ सु० ॥ च० ॥ ॥ २१ ॥ सिंचे धरणी आंसुयें होलाल, निंदे नृपने

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केय ॥ सु० ॥ देता दैव उलंजका होलाल, आव्या लोक वलेय ॥ सु० ॥ च० ॥ २२ ॥ खबर कही जे सेवकें होलाल, संतूठो नरपाल ॥ सु० ॥ बीजे खंके आठमी होलाल, कांतें कही ए ढाल ॥ सु० ॥ च० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नरपति हरख्यो हीये, चित्तमां चिंते एम ॥ हणतां पुत्री डुष्टनें, थयो वंशने खेम ॥ १ ॥ आमंत्र्या नृप नंद जे, तास जणावुं वात ॥ मुज तनुजा व्याधें मूई, मति आवो किण घात ॥ २ ॥ वली पूबुं कनका प्रत्यें, मुज उपकारक एह ॥ इंम विचारी सचिवशुं, नृप पोहोतो तस गेह ॥ ३ ॥ बार जक्यां देखी तिहां, पामे चित्र सरूप ॥ कुंची विवर कमाकनो, तेहमां निरखे जूप ॥ ४ ॥ गर्न नवन दीपक करी, लेई हार ते नार ॥ दीठी जूपें विवरथी, करति इंम मनोहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ केशर वरणो हो काढ कसुंबो मारा लाल ॥ ए देशी ॥ अथवा ॥ नेमि पयंपेहो प्रीति संजालो महारा लाल ॥ एदेशी ॥

॥ हार ठबिला हो करुणा धरजो ॥ मारा लाल ॥ संकट हरजो हो मंगल करजो ॥ मा० ॥ डुर्लन लाधो हो सुरमणि बीजो ॥ मा० ॥ दीठो ताहारो हो सबल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पतीजो ॥ मा० ॥ १ ॥ राख्यो गोपवी हो छानो पई
लो ॥ मा० ॥ नूप नंजेरी हो कीधो घहेलो ॥ मा० ॥
वैरिणी मलया हो कूप नखावी ॥ मा० ॥ संपत्ति स
घली हो मुज घर आवी ॥ मा० ॥ २ ॥ ते सांजलिने
हो नूपति बोल्यो ॥ मा० ॥ इंण पापिणीये हो मुजने
जोल्यो ॥ मा० ॥ कपट करीने हो पोतें चोर्यो ॥ मा० ॥
मलया माथे हो दूषण उर्यो ॥ मा० ॥ ३ ॥ धिग तुज
जीव्युं हो अधम ठगारी ॥ मा० ॥ वांक विहूणी हो
मलया मारी ॥ मा० ॥ कदिही न तेणें हो कीधी छु
हवी ॥ मा० ॥ जंचे सासें हो बोले न तेहवी ॥ मा०
॥ ४ ॥ हैहै वंच्यो हो कपट पवाडे ॥ मा० ॥ इंम
कही बारे हो हाथ पछाडे ॥ मा० ॥ गाढें पोकारी
हो धरणी ढलीउ ॥ मा० ॥ छुःखडे दाधो हो मूर्छा
मलिउ ॥ मा० ॥ ५ ॥ लोक सुणीने हो दोडी आ
व्या ॥ मा० ॥ शुं थयुं नृपने हो इंम कहेताव्या ॥
मा० ॥ तेहवा मांहे हो कनका त्राठी ॥ मा० ॥ गोख
मारगथी हो कूदी नाठी ॥ मा० ॥ ६ ॥ हुं पण पूंठें
हो जई झंपावी ॥ मा० ॥ कनका पासें हो तत्क्षण
आवी ॥ मा० ॥ शूने मंदिर हो खूणे पेठां ॥ मा० ॥
सुणियें वातो हो जणनी बेठां ॥ मा० ॥ ७ ॥ चेतन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वाल्युं हो नृपनुं लोकें ॥ मा० ॥ नृपति रोवे हो लां
बी पोकें ॥ मा० ॥ चंपकमाला हो आवी दोमी ॥ मा० ॥
पीउने पूछे हो बेकर जोमी ॥ मा० ॥ ७ ॥ एह अ
मारुं हो प्राण निपातन ॥ मा० ॥ शुं मांम्युं छे हो शो
ग संतापन ॥ मा० ॥ प्रगट प्रकाशे हो रोतां मंत्री ॥
मा० ॥ कनकवतीनी हो करणी सूत्री ॥ मा० ॥ ए ॥
चंपकमाला हो नृप गल वलगी ॥ मा० ॥ डुःख
पावकनी हो ज्वाला सलगी ॥ मा० ॥ गदगद सादें हो
रोवा लागी ॥ मा० ॥ करति डुःखनां हो लोक विज्ञागी
॥ मा० ॥ १० ॥ सचिव बिहुनें हो इम समजावे
॥ मा० ॥ मूआं जगमांहिं हो पाछा नावे ॥ मा० ॥ तो
पण देखो हो कूप एकंती ॥ मा० ॥ जाग्यें लहीयें
हो जइ जीवंती ॥ मा० ॥ ११ ॥ कूआ कंठे हो नृपति
आव्यो ॥ मा० ॥ जण पेसामी हो ते शोधाव्यो ॥
॥ मा० ॥ मलया नावी हो मीटे क्यांथी ॥ मा० ॥
आशा त्रुटी हो नृपनी तिहांथी ॥ मा० ॥ १२ ॥ मं
दिर पोहोतो हो मन डुःख करतो ॥ मा० ॥ कनका
धामें हो आवे फिरतो ॥ मा० ॥ बार उघामी हो रा
णो जांखे ॥ मा० ॥ पापिणी नाठी हो अणियें आ
खे ॥ मा० ॥ १३ ॥ जोवा पगलां हो किहां गइ जागी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ मा० ॥ आणो बांधी हो केमें लागी ॥ मा० ॥ राय कह्याथी हो तस घर लूंट्यो ॥ मा० ॥ परिजन तेहनो हो पकमी कूट्यो ॥ मा० ॥ १४ ॥ वांक विना जे हो पुत्री मारी ॥ मा० ॥ अति पछतावो हो ते चित्तधारी ॥ मा० ॥ सूरज उगे हो राणी साथें ॥ मा० ॥ नरपति वलशे हो चयमां हाथे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जिहां तिहां जमती हो नृप जट पेखी ॥ मा० ॥ कनका बीहिनी हो करणी देखी ॥ मा० ॥ इम मुज नांखे हो विहुं विछमीयें ॥ मा० ॥ रहेतां नेलां हो हाथे पमीयें ॥ मा० ॥ १६ ॥ हारादिक सवि हो ले निज संगें ॥ मा० ॥ मुजने छोमी हो दोमी रंगें ॥ मा० ॥ मगधा वेश्या हो मिलती पहेली ॥ मा० ॥ ते घर पेठी हो धमकी वहेली ॥ मा० ॥ १७ ॥ हुं एकलमी हो रही त्यां न शकी ॥ मा० ॥ रातें ऊठी हो वनमां चसकी ॥ मा० ॥ इहां आवीउं हो जय धूजंती ॥ मा० ॥ वात कही में हो जेहवी हुंती ॥ मा० ॥ १८ ॥ हवे हुं जाशुं हो रयणी विहाणी ॥ मा० ॥ इम कही सोमा हो आगें उजाणी ॥ मा० ॥ ढाल ए नवमी हो बीजे खंमें ॥ मा० ॥ कांति पयंपे हो वचन अखंमें ॥ मा० ॥ १९ ॥ इति ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ वात सुणी विस्मित हूउं, कहे कुमर गुण गेह ॥
पहेलां इंणे जे संग्रह्युं, वैर विशोध्युं तेह ॥ १ ॥ डु
ष्ट हृदय युवती तणो, विषम चरित्र जंकार ॥ करतां
न जुए कामिनी, अनाचरण संचार ॥ २ ॥ कन्या रयण
विणासतां, मरणोन्मुख नृप कीध ॥ प्रजा अनाथ क
री वली, पोतें अपजश लीध ॥ ३ ॥ कनकानी दासी
थकी, सुंदरी तुज विरतंत ॥ लह्युं सकल में मूलथी,
अहो चरित्र बलवंत ॥ ४ ॥ अल्पकालमां अतिघणी,
दीठी तें दुःख राशि ॥ अंधकूप पमतां ग्रही, अजग
र वदन विकाशि ॥ ५ ॥ निकट किहांकिण कूप छे,
तेमांथी ते साप ॥ ॥ आफलवा आंबा थकें, इंणी थ
ल आव्यो आप ॥ ६ ॥ वदन विदार्युं बल करी, में
तेहनुं कलसाज ॥ तेमांथी तुं नीसरी, मिली इंहां मु
ज आज ॥ ७ ॥ एकांतें अजगर पम्यो, देखी बीहिनी
बाल ॥ कुमर कहे शंका किसी, जो विधी छे रखवाल
॥ ८ ॥ पूरव श्लोक जणे तिहां, बिहुं जण धरी बहु
राग ॥ मुख धोवे गोला जलें, जस्यां सबल सोजाग
॥ ९ ॥ तेहज आंबा फल ग्रही, जक्षण करी ससने
ह ॥ देवी जल मंदिर जणी, वेगें आव्यां बेह ॥ १० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल दशमी ॥ हांरे कांइ जोबनीयानो ल टको दाहाडा चारजो ॥ एदेशी ॥

॥ हांरे वारी बिहुं तिहां देखे काठ तणी बे फाडजो, पहेलां रे जेहमांथी नृप राणी लह्यो रेलो ॥ हांरे वा री कुमर ते देखी तेहमां विवर विचाल जो, धूणीरे शिर चित्तमां चिंति इम कह्यो रेलो ॥ १ ॥ हांरे वारी तीन कारज हवे करवां माहारे आंहिंजो, एकतो रे नृप बलतो चयमांथी राखवो रेलो ॥ हांरे वारी बीजुं ए तुज परणुं नृपनी चाहिजो, त्रीजुं रे जननी गले हार ते नाखवो रेलो ॥ २ ॥ हांरे वारी लखमी पुंज अनोपम नाठो हार जो, ते हुं रे तुज देईश दा हाडा पांचमां रेलो ॥ हांरे वारी इम पण बांध्यो जन नी आगें सार जो, सफलो रे करवो ते साची वाचमां रेलो ॥ ३ ॥ हांरे वारी ते माटे तुं पुरमां फरि नर रू पजो, सांजेरे मगधा घरे जाजे हामशुं रेलो ॥ हांरेवा री तिहां रहीने कनकांनुं निरखीश रूपजो, करतां रे ठल बल मुत्तावली पामशुं रेलो ॥ ४ ॥ हांरेवारी हुं पण जइ चय बलता नृपने संग जो, वारुंरे नवली बुद्धि कोइ केलवी रेलो ॥ हांरे वारी नामांकित मुज घे तुज मुद्रा नंगजो, ग्रहेशे रे एहथी तुज को चोरी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ठवी रेलो ॥ ५ ॥ हांरे वारी मुद्रा दीधी ते थापि शि
र आपजो, इम कहीरे इहां ठानी फरतां फायदो रे
लो, हांरेवारी आजनी रजनी मगधा घरें थिर थापजो,
मलजो रे कालें सांजे ठे वायदो रेलो ॥ ६ ॥ हांरे
वारी साधी कारज सघलां काले सांजजो, आवीश रे दे
वीजल नवनें हुं वली रेलो ॥ हांरे वारी कुमर वचन
चित्तधारी ते पुरमांहिंजो, आवीरे नर वेशें किणही
न अटकली रेलो ॥ ७ ॥ हांरे वारी आगामी जे कर
वां काम अशेष जो, ते सविरे निरधारी पुर आव्यो
धसी रेलो ॥ हांरे वारी नृपनंदन नैमित्तिकनो लेइ वे
शजो, तरुतलेंरे बांध्यो एक गज देखे रसी रेलो ॥
८ ॥ हांरेवारी ते गजनुं बहुला जण लेइ ठांणजो,
दीठारे नाजनमां जलशुं गालता रेलो ॥ हांरेवारी कु
मरें पूछ्या कहे कारण परमाणजो, गतदिन रे नृप
सुत इहां आव्या मालता रेलो ॥ ए ॥ हांरे वारी र
मतमां तेणे सोवन सांकल एकजो, बिंटिरे सलमीयें
नांखी गज दिशा रेलो ॥ हांरेवारी पकती लै गज मुख
मां घाली ठेक जो, ताणीरे थाक्या तिहां केइ महा
वत जिस्या रेलो ॥ १० ॥ हांरेवारी नृप आदेशें गालीजें
एह ठाणजो, तेहनांरे इहां खंफ कदाचित् पामीयेंरे

लो ॥ हांरेवारी काढी महाबल केश थकी सुविनाण
जो, मुद्रारे पूलामां ठवी गजने दीयें रेलो ॥ ११ ॥ हांरे
वारी चावण लागो गयवर पूलो तेहजो, तेहवेंरे नृपति
सुत आगें चालीउं रेलो ॥ हांरे वारी गोला कंठें मलिउं
लोक अठेह जो, करतो रे कोलाहल कुमरें नालिउं रे
लो ॥ १२ ॥ हांरेवारी कुमर विचारे चाल्यो हुं जिण का
मजो, पुरवरें रे कारज एह तेहनो मेलव्यो रेलो ॥ हांरे
वारी चयमांथी उललते अति उद्दामजो, दीसेरे घ
ण धूमें नत्नतल नेलव्यो रेलो ॥ १३ ॥ हांरे वारी
जुज उंचा करी दोरू कुमर तिवारजो, कहेतो रे इम
मधुरवचन गाढे स्वरें रेलो ॥ हांरेवारी जीवे छे तुम
पुत्री मलय कुमारिजो, खेले रे साहस कां नोला इणी
परें रेलो ॥ १४ ॥ हांरे वारी कर्ण सुधासम सुणीने
तेहनां वयणजो, साहामांरे आव्या लख लोक उजा
यनें रेलो ॥ हांरेवारी जीनें लवण उतारुं तुजने स
यणजो, क्यांछे रे कहो मलया तेह बतायने रेलो
॥ १५ ॥ हांरेवारी इम सुणी बोले तेह निमित्तनो
जाणजो, काढोरे नृप राणी चयथी वेगलां रेलो ॥
हांरेवारी तो नांखुं आगमगात हुं इणें ठाणजो, इम
सुणीरे चयमांथी काढ्यां करी कला रेलो ॥ १६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ हांरेवारी कुंअर कहे वसुधाधिप कां अकुलायजो, किहांएक रे मलया छे निश्चें जीवती रेलो ॥ हांरेवारी निमित्ततणे बल जाएयुं में महारायजो, मतिबलेंरे कहुं हुं हुं तुमने ते वली रेलो ॥ १७ ॥ हांरेवारी हवे नृप पूछे मलया केरी वातजो, करशे रे अति कौतुक महाबल इंहां वली रेलो ॥ हांरेवारी बीजे खंमें ए थइ दशमी ढाल जो, नांखी रे इम कांति विजय रंगें नली रेलो ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूप कहे सुण निमित्तिया, दुःखियो हुं विण नाग ॥ देखुं मलया जीवती, एवमो किहां मुज नाग्य ॥ १ ॥ काल कूडी सम कूपमां, नाखी न मरे केम ॥ अहो दैवनी चित्रता, न मुइ नांखे एम ॥ २ ॥ शोधी पण लाधी नहीं, जिम निर्धन धन कोमि ॥ दुष्ट किणें जल थलचरें, खाधी होशे मरोमि ॥ ३ ॥ तेह नणी मुजनें सुखें, होजो अग्नि सहाय ॥ वचन सुणी इम नूपनां, बोल्यो कुमर बनाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ सूवटिआलाइ ॥ ए देशी ॥

॥ नूपतिजी रूमा, सांनल चतुर सुजाण होरेहां ॥ वात न नाखुं कूअमी ॥ नू० ॥ आजदिवस सुख ग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ण होरेहां ॥ बारश तिथि थइ रूअडी ॥ जू० ॥ १ ॥
आजथी त्रीजे दिवसें होरेहां, दोय पोहोर वासर च
ढे ॥ जू० ॥ बेठा सहु अवनीश होरेहां, मंडप आ
डंबर मढे ॥ जू० ॥ २ ॥ शोभित तनु शणगार होरे
हां, कुमरी दरिशण आपशे ॥ जू० ॥ देखीस सहसा
कार होरेहां, अचरज सहुने व्यापशे ॥ जू० ॥ ३ ॥
रचि स्वयंवर शुभ एह होरेहां, आवत नृप मत वारजे
॥ जू० ॥ जो छे तुज संदेह होरेहां, तो अहिनाणी ए
धारजे ॥ जू० ॥ ४ ॥ मलया मुद्रिरयण होरेहां, का
लें तुम कर आवशे ॥ जू० ॥ तो साचां मुज वयण
होरेहां, वेद वाणी गुण पावशे ॥ जू० ॥ ५ ॥ चौद
शने परभात होरेहां, पूरवदिशि पुर बाहिरें ॥ जू० ॥
नृपनां बल मन खांत होरेहां, परखावण तुज कुलसुरी
॥ जू० ॥ ६ ॥ षट करणो एक थंभ होरेहां, पोल समीपें
थापशे ॥ जू० ॥ लहेता लोक अचंभ होरेहां, देख
त रंग न धापशे ॥ जू० ॥ ७ ॥ ते लेइ तेणिवार होरे
हां, थिरथापे मंडप तलें ॥ जू० ॥ भेदशे थांभो ते
ह होरेहां, (धनुष वज्रसार होरेहां,) बाण सहित
पूजा भलें ॥ जू० ॥ ८ ॥ थापे थांभा छेह होरेहां,
जे नर तेह चढाइनें ॥ जू० ॥ भेदशे थांभो तेह हो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रेहां, होशे वर तुज जाइनें ॥ नू० ॥ ए ॥ अनोपम
छे अतिन्नांति होरेहां, पूजाविधि ते थंननी ॥ नू० ॥
नांख्या ए अवदात होरेहां, निमित्त कलायें अनुम
नी ॥ नू० ॥ १० ॥ मलसे ए अहिनाण होरेहां, नि
मित्त बलें नांख्यां अछे ॥ नू० ॥ न मले जो निरवा
ण होरेहां, मन मान्युं करजे पछें ॥ पंमितजी रूमा
॥ ११ ॥ लोक कहे शिरनाम होरेहां, अम नाग्यें तुं
आवियो ॥ पं० ॥ ज्ञानी तुं जस पाम होरेहां, उप
कारें धुर गवियो ॥ पं० ॥ १२ ॥ ताहारा ए उपका
र होरेहां, वीसरशे नहीं जीवते ॥ पं० ॥ आप्यो ए
अधिकार होरेहां, जगदीसें तुज गुण छते ॥ पं० ॥
१३ ॥ आले हरख निधान होरेहां, कंचन मणि नू
षण बहु ॥ पं० ॥ ते कहे जो द्युं दान होरेहां, तो
उपकार किस्यो कहुं ॥ पं० ॥ १४ ॥ करजे तुंहिज ते
ह होरेहां, थंन तणी पूजा वमी ॥ पं० ॥ नृप वचन
छेहमे एह होरेहां, बांधे शुकननी गांठमी ॥ पं० ॥
१५ ॥ नृप कहे कन्या कंत होरेहां, किण नामें होसे
कहो ॥ पं० ॥ आगम निगम अनंत होरेहां, प्रगट
पणे शास्त्रें लहो ॥ पं० ॥ १६ ॥ पोहवीपुर सूरपाल
होरेहां, महाबल नंदन परवमो ॥ पं० ॥ वरशे ते तु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज बाल होरेहां, कुमर कहे एम परगमो ॥ पं० ॥ १७
॥ दिवस थयो मध्यान्ह होरेहां, नृप आवे नगरी भ
णी ॥ पं० ॥ कुमर घणुं सनमान होरेहां, साथें ले
पुरनो धणी ॥ पं० ॥ १८ ॥ साम्मंबर महाराय होरे
हां, आयो मंदिर ऊजमें ॥ पं० ॥ कुमर नृपति ति
णठाय होरेहां, साथें वली भोजन जमे ॥ पं० ॥ १९ ॥
वीती करतां वात होरेहां, अरध दिवसने ते निशा
॥ पं० ॥ गह मह हुइ परभात होरेहां, रवि ऊगे
पूरवदिशा ॥ भू० ॥ २० ॥ बीजे खंम एह होरेहां,
पूरण ढाल इग्यारमी ॥ भू० ॥ कांति कहे ससनेह
होरेहां, सुणतां श्रोताने गमी ॥ भू० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पहेला नृप मूकया जिके, गालण गजनुं ठाण ॥
तेह प्रभातें आविया ॥ सेवक जिहां महिराण ॥ १ ॥
करजोमी कौतिक भर्या, बोल्या तिहां एम वयण ॥
लाधुं गजमल गालतां, ए प्रभु मुद्रा रयण ॥ २ ॥ नृ
प लीधी ते मुद्रिका, रभस पणें ससलूंण ॥ वांचत
नाम सुता तणुं, इंम बोल्यो शिर धूंण ॥ ३ ॥ अहो
अचंभो मुद्रिका, किम आवी गज पेट ॥ वली निमि
त्त ए कारणे, मलतो दीसे नेट ॥ ४ ॥ तव बोल्यो ज्ञा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नी ईस्युं, निमित्त विकल नवि हुंत ॥ कुलदेवी कार ण इहां, संजवियें खितिकंत ॥ ५ ॥ हरव्यो नृप वि शेषथी, करे स्वयंवर काज ॥ लोक कहे कुमरी विना, स्यो मांके नृप साज ॥ ६ ॥ कथन थकी किम रा चियें, होये जूठ के साच ॥ पेटें पड्यां पतीजीयें, इम बोले केई वाच ॥ ७ ॥ कन्या विण लघुता घणी, लहेसे नृप नृप मांहिं, मल्या नृप विलखा थई, धुक ल करसे प्रांहिं ॥ ८ ॥ सांज समय तेरस दिनें, आ व्या नृपना नंद ॥ आप्यां मंदिर जूजूआं, त्यां उतस्या नरिंद ॥ ए ॥

॥ ढाल बारमी ॥ रहो रहो रहो वालहा ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानी कहे इम रायने, जो आपो अम सीख लाल रे ॥ मंत्र अर्द्ध में साधिउं, ते साधुं मन ईष लाल रे ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ जो नवि साधुं ए समे, तो वलतुं न सधाय लाल रे ॥ कोई विघन शुन्न काममां, आण जाण्या ठहराय लाल रे ॥ सु० ॥ २ ॥ आजूनी एक रातनो, आपो जो अव काश लालरे ॥ साधी मंत्र प्रन्नातमां, आवीश हुं तुम पास लालरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ शीख देई नृप इम कहे, मंत्र साधनने काज लाल रे ॥ जोईयें ते आपुं हजी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लेतां न करशो लाज लाल रे ॥ सु० ॥ ४॥ धन लेई केतुं तिहां, कुमर गयो वन मांहिं लाल रे ॥ रयणि गमाफी दोहिलें, राजायें चित्त चाहिं लाल रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रहकालें पग नृपनां, जेटे नाणी आय लाल रे ॥ नृप कहे तुज मंत्रनी, सिद्धि थई निरपाय लाल रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ कुमर कहे कांईक थई, कांइक रही ठे शेष लाल रे ॥ अर्चन थंजतणुं करी, जाईस वली तेणे देश लाल रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ खबर करावा थंजनी, पहेलो मूक्यो जेह लाल रे ॥ सेवक ते तिहां आईने, बोल्यो धरी इम नेह लाल रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ तुम आदेशें हुं गयो, पुरबाहिर परजात लाल रे ॥ पोल तणी फाबी दिशें, दीठो थंज सुजात लाल रे ॥ सु० ॥ ॥ ए ॥ इम सुणी राजा ऊठीउ, ते नर साथें लेह लाल रे ॥ थंज समीपें आवीउ, निरखे दृष्टि जरेय लाल रे ॥ सु० ॥ १० ॥ लोक सहित पुर राजियो, आवे पूजण थंज लाल रे, तेहवे तेह निमित्तिउ, बोल्यो इम धरी दंज लाल रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ अफ़शे जे ए थंजने, समज्या विण नर कोई लाल रे ॥ तो कुलदेवी कोपशे, करशे अनरथ सोई लाल रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ राय प्रमुख पाठा खिसे, मनमां बी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

होता अठेह लाल रे ॥ नृप नणे पूजो तुमें, पूज प्र
भृति लेइ एह लाल रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ विधि पूर्वक
नाणी तिहां, पूजी बेठो ध्यान लाल रे ॥ ॐीपद मुख
थी उच्चरी, मेले माया तान लाल रे ॥ सु० ॥१४ ॥
दोढ पहोर वासर चढे, सेवक नृप आदेश लाल रे ॥
थंत्र उपाडी पुर नणी, पावन थई सविशेष लाल रे ॥
सु० ॥ १५ ॥ मंडपमां आडंबरे, थाप्यो आणी का
र लाल रे ॥ षटकरणी पत्थर शिला, कुमरे करावी
त्यार लाल रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ उन्नी खोसे मंडपें,
धरती मांहे बे हाथ लाल रे ॥ थंत्र निपुण निज सं
चथी, लेइ बांध्यो ते साथ लाल रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ बे
कर मुख ऊंचे रहे, शिला थकी ते थंत्र लाल रे ॥ बा
ण धनुष तेहथी ठवे, पछिमनें आरंन लाल रे ॥ सु०
॥ १८ ॥ सिंहासन नृपनां ठव्यां, दक्षिण उत्तर नाग
लाल रे ॥ गंधर्वें मांड्यो तिहां, गावा मधुरो राग
लाल रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ थंत्र धनुष पूजावीने, नृप
पासें ततकाल लाल रे ॥ कुमर कहे नृपति प्रतें, ते
डाव्या नरपाल लाल रे ॥ सु० ॥ २० ॥ नाणी नृपनी
नीडमां, देखी अवसर खास लाल रे ॥ जई बेठो गांध
र्वमां, पलटी वेश प्रकाश लाल रे ॥ सु० ॥२१ ॥ बेठा नृप

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सिंहासने, देव जिस्या सोहंत लाल रे ॥ परवरिया परिवारशुं, रूपें जग मोहंत लाल रे ॥ सु० ॥२२॥ ढाल थई ए बारमी, बीजे खंडें उदार लाल रे ॥ कांति कहे इहां परणसे, महाबल मलया नार लाल रे ॥ सु० ॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप न देखे कुमरने, तव बोल्यो अकुलाय ॥ रे जोवो नाणी किहां, गयो खबर ल्यो जाय ॥ १ ॥ कहे सेवक जोई तिहां, आव्यो नहीं अम मीट ॥ करथी बूटो किहां गयो, जिम फल पाके बींट ॥ २ ॥ नृप जाणे पहेला इणे, साध्यो मंत्र सुसाज ॥ साधन अर्द्ध रह्यो हतो, गयो हशे तस काज ॥ ३ ॥ वचन सवे तेहनां मल्यां, पण न मल्यो एक बोल ॥ कन्या वर महाबल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ४ ॥ अवसरें इहां आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन निःफल होसे, हैं हैं सरजण हार ॥ ५ ॥ कुंअर सुणी तिहां वस्त्रसुं, ढांकी वदन हसंत ॥ सर्व जणासे ठेहरू, इम मनमांहें कहंत ॥ ६ ॥ वात लही कन्या तणी, नृपें सकल यथार्थ ॥ मांहो मांहिं ते कहे, आव्या बुंशे अर्थ ॥ ७ ॥ मलया बाला बापकी, मारी विण अपराध ॥ हवे नृपनें किम वालशे, उत्तर देई अबाध ॥८॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

एहवामां नृप कहेणथी, ऊंचे स्वर संभलाई॥ निपुण नकीब कहे ईस्युं, राजसभामां आई ॥ ए ॥

ढाल तेरमी ॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो नृप हठाला रे, नरपति ढेगाला रे, थाउ उजमाला विकथा छोडीने रे, मंडपतलें आवो रे, निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जो डीनें रे ॥ १ ॥ शर पुंखी जोरें रे, थांभा मुख कोरें रे, करे घात कठोरें बे दल जूजूआं रे ॥ ते नृप महा बलने रे, प्रगटी छलकलिने रे, वरसे अटकलीने अम नृपनी धूआ रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, उठ्यो सपराणो रे, आवे हर्ष भराणो मंडपनें तलें रे ॥ इंद्र धनुषथी भारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां इम धारी ते पाछो वले रे ॥ ३ ॥ चौड नृपति नामें रे, उठ्यो तिहां हामें रे, आव्यो मंडप ठामें थईने सांसतो रे ॥ निरखी चिलकारा रे, जिम तपत अं गारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे ॥ ४ ॥ गौडाधिप हसतो रे, आव्यो धस मसतो रे, ते तो डरिउ खिसतो धनुष उपाडतो रे ॥ हूतो ए रसिउ रे, पण देवें मुशिउ रे, इम नृपगण हसियो ताली पाडतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक स्वामी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, आयो गजगामी रे, राखे नाहिं स्वामी बल करतो अरू रे ॥ शर नाखी वंको रे, थयो ते साशंको रे, जिम हुये सुकुल कलंको तिम जांखो परू रे ॥ ६ ॥ केता नवी ऊठे रे, केई बेठा पूंठें रे, केई शरनी मूठें नेदे थंननें रे ॥ पण थंन न नेद्यो रे, नृप टोलो खेद्यो रे, निज दर्प्प उछेद्यो बल आरंनीनें रे ॥ ७ ॥ मरकक मूठाला रे, लाज्या नूपाला रे, करता ढकचाला निंदे आप आपनें रे ॥ मांटी पण मूक्यां रे, नुजनुं बल चूक्या रे, साहामा वली ढूक्या कोई न चापमें रे, ॥ ८ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी सविलासें रे, प्रगटी नहीं पासें जनमां लाजशुं रे ॥ महबल ते तेहवे रे, थंन पासें एहवे रे, आव्यो धसि केहवे वीणा साजशुं रे ॥ ए ॥ तिहां वीण वजावी रे, आकाश गजावी रे, नूवया रीजावी जण तंती रसें रे ॥ वली धनुष उपाडी रे, बोल्यो अति नारी रे, परणीश हुं लाडी मुज बलने वशें रे ॥ १० ॥ गांधर्व ए धीठो रे, एहने विधि रूठो रे, नहीं ठे इहां मीठो खावो नीखनो रे ॥ इम कही नृप हसता रे, महबलशुं सुसता रे, रहेशो कर घसता कहुं मग शीखनो रे ॥ ११ ॥ ताण्यो धनुष ते सीधो रे, टंकारव कीधो रे, जाणे मद पीधो नृ

प गण लोटव्यो रे ॥ शर चाढी खंचें रे, नाखे परपंचें रे, खीलीनें संचें थांजो चोटव्यो रे ॥ १२ ॥ संपुट ज घमि्डे रे, माथे जे जमि्डे रे, अलगो जई पमि्ड बाणे आहएयो रे ॥ तेहमांथी सारी रे, नरराय कुमारी रे, प्रगटी मनोहारी वेश जलो बन्यो रे ॥ १३ ॥ श्रीखंम कपूरें रे, कस्तूरी पूरें रे, अंबरनें चूरें लेपी देहमी रे ॥ दिव्यालंकारें रे, अति शोजा धारें रे, श्रीपुंजने हारें ठवी बमणी चढी रे ॥ १४ ॥ बीमी कर मावे रे, जिमणे कर ठावे रे, वरमाल सुहावे हावें ते जरी रे ॥ दीपे द्युति जारी रे, जिम रतिपति नारी रे, जाणे नागकुमारी थंजमां ऊतरी रे ॥ १५ ॥ पेठी किम काठें रे, क्यारें किणे ठाठें रे, पूठे इति पाठें नृप कन्या प्रत्यें रे ॥ जीवी जस शक्तें रे, कन्या कहे विगतें रे, जाणे ते जुगतें कुलदेवी मतें रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में चूंपें रे, नाखी ते कूपें रे, राखी इंणे रूपें अम कुलदेवीयें रे ॥ वरशोमां जूंमो रे, एहने वर रूमो रे, आलोचीने ऊंमो चित्त देवी तियें रे ॥ १७ ॥ जूपतिना वारु रे, बल परखण सारू रे, रचियो ए वारु थंजो काठनो रे ॥ कनकाथी लीधो रे, श्रीहार प्रसिद्धो रे, तुजने तेणे दीधो सुंदर ठाठनो रे ॥ १८ ॥ चर्चित अति रूमे रे, मणि सोव

न चूके रे, उंपी बाजूके कोमल बांहमी रे ॥ कुलदेवी सुधारी रे, वरमाला धारी रे, थंज मांहिं उतारी तुं अमने जकी रे ॥ १ए ॥ फुःखकुं मुज नावुं रे, कारज थयुं कावुं रे, पण लागे ए मावुं जे महाबल नहीं रे ॥ जेणें थंज उघाड्यो रे, नृप गर्व लताड्यो रे, गंधर्व देखाड्यो ते जाग्यें वही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिवारें रे, नूपति फुःख जारें रे, महाबल तेणि वारें मुख ढांकी हसे रे ॥ थांजाथी निकसी रे, कुमरी कहे विकसी रे, नाख्यो थंज उकसी ते नर क्यां वसे रे॥ २१ ॥ देखाडे प्रकाशें रे, धाई मात उल्लासें रे, ऊनो थंज पासें श्लोक ते गोठवे रे ॥ नूपतिनी बाला रे, सुंदर वरमाला रे, महाबलनें विशाला कंठें लोठवे रे॥ २२ ॥ महाबल वर वरीउ रे, जाग्यें अति जरीउ रे, रतिपति अवतरीउ रूप समाजशुं रे॥ बिजे खंमें दाखी रे, ढाल तेरमी जांखीरे, लेजो रस चाखी कांति कहे ईश्युंरे॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ नूपति कोपें धमहड्या, बोले विषम वचन्न ॥ जूउ परीक्षा एहनी, वरीउ पुरुष रतन्न ॥ १ ॥ नृप मणि ढांकी आदस्यो, मूर्खपणे ए काच ॥ देव जिसी पात्री हुवे, ए उखाणो साच ॥ २ ॥ सहेशुं किम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जलपूर परें, प्रगट पराभव पाल ॥ हणी एह गंधर्वने, लेशुं बाल झलाल ॥ ३ ॥ इम कही ते हुई एकठा, हणवा उठ्या रूठ ॥ धवल कटक गंधर्वनें, ततक्षण वींटे झठ ॥ ४ ॥ वज्र सार ते कर ग्रही, वेण करण रोषाल ॥ करे प्रगट शर वर्षणें, पौरुष वर्षाकाल ॥ ५ ॥ अण सहेता प्रति घात तस, नाठा तेह वराक ॥ जे म दंभाग्रें बीहता, जाये दिशोदिश काग ॥ ६ ॥ भट्ट पुत्र परिचित तिहां, आयो एक नजीक ॥ महबलनें जाणी ईसी, भणी स्वस्ति निर्भीक ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ बावा किसनपुरी ॥ ए देशी ॥

॥ शूर नृपति कुल भासण चंद, पद्मावती देवीना नंद ॥ मोहन स्वस्ति ग्रहो ॥ आया इहां केम कहोजी कहो ॥ घणा दिवसनी हुती चाह, सफल हुई दीठा नरनाह ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ वायनी मारी कोयल जेम ॥ संभवे तुम आगम इहां एम ॥ मो० ॥ अलगा न कर्या मीटथी लेश, धीर्या किम नरपति परदेश ॥ मो० ॥ आ० ॥ २ ॥ परिकर साथें नहीं छे कोय, इम क्यों आया एकाकी होय ॥ मो० ॥ कारज को सोंपो महाराज, मुज लायक करीयें जेम आज ॥ मो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ इम सुणी त्यां रीज्यो नृप

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्त, पूछे कवण साचुं कहो मित्त ॥ मो० ॥ ते कहे इहां नहीं छे संदेह, माहाबल नामें कुमर होय एह ॥ मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वाध्यो जेहने हाथां हेठ, उंल खीयें नहीं किम ते नेठ ॥ मो० ॥ नृप कहे साचुं नि मित्तनुं वयण, आज हूउं मिल ते नररयण ॥ मो० ॥ आ० ॥ ५ ॥ आव्यो हशे एह गयणने माग, के वली धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कलाथी करतो केलि, अम जाग्यें पायो गजगेल ॥ मो० ॥ आ० ॥ ६ ॥ पूछीश पाछें सघली वात, पहेलां नृपनी टालुं घात ॥ मो० ॥ एम विमासी नृप आश्वास, समजावी वा ल्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या वर कन्या बेह, जोजन मूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जोव राव्यो ते नाणी राय, पण नवि लाधो किणहीं ठा य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते निरलोज, पवन परें न लहे किहां थोज ॥ मो० ॥ चंपकमाला साथें जूप, जुंजे जोजन सरस अनूप ॥मो०॥आ०॥ए॥ लगननो दाहाडो लीधो समीप, करे सजाई अति अ वनीप ॥ मो० ॥ समराव्या जल छांट्यां सेर, शणगारी नगरी चोफेर मो० ॥ आ० ॥ १० ॥ समीआणा ता एया वली खास, जाणे उतार्या सुर आवास ॥ मो० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कृष्णागरुना धूम धूखंत, आकाशें घण थइ वरखंत ॥ मो० ॥ आ० ॥ ११ ॥ तोरण माला जाक जमाल, घर घर वर्त्यां धवल धमाल ॥ मो० ॥ बीजे खंमे चौदमी ढाल, कांति कहे सुणो वचन रसाल ॥ मो०॥आ०॥ १२॥

॥ दोहा ॥

॥ राज जवनमां रसजरें, प्रगटया रंग अपार ॥ अजिनव शोजायें कस्यो, लीलायें संचार ॥ १ ॥ करे विलेपन कुंकुमें, साजन मांहोमांहिं ॥ देह धरी बाहिर रह्यो, जाणे राग उछांहिं ॥ २ ॥ कुलदेवी पूजी विधें, वजमाव्यां नीशाण ॥ अशन वसन तांबूलनां, लहे गुरु जन सनमान ॥ ३ ॥ नृत्य करे वारांगना, विध विध अंग उवट्ट ॥ सोहे मीन कुटुंबनी, लेती जेम पलट्ट ॥ ४ ॥ बांध्या जलके चंद्रुआ, जरतारी जर बाफ ॥ जेम अकालें युगतिनी, संध्या फूली साफ ॥ ५ ॥ शणगारें सारी सबल, सधवा सुंदर तेह ॥ कोकिल कंठे कामिनी, धवल दिये धरी नेह ॥ ६ ॥ मले जम लशुं जानीया, खमकंते केकाण ॥ सोंधे जीना सा मठा, गाहिम जस्या जुवाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ करमो तिहां कोटवाल ॥ एदेशी ॥

॥ महाबल मलया बाल, चंदन चर्चित सोह्या जू

षणोजी ॥ सुतरु मोहन वेलि, सरिखां दीसे बिहुं नि
र्दूषणोजी ॥ १ ॥ वाजे भूंगल भेरि, ताल कंसाल न
फेरी नादभुंजी ॥ शणगास्या गजराज, आगल चाले
अति उनमादशुंजी ॥ २ ॥ चामर छत्र ढलंत, फरह
रते केसरीये वाघे सज्योजी ॥ निरुपम थाप्यो मोड,
श्रीफल करमां सुंदर राजतोजी ॥ ३ ॥ कुंकुम तिल
क बनाय, तंडुल भालें चोढ्या उजलाजी ॥ परवरिया
घमसाण, तोरण आव्यो वर वधती कलाजी ॥ ४ ॥
मोती थाल वधाव, पधराव्या वर कन्या चोरीयेंजी ॥
भट्ट भणे जयमाल, सोहला गाया सरलें गोरीयें
जी ॥ ५ ॥ ब्राह्मण भणते वेद, पंचामृतना होम ति
हां कीयाजी ॥ चारे चोरी अंग, दीपे जिम पुरुषारथ
वींटीयाजी ॥ ६ ॥ बिहुंना छेहडा बांध, चारे फेरे मं
गल वरतियांजी ॥ प्रीति जिस्या सुसवाद, सार कंसा
र तिहां आरोगीयांजी ॥ ७ ॥ विधिपूर्वक कमनीय,
पाणी ग्रहण महोत्सव तिहां कियोजी ॥ नृप रा
णी आशीष, वचन इस्यो अति हेजें उच्चस्योजी ॥ ८ ॥
चंडिका चंद समान, अविचल होजो तुमची जोड
लीजी ॥ हयगयरथ धन कोडि, करमोचन वेलायें दे
भलीजी ॥ ए ॥ वरकन्या मन रंग, मोहलामांहे तिहां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पधरावियांजी ॥ संतोष्यो परिवार, मान महोत दै सहु राजी कीयांजी ॥ १० ॥ लोक कहे लख कोमि, मसती जोमी विधाता मेलवीजी ॥ मुद्रा नंग समान, रतिपति नायकनी जोमी हवीजी ॥ ११ ॥ अवसर लही अवनीश, पूछे त्यां माहाबलने खांतशुंजी ॥ एकाकी इंणे गाम, लगन समय आव्या किण भांतशुंजी ॥ १२ ॥ कुमर जणे महाराय, जाणुं नहिं किण देवी आणीउंजी ॥ नृप कहे सघलुं साच, कुलदेवी निपजावे जाणीउंजी ॥१३ ॥ वली माहाबल कहे एम, शीख करो तो चालुं घर जणीजी ॥ मुज विरहें मा तात, करतां होशे चिंता मन घणीजी ॥ १४ ॥ बार पहोरमां जाइ, न मलुं तो ते मरशे नेहथीजी ॥ करि करुणा करुणाल, शीख दीयो हवे मुजने तेहथीजी ॥ १५ ॥ पमवेने दिन सूर, ऊग्या पहेलो जो जाई मलुंजी ॥ जीवंता मा बाप, तो देखुं हवे कहुं वली केटलुंजी ॥ १६ ॥ राय कहे सुण धीर, धैर्य धरो मत थाउ आकलाजी ॥ सघलानी मुज चिंत, करवी में जाणो गुण आगलाजी ॥ १७ ॥ बाशठ योजन दूर, पोहवीठाण नगर इहांथी अछेजी ॥ आज रयणी एक याम, पमखोजी वोलावीश हुं पछेजी ॥ १८ ॥ करहलिया

करी साज, करवतियां धर काटण कोरमीजी ॥ संप्रेमी श ततकाल, असवारी मनधारी ए ठमीजी ॥ १ए ॥ कोप्या जे नरपाल, सतकारी बोलावुं तेहनेजी ॥ त्यां लगें धीर धराय, रहो रहो इंमहिज करतां ए बनेजी ॥ २० ॥ इंम कही ऊठ्यो नृप, बीजे खंमें सरस सोहामणीजी ॥ ए पन्नरमी ढाल, कांतिविजय सविलास पणे जणीजी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कन्या प्रत्यें, रहस्य पणें तजी लाज ॥ करी प्रतिज्ञा तुज मुखें, ते में पूरी आज ॥ १ ॥ गत दिवसें देवी गृहें, मिल्या रत्नसमां जेह ॥ कही न सक्या निज निज कथा, हवे कहीजें तेह ॥ २ ॥ एहवे वेगवती तिहां, मलयानी धामाइ ॥ आवी कर जोमी बिन्हे, पूछे एम हसाइ ॥ ३ ॥ कारज ए देवी तणां, अथवा अवर उपाय ॥ अम मन संसय आफलें, कहो सुजग समजाय ॥ ४ ॥ कहे कुमरी ए माहरे, वीसवासणी छे स्वामि ॥ सुखें कहो शंका तजी, एह मुज जामणि ठाम ॥ ५ ॥ गजमुख दीधी मुद्रिका, तेह प्रमुख सुचरित्र ॥ जांखीने दिन अपरनुं, संध्यानुं कहे चित्र ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल शोलमी ॥ सखीरी आयो उन्हालो अटारमो ॥ ए देशी ॥

॥ पियारी सांज समय बीजे दीने, बीजे दीने, नृपथी मांझी प्रपंच ॥ मृगाक्षी सांजलो ॥ पियारी मंत्र साधन मिश नीकळ्यो, नीकळ्यो, नूप कनें लेई लंच ॥ मृ० ॥ १ ॥ पि० ॥ ते डव्यें सूतारना ॥ सू० ॥ उपकरण लेई मूल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ रंग अनेक लीया वली ॥ ली० ॥ मृगमद प्रमुख अतूल ॥ मृ० ॥ २ ॥ पि० ॥ सामग्री इम संग्रही ॥ सं० ॥ आव्यो देवी धाम ॥ मृ० ॥ पि० ॥ विवर सहित ते फालिका ॥ फा० ॥ कीधी घणी अन्निराम ॥ मृ० ॥ ३ ॥ पि० ॥ खीली ठानी तेहमां, ते० ॥ बेसारी करी संच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ साल संचे मुख ढांकणो ॥ मु० ॥ नीपायो परपंच ॥ मृ० ॥ ४ ॥ पि० ॥ एहवे त्यां केइ तस्करा ॥ के० ॥ मूकी नीत मंजूष ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तस्कर एक ठवी गया ॥ ठ० ॥ ते पुर चोरी हुंश ॥ मृ० ॥ ५ ॥ पि० ॥ पूर्व सामग्री गोपवी ॥ गो० ॥ हुं थयो चोर समान ॥ मृ० ॥ पि० ॥ जाणी एकाकी ते कनें ॥ ते० ॥ उन्नो रह्यो करी शान ॥ मृ० ॥ ६ ॥ पि० ॥ मुजने निरखी इम कहे ॥ इ० ॥ ते अति लोन्नने व्याप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तालुं नांजी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नवि शकुं ॥ न० ॥ तुं मुज खोली आप ॥ मृ० ॥ ७ ॥ पि० ॥ तुरत उघाडी में दीयो ॥ में० ॥ लीधो तिणे सवि माल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ताणी बांधे पोटली ॥ पो० ॥ द्रव्यतणी लोन्नाल ॥ मृ० ॥ ८ ॥ पि० ॥ बीहीतो मुजने इम कहे ॥ इं० ॥ शूकी सतनी मूंठ ॥ मृ० ॥ पि० ॥ जाउंतो हवे चोर ते ॥ चो० ॥ के नृप जन करे पूंठ ॥ मृ० ॥ ए ॥ पि० ॥ मारे मुजने मूलथी ॥ मू० ॥ थरके तेहथी चित्त ॥ मृ० ॥ पि० ॥ थानक मुज जीव्या तणुं ॥ जी० ॥ देखाडो कोई मित्त ॥ मृ० ॥ १० ॥ पि० ॥ पद्मशिला ते जवननी ॥ ते० ॥ में उघाडी खांच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ माल सहित ते चोरने ॥ ते० ॥ घाल्यो उंचे खांच ॥ मृ० ॥ ११ ॥ पि० ॥ तिमहीज ऊपर ते ठवी ॥ ते० ॥ विवर अंतर राख ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊतरतां अंगण तलें ॥ अं० ॥ दीठो वृक्षतरु जांख ॥ मृ० ॥ १२ ॥ पि० ॥ दोडी वृक्ष ऊपर चढ्यो ॥ ऊ० ॥ रहुं जोतो तुज वाट ॥ मृ० ॥ पि० ॥ दीठो वृक्षनी कूखमां ॥ कू० ॥ नूषण वसननो थाट ॥ मृ० ॥ १३ ॥ पि० ॥ अपहरि लीधा देवीयें ॥ दे० ॥ पहेलो मुज समुदाय ॥ मृ० ॥ ॥ पि० ॥ ते तिण ठांनां गोपव्यां ॥ गो० ॥ दीसे छे ए प्राय ॥ मृ० ॥ १४ ॥ पि० ॥ में लीधो ते उलखी ॥ उ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निरखुं बेठो गुज ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊवट वाटें आ
वती ॥ आ० ॥ नजरें पमी तुं मुज ॥ मृ० ॥ १५ ॥
पि० ॥ वमतरुथी हुं ऊतरयो ॥ हुं० ॥ साहामो आ
व्यो दोम ॥ मृ० ॥ पि०॥ बेहुं मल्यां ए माहरी ॥ मा० ॥
वात कही बल गेम ॥ मृ० ॥ १६ ॥ पि० ॥ बीजे
खंमें शोलमी ॥ शो० ॥ ए थई निरुपम ढाल ॥
मृ० ॥ पि० ॥ कांति कहे मलया हवे ॥ म० ॥ कहेशे
वात रसाल ॥ मृ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर जाणे में जुगतिशुं, जांख्यो मुज विरतंत ॥
तुं पण कहे ताहरो हवे, मूलथकी जिम हुंत ॥ १ ॥
ते कहे तुम शिक्षा ग्रही, पेठि हुं पुरमांहिं ॥ पुरुष वे
ष मगधासदन, पुबुं पग पग गांहिं ॥ २ ॥ घर न
मली पुरमां जमी, किहांइ न दीठी स्वाम ॥ बेठी देव
ल एकमां, दीठी मगधा नाम ॥ ३ ॥ नाखी वांके
फांकमे, धूरत एकें धूत ॥ जावा लाग लहे नहीं, रो
की सबल कुसूत ॥ ४ ॥ कारण में पूब्या थकी, बो
ली करती रींग ॥ अहो सुगुण मुज पाठले, वलगो
बे एक विंग ॥ ५ ॥ धूरत एह पूंठे पड्यो, लंघावे बे
मुज ॥ क्षण क्षण थइ विरुउ नमे, गूमम जेम अरु

ज्ञ ॥ ६ ॥ निःकारण मुजनें इणे, नीमी संकट मांहि ॥ वात कहुं ते आदिथी, सुणजो चित्तनी चाहिं ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ए देशी ॥

गतदिन बेठी हो राज, मंदिर बारें राज, धूरत त्यारें रे, एतो आव्यो माल्हतो ॥ १ ॥ हास करीने हो राज, में बोलाव्यो राज, इंमतो न जाण्यो रे धूतारो जन एह छे ॥ २ ॥ मुज तनु मरदे हो राज, खांते करीने राज, कांइक आपुं रे हुं तुमने रूअडुं ॥ ३ ॥ वचन सुणीने हो राज, आव्यो समीपें राज, मर्दी माहारी रे इणे देह चोलीने ॥ ४ ॥ हुं पण तूठी हो राज, मनमां वारु राज, जिमवा सारु रे मेंतो एहनें नोतर्यो ॥ ५ ॥ एह कहे माहरे हो राज, काम नहीं छे राज, नोजन न करुं रे कांइक मुने द हवे ॥ ६ ॥ पीत पटोली हो राज, ले नहीं देतां राज, सोगमे देतां रे दामें राजी ना थयो ॥ ७ ॥नाम न नांखे हो राज, कांइक मागे राज, आज ए आवी रे लागो पूंठे माहरे ॥ ८ ॥ देहरे बेसारी हो राज, मुजनें लंघावे राज, जावा न दीये रे क्यांहिं फीट्यो बाहिरें ॥ ए ॥ तव में विचारयुं हो राज, जो हुं दुःखमां राज, जगमो निवेमी रे वेश्याने छोमवुं ॥ १० ॥ तो मुज थावे हो राज, कारज

एहथी राज, इंम निरधारी रे बेठी त्यां हुं ते कन्हें ॥ ११ ॥ मगधानें काने हो राज, कहि कांइ ठानें राज, में कह्युं बिहुंने रे जाउं जमवा जोखमां ॥ १२ ॥ त्रीजे ते पहोरें हो राज, जगमो हुं नांजीश राज, बेहेला आंहिं रे बेहु पाठां आवजो ॥ १३ ॥ माहाबल पूछे हो राज, वाद ए मोटो राज, किम करी नांज्यो रे गोरी कहेने ते हवे ॥ १४ ॥ पंथनी थाकी होराज, देहरे हुं सूती राज, त्रीजे पोहोरें रे फरी बेहु आवीयां ॥ १५ ॥ मुजने ऊठाम्फी हो राज, मगधानी दासी राज, घट एक ढांकी रे मांहे ठानो त्यां ठवे ॥ १६ ॥ में कह्युं तेहने हो राज, जण करी साखी राज, कांइक अपावी रे तुजनें राजी हुं करुं ॥ १७ ॥ ते कहे वारू हो राज, कांइक अपावो राज, तो नहीं दावो रे एहथी माहारे आजथी ॥ १८ ॥ मगधाने कीधी होराज, शान में ज्यारें राज, मगधा त्यारें रे नांखे एहवुं धूर्तनें ॥ १९ ॥ हुंतो हारी हो राज, तुं हवे जीत्यो राज, कांइक मूक्युं रे मेंतो मांहे कुंनमां ॥ २० ॥ ते तुं लेइनें हो राज, ठेहको ढोके राज, इंम सुणी आव्यो रे रंगें देवलमां वही ॥ २१ ॥ कुंन निहाली हो राज, ढांकणी उपाडी राज, कांइक लेवारे घाले मांहे

हाथ ते॥ २२ ॥ फणिधर महोटो हो राज, हाथें वलगो राज, न रहे अलगो रे वांको कर आगळथतां ॥ २३ ॥ ते कहे इहां तो हो राज, कांइक दीसे राज, मगधा हसतीरे जांखे एह छे ताहरो ॥ २४ ॥ में मुज बोल्यो हो राज, ते एह दीधो राज, तुज देणाथी रे कीधो माहारे बूटको ॥ २५ ॥ लोक हसंता हो राज, कहे तिहां बहुलां राज, एहने दीधुं रे एणे कांइक रूअडुं ॥ २६ ॥ विषधर फुक्यो हो राज, ते नर मूक्यो राज, तोतिल नामें रे देवी केरें बारणें ॥ २७ ॥ मुजने तेडी हो राज, मगधा साथें राज, निजघर आवी रे पाड माहारो मानती ॥ २८ ॥ बीजे खंडे हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति उमंगें रे जांखी रूडी नेहशुं ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्वार रही में तेहने, आप्यो इम उच्चाट ॥ तुज घर नृपद्वेषी वसे, पेसुं नहीं ते माट ॥ १ ॥ इम सुणी ते विलखी थइ, चिंते एहवुं चित्त ॥ ए नाणी छे कोइक नर, जाणे रहस्य चरित्त ॥ २ ॥ बीहती मन मां बापडी, मुजने इम कहे वाण ॥ रखे सुगुण कहे ता किहां, कहुं छुं जोडी पाण ॥ ३ ॥ किहां छुपाडुं

तुम थकी, न रहे ठानी नेट ॥ कहो छिपायो किहां छिपे, दाई आगल पेट ॥ ४ ॥ बने कपट करवो तिहां, जिहां कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मले, काढे सघलो ताग ॥ ५ ॥ सुईछिद्र करे तिता, पूरण धागा साख ॥ सज्जन सहेजे गुण करे, ढांके अवगुण लाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पानुं पड्युं, तेतो पूरव जोग ॥ गले ग्रहीनें काढवा, हवे बन्यो छे जोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ चंदनरी कटकी जली ॥ एदेशी ॥

॥ वीरधवलनी गोरडी, कनकवती नामेण ॥ नाणि डा हो राज, चरित्र सुणो एहवी नारीनां ॥ कपट करीने नृपनंदनी, कूपें नखावी एण ॥ ना० ॥ च० ॥ १ ॥ कूड कपट जाणी नृपें, रोकीती निज गेह ॥ ना० ॥ नासी निशि आवी रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ बलती जेहवी गाडरी, पेठी घरने खूण ॥ ना० ॥ मुज घरथी काढो परी, करीनें कांईक टूंण ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश हुं उपगारडो, बीजो ए गुण जोई ॥ ना० ॥ पारथीयां होये स्वारथी, स्वारथ विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधानें कह्युं, काढुं जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर वधे तो बेहुमां, जाणयो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तोपण तुज उपरोधथी, करशुं हुं ए काज ॥ ना० ॥ ते मुज रातें मेलवे, जिम करुं काढण साज ॥ ना० ॥ च० ॥ ६ ॥ गणीकायें अति आदरें, नोजन मुजने दीध ॥ ना० ॥ रातें एकांतें मुने, कनका मेलवी सीध ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥ मुज साथें रागें नरी, वदती मीठा बोल ॥ ना० ॥ नोग नणी मुज प्रारथे, करती नयण कल्लोल ॥ ना० ॥ च० ॥ ८ ॥ में नांख्युं तेहने ईस्युं, मुज वालो छे एक ॥ ना० ॥ ते अति अरथी नारीनो, मनमथ रूपें छेक ॥ ना० ॥ च० ॥ ए ॥ प ण कामें गामें गयो, आज करी संकेत ॥ ना० ॥ मुज मलशे देवी घरें, रातें काले सहेत ॥ ना० ॥ च० ॥ १० ॥ मुज साथें तुं आवजे, देशुं जोग बनाय ॥ ना० ॥ नहींतो पण ए आपणी, प्रीति कीहां नहीं जाय ॥ ना० ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे कनका क्यांथी तुमें, आव्या कुंण तुम जात ॥ ना० ॥ में कह्युं विद्दु क्षत्री अमें, चाल्या विदेश सखात ॥ ना० ॥ च० ॥ ॥ १२ ॥ मुज वचनें ते वीशमी, नांखे निज अवदात ॥ ना० ॥ गोष्टि करंतां रातमी, वीती थयो परनात ॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥ पूठ्युं प्रपंचें में वली, तेह ने प्रनातें तांई ॥ ना० ॥ छे तुज पासें के नहीं, आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नरणादिक काई ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तव मुजने देखाकीयां, आनूषण तेणें काढि ॥ना० ॥ हसतां में कह्युं थोकलां, ते कहे इम रस चाढि ॥ ना० ॥ च० ॥ १५ ॥ हार अछे माहारे वली, नामें लखमीपुंज ॥ ना० ॥ गुप्त धस्यो ते काढतां, आवे छे मुज धुंज ॥ ना० ॥ च० ॥ १६ ॥ में पूछ्युं ते क्यां धस्यो, ते कहे चहुटा मांहिं ॥ ना० ॥ शूना घर पासें वको, कीर्त्ति थंन छे त्यांहिं ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचें नंकारीयो, ते हमां मूक्यो काट ॥ ना० ॥ न शकुं जावा वासरें, कर ती हुं तिण वाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ रातें आज जई तिहां, आणीश तेह छिपाई ॥ ना० ॥ जाई शके जो तुं तिहां, तो लेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥ ॥ १९ ॥ नहीं तो सांजे मुजनें, कहेजे जेहवुं होय ॥ ना० ॥ इम आलोच कस्यो घणो, मांहोमांहें रस ढो य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालथकी हुं उतरी, आ वी मगधा नाल ॥ ना० ॥ बीजे खंके अढारमी, कांतें नणी इम ढाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मगधा कहे मुजने हसी, कहे केती छे ढील ॥ में कह्युं ए तुज घर थकी, काढी छे अकखील ॥ १ ॥ सं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

च कस्यो छे एहवो, पूरी पूरण पूछ ॥ वारंतां पण रा
तमां, जाशे कनका ऊठ ॥ २ ॥ सामग्री जोजन तणी,
करे मगधा अति नेह ॥ जमी रमी तिहांथी वली, ग
ई दिवसने छेह ॥ ६ ॥ छाना थानक थंजनो, जोतां
न लह्यो हार ॥ रातें कनकाने वली, जई जांख्यो सु
विचार ॥ ४ ॥ हार लेई तुं आवजे, देवी जवन मजा
र ॥ पूछीने मगधा प्रत्यें, हुं चाली निशिचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥ आछे लालनी देशी ॥

॥ रयणी अंधारी मांहे, वहेती हुं चित्त चाहे, आछे
लाल ॥ अध मारगें जूली पमी ॥ आफलती पूर सेर,
खाती घारण फेर, आ० ॥ जिम तिम पामी वाटमी
॥ १ ॥ आवी हुं तुम पास, जांखी वात प्रकाश,
आ० ॥ कनकवती जोइ आवती ॥ हार लेइने एह,
आवे छे अतिनेह, आ० ॥ कनका तुमने चाहती ॥ २ ॥
वात सुणी इंम नाह, आणी टेक अथाह, आ० ॥
प्रीति वचन ते उछप्यां ॥ बोलवुं नही घटमान, एह
थी होय नुकशान, आ० ॥ इम कही थें छाना छिप्या
॥ ३ ॥ कनका मन उत्कंठ, आवी मुज उपकंठ ॥
आ० ॥ तव में इम कह्युं तेहनें ॥ आवी म कर कांइ
सोर, छा छे इहां चोर, आ० ॥ दे मुज जे होय तु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज कनें ॥ ४ ॥ राखुं छिपाकी क्यांहिं, तव ते आपे त्यां हिं, आ० ॥ बगचो हाथें उचकी, मैं तेहमांथी टालि, काढी वस्तु निहालि, आ० ॥ हार अने वली कंचूकी ॥ ५ ॥ बाकी सवि समुदाय, बांध्यो एक मिलाय, आ० ॥ चोर मंजूषें ते धस्यो ॥ मैं कह्युं तेहने एम, थरके छे तुं केम, आ० ॥ थानक मैं ताहरे कह्यो ॥ ६ ॥ ज्यां लगें चोर न जाय, त्यां लगें तें न खमाय, आ० ॥ पेश मंजूषें ते जणी ॥ पेठी ते निर्जीक, मैं धारी मन ठीक, आ० ॥ तालुं दीधुं आहणी ॥ ७ ॥ आपण बे अति हुंस, ऊपाडीने मंजूष, आ० ॥ गोलामां वहेती करी ॥ वैर प्रथमनुं वालि, वाही नीर विचाल, आ० ॥ करताशुं करीयें खरी ॥ ८ ॥ मांज्युं पिउ ततकाल, थूंकें माहारुं जाल, आ० ॥ रूप सहजनुं हुं लही ॥ तुम आणाथी अंग, दीधुं विलेपण चंग, आ० ॥ पहेरी पटोली मैं वही ॥ ए ॥ पहेस्यां कुंडल खास, रविशशी मंडल जास, आ० ॥ लाधां जे वडने थडें ॥ पहेस्यो कंचुक सार, कंठें ठव्यो ते हार, आ० ॥ वरमाला धारी जलें ॥ १० ॥ पेठी संपुट मांहि, गुहिर विवर अवगाहि, आ० ॥ त्यारें मुज सवि शीखवी ॥ निसुणे वीणा घोर, तव ए खीली चोर,

आ० ॥ काढे इहांथी नीठवी ॥ ११ ॥ इम कही बी
जे खंभ, थाप्युं शीश अखंभ, आ० ॥ तेहमां वसी स्वी
ली जभी ॥ राख्या पवननां माग, नीचें छानें लाग,
आ० ॥ चतुराईशुं ते घभी ॥ १२ ॥ जाणुं एती वात,
कहो आगें अवदात, आ० ॥ में न लह्या तिहां संक्र
मी ॥ बीजे खंभें एह, कांति कहे धरी नेह, आ० ॥
ढाल नणी जेगणीशमी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे माहाबल माननी सुणो, आगें जे हुई वा
त ॥ थंभ तिस्यो में चीतस्यो, जिम जाएयो नवि जा
त ॥ १ ॥ रंग प्रमुख जे ऊगस्या, ते वाह्या जलपूर ॥
एहवामां फरी चोर ते, आव्या नवन हजूर ॥ २ ॥
चोर सहित पेटी तिकें, जिहां तिहां जोतां दीठ ॥ तस
शानें बोलावतां, कीधा आदर इठ ॥ ३ ॥ मुज पूछे मंजू
षशुं, दीठो एक किहां चोर ॥ बीकुं में देई आदरें, कह्युं
एम तिण ठोर ॥ ४ ॥ थंभ एहजो पूर्वनी, पोलें मूको
आज ॥ तो देखाडुं चोर ते, व्यवहारें नहीं लाज ॥ ५ ॥
॥ ढाल वीशमी ॥ थें तोनें आया जेलगुं, जेलगाणाजी ॥
जिरमट खाश्यो गाल नणया ॥ ए देशी ॥
॥ चोर कहे इम जमही ॥ गुणवंताजी ॥ राज नलें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मल्या नाग्यथकी ॥ काम करे शुं ए वही ॥ उजमंता जी, अरथें अवसर एह तकी ॥ १ ॥ गुण करतां गुण कीजीयें ॥ गु० ॥ एहमां पाऊ न कोइ इहां ॥ कहोतो काढी दीजीयें ॥ उ० ॥ जीव सरखो काज जीहां ॥ २ ॥ जीवजीवातन सारीखो ॥ गु० ॥ ते जातां होय डुःख घणो ॥ पोतावटीनुं पारिखुं ॥ उ० ॥ लहीयें अर्थ सरे बमणो ॥ ३ ॥ इम कही ते थया एकठां ॥ गु० ॥ धन दाटी तेह सिंधु तऊँ ॥ उपाऊे मली सामटा ॥ उ० ॥ थंज्ञ तिहांथी एक धऊँ ॥ ४ ॥ ते पूंठें हुं चालियो ॥ गु० ॥ पूरव पोल समीप गया ॥ वंछित थल देखाऊियो ॥ उ० ॥ ते तिहां मूकी निचिंत थया ॥ ५ ॥ में जाण्यो जो गोपव्यो ॥ गु० ॥ देखाऊुं ते चोर हवे ॥ तो ए टोलो कोपव्यो ॥ उ० ॥ धन लोज्ञें तस लोही पीवे ॥ ६ ॥ इम धारी अंतर वटें ॥ गु० ॥ उत्तर कूऊं एम कह्युं ॥ लोज्ञ वशें तेणें चोरटे ॥ उ० ॥ तालुं ऊघाऊी डव्य ग्रह्युं ॥ ७ ॥ गोला सिंधु प्रवाहमां ॥ गु० ॥ तरती मूकी मंजूष सुखें ॥ तेह उपर चढी राहमां ॥ उ० ॥ नदीयें थई ए जाय मुखें ॥ ८ ॥ दीवा में सघली परें ॥ गु० ॥ पासें ऊन्ने चरित्त घणां ॥ चोर सहु इम उच्चरे ॥ उ० ॥ साच चरित ए चोर त

णां ॥ ए॥ रातसूधी ते नीरमां ॥ गु० ॥ जाशे तरतो भूमि कीती॥ देशुं वरू जंजीरमां॥ ज० ॥ग्रहिशुं करशे जेय थिती ॥ १० ॥ जाशे ए किहां वेगलो॥ गु० ॥ चोटी एहनी हाथ अछे ॥ हमणां मूक्यो मोकलो ॥ ज० ॥ लेशे फल रस पाक पछें ॥ ११ ॥ इम कहेतां मन आमले ॥ गु० ॥ चोर गया निज काज वगें ॥ यत न करी में एकले ॥ ज० ॥ राख्यो थंज्ञ प्रज्ञात लगें॥ १२ ॥ प्रहकालें जण भूपनो ॥ गु० ॥ आव्यो निरख ए थंज्ञ तिहां ॥ हुं थई अलख स्वरूपनो॥ ज० ॥ बेठो आवी छे भूप जिहां ॥ १३ ॥ इत्यादिक वीती कथा ॥ गु० ॥ कहीने वली महाबल भणें ॥ काढुं चोर ते सवैथा ॥ ज० ॥ शिखर ठव्यो जे जुवन तणे ॥ १४ ॥ चालीश जो हुं निजपुरें ॥ गु०॥ तो मरशे तिणें भीरू पड्यो ॥ चढशे पाप खराखरे ॥ज०॥ इंणे फिकरें मुज चित्त नड्यो॥ १५॥ तुं इहां रहेजे हुं वही ॥ गु० ॥ आवीश तेहनो सूल करी ॥ कहे मलया रहेशुं नहीं ॥ ज० ॥ साथें आवीश रंग धरी ॥ १६ ॥ तव कुमर विचारी चित्तमां ॥ गु० ॥ वेगवतीने एम भणे ॥ जो नृप आवे तुरतमां ॥ ज० ॥ तो कहेजो इम निपुण पणे ॥ १७ ॥ गोलातटें देवी नमी ॥ गु० ॥ आवशे कुमर इहां ह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मणां ॥ मानत किम शकीयें गमी ॥ उ० ॥ मान्या होय जे देव तणा ॥ १७ ॥ इम कही चाल्यो तिहां थकी ॥ गु० ॥ राति समय देवी भुवनें ॥ वारी पण नवि रही शके ॥ उ० ॥ मलया साथें हुइ सुमनें ॥ १९॥ बीजे खंडें वीशमी ॥ गु० ॥ ढाल भली अति सरस रसें ॥ सुणतां श्रोताने गमी ॥ उ० ॥ कांति कहे मनने हरसें ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ साम दाम दंडें करी, वीरधवल भूपाल ॥ समजाव्या नरपति घणुं, पण समजे नहीं हठाल ॥ १ ॥ तेह कहे परभातमां, मारी तुज जामात ॥ कन्या लेइ चालशुं, तुं न करे अम तात ॥ २ ॥ वचन सुणि भूपति चक्यो, आवे भुवन विचाल ॥ साज करावे करहलि, संप्रेरुण वर बाल ॥ ३ ॥ चुंप करावण आविउ, वर कन्या भवणेह ॥ दीठा नहीं पूछ्युं तदा, वेगवती कहे तेह ॥ ४ ॥ बेठो जोवे वाटडी, भूपति करतो चिंत ॥ रात पडी तव जिहां तिहां, शोध्यां पण न मिलंत ॥ ५ ॥ खबर लही नृप नंदनां, कटक गयां परभात ॥ आव्या तिम निज निज पुरें, विलख वदन विख्यात ॥ ६॥ जामाता कन्या तणी किहां न लही नृप सूज ॥ दुःखियो भूपति चित्तमां, चिंते एम अमूंज ॥ ७॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ढाल एकवीशमी॥धिग धिग धणनी प्रीतमी ॥ए देशी
॥नरराज अति चिंता करे, मनमां पोषी दाह ॥ वर कन्या बिहुं किहां गयां, ए तो अचरिज रे दीसे जगनाह ॥ १ ॥ नूपति त्रटकीने कहे, कुंण जाणे रे एह अकल सरूप ॥ जोयां पण लाधां नहीं, थयुं होशे रे कांइ विपरिय रूप ॥ नू० ॥ २ ॥ किहां नगरी चंद्रावती, किहां नगर पोहवीठाण ॥ किहां कन्या महाबल किहां, एतो विभ्रम रे रचना अहिनाण ॥ नू० ॥ ३ ॥ अथवा दैवें बेहुनो, संयोग इम किम कीध ॥ इंद्रजाल परें कारिमो, देखामी रे किम जरूपी लीध ॥ नू० ॥ ४ ॥ तुज चित्तमां एहवुं हतुं, करवुं दैव अनिष्ट ॥ तो मूलथकी परगट करी, क्यां पाड्यो रे एह माहारी इष्ट ॥ नू० ॥ ॥ ५ ॥ नवि दीधुं नोजन नलुं, नहीं दीधुं लीध उदालि ॥ मणि हीणुं नूषण नलुं, पण पमिउं रे जश मणि ते टालि ॥ नू० ॥ ६ ॥ हण्या डुष्ट किण वरीयें, अथवा निरुध्यां केण ॥ के किण देवें अपहर्यां, दंपती दोइ रे आव्यां नहीं तेण ॥ नू० ॥ ॥ ७ ॥ रूप करी महाबल तणुं, आव्यो हतो कोइ चोर ॥ परणी निज देशें गयो, मुज कन्या रे काल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जानी कोर ॥ जू० ॥ ७ ॥ कुमर कुमरी रूपें करी, ज्रांति मुज मन घालि ॥ मरण थकी वारी गयां, करु णालां रे केइ अथवा विचालि ॥ जू० ॥ ए ॥ शुं करुं केहने कहुं, कुंण लहे मुज मन पीरु ॥ इंम कहेतो गलहथ करी, नृप बेठो रे पड्यो चिंता नीरु ॥ जू० ॥ ॥ १० ॥ वेगवती वेगें कहे, प्रजु धरो मनमां धीर ॥ तेहिज मलया ए हती, तेह हुतो रे एह महबल वीर ॥ जू० ॥ ११ ॥ पण रातमां जातां वनें, ठल ठेतर्यां ततखेव ॥ कोइक वैरी विरोधथी, संजवियें रे हरि या किणें देव ॥ जू० ॥ १२ ॥ देशाउर पुर पर्वतें, वनजूमि विषम प्रदेश ॥ मूकी नर विशवासिया, जो वरावो रे तजी अपर किलेश ॥ जू० ॥ १३ ॥ प्रथम पुहवीठाण पुर दिशि, तुरत करवी शोध ॥ किणहीक कारणथी कदे, नारी लेई रे गयो होय तिहां योध ॥ जू० ॥ १४ ॥ सूरपाल नरिंदनें, एह सयल जणावो वात ॥ ते पण खबर करे वली, करतां इंम रे सवि आ वशे धात ॥ जू० ॥ १५ ॥ नलुं नलुं जूपति कहे, तें कह्यो साहु उपाय ॥ वेगवतीने सराहतो, तिम कर वा रे नरपति सज थाय ॥ जू० ॥ १६ ॥ मलयकेतु निजपुत्रनें, देई शीख नृप ससनेह ॥ सूरपाल दिशि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मोकल्यो, कहेवानें रे व्यतिकर सवि तेह ॥ नू० ॥ ॥ १७ ॥ हयगय सुन्नट रथ साजशुं, ते कुमर निय त प्रयाण ॥ कुशलें मलशे नूपनें, होशे रूमा रे इहां कोमी कल्याण ॥ नू० ॥ १७ ॥ ढाल एह एकवीश मी, इम कही कांति रसाल ॥ जुगतें बीजा खंमनी, नणतां होये रे घर घर मंगल माल ॥ नू० ॥ १ए ॥

॥ चोपाई ॥ खंम खंम रस बे नवनवा, सुणतां मीग शाकर लवा ॥ निर्मल मलय चरित्र जग जयो, बीजो खंम संपूरण थयो ॥ २० ॥

॥ इति श्री ज्ञानरत्नोपाख्यान द्वितीयनाम्नि मलय सुंदरिचरित्रे पंमितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुंदरीपाणीग्रहणप्रकाशको नामा द्वितीयः खंमः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्व गाथा ॥ ५७५ ॥

॥ अथ तृतीय खंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजो खंम घमंमशुं, पूरण कीध प्रगट्ट ॥ हवे त्रीजो कहेवा नणी, उमग्यो रंग गरट्ट ॥ १ ॥ प्रेमें प्रणमी शारदा, कहेशुं शेष चरित्र ॥ अति रसशुं श्रोता सुणी, करजो करण पवित्र ॥ २ ॥ हवे कुमर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वनमां जई, मलयानें पजणंत ॥ फिरवुं निशि सम शानमां, नारीनें न घटंत ॥ ३ ॥ ते माटे नर रूप तुज, करुं कही इम जाल ॥ तिलक कस्युं आंबारसें, गोली घसी ततकाल ॥ ४ ॥ नारी रूपें नर हुउं, थयां बेहु संबंध ॥ देवी गृहनां शिखरथी, काढे चोर निरुद्ध ॥ ५ ॥ कहे इस्युं रे गत दिनें, गया चोर तुज देख ॥ जा कुशलें जिहां रुचि होवे, तिहुनो पंथ उवेख ॥ ६ ॥ प्राण लाज धनलाज में, तुम पसायें लद्ध ॥ इम कही ते नमते घणुं, तेणे पयाणुं कीध ॥ ७ ॥ बिहुं जुव नथी ऊतरी, आवे वृक्षतलें आप ॥ तव तिहां गयणे गेबनो, सुणयो जूत आलाप ॥ ८ ॥ कुमर झरंतो जू तथी, करवा यतन प्रकार ॥ ततक्षण कामिणी कंठ थी, लीए उतारी हार ॥ ए ॥ रहे रहे बानी सल क मां, सांजल देइ कान ॥ वृक्षमां जूत वदे किस्युं, कुमर करे इम शान ॥ १० ॥ बानां वृक्ष पोलाशमां, बिहुं बेठां थिरगात ॥ सावधान थइ सांजले, जूत तणी इम वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ सहेर जलो पण सांकडो रे, नगर जलो पण दूर रे॥ हठीला वयरी ॥ ए देशी ॥

वृक्ष शिखरें इम बोलीउं रे, जूताने एक जूत

रे ॥ मोहन रंगीला ॥ वात कहुं नवली जली होला ल ॥ सांजलजो अदजूत रे ॥ मो० ॥ १ ॥ जूत वसो कहे वातसी हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ कुमर सुणे रह्यो हेठरे ॥ मो० ॥ रहस्य मरम जोतां वली हो लाल ॥ वेधक पामे नेठ रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ २ ॥ पुहवी ठाण नरिंदनो रे, माहाबल नामे कुमार रे ॥ मो० ॥ ठे मतिवंत गुणायरु होलाल, रतिपतिने अणुहार रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ३ ॥ तस जननी पदमावती रे, तेहना गलानो हार रे ॥ मो० ॥ किणहीक अलख पणें लीयो हो लाल, माय करे डुःख जार रे ॥ मो० ॥ ॥ जू० ॥ ४ ॥ इम पण बांध्यो आकरो रे, वालण हार कुमार रे ॥ मो० ॥ हार न दों दिन पांचमे हो लाल, तो मुज अगनि आधार रे ॥ ॥ मो० ॥ जू० ॥ ॥ ५ ॥ मातायें पण आदस्यो रे, पण तेहवो निरधार रे ॥ मो० ॥ पांच दिवसमां ते लहुं हो लाल, तो रहुं जीवित धार रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ६ ॥ खबर नहीं ठे कुमरनी रे, हार केस्रें गयो ऊठ रे ॥ मो० ॥ पंचम दिन कालें हुशे हो लाल, सूरज ऊग्या पूंठ रे ॥ मो० जू० ॥ ७ ॥ नृपनंदन मुगतावली रे, मलवा डुर्लज बेह रे ॥ मो० ॥ ते डुःख मरवुं आ

गमी हो लाल, बेठी राणी तेह रे ॥ मो० ॥ नू० ॥
॥ ८ ॥ विषथी के गिरि पातथी रे, के पेशी जल
देश रे ॥ मो० ॥ मरशे के वली शस्त्रथी हो लाल, के
करी अगनिप्रवेश रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ ए ॥ लोक
बहुलशुं राजीयो रे, मरशे पूंठें तास रे ॥ मो० ॥
खबर लेईने आवीयो हो लाल, हुं तिहांथी तुम पास
रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १० ॥ नूपनंदन वरु कोटरें
रे, सांजले बेठो एम रे ॥ मो० ॥ फाटे हीयरुं दुः
खथी हो लाल, काचो घट जल जेम रे ॥ मो० ॥
॥ नू० ॥ ११ ॥ चिंता नर मन चिंतवे रे, देव कथ
न नहीं फोक रे ॥ मो० ॥ थाशे जो एहवुं कदे हो
लाल, तो करशुं श्यो शोक रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १२ ॥
नूत कहे जइयें तिहां रे, वहेलां गंमि प्रमाद रे
॥ मो० ॥ कौतिक जोशुं खंतशुं हो लाल, लेशुं रुधिर
सवाद रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १३ ॥ इम कही सम
कालें कस्यो रे, नूतकुलें हुंकार रे ॥ मो० ॥ आका
शें वरु ऊपड्यो हो लाल, लेता साथ कुमार रे ॥
॥ मो० ॥ नू० ॥ १४ ॥ वेगें वरु नजें चालतो रे,
आव्यो पुहवीगण रे ॥ मो० ॥ आलंबन गिरिनीचें
जई हो लाल, तुरत कस्यो मेलाण रे ॥ मो० ॥ नू०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १५ ॥ पुर पासें गोला तटें रे, नामे धनंजय यक्ष रे ॥ मो० ॥ भूत गयां तस देहरे हो लाल, करवा कौतुक लक्ष रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ १६ ॥ निजपुर उपवन भूमिनां रे, परिचित तरुनां वृंद रे ॥ मो० ॥ कुमर निहाली ओलखी हो लाल, पाम्यो परमानंद रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ १७ ॥ कुमर भणे मलया भणी रे, दीसे पुएय प्रमाण रे ॥ मो० ॥ जेहथी ए वड ऊपडी हो लाल, आव्यो पुहवीठाण रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ ॥ १८ ॥ वड कोटरथी नीसरी रे, जइयें उपवन कूल रे ॥ मो० ॥ सुर शक्तें वली ऊडशे हो लाल, तो कर स्यां श्यो सूल रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ १९ ॥ एम विचारी नीसर्यां रे, वड कंदरथी दोय रे ॥ मो० ॥ कदली वन बे ढूंकडुं हो लाल, तिहां जइ बेठा सोय रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ ॥ २० ॥ ऊपडतो गयणांगणें रे, देखे वड वली तेम रे ॥ मो० ॥ मांहो मांहे कहे इहां थको हो लाल, जाशे आव्यो जेम रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ २१ ॥ जो रहेतां एहमां वसी रे, तो जातां किण थान रे ॥ मो० ॥ पडतां विषमी ओलमां हो लाल, जिम पवनें तरु पान रे ॥ मो० ॥ भू० ॥ २२ ॥ त्रीजे खंडें ए कही रे, सुंदर प

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हेली ढाल रे ॥ मो० ॥ कांतिविजय कहे पुण्यथी हो लाल, वाधे सुजश विशाल रे ॥ मो० ॥ नृ० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर निसुणे तदा, विनताना आक्रंद ॥ दया पणे नयणें झरे, करुणा जल निस्पंद ॥ १ ॥ आवीश हुं वहेलो प्रिये, चिंता मुज न करेश ॥ इम कही नर रूपें त्रिया, तिहां ठवि चल्यो नरेश ॥ २ ॥ निरखत पियु नी वाटडी, शूने रंनाकुंज ॥ रयणि गमावे नारि ते, दाधी दुःखने पुंज ॥ ३ ॥ पीत वरण प्राची हुवे, पाम्यां कमल विबोध ॥ बंधनयरथी बद्ध जिम, छूटा अलिकुल योध ॥ ४ ॥ गुंजा पुंज समान तनु, उदयो बालो सूर ॥ आलें किरणनालें हणी, कस्या तिमिररिपु दूर ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वृषनान जुवनें गइ हूती ॥ ए देशी ॥

॥ मलया मन एम विचारे, जाउं हुं पुरमां करारें ॥ माय बापने मलवा कामें, मुज नाह गयो हुशे धामें ॥ १ ॥ चाही इम चाली चुंपे, आवी वही पुरनी खुंपें ॥ पेसे जव पुरनें दुवारें, रोकी तव नगर तलारें ॥ २ ॥ दिव्य वेश निहाली चमक्यो, कहे कुण तुं आयो धमक्यो ॥ बोलाव्यो तिहां उत्तर नापे, दश दिशिमां लोचन थापे ॥ ३ ॥ मलिया केइ नगर निवासी, निरखे तस

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रूप प्रकाशी ॥ कुंमलने डुकूलनी फाली, उंलख्यां म हबलनां जाली ॥ ४ ॥ तलवर कहे किहांथी लाधां, आजूषण कुमरनां बाधां ॥ इम कही नृप पासें लाव्यो, देखी नृप चित्त चमकाव्यो ॥ ५ ॥ कहे कोण पुरुष ए नवलो, सोहे जूषणें करी नांतीलो ॥ मुज सुतनां पहिस्यां दीसे, आजूषण विश्वावीसें ॥ ६ ॥ तलवर क हे ए हिसंतो, पकड्यो पुरमां पेसंतो ॥ पूछ्यो पण उत्तर नापे, पूछो वली जो हवे आपे ॥ ७ ॥ नृपति कहे कुंण तुं किहांथी, आव्यो कहे साच जिहांथी ॥ मलया मनमांहे विमासे, साचुं इहां जूठुं जासे ॥ ॥ ८ ॥ कहिशुं अम चरित्र वखाणी, कोइ सद्दहशे नहीं प्राणी ॥ कहेवुं नहीं पीजमा पाखें, जावी मटशे नहीं लाखें ॥ ए ॥ इम धारीने मलया बोले, महबल मु ज मित्रने तोलें ॥ ते माटे ए वेश प्रसिद्धो, मुजने ते णे पेहेरण दीधो ॥ १० ॥ शूरपाल कहे तेह क्यां छे, सा कहे इहांहिज जिहां त्यां छे ॥ नृप कहे होये जो इहां ठावे, मुज मलवा तो किम नावे ॥ ११ ॥ जूठी सवि वात प्रकाशी, चोकस न पमी विण रासी ॥ महबल थी प्रीति वखाणे, तो सेवक कोइ तुज जाणे ॥ १२ ॥ इत्यादिक वचन सुणीनें, रही मौन धरी मन हीने ॥ बो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल्यो नरपति हुंकारी, एह वात हवे अवधारी ॥ १३ ॥ अणदीठां मुज नंदननां, वसनादिक लीधां तननां लोजसार नामें जेणे चोरें, रहे ते गिरिकंदर ठोरें ॥ ॥ १४ ॥ चोर्‍यो पुरनो जेणें माल, पकड्यो ते माटे हवाल ॥ काले तस निग्रह कीधो, तस बांधव दीसे ए सीधो ॥ १५ ॥ निजबंधु वियोगें बलतो, सूधि लेवा आव्यो चलतो ॥ पहेरी मुज सुतनो वेश, इंणे पुरमां कीध प्रवेश ॥ १६ ॥ मुज सुत हणीउ इणे मलीनें, मुज वैरी ए अटकलीनें ॥ लोजसार कन्हें जई हणजो, इहां पाप किस्युं मत गणजो ॥ १७ ॥ मलया मनमां इं म ध्यावे, असमंजस कर्मनें दावे ॥ प्राणांतिक आपद मोटी, दीसे छे इहां वली खोटी ॥ १८ ॥ चिंतवती पूर्व सलोक, रही मौन धरी अतिशोक ॥ तव बोल्यो सची व विचारी, महाराज जुवो अवधारी ॥ १९ ॥ जिम साह नहीं ए साचो, तिम चोर करी मत खांचो ॥ आ चरणा दीसे रूमी, शिर आवी तो मति कूमी ॥ २० ॥ इहां उचित करावो धीज, होये शुद्ध अशुद्ध पतीज ॥ इम करी हणशो तो आछे, कोई दोष न देशे पाछे ॥ २१ ॥ नृप कहे शी धीज वतावो, तव ते कहे सर्प मंगावो ॥ साचो घट सर्पनी धीजें, होशे तो चरण न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मीजें ॥ २२ ॥ नृप गारुमविद अविलंबें, मूके तव शैल अलंबें ॥ डुद्धर विषधर आणेवा, गया हसता ते ततखेवा ॥ २३ ॥ वस्त्र कुंमल नृपें लेई, तलवरने सोंप्यो तेई ॥ बंध आवी मलया राणी, पण ढालें व हेशे पाणी ॥ २४ ॥ त्रीजे खंमें बीजी ढाल, इम कांति कहे सुरसाल ॥ केई कौतुक होशे आगें, सांज लजो श्रोता रागें ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे पटराणी तणी, महुलणी आवी दोम ॥ गलगलती नृप आगलें, कहे एम कर जोम ॥ १ ॥ देव खबर नहीं कुमरनी, पंचम दिन ठे आज ॥ नेट अ निष्ट इंहां किस्युं, दीसे ठे नर राज ॥ २ ॥ पुत्र रतन डुर्लन्न हूउ, हार तणी शी वात ॥ शैल अलंबार्थी पमी, करशुं ते डुःख घात ॥ ३ ॥ अविनय जे कीधा हुवे, ते खमजो नरनाथ ॥ संदेशा तुम राणीयें, इंम दीधा मुज हाथ ॥ ४ ॥ समयोचित चित्तमां धरो, करो आ प हित जाणी ॥ इंम सुणी नरपति तेहने, पन्नणे अ वसर वाणी ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जुंबखमानी देशी ॥

मुज वचनें इंम न्नांखजो रे, राणी समीपें जाय ॥ स

लूणी गोरमी ॥ मुजने पण ताहरी परें रे, ए दुःख ख मीउं न जाय ॥ स० ॥ १ ॥ खबर करेवा मोकल्या रे, दिशिदिशि सेवक साथ ॥ स० ॥ ते आव्याथी जाण शुं रे, वात तणो परमार्थ ॥ स० ॥ २ ॥ पामीशुं नहीं सर्वथा रे, कुमर तणी जो सुद्धि ॥ स० ॥ तो तुज गति मुजने हजो रे, धारी में एहवी बुद्धि ॥ स० ॥ ३ ॥ उं ट करूण किण बेसशे रे, तेल जूउ तेल धार ॥ स० ॥ कुंमल वसन कुमारनां रे, आव्यां सहसाकार ॥ स० ॥ ४ ॥ किम रहेशे ठानो हवे रे, लाधो पग संचार ॥ स० ॥ पुरुष अपूर्वक दाखशे रे, तेहने ए निरधार ॥ स० ॥ ५ ॥ सहि नाणी राणी त्रणी रे, आपीने कहे जो एम ॥ स० ॥ जिम ए अजाण्यां आवियां रे, सुत पण आवशे तेम ॥ स० ॥ ६ ॥ पुरुषने धीज करावशुं रे, जेहथी लाधां साज ॥ स० ॥ मलशे नंदन जीव तो रे, करशे जो महाराज ॥ स० ॥ ७ ॥ मद्दुलणी आवी महोलमां रे, सकल सुणी अवदात ॥ स० ॥ कुंमल वसन समर्पिनें रे, सुपरें सुणावी वात ॥ स० ॥ ७ ॥ विस्मित मन राणी हुइ रे, पूछे वस्तु निदान ॥ स० ॥ मद्दुलणी आगम पुरुषथी रे, त्रांखे तस घ टमान ॥ स० ॥ ए ॥ हर्ष शोकाकुल कामिनी रे, म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हुलणी आगें वदंत ॥ स० ॥ मुज सुत वल्लज आवि
यो रे, कहेवा सुधि कुण खंत ॥ स० ॥ १० ॥ अथवा
कोईक वैरीये रे, कुमर हण्यो बल खेल ॥ स० ॥ कुंम
ल वसन लीयां तिकें रे, ते आव्यां इंणि वेल ॥ स०
॥ ११ ॥ ते माटे निरखुं हवे रे, करतो धीज विशु
द्ध ॥ स० ॥ इम कही यक्षगृहें गई रे, परिकर साथें
मुद्ध ॥ स० ॥ १२ ॥ नृप पहेलो तिहां आवियो
रे, वींट्यो जणने थाट ॥ स० ॥ आव्या तव विषध
र ग्रही रे, गारुमी जोतां वाट ॥ स० ॥ १३ ॥ नृप
तिनें कहे गारुमी रे, देव अलंबा हेठ ॥ स० ॥ वि
वर अनेक निहालतां रे, लाधो फणिधर नेठ ॥ स०
॥ १४ ॥ फूंकारें तरु बालतो रे, काळो काजल वान
॥ स० ॥ मंत्रप्रयोगें कुंजमां रे, घाल्यो आणी निदा
न ॥ स० ॥ ॥ १५ ॥ यक्ष धनंजय आगलें रे, मूकावे
नर कुंज ॥ स० ॥ नर न्हवरावी आणीयो रे, सुजटें
करी संरंज ॥ स० ॥ १६ ॥ रूप निहाली तेहनुं रे,
कहे राणी पुरलोक ॥ स० ॥ एहवा गुण इम दूषवी
रे, विधि रचना हुई फोक ॥ स० ॥ १७ ॥ चंद्र अंगारा
जो खरे रे, पावक जल विश्राम ॥ स० ॥ दाह अमृ
तथी जो हुवे रे, तो एहथी ए काम ॥ स० ॥ १८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दिव्य कठिन ए एहनें रे, देतां मन न वहंत ॥ स० ॥
दोष नहिं नृपति जणे रे, गुणही एम लहंत ॥ स० ॥
॥१९॥ समसूधो वानी ग्रहे रे, वाधे सुजश अताग ॥स०॥
जात्य सुवर्ण हुताशनें रे, ताप्यो ले गुण नाग ॥ स० ॥
॥ २० ॥ नररूपा विनता तिहां रे, जपती मन नव
कार ॥ स० ॥ श्लोकारथ निरधारती रे, ऊघाके घट
बार ॥ स० ॥२१ ॥ निर्नय करकमलें ग्रह्यो रे, वि
षधर अति रोषाल ॥ स० ॥ लोक लह्यो अचरिज
नवो रे, निरखी निरुपम ख्याल ॥ स० ॥२२॥ नाग हू
उं निर्विष मुखो रे, रह्यो तस वदन निहाल ॥ स० ॥
नेह निविम रस पूरीयो रे, संबंधें ततकाल ॥ स० ॥२३॥
साचो साचो इम कहे रे, पाके नर करताल ॥ स० ॥
त्रीजे खंकें ए कही रे, कांतें त्रीजी ढाल ॥ स० ॥२४॥

॥ दोहा ॥

॥ केलि करंतो करतलें, काढें मुखथी हार ॥ ते
मलया कंठें ठवे, मुखें ग्रही फणिधार ॥ १ ॥ ते निर
खी विस्मित हुउं, नृप प्रमुख पुर लोक ॥ हार पि
ठाणी इम कहे, करता नयणें टोक ॥ २ ॥ लखमी
पुंज किहांथकी, आव्यो एह अचिंत ॥ विण वादल
वरसात ज्युं, करे अचंन अनंत ॥ ३ ॥ नाल तिल

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

क नरनो चढी, चाटे जव अहिराव ॥ दिव्यरूप तरु
णी हुई, तव ते मूल स्वन्नाव ॥ ४ ॥ विस्तारी फणि
मंरूली, रह्यो उपर धरी छत्र ॥ जोतां जण अद्भुत र
स, लहे चित्र सुपवित्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ माली केरे बागमां,
दो नारंग पक्के रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ थर थरतो नरराजीयो, न्नणे एहवी वाचा लो
॥ अहो न्न० ॥ देखी तिहां अचरिज मोटोरे लो ॥ विण
विगतें में मूरखें, काम कीधां काचां लो ॥ अ० ॥ देखी०
॥ १ ॥ पुरजण देवी वारता, अनरथ उठाड्यो लो ॥ अ० ॥
न्नरनिंदें सूतो इहां, मृगराज जगाड्यो लो ॥ अ० ॥ दे०
॥ २ ॥ नाहिं सामान्य न्नुजंग ए, कोइ देव सरूपी लो
॥ अ० ॥ निरखत रचना एहनी, रही मनरू खूंपी लो
॥ अ० ॥ दे० ॥ ३ ॥ शक्ति सहित ए बे जणां, ढां
की निज वाना लो ॥ अ० ॥ पुरमां कार्य उद्देशथी,
आव्यां कोई छानां लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ४ ॥ परमारथ लहे
तो नथी, आराधी बेहुनें लो ॥ अ० ॥ न्नगतें सूधां
रीजवी, पूछु गति एहुनें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ५ ॥
इम कहेतो धूप उखेवतो, कुंकुमांजल ढोवे लो ॥
अ० ॥ फणीधर मूको सुंदरी, कही इम मुख जोवे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ अविनय मुज पन्नग प्रेतु,
कीधो ते खमजो लो ॥ अ० ॥ जक्कें वश होय देव
ता, इम जाणी समजो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ नि
सुणी नृपति वीनति, मलया अहि मूक्यो लो ॥ अ० ॥
नृप पयपात्र धर्युं तिहां, पीवा जइ ढूक्यो लो ॥
अ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ संतोष्यो पयपानथी, नरपति आ
देशें लो ॥ अ० ॥ गारुमीयें पाठो ग्रही, मूक्यो गिरि
देशें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ए ॥ नृपति पूछे नारीनें,
जोतां जण पासें लो ॥ अ० ॥ नरथी नारी किम हुई,
एह कौतुक जासे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १० ॥ कुंण
छे किम आवी इहां, केहनी तुं बेटी लो ॥ अ० ॥
रहस्य कहो सवि चित्तथी, अंतर पट मेटी लो ॥ अ०
॥ दे० ॥ ११ ॥ मलया एहवुं चिंतवे, मूल रूप ए उ
लटचुं लो ॥ अ० ॥ जाल अमृतथी मांजतां, पहेलुं
पण उलटचुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १२ ॥ रूप ए विष
हर चाटतां, कहो किम बदलाणुं लो ॥ अ० ॥ हार
लह्यो पीयु करतणो, अचरिज इहां जाणुं लो ॥ अ० ॥
दे० ॥ १३ ॥ कारण ए मुज पीउनां, विण कारण सीधां
लो ॥ अ० ॥ कारणें नाग थई तिणें, कारज शुं कीधां
लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १४ ॥ समजण मुज पकती नथी,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

इयो उत्तर आपुं लो ॥ अ० ॥ जेतुं इहां कहेवुं घटे, तेतुं थिर थापुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १५ ॥ लाजें मुख नीचुं करी, कहे मलया बाली लो ॥ अ० ॥ दक्षिण दिशि चंद्रावती, वीरधवलें पाली लो ॥अ०॥ दे०॥१६॥ हुं ते नृपनी नंदनी, जीवितथी प्यारी लो ॥ अ०॥ नामें मलया सुंदरी, चंपक उरधारी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ॥ १७ ॥ नृप कहे जुगतुं नहीं, ए वचन विशेषें लो ॥ अ० ॥ प्रथम कह्युं तुं तेहथी, मलतुं नहीं लेखे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १८ ॥ कारण वशें ते नृपने, पुत्री जो आई लो ॥ अ० ॥ केताइक जण आवशे, तो पुंठे धाई लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १९ ॥ हार सहित एहने हवे, देवी तुज पासें लो ॥अ०॥ सुखशाताशुं राख जो, उंचे आवासें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २० ॥ राणी मलयाने तिहां, राखे मन खांते लो ॥ अ० ॥ चोथी त्रीजा खंडनी, ढाल नांखी कांतें लो ॥अ०॥ दे० ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कहे सुण नामिनी, पंच दिवसने अंत ॥ हार रयण अणजाणिउं, लाधो अति चाहंत ॥ १ ॥ कीधो महबल नंदनें, प्राणांतिक पण जेम ॥ सुख दुःख अंगें साहसी, पूछ्यो दीसे तेम ॥ २ ॥ वचन सु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णी राणी हूई, दुःख जारें दिलगीर ॥ प्रीतमने इम वि
नवे, नयण जरंती नीर ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सासू काठा हे गहुं पी
साय, आपण जास्यां हे मालवे, सोइ
नारी जणे ॥ ए देशी ॥

॥ पीया बेठा हे कांइ निचिंत, कान ढालीनें हे इ
णिपरें ॥ सुत मायो घरें ॥ पीया विरह्यो हे अति खट
कंत, सुतनो हे हीयका जीतरें ॥ सु० ॥ १ ॥ पीया
मुजथी हे रह्युं न जाय, लंबा दीहा किम नीगमुं ॥
सु० ॥ पीया रयणि हे वैरणी थाय, नींद गई शूनी
जमुं ॥ सु० ॥ २ ॥ पीया बाह्युं हे नवलख हार, पु
त्र रतन जेहथी गम्यो ॥ सु० ॥ पीया लेई हे रतन
उदार, पाह्याण कारज आगम्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ पीया
ढोल्युं हे सरस पीयूष, दार उदकने कारणें ॥ सु० ॥
पीया कापी हे सुरतरु रुंख, वाव्यो धंतुरो बारणे ॥
सु० ॥ ४ ॥ पीया जीवुं हे हुं हवे केम, पुत्र रहित
दोजागिणी ॥ सु० ॥ पीया गिरि हे ऊंपावीश जेम,
निवृत्त होइ जीवित जणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रीया वारी
हे में समजाय, पहेलां पण तुजनें घणुं ॥ सु० ॥ प्री
या लेहेशुं हे पुण्य पसाय, हार परें सुत आपणुं ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया वचनें हे इम आसास, पुत्र विछो ही गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आव्यो हे निज आवा स, मन वींध्युं डुःख कोरीनें ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पो होता हे निज निज थान, लोक नस्यां अचरिज चिंते ॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने वि रह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया वोल्यो हे तपतां दिस, रा ति विहाणी दोहिले ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे डुःख जगदिश, के जस वीते ते कले ॥ सु० ॥ ए ॥ प्रीया आया हे जन परनात, कुमर खबर पाम्या नहीं ॥ सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दंपती चा ह्यां गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया परूवा हे घाली हांम, नृप राणी उंचां धसे ॥ सु० ॥ प्रीया सासें हे नरीयां ताम, पुरुष केइक आव्या तिसें ॥ सु० ॥ ॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट वरू रूालियें ॥ सुत पायो वरूं ॥ प्रीया टांग्यो हे वागु ली जेम, मह्वबल दीठो गोवालीये ॥ (कनालिये) सु० ॥ १२ ॥ प्रीया बांध्यो हे जे लोनसार, चोर अ धो मुख जिण वरू ॥ सु० ॥ प्रीया नीम्यो हे रूाल मजार, तुम नंदन तिहां तरूफरू ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्री या जाण्यो हे नहीं परमार्थ, दीठुं तेहवुं नांखीयुं ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सु० ॥ प्रीया सुणीने हे इम नरनाथ, वचन अमृत करी चाखीयुं ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रीया पाम्यो हे विस्मय हर्ष, समकालें ते राजवी ॥ सु० ॥ प्रीया वाध्यो हे मन उत्कर्ष, मरवा इछा नाजवी ॥ सु० ॥ १५ ॥ प्रीया सुतनां हे दरिसण चाहि, चाल्यो नृप वरु सनमुखें ॥ सु० ॥ प्रीया साथें हे मलया उमाह, चाली प्रीतमनी रुखें ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्रीया आया हे वरुतरु पास, नृपराणी मलया मली ॥ सु० ॥ प्रीया दीठो हे उंचो आकाश, टांग्यो न शके सलसली ॥ सु० ॥ १७ ॥ प्रीया करशे हे सुत संनाल, नवली विधि नृप आगमी ॥ सु० ॥ प्रीया त्रीजा हे खंमनी ढाल, कांतें कही ए पांचमी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणें आंसुं नाखतो, पूछे सुतनें नूप ॥ लेखन निपट कृतांतनो, ए तुज कवण सरूप ॥ १ ॥ लोनसार टांग्यो वरु, तुं पण तिम तस कूल ॥ देखीने तुज दुर्दशा, गयो सुद्धि हुं नूल ॥ २ ॥ धिग मुज बल जीवित कला, प्रनुता थई अकाज ॥ जेह छते तें अनुनवी, दोहि लिम दुःख समाज ॥ ३ ॥ इम कही तेड्यो वर्ड्की, छेदावी वरु माल ॥ यतनें सुतने जीवतो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काढे नृप करुणाल ॥ ४ ॥ वचन हीण पीमित तनु, वींजे शीतल वाय ॥ चेत वली बेठो हूउं, बोलाव्यो तव माय ॥ ५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ मारगमामां जोवुंजी,
आवे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें जांखेजी ॥ नंदनजी गुणवंत ॥ कहो मननी अजिलाषेंजी ॥ नं० ॥ किहां विचस्यो अम पाखें जी ॥ नं० ॥ बांध्यो किण वमसाखेंजी ॥ नं० ॥ कहे सुख फुःख तें किहां किहां लाधुं, करते हार विशुद्ध ॥ ॥ मा० ॥ क० ॥ कि० बां० ॥ १ ॥ निंददशा निरधारीजी ॥ नं० ॥ निरखे नयण उघामीजी ॥ नं० ॥ बेठी आगल मामीजी ॥ नं० ॥ पूंठें मलया लामीजी ॥ नं० ॥ निजव्यतिकर ते कहेवा लागो, सुस्थ थई नृपनंद ॥ निं० ॥ २ ॥ आव्यो कर आवासेंजी ॥ न० ॥ गोंख थई मुज पासेंजी ॥ नं० ॥ हुं बेठो तस वांसें जी ॥ नं० ॥ उड्यो ते आकाशेंजी ॥ नं० ॥ इम इत्यादिक कदली वन आव्या, तिहां सुधी कही वात ॥ आ० ॥ ३ ॥ रोती कोईक नारीजी ॥ नं० ॥ निसुणी में वनचारीजी ॥ नं० ॥ कदली वन बेसारीजी ॥ नं० ॥ तुम वहुअर निरधारीजी ॥ नं० ॥ आक्रंदने अनु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सारें तिहांथी, चाल्यो हुं वन मांहे ॥ रो० ॥ ४ ॥ ॥ आ गल जातें दीठोजी ॥ नं० ॥ करी पावक अंगीठोजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो ईठोजी ॥ नं० ॥ साधे एक नर बेठोजी ॥ नं० ॥ ते कहे मुजने साहमो आवी, आ वोजी वरूनाग ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र इहां आराधुंजी ॥ नं० ॥ सोवन पुरिसो साधुंजी ॥ नं० ॥ सहायक नवि लाधुंजी ॥ नं० ॥ तेहथी काचूं बाधुंजी ॥ नं० ॥ उत्तर साधक तुं माहरे, जिम होये कुशलें सिद्ध ॥ मं० ॥ ६ ॥ मन उपगार नरीनेंजी ॥ नं० ॥ न शक्यो बोली फरीनेंजी ॥ नं० ॥ वचन प्रमाण करीनेजी ॥ नं० ॥ हाथें खड्ग धरीनेंजी ॥ नं० ॥ उपसाधक थई बेठो पासें, कर तो कोम्फी यतन्न ॥ म० ॥ ७ ॥ कहे योगी अवधारी जी ॥ नं० ॥ जिहां रोवे ठे नारीजी ॥ नं० ॥ तिहां ठे वरूतरु नारीजी ॥ नं० ॥ करो कुमर हुशीयारी जी ॥ नं० ॥ चोर सुलक्षण शाखें बांध्यो, ते आणो जई वेग ॥ क० ॥ ८ ॥ वचन सुणी हुं चाल्योजी ॥ नं० ॥ उग्र ख ड्ग कर झाल्योजी ॥ नं० ॥ उनें रही जव चाल्यो जी ॥ नं० ॥ बांध्यो चोर निहाल्योजी ॥ नं० ॥ चोर तलें विरले स्वर रोती, दीठी तिहां एक नारि ॥ व० ॥ ९ ॥ में पूछ्युं कां रोवेजी ॥ नं० ॥ कां दुःख देह विगोवे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जी ॥ नं० ॥ एकाकी किम होवेजी ॥ नं० ॥ एह सा हमुं शुं जोवेजी ॥ नं० ॥ घन जीषम वननें शमशानें, बेठी तुं किण काम ॥ में० ॥ १० ॥ तव ते वदन उघाम्मी जी ॥ नं० ॥ जोती अवली आम्मीजी ॥ नं० ॥ मूकी लाज कमाम्मीजी ॥ नं० ॥ बोली इंम पट काम्मीजी ॥ नं० ॥ शुं डुःख जाखुं हुं तुज आगें, जाग्य रहितमां लीह ॥ त० ॥ ११ ॥ बांध्यो जे वम्म मालेंजी ॥ नं० ॥ शैल अलंब विचालेंजी ॥ नं० ॥ रहेतो कंदर नालेंजी ॥ नं० ॥ हरतो पुरधन आलेंजी ॥ नं० ॥ चोर पुरातन पाप दशाथी, ए आव्यो नृप हाथ ॥ बां० ॥१२॥ लोज सार इणे नामेंजी ॥ नं० ॥ वीतक त्रीजे यामेंजी ॥ नं० ॥ संध्यायें विण मामेंजी ॥ नं० ॥ बांधी हणीउ गमेंजी ॥ नं० ॥ मुज प्रीतम ठे हुं धण एहनी, रोवुं बुं डुःख तेण ॥ लो० ॥ १३ ॥ नेह नवल मुज खटकेजी ॥ नं० ॥ चिंता चित्तमां चटकेजी ॥ नं० ॥ विरह अगनि जिम जट केजी ॥ नं० ॥ प्राण कंठमां अटकेजी ॥ नं० ॥ आज प्रजातें कर मेलावो, हुउ हतो एह साथ ॥ ने० ॥ ॥१४॥ करवा चोरी निकस्योजी ॥ नं० ॥ गयो नेहनो तरश्योजी ॥ नं० ॥ मुज संगें नवि विलस्योजी ॥ नं० ॥ हवे विरहो मुज विकस्योजी ॥ नं० ॥ चंदन लिंपी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आलिंगन द्युं हुं, जो आपे तुज बुद्धि ॥ क० ॥ १५ ॥
में निसुणी तसु वाणीजी ॥ नं० ॥ मनमां करुणा आ
णीजी ॥ नं० ॥ कह्युं आवो गुण खाणीजी ॥
नं० ॥ मुज खांधे चढी प्राणीजी ॥ नं० ॥ जिम जा
णे तिम कर तुं एहनें, मेळ्यो में ए योग ॥ मैं० ॥ १६ ॥
धरणीथी ते कूदीजी ॥ नं० ॥ चरण देई मुझ गूं
दीजी ॥ नं० ॥ लेपे शबनी बूंदीजी ॥ नं० ॥ आलिं
गे दृग मूंदीजी ॥ नं० ॥ कंठालिंगन करतां मृतकें, ली
धी नासा तोडि ॥ ध० ॥ १७ ॥ घणुं हुती अनुरागी
जी ॥ नं० ॥ पण नाकें कर दागीजी ॥ नं० ॥ झरती
पाठी जागीजी ॥ नं० ॥ गाढी रोवा लागीजी ॥ नं० ॥
॥ ताणे त्रुटी रह्यो शबमुखमां, नाक तणो अग्रभाग
॥ घ० ॥ १८ ॥ जोते रामत खासीजी ॥ नं० ॥ आ
वी मुखें हांसीजी ॥ नं० ॥ तव नव कोप प्रकाशीजी
॥ नं० ॥ बोल्यो मृतक वकाशीजी ॥ नं० ॥ कांइ ह
से तुं इणे वरु मुज ज्यों, बंधाइश निशि काल ॥ जो०
॥ १९ ॥ वचन सुणी हुं जरुक्योजी ॥ नं० ॥ शोक
महा जर खरुक्योजी ॥ नं० ॥ चिंताथी चित्त तरुक्यो
जी ॥ नं० ॥ हृदयथकी जय धरुक्योजी ॥ नं० ॥ दै
व प्रयोगें शब इम बोल्यो, हैहै करशुं केम ॥ व० ॥ २० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नकटी फरती तितरेंजी ॥ नं० ॥ मुज खांधाथी उत
रेंजी ॥ नं० ॥ कहेवा लागी ईतरेंजी ॥ नं० ॥ किण न
गरें तुं विचरेजी ॥ नं० ॥ नाम थानादिक में ते आ
गें, नांख्युं सघलुं साच ॥ न० ॥ २१ ॥ मुज ऊपर
विश्वासीजी ॥ नं० ॥ बोली ते उल्लासीजी ॥ नं० ॥
सुणो कुमर सुविलासीजी ॥ नं० ॥ मुज नासा रूजा
सीजी ॥ नं० ॥ तव हुं पीउनुं द्रव्य गुफामां, देखा
डीश तुम आय ॥ मु० ॥ २२ ॥ इंम कही ते घर
चालीजी ॥ नं० ॥ हुं चढीउं वरु डालीजी ॥ नं० ॥
ठेड्यो चोर संनालीजी ॥ नं० ॥ नाख्यो नीचो ना
लीजी ॥ नं० ॥ उतरि जोउं तो तिण सासें, बांध्या
तिमहीज दीठ ॥ इं० ॥ २३ ॥ में जाण्यो ततकाला
जी ॥ नं० ॥ साधक देवी चालाजी ॥ नं० ॥ छोडी
मन ढकचालाजी ॥ नं० ॥ फिरि चढीयो वरु डाला
जी ॥ नं० ॥ बंधन छोडी केश ग्रहीनें, उतरियो व
ली हेठ ॥ में० ॥ २४ ॥ खंध चढावी लीधुंजी ॥ नं०
॥ अक्षत शब परसीधुंजी ॥ मं० ॥ जई योगीनें दीधुं
जी ॥ नं० ॥ इंम पर कारज कीधुंजी ॥ नं० ॥ त्रीजे
खंडें ढाल ए छठी, कांतें कही रस रेल ॥ खं० ॥ २५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ चरित्र सुणी चित्तमां चक्या, नृपादिक जन नूर ॥ अद्भुत नय आनंद डुःख, हास्य सोग आपूर ॥ १ ॥ वली विगत महबल कहे, मृतक तेह नवराइ ॥ चंदन रस चर्चित करी, थाप्युं मंमल गाइ ॥ २ ॥ अग्निकुंरू दीवा चिहुं, राख्यो साधक पाल ॥ पद्मासन बेसी जप्यो, मंत्र तिणें ततकाल ॥ ३ ॥ मृतक तुरत नत्र उलले, परे न पावक कुंरू ॥ खिन्न थयो जप ध्यानथी, साधक चिंता मंरू ॥ ४ ॥ तेहवे शब गयणांगणें, उरूयो करतो हास ॥ अवलंब्यो तिम द्विज जई, वरूशाखा अवकाश ॥ ५ ॥ चूको कांएक ध्यानमां, तेणें न सीधो मंत्र ॥ साधेशुं फिरि आवती, रातें करीशुं तंत्र ॥ ६ ॥ तुज्म बलें साधन तणी, थाशें वहेली सिद्ध ॥ रहो सुनग योगी कहे, उपगरवानी बुद्ध ॥ ७ ॥ वचन प्रमाणी हुं रह्यो, थई उपसाधक पास ॥ योगी रूरतो मुजनें, बोल्यो एम प्रकाश ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ न्हानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपसाधक जो तुं थयो रे, तो सवि थाशे काम ॥ नंदन रायना रे ॥ पण चोखो मुज चित्तमां रे, एहवो एक इंण गाम ॥ नं० ॥ १ ॥ मुज संगें जो देख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शे रे, तुजने नृप जण वृंद ॥ नं० ॥ तो जई कहे
शे नोलव्यो रे, अवधूतें तुम नंद ॥ नं० ॥ २ ॥ प्रा
ण पियाणुं महारे रे, होशे अचिंत्युं आय ॥ नं० ॥
तेमाटे तुम फेरवुं रे, कहोतो रूप बनाय ॥ नं० ॥ ३ ॥
जाशो मां मुज पासथी रे, लखमीपुंज अनेथ ॥
नं० ॥ इम धारी मुखमां ठवी रे, कथन ग्रह्युं में तेथ ॥
नं० ॥ ४ ॥ ताम मूली घसी योगीयें रे, मंत्री तिल
क मुज कीध ॥ नं० ॥ तास प्रनावें हुं थयो रे, पन्नग
विष आवीध ॥ नं० ॥ ५ ॥ मूकी मुज गिरि कंदरें रे,
आप गयो कोइ काम ॥ नं० ॥ पवन नखी सुखमां रहुं
रे, बानो बिलने ठाम ॥ नं० ॥ ६ ॥ गिरिथल जोतां
गारुमी रे, आव्या मुजनें हेर ॥ नं० ॥ मंत्र प्रयोगें व
श करी रे, घटमां घाल्यो घेर ॥ नं० ॥ ७ ॥ यक्ष तु
वनमां मूकीयो रे, कुंन करावी धीज ॥ नं० ॥ तुम
आदेशें जे नरें रे, काढ्यो हुं विण खीज ॥ नं० ॥ ८
॥ तेहने तुरतज उलखी रे, काढी मुखथी हार ॥ नं०
॥ कंठें धस्यो तेहथी हुवो रे, ते नारी अवतार ॥ नं० ॥
॥ ए ॥ आराधी गिरि कंदरें रे, मूक्यो पाछो नाग ॥
॥ नं० ॥ इत्यादिक वीती कथा रे, थइ तुम प्रत्यक्ष
माग ॥ नं० ॥ १० ॥ नूप कहे ते किम हूउं रे, जो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तां नारी सांग ॥ नं० ॥ महबल नांखे तातने रे, शेष कथा एकांग ॥ नं० ॥ ११ ॥ जातां नारी पाछलें रे, गुटिका तिलक रचेय ॥ नं० ॥ नारी नर रूपें करी रे, मुज वस्त्रादिक देय ॥ नं० ॥ १२ ॥ ते फणिधर हुं कर ग्रह्यो रे, धीज समय इंणे बाल ॥ नं० ॥ जाल तिलक चाटथुं चढी रे, में एहनुं ततकाल ॥ नं० ॥ १३ ॥ नर फिटी नारी हुइ रे, ए परमारथ वात ॥ नं० ॥ नृप प्रमुख सहु रीजीया रे, सुणि अद्भुत अवदात ॥ ॥ नं० ॥ १४ ॥ नृप कहे में आचस्युं रे, अणघटतुं प्रतिकूल ॥ नं० लोक कहे न मिटे लिख्युं रे, जे सरजित विधि मूल ॥ नं० ॥ १५ ॥ राणी मलयानें कहे रे, बेसारी उत्संग ॥ नं० ॥ कां न प्रकाश्यो आतमा रे, वत्से तें दुःख संग ॥ नं ॥ १६ ॥ अथवा तें जाएयुं कस्युं रे, वात न खाती पाऊ ॥ नं० ॥ विण अवसर जे नांखियें रे, न चढे तेह सिराऊ ॥ नं० ॥ १७ ॥ दुःखमां मौन धरी रही रे, नांखि न एका टोक ॥ नं० ॥ ए विरतंत कही जतो रे, मानत नहीं को लोक ॥ ॥ नं० ॥ १८ ॥ रूडुं दैवें कस्युं हशे रे, पाम्यां दुःखनो पार ॥ नं० अम गुनहो खमजो हवे रे, सतियां कुल शणगार ॥ नं० ॥ १९ ॥ इंम कहेती नृपनी प्रिया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे, जे जीवितनी आथ ॥ नं० ॥ आजूषण मणि ते हसी रे, आपे मलया हाथ ॥ नं० ॥ २० ॥ त्रीजे खं में सातमी रे, ए थई अनुपम ढाल ॥ नं० ॥ कांति कहे सुणतां सदारे, लहियें मंगल माल ॥ नं० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात कहे विषधर पणे, रहेतां शैल अलंब ॥ कारण शुं शुं अनुजव्यां, कहीयें ते अविलंब ॥ १ ॥ पवन जखत गिरि कंदरें, निर्गत हुउं दिनेश ॥ रजनी समय साधक धसी, आव्यो मुज उद्देश ॥ २ ॥ दिनकर तरुना डुग्धथी, घस्युं जाल मुज तेण ॥ देखी मूल सरूप दृग, बोलाव्यो नेहेण ॥ ३ ॥ आवो कुमर कला निला, करीयें मंत्र विधान ॥ ईम कही पावक कुंरू तट, लाव्यो दे सनमान ॥ ४ ॥ साधक वचनें बरुथकी, आणी दीउं शब फेरि ॥ बेठो जपवा तेह तव, हुं पण बेठो घेरि ॥ ५ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ हरिहां सुझानी साहेब मेरा बे ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम जाप जपे ते योगी, आहूति द्ये अवसान ॥ तिम तिम शब ऊपरुी पके, तरुफरुतुं रोष निदान ॥ हठीली योगिणी आई बे, अरिहां रीस जराई बे ॥ १ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ह० ॥ आधी रातिमां गगन विचालें, वागां डमरू डाक ॥ वीर बावन आगें चलें, पाखंता पोढी हाक ॥ ह० ॥ २ ॥ अन्नथकी उद्भट उतरती, शक्ति कहे रे धीठ ॥ मृतक अशुद्ध आणी किस्युं हुं, तेडी कां नूपीठ ॥ ह० ॥ ३ ॥ इंम कहेती योगीनें साही, नाखे अगनिनें कुंड ॥ नागपाशने बंधनें मुज, बे कर बांध्या प्रचंड ॥ ह० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप कुमर तेमाटें, मारी ले कुण पाप ॥ इंम कहेती नन्न मारगें, विहुं पग महीं जडी आप ॥ ह० ॥ ५ ॥ बे शाखा विच हुं पग नीडी, उंचा पग शिर हेठ ॥ टांगी मुजनें ए वडें, उडी गई लेती कुलेठ ॥ ह० ॥ ६ ॥ शब ते तिमहिज उडी तिहांथी, वलगुं शुंडाले आय ॥ पुरलोकें जोयुं वली, तिहां पाछी कोट फिराय ॥ ह० ॥ ७ ॥ लोक कहे दीसे ठे बांधुं तो, किम अशुचि ए कीध ॥ नृप कहे मुखमां एहनें, नासा पल होशे कुशुद्ध ॥ ह० ॥ ८ ॥ लोक कहे इंम कहिजतां राजा, जोवरावे जण पास ॥ दीठी वलगी दांतमां, नासा तिण आयो विसास ॥ ह० ॥ ९ ॥ ए में साधकनें न जणाव्युं, कुमर करे इंम खेद ॥ भूप कहे नवितव्यनां, मेटीजें केम भेद ॥ ह० ॥ १० ॥ भूप कहे केम करथी छूट्या, बांध्या बि

षधर पाश ॥ सुत कहे तेहनुं पुंछकुं, मुज मुखमां आ
व्युं उकास ॥ ह० ॥ ११ ॥ क्रोध नरी चाव्युं में तेहथी,
पीड्यो पन्नग जोर ॥ नर्म थई हेठो पड्यो, न चढयुं विष
मंत्रथी घोर ॥ ह० ॥ १२ ॥ दोय पहोर रयणीना काढ्या,
डुःखमां में विललात ॥ संकट सहु टलियां हवे, मलतां
क्रम योगें तात ॥ ह० ॥ १३ ॥ वचन कह्युं सुरशक्ति
मृतकें, ते मलियुं प्रत्यक्ष ॥ मुज विरतंत कह्यो सवे, तु
म आगल पूरी पक्ष ॥ ह० १४ ॥ लोक प्रशंसें शिर
धुणंतां, अहो हो अतुल बलवीर ॥ थोडा काल मांहें
घणी, नल सांसयो पीड शरीर ॥ ह० ॥ १५ ॥ नावे वचन
पथ मन नवि मावे, कहेतां पण जे वात ॥ ते संकट
जलराशिनो, तारु एक तुंहीज तात ॥ ह० ॥ १६ ॥ अ
हो साहस निर्जय पण माया, बुद्धि महोद्यम खास ॥
उपगारक करुणापणुं, दृढता मति पुण्य प्रकाश ॥ ह०
॥ १७ ॥ नारि लही लक्षण लाखीणी, मलियो अ
मनें वेग ॥ लोक अनेक करे तिहां, इम वर्णन गुणमति
नेग ॥ ह० ॥ १८ ॥ नूप कहे नंदन मंडल ते, देखाडो
ठे क्यांहिं ॥ कुमर नृपति जण विंटीउ, देखाडे जईने
त्यांहिं ॥ ह० ॥ १९ ॥ हरखें लोक मल्या उत्कर्षें, नि
रखे पावक कुंड ॥ सोवन पुरिसो तिहां तिणें, दीठो

जलहलतो दंरू ॥ ह० ॥ २० ॥ ठेव्यां पण निशिमां हें वाधे, शीश विना जस अंग ॥ पुरसो तेह कढावीने, नंमार धस्यो नृप चंग ॥ ह० ॥ २१ ॥ सकुटुंबो निज मंदिर आव्यो, रंग नस्यो नर नेत ॥ दस दिन रंग व धामणां, वरताव्यां मंगल हेत ॥ ह० ॥ २२ ॥ त्रीजा खंमनी आठमी ढालें, नांग्या विरह वियोग ॥ कांति विजय कहे पुण्यथी, लहियें मनवंछित नोग॥ह०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नगर वन शोभतो, मलयकेतु मतिवंत ॥ पुहवी ठाण नरिंदनें, वेगें आवी मिलंत ॥ १ ॥ वात प्रकाशी विगतथी, वर कन्यानी एण ॥ नगिनीपति नगिनी बिहुं, मेलवियां नृप तेण ॥ २ ॥ कुशल प्रश्न पूर्वक सहु, हरखित बेठां ठाण ॥ वरकन्यायें आपणुं, दाख्युं चरित्र वखाण ॥ ३ ॥ मलयकेतु शिर धूणतो, पामे मन अचरिज्ज ॥ नवली वातें केहनुं, चित्त न चित्र नरिज्ज ॥ ४ ॥ गोष्टि महारस सागरें, करता हर्षण केलि ॥ नुख तृषा निद्रा प्रमुख, न गिणे रसनें खेलि ॥ ५ ॥ मज्जण नोजन वस्त्रथी, सत्कास्यो नृपनंद ॥ बांध्यो बेहुंनी नेहनो, रहे तिहां स्वछंद ॥ ६ ॥ केताईक दि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

न त्यां रही, मागी नृप आदेश ॥ जननी जनक वधाव
वा, करे प्रयाणुं देश ॥ ७ ॥
॥ ढाल नवमी ॥ घरे आवोजी आंबो मोरीउं ॥ ए देशी ॥
॥ मलय कुमरने नृप कहे, संप्रेमण मन न वहंत ॥
गुणवंताजी कुमर कलानिला ॥ तोपण कहेवा व
धामणी, पछ धारो पुरि मतिवंत ॥ गु० ॥ १ ॥ प्रीति
लता सिंची रसे, पहेलांथी वधारी जेह ॥ सफल हूई
तुम आवतां, पोता वट राखी अछेह ॥ गु० ॥ २ ॥
वीरधवलनें मुज वीनति, कहेजो करी कोडि प्रणाम
॥ मुज ऊपर हित आदरी, गणजो लघु दास समान
॥ गु० ॥ ३ ॥ महबलनें मलया प्रत्यें, पोहोतो आ पू
छण काज ॥ देखी दंपती ऊठियां, बोलावे वचनें स
लाज ॥ गु० ॥ ४ ॥ महबल कहे मुज ससुरनें, कहे
जो जई कोडि सलाम ॥ चोर थयो हुं रावलो, खम
जो ते गुनह प्रकाम ॥ गु० ॥ ५ ॥ विण शीखें तुम
नंदनी, लेई आव्यो परनो अधीन ॥ उपजाव्युं दुःख
आकरुं, ते करज्यो मांई वात विलीन ॥ गु० ॥ ६ ॥ मल
य त्रणी मलया कहे, बांधव मुज वात नितार ॥ वी
नवशो माय तातनें, मुज आगमनादि प्रकार ॥ गु० ॥
॥ ७ ॥ चिंता न करशो चित्तमां, मुज सुख शाता छे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आंहिं ॥ चतुर तुमें पण चालतां, सावधान रहेजो रा हिं ॥ गु० ॥ ७ ॥ वचन सहुनां चित्त धरी, गलगल तो थाय विदाय ॥ उपपुर लगें आम्बरें, महिपति पोहोंचावा जाय ॥ गु० ॥ ए ॥ केटले दिन चंद्रावती, पो होंच्यो कहे सकल वृत्तांत ॥ खबर लही माता पिता, पामे तिहां हर्ष अनंत ॥ गु० ॥ १० ॥ महबल मलया संगमें, विलसंते निवहे काल ॥ एक समय बेठा बि न्हे, उंचा मंदिरनें जाल ॥ गु० ॥ ११ ॥ नाक विहु णी नायिका, आवी एक मंदिर बार ॥ महबल देखी ने कहे, एक पश्यतहरनी नारि ॥ गु० ॥ १२ ॥ थिर मीटें तव उलखी, प्रमदायें ते उपमात ॥ प्रीतम क नकवती इहां, दीसे छे आवी कुजात ॥ गु० ॥ १३ ॥ गुह्य न कहेशे लाजती, जो उलखशे मुज देख ॥ ते हथी हुं पम्दे रहुं, पूछो अवदात विशेष ॥ गु० ॥ १४ ॥ इम कहेती जुवणांतरें, बेठी जइ सुणवा विगत्त ॥ क नकवती आवी करे, नृप नंदनने प्रणीपत्त ॥ गु० ॥ १५ ॥ आदर दे पूछ्या थकी, कहेशे इहां आप चरित्त ॥ नवमी त्रीजा खंडनी, कांते कही ढाल पवित्त ॥ गु० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पजणे सा चंद्रावती, नगरीपति उद्दाम ॥ वीरध

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वल तस हुं प्रिया, कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ मोप
रि कोप्यो महीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव हुं
रूठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मल्यो वि
देशी मुज्जने, तरुणो एक बयल्ल ॥ तस संकेत सुरि
गृहें, मली राति हुं हल्ल ॥ ३ ॥ देखाम्री नय चोरनो,
वस्त्रादिक मुज लीध ॥ मुक्तावलीनें कंचुकी, आप हथु
तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेष जणस साथें मुने, घाली पेटी
मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीठ यंत्र नटकांहिं ॥
॥ ५ ॥ संकेती बीजो तिहां, आव्यो धूरत दोम्री ॥
बिहुं उपाम्री मंजूषम्री, नाखी नदीयें रोम्री ॥ ६ ॥ अ
वलंबन विण पवनथी, खाती जोल अठेह ॥ गुहिर
नदी गोला जलें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क
हे किणे कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहने
उलखे, जो उना होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण
किश्युं, हता अजाण्या धूत ॥ निक्कारण वैरी इस्या, गया
करी करतूत ॥ ए ॥ कुमर कहे हो धूरतें, कीधो अनुचित
खेल ॥ शीश धूणंतो आगलें, पूछे कथा उकेल ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ बेम्रले नार घणो छे
राज, वातां केम करो छो ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूरें ते तरती पेटी, प्रात समय इहां आवी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

यक्ष धनंजय भवन समीपें, गोला कंठें गावी ॥ १ ॥ साची वात कहां छां राज, जे वीती छे अममां ॥ तिलभर जूठ कहुं नहीं मोहन, मलताना संगममां ॥ साची० ॥ ए आंकणी ॥ लोभसार चोरें जलमांथी, काढी भार गरिष्ठी ॥ तालुं भांजी जोतां मांहे, वस्त्र सहित हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंब विषम कंदरमां, लेई गयो मुज छाने ॥ द्रव्य सहित मंदिर पोतानुं, देखाड्युं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें भीजी मुज भींजी, तस संगे मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां थी इणे पुर, आव्यो काज विनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पाप दिशाथी कूपें साही, सांजे वडले बांध्यो ॥ पर्वत शिखर रही में जोतां, मोहन विलंबन सांध्यो ॥ सा० ॥ ॥ ५ ॥ राति समय गई पासें रमती, तिहां मली हुं तुमने ॥ आगल वात सकल जाणो छो, ए वीत्युं छे अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आवो द्रव्य घणुं देखाडुं, इम सुणी महाबल ऊठे ॥ कह्युं तातने तात कुमरशुं, चाल्यो त्यां तस पूठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जे हनी तेहनें, दीधी सर्व संभाली ॥ शेष द्रव्य लेइ नरपति नगरें, आव्यो पाछो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन आपी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ लखमी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुंज सहित मलया त्यां, देखी बेठी पासें ॥ सा० ॥ ए ॥ चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवंती ॥ कूपथकी निकशी किम परणी, ए मुज वैरणी हुंती ॥ ॥ सा० ॥ १० ॥ फरके अधर शके नहिं पूछी, रही वदन निरखंती ॥ रखें चरित्र मुज चावां पाके, मन मां इम बीहंती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लखमीपुंज मनोहर महारो, लीधो तो जिए धूतें ॥ ए पापणीने आणी दीधो, दीसे तेण कुपूतें ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणुं नहीं के लीधो इहुंणे, खेरूी नवलो फंदो ॥ हवणां तो एहिज मुज वैरी, कीधो इम दिल मंदो ॥ सा० ॥ १३ ॥ कहे मलया माता छो रूमां, एकाकी किम आव्यां ॥ कुशल न दीसे नाक त्रणी कां, के किणे कर्मे सताव्यां ॥ ॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर त्रणे पद्मिणी मत पूछो, कहेशुं हुं तुम आगें ॥ दिन न खमे कारज छे बहुलां, कहेतां वेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटीनें आप्यो, शूने मंदिर पासें ॥ मुख मीठी हियकामां धीठी, वासी तिण आवासें ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दिवसें मलया उपकंठें, आवे कनका रंगें ॥ थई विशवासिणी विखवासिणी ते, नव नव कथा प्रसंगें ॥ सा० ॥ ॥ १७ ॥ छिद्र निहाले मलया केरां, शोक समी निश

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दीस ॥ सुख जोगवतां मलया एहवे, धरे गर्ज सुजगीश ॥ सा० ॥ १७ ॥ ऊपजतां मोहोला पीउ हेजें, पूरे नव नव जातें ॥ प्रसव समय आसन्न हूउ तव, दीपे राणी गातें ॥ सा० ॥ १ए ॥ त्रीजे खंमें चावी दशमी, ढाल महारस पूरी ॥ जांखी कांतिविजय बुध नेहें, निरुपम राग सनूरी ॥ सा० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

इण अवसर महबल प्रत्यें, दीयें तात आदेश ॥ वत्स विकट जट साजसुं, करो चढाई वेस ॥ १ ॥ नामें क्रूर सज्यो गढें, पल्लीनायक क्रूर ॥ करे उपद्रव देशमां, ते निर्झांटो दूर ॥ २ ॥ सजा समद्धें दक्ष ते, तात वचन परमाण ॥ मलयानें पूछण जणी, गयो जुवन गुणखाण ॥ ३ ॥ चिंताकुल प्रमदा कहे, हुं आवीश पीयु साथ ॥ दूर रहीने किम चढुं, विषम विरहने हाथ ॥ ४ ॥ कुमर कहे अवसर नहिं, रहो करी दृढ चित्त ॥ लाजचित्त गुटिका कन्हे, राखो गुण संजुत्त ॥ ५ ॥ जाणे तुं गुण एहना, करजे खरां यतन्न ॥ ते आपी पजणें वली, महबल विरह विखिन्न ॥ ६ ॥ पदमिणी तो पांखे हिये, आवे विरह जरेय ॥ गण्या दिवसमां ते जणी, आवीश कार्य करेय ॥ ७ ॥ तात वचन जो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अवगणुं, तो लागे कुललाज ॥ दीठ अनुज्ञा सुंदरी, जिम साधुं जइ काज ॥ ८ ॥ नयणें आंसू सींचती, नाखे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, बोली एम उदास ॥ ए ॥ लेइ अनुमति ऊणे मनें, बांधी तरकस वेग ॥ पाछी मींटें निरखतो,चल्यो नवनथी वेग ॥ १० ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अब घर आवो रे रंगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें मीठी रे धीठी, कपट महा विषवेलि ॥ अहनिशि जोवे रे छल मलया तणुं ॥ अनुयायी बेसे रमे रे धीठी, वात करे मन मेल ॥ अह नि० ॥ १ ॥ एकलमी नवनें रही रे धीठी, मुज नाग्यें ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इम छल केलवी रे धीठी, आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ बेठी मुख करमां ठवी रे गोरी, करती मन उदवेग ॥ प्रमदा निहाली रे ऊरते लोयणां ॥ बेसे पासें आवीनें रे धीठी, पूछे पुःख धरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मेलवीरे धीठी, रीजावे रति आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमावे रंगमां रे गोरी, कनकाशुं रसमाणि ॥ नवनव नांतें रे करती खेलणां ॥ ४ ॥ कहे मलया माता इहां रे नोली, रातें करो विश्राम ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लणां ॥ पयमां साकर भेलवी रे धीठी, चिंतवती म
न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५ ॥
दिन जिम रजनी नीर्गमे रे गोरी, ऊग्यो दिनकर प्रा
त ॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूंठें
एक राक्षसी रे गोरी, लागी छे कम जात ॥ नव नव
भांतें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीठी नर रातमां
रे गोरी, काढी दूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें
आदिशे रे गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
थई रे गोरी, टालुं एहनुं ठाम ॥ जिम तुज नावे० ॥
मलया मन भोलापणे रे गोरी, माने साचुं ताम ॥
तव इम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत
भलावबी रे गोरी, जे शीखववुं तुज्क ॥ तव० ॥
मया करी मुज ऊपरें रे भोली, करो उचित जे
गुज्क ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ए ॥
नगरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति ॥ नव० ॥
नृप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने देइ प्रतीति ॥
रहस्य लहीनें रे कहे इम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
गें एक वारता रे सामी, कहेवी छे धरो कान ॥ रह० ॥
तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो द्यो जीवित दान

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ रह० ॥ ११ ॥ अजय हजो कहे राजीयो रे नोली, कहेतां न कर संकोच ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चो लणां ॥ जगमांहे तेहिज वालहा रे नोली, देखाके जो चोच ॥ जिम० ॥ १२ ॥ तेह कहे ए राक्षसी रे सामी, तुम वहूअर दीसंत ॥ नव० ॥ मुज वचनें नवि वीससो रे सामी, तो देखाकुं तंत ॥ रह० ॥ ॥ १३ ॥ रयणीमां रही वेगला रे सामी, जो जो आ ज चरित्र ॥ नव० ॥ रातें थई ए राक्षसी रे सामी, साधे राक्षस मंत्र ॥ नव० ॥ १४ ॥ अंगणमां नाचे हसे रे सामी, रमे जमे वलगंत ॥ नव० ॥ दिसिदि सि नयणां फेरवे रे सामी, फेंकारी ज्युं रटंत ॥ नव० ॥ ॥ १५ ॥ फेंकारीथी उछले रे सामी, पुरमां मरगी क ष्ट ॥ ग्रहशो जो जाई निशें रे सामी, करशे कांई अ निष्ट ॥ नव० ॥ १६ ॥ प्रातसमय सुनटो कन्हें रे सा मी, करजो एहनें बंध ॥ जिम तुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ पहेलां पण नृपनें हतो रे सामी, पूरवो कष्ट निबंध ॥ रह० ॥ १७ ॥ एहवामां एहथी सुणयुं रे सामी, कारण ए असराल ॥ नव० ॥ तेहथी मन मेलुं थयुं रे सामी, चित्त चकयो नूपाल ॥ नृपति विचारे रे करतो चोवाणां ॥ १८ ॥ निर्मल मुज कुल लोकमां रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सामी, थाशे हे सकलंक ॥ नृपति० ॥ लोक कलंक न लागशो रे जोली, लागजो विषहर डंक ॥ नृप० ॥ ॥ १९ ॥ रातें सर्व जणायशे रे जोली, बाहिर न जां खे वात ॥ तव इम बोली रे करती चालणां ॥ एब ऊघाडुं पारकी रे सामी, एहवी नहीं मुज धात ॥ ॥ रह० ॥ २० ॥ सतकारी नूपें तिका रे धीठी, पोहोती जुवन विचाल ॥ अहोनिशि जोती रे० ॥ त्री जे खंडें इग्यारमी रे मीठी, कांतें कही ए ढाल ॥ नव नव जांतें रे करती खेलणा ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्षसनी वनिता तणो, रजनीमां सजी साज ॥ आवी मलयानें कहे, कनका कपट जिहाज ॥ १ ॥ पुत्री तुं घरमां रहे, हुंतो बाहिर जाय ॥ हणी निशा चर नारिनें, आवीश वहेली धाय ॥ २ ॥ शिक्षा देइ बाहिर गई, कूड चरितनी कूप ॥ वस्त्र उतारें अंगथी, करवा रूप विरूप ॥ ३ ॥ विविध रंग वरणें करी, रंगे आप शरीर ॥ ग्रहे उमाडी वदनमां, बलबलती बे पीर ॥ ४ ॥ रुंडमाल कंठें धरे, कर साहे करवाल ॥ प्रत्यक्ष रूपें राक्षसी, थई खेले रोशाल ॥ ५ ॥ एहवे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ठाने रातिमां, आव्यो जोवा नृप ॥ अपर समीप गृ
हें चल्यो, निरखे दुष्ट सरूप ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ होजी झुंबे झुंबे वर
सालो मेह, लशकर आयो दरिया
पाररो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ होजी कामिणि करती नाच, देखे नृप ठाने रही होलाल ॥ होजी दीसे ढे ते साच, जे मुजनें कनकायें कही होलाल ॥ १ ॥ होजी नृप चिंते चित्त एम, कुलने दुर्यश ए किस्युं होलाल ॥ होजी एहथी नहीं जाण खेम, मुजने पण विरुउं किश्युं होलाल ॥ २ ॥ होजी करवी न पमे कचाट, पहेली जो समजावीयें होलाल ॥ होजी तेह जाणी वनमांहिं, एहने हवणां हणावीयें होलाल ॥ ३ ॥ होजी इम कहेतो नरनाथ, कोपानलशुं परजल्यो होलाल ॥ होजी तेमी सेवक साथ, गुप्त पणें जाणे जांजल्यो होलाल ॥ ४ ॥ होजी मुज सुतरमणी एह, पापिणी मलया सुंदरी होलाल ॥ होजी रथ चाढी वन ठेह, गुपत पणे हणजो खरी होलाल ॥ ५ ॥ होजी करतां रातें काम, लोक न जाणे बातकी होलाल ॥ होजी इम सुणी सुनट उदाम, उठ्या जीभी गातकी होलाल ॥ ६ ॥ होजी कर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लीधें करवाल, आवत सुभट निहालीनें होलाल ॥ होजी जिहां छे मलया बाल, कनका त्यां गई चाली नें होलाल ॥ ७ ॥ होजी थरथरती विण सूज, जल फलती बोले इश्युं होलाल ॥ होजी नृप भट हणवा मुज, आवे छे करवुं किश्युं होलाल ॥ ८ ॥ होजी तुज पासें हुं आज, नृप आदेश विना रही होलाल॥ होजी ते माटे महाराज, मुज ऊपर रूठा सही होलाल ॥ ए॥ होजी क्यांहिक मुजने छिपारू, जणनी मीट न ज्यां प रु होलाल ॥ होजी मन माने तिहां गारू, हाथ रखे कोइनो अरु होलाल ॥ १० ॥ होजी मलयाने निर्देश, पेठी तेह मंजूषमां होलाल ॥ होजी रोती नागे वेश, बेसे मांहे एकेंगमां होलाल ॥ ११ ॥ होजी तुरतज तालुं दीध, अभय करी राखी तिका होलाल ॥ होजी आव्या सुभट प्रसिद्ध, करता रगत कनी निका होलाल ॥ १२ ॥ होजी दीठी मलया तेण, बेठी रूप स्वभाव नें होलाल ॥ होजी ते कहे मरथी एण, बदल्यो सांग ऊटा किनें होलाल ॥ १३ ॥ होजी फिटरे पापणी ऊ ठ, जाणी तुं किम मारशे होलाल ॥ होजी लागी लो कां पुंठ, केटली सृष्टि संहारशे होलाल ॥ १४ ॥ होजी इम कहीनें ग्रही बांहें, काढी रथ चाढी तिसें होला

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल ॥ होजी चाल्या अटवी राह, श्वापद जिहां वांका
वसे होलाल ॥ १५ ॥ होजी करता अनादर इठ, दे
खी मलया चिंतवे होलाल ॥ होजी दीसे कांइक अ
निठ, इण सूतें माहारे हवे होलाल ॥ १६ ॥ होजी
हणवुं के वनवास, सुसरें निश्चय आदिस्यो होलाल ॥
होजी मुज अपराध प्रकाश, अणजाण्यो देख्यो किस्यो
होलाल ॥ १७ ॥ होजी के मुज पूरव कर्म, उदित हु
आं फल आपवा होलाल ॥ होजी नहींतो माठा म
र्म, बनी आवे किम एहवा होलाल ॥ १८ ॥ होजी
कठिन थइ रे जीव; खमजे कीधां आपणां होलाल ॥
होजी दारुण कर्म अतीव, बूटे नहीं चाख्या विनां हो
लाल ॥ १९ ॥ होजी पूरव श्लोक संजारि, जणती
नियति निहालिनें होलाल ॥ होजी मूकी वन संचार,
आघुं पाबुं जालीनें होलाल ॥ २० ॥ होजी ठानो
ऊनरू पाहारू, विषम थलीमांहे धरी होलाल ॥ होजी
प्रहसमे जीम जिरारू, आव्या जण नगरें फरी होलाल
॥ २१ ॥ होजी प्रणमी नृपना पाय, वात सयल तिहां
कही होलाल ॥ होजी मलया मंदिर आय, जूपति
महीर करे वली होलाल ॥ २२ ॥ होजी नाक रहित
ते नारि, नृप जोवरावी मंदिरें होलाल ॥ होजी दीठी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नहि किण ठार, नृप जाणे नाठी खरी होलाल ॥ २३ ॥ होजी त्रीजे खंडें रसाल, ढाल कही ए बारमी होलाल ॥ होजी कांति विजय सुविलास, सुणजो श्रोता उजमी होलाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे दिन केटले, जीती तेह किरात ॥ तात चरण आवी नम्यो, प्रिया विरह अकुलात ॥ १ ॥ मलया जवने संचरे, त्यां नृप साही पाण ॥ वीतक चरित्र त्रिया तणा, कहे सकल सुविनाण ॥ २ ॥ कुमर निसासो नाखतो, बे कर घसतो आप ॥ गदगद कंठें कुंठ मन, करे एम उल्लाप ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ जटीयाणीनी देशी ॥

॥ नृपतिजी कांई कीधुं हो दुःख दीधुं मलया बालने, हाहा नूलो कांहीं ॥ चित्तमां कां न विचास्यो हो नवि धास्यो अवसर आपशुं, प्रकृति पलटी प्रांहीं ॥ नृ० ॥ १ ॥ मुज आगम लगें नारी हो नवि धारी कामिनी धारीनें, कीधुं अनुचित कर्म ॥ जाला ज्युं चित्त खटके हो अति जटके अग्निसमा थइ, काम कस्यां विण मर्म ॥ नृ० ॥ २ ॥ निर्नासा ते नारी हो छल नारी दाव रमी गई, जाणुं एहनां मूल ॥ जोव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रावो किहां दीसे हो पूछी शें कारण मूलथी, एहनां एह कुसूल ॥ नू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो नृप वयणें श्याम पणुं धरी, मंद वचन कहे एम ॥ जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां, कहो हवे कीजें केम ॥ नू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृप वयणां हो जल नयणां पूरण नाखतो, इंम कहे हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज प्रमदा प्रत्यें, साचुं सहि नरनाथ ॥ नू० ॥ ५ ॥ धूतारीनें वचणे हो कुल रयणें लंछन चाढीउं, गोत्र उमूल्युं एण ॥ उलंभा इंम देतो हो नृपनंदन पोहोतो मंदिरें, अति पीड्यो विरहेण ॥ नू० ॥ ६ ॥ वल्लभसुतनें पूंठें हो नृप उठी आवे दूमणो, उघाडे घर ताल ॥ इंम कहे सुत में दीठी हो तुज इठी दयिता राक्षसी, रूपें करती चाल ॥ नू० ॥ ७ ॥ दोष नहीं को माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, हुई अपराधें दंड ॥ वाहाली पण जे विणठी हो ते परठी दीजें छेदीनें, बांहडली करी खंड ॥ नू० ॥ ८ ॥ कुमलाणा कां मनमां हो मंदिरमां आवी आपणो, संभालो घर सार ॥ अधमयकी जण हासो हो घर आथ विणासो जाणीयें, उंघा न सहे भार ॥ नू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

मासे नूपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीके जणनें केम ॥ सुपरें तेह जणाशे हो जो थाशे दरिशण जीवतां, चिंते विरही एम ॥ नृ० ॥ १० ॥ पय पाणीनो वहेरो हो थाशे मत चहेरो राजिया, थाउं कांइ अधीर ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मंजूषकी, उघाके बल वीर ॥ नृ० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां विण नासा हो उसासा लेती राक्षसी; रूपें कामिनी एक ॥ शूकाणी दुःख नूखें हो तन लूखे दीन दयामणी, वस्त्र विहूणी ठेक ॥ नृ० ॥ १२ ॥ विस्मयकारी नारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या थिरथंन ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठो रीठी राक्षसी, तेहिज एह सदंन ॥ नृ० ॥ १३ ॥ खांची बाहेर काढी हो तिहां ताकी आकी मारथी, आप चरित कहे तेह ॥ नृपें कोपें निर्भंठी हो जणह थीकारें हूहवी, काढी देशा बेह ॥ नृ० ॥१४॥ शोकाकुल विरहाथी हो सुत हाथीनोहिं पासीउ, बेठो मौन धरंत ॥ मरवा न अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, हैं हैं मोह डुरंत ॥ नृ० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो दुःख आणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥ चिंता नागिणि नकीया हो पुरवासी पकीया संभ्रमें,

फूकि फूकि जोलां खाय ॥ नू० ॥ १६ ॥ त्रीजे खं
में फावी हो रस नावी वग आवी नली, ताती तेर
मी ढाल ॥ कांति कहे सांनलजो हो चित्त कलजो
कविता चातुरी, श्रोता थई उजमाल ॥ नू० १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणे अवसर अष्टांगवी, पुस्तक हस्त धरेय ॥ आव्यो
एक निमित्तिउ, महबल पास धसेय ॥ १ ॥ स्वस्ति व
चन मुख उच्चरें, नुज करी आवो सोय ॥ सचिवादि
क तेहनें नमी, द्ये सत्कार सकोय ॥ २ ॥ नृप नि
र्देशें आसने, बेठो नूपासन्न ॥ पेखी पुरातन पारखुं,
खोले शास्त्र रतन्न ॥ ३ ॥ नक्ति युक्तिशुं मंत्रवी, पू
छे करी कर कोश ॥ उपकारी नैमित्तिया, जूउ एक
अम जोश ॥ ४ ॥ अकलंकित इण इणी परें, कुमर
वधू सुगुणाल ॥ अम करथी तिम ऊतरी, जिम ढा
लें परनाल ॥ ५ ॥ ता दुःखें महीपति हूउ, मरणो
न्मुख सकुटुंब ॥ अशन वसन रस परिहस्यां, न सहे
प्राण विलंब ॥ ६ ॥ तेह नणी कहो अम तणे, ना
ग्यें नाग्य विशाल ॥ मलया मलशे जीवती, पनणो
तेहनी नाल ॥ ७ ॥ जोशीनें साहमे मुखें, बेसी विनय
प्रकाश ॥ नूपति बोल्यो ततक्षणें, चारुवचन विलास ॥ ८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल चौदमी ॥ जोशीयमा रे नगर सीरोहीयो
राय रे हो रसीया ॥ ए देशी ॥

॥ जोशीयमा रे, लगन निहाली जोय रे हो सुगुणा, कहेने गुणवंती मलशे क्यां वली हो सु० ॥ जो० ॥ दाण खटमासी होय रे हो सु० ॥ मलया दरिसणनो सुत कौतूहली हो सु० ॥ १ ॥ जो० ॥ कहत म लावे वार रे हो सु० ॥ सुत मत थावे डुःखमे व्याकुली हो सु० ॥ जो० ॥ आतुर न सहे धीर रे हो सु० ॥ जगमां जिम न खमे पाणी पातली हो सु० ॥ २ ॥ जो० ॥ चित्तमांहे निरधार रे हो सु० ॥ लखिने लघु हाथें लगन लह्यो वही हो सु० ॥ जो० मलशे मलया नारि रे हो सु० ॥ अबला जीवती वरषांतें सही हो सु० ॥ ३ ॥ जो० ॥ कुमर सुणे तस वाणी रे हो सु० ॥ मीठमी जीवामण सरस सुधा समी हो सु० ॥ जो० ॥ अवलंबे निज प्राण रे हो सु० ॥ काने पीयंतो कांई न करे कमी हो सु० ॥ ४ ॥ जो० ॥ पूछे कुमर उदंत रे हो सु० ॥ कहोने जीवंती किहां छे गोरमी हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ जोशी तव पन्नणंत रे हो सु० ॥ सांजल सकूणा जे कहुं वातमी हो सु० ॥ ५ ॥ जो० ॥ जाणी न जाये क्यांहिं रे हो सु० ॥ निवसे वनमांहिं के पुरमां वली हो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सु० ॥ जो० ॥ सुखिणी दुःखिणी प्रायें रे हो सु० ॥ वींटी परिवारके किहां एकली हो सु० ॥ ६ ॥ जो० ॥ नरपति तेड्या तेह रे हो ॥ सु० ॥ वनमां जाणी सुजटे मूकी सुंदरी हो ॥ सु० ॥ जो० ॥ अजय बीजो सस नेह रे हो सु० ॥ आपीने पूछे मलया आशरी हो सु० ॥ ७ ॥ जो० ॥ कहो सेवक किणी रीत रे हो सु० ॥ माहरी आणाथी मलया क्यां ठवी हो सु० ॥ ॥ जो० ॥ ते कहे सा जय जीतरे हो सु० ॥ रोतीने मूकी विकटाटवी हो सु० ॥ ८ ॥ जो० ॥ निरखी एहवां चिन्ह रे हो सु० ॥ अम मन जास्युं एहनें राक्षसी हो सु० ॥ जो० ॥ नृपति मन निर्विन्न रे हो सु० ॥ कुणही व्यामोह्यो खेलें साहसी हो सु० ॥ ए ॥ जो० ॥ स्त्री हत्या महापाप रे हो सु० ॥ तिमही कुंण लेशे हत्या गाजनी हो सु० ॥ जो० ॥ नहीं हणीयें इहां आप रे हो सु० ॥ करणी ए नहीं छे रूडा लाजनी हो सु० ॥ ॥ १० ॥ जो० ॥ खांति गिरिलटें छेव रे हो सु० ॥ पडती आखडती जिम नावे वली हो सु० ॥ जो० ॥ एकलडी स्वयमेव रे हो सु० ॥ मरशे रडवडती रखडती आफली हो सु० ॥ ११ ॥ जो० ॥ इम मन धारी बाल रे हो सु० ॥ रोती वनमांहें मूकी जीवती हो सु० ॥ जो० ॥ आवी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जांख्युं आल रे हो सु० ॥ जयथी तुम आगें कही अ
छती छती हो सु० ॥ १२ ॥ जो० ॥ नाठी मुजथी जे
ह रे हो सु० ॥ सुहरू ते करुणा रूरू संग्रही हो सु० ॥
॥ जो० ॥ विणठी मुज मति छेह रे हो सु० ॥ त्राठी ते
पेठी जरु हीयरू वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृ
प निंदे इम आप रे हो सु० ॥ जणनें परशंसे पुरजन
देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिघल चित्त समाप रे हो
सु० ॥ उत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४ ॥
॥ जो० ॥ कुमर कहे तुज वयण रे हो सु० ॥ मलियुं ते
साचुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो बाला र
यण रे हो सु० ॥ एहेलें खोयुं ते निज हाथांथकी
हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खंडें ढाल रे हो सु० ॥
सुपरें ए जांखी रूरुी चौदमी हो सु० ॥ जो० ॥ कांति
वचन सुरसाल रे हो सु० ॥ सुणतानें लागें सरस सुधा
समी हो सु० ॥ १६ ॥ इति

॥ दोहा ॥

॥ कुमर जणे मलया तणा, जनक जणी अवदात ॥ क
हेवा चर चंद्रावती, पूरियें प्रेषो तात ॥ १ ॥ वीरधवल
पण आगमी, करशे पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो
पामीयें, तो मुज पुण्य प्रबोध ॥ २ ॥ करी प्रमाण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कूपें पुरुष, मूक्या चिहुंदिशि सूर ॥ निरखण लागा तेह पण, देश देशंतर दूर ॥ ३ ॥ समजावी निज तनु जनें, नृप जमाडे जाम ॥ कंठें उतरतां कवल, पगपग ल्ये विश्राम ॥ ४ ॥ केते दिन निरखी धरा, धरापालनी पास ॥ आव्या नर कर जोडीनें, पजणे एम प्रकाश ॥ ५ ॥

॥ढाल पंदरमी॥मदनेसर मुख बोल्यो त्रटकी॥ए देशी॥

॥ सुण महीपति शुद्धि न पामी, फरि आव्या स वि वामी हे ॥ ससनेही रे गोरी, दीठी नहीं मलया किहां ॥ देश नगर गढ डुंगर कोह्या, जलथल वट अ वरोह्या हे ॥ ससलूणी रे गोरी, दीठी० ॥ १ ॥ पुर पाटण संबाहण पाटें, दुर्घट विषमी वाटें हे ॥ स० ॥ फरिया उद्भट अटवी घाटें, मलया जोवा माटे हे ॥ स० ॥ २ ॥ कुमर सुणी इम चिंता जुत्तो, चिंते मन दुःख खुत्तो हे ॥ स० ॥ पूर्व महापातक मुज विकस्यां, सुचरित संचय निकस्यां हे ॥ स० ॥ ३ ॥ निर्गमशुं किम दिन अतिलंबा,, जोल्यो दुःखनी कुंबा हे ॥ स० ॥ हूउ वियोग प्रियाशुं माहरे, अंत न दीसे आरें हे ॥ स० ॥ ४ ॥ हैहै शून्य महावन मांहिं, दव खादर अवगाही हे ॥ स० ॥ मुई हशे तहकुं आफा ली, दयिता मुज सुगुणाली हे ॥ स० ॥ ५ ॥ वनग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हीर फिरती आयरूती, किंश कर चढशे रुती हे ॥
॥ स० ॥ के कोइ निर्दय श्वापदसाथें, कीधी हशे नि
ज हाथें हे ॥ स० ॥ ६ ॥ मुज विरहें नय नंगुर म
हिला, सहेती संकट डुहिलां हे ॥ स० ॥ यूथ टली
वनहरणी सरखी, मरशे नूखी तरसी हे ॥ स० ॥
॥ ७ ॥ मुज साथें आवंती प्यारी, पापीयके में वारी
हे ॥ स० ॥ सुखमांहेथी डुःखमांहे नाखी, दीन वद
न हरिणाखी हे ॥ स० ॥ ० ॥ गोरी तणो विरहो उ
च्चाटें, करवत थईनें काटे हे ॥ स० ॥ मुज हीअडुं पथ
रथी काढुं, इंणी वेला नवि फाटुं हे ॥ स० ॥ए ॥ सुकु
लिणी तुं चतुर चकोरी, दे दरिसण गुण गोरी हे ॥ स० ॥
देई विठोहो अलवें जारी, न करो प्रीत ठगोरी हे॥स०॥
॥ १० ॥ संनारी इंम गुण संदोहो, विलवे कुमर स
मोहो हे ॥ स० ॥ अणीआलां नालां ज्यौं खटके, हि
यके विरहो नटके हे ॥ स० ॥ ११ ॥ मात पीता स
मजावे लेखें, सुतनें वचन विशेषें हे ॥ स० ॥ पण
सुत अरति पड्यो नवि समजे, विषम विरहमां अलजें
हे ॥ स० ॥ १२ ॥ वचन निमित्त तणुं चित्त धारी, कुमर
निरखण नारी हे ॥ स० ॥ ग्रही खड्ग ढानो नली नांतें,
निकल्यो माझिम रातें हे ॥ स० ॥ १३ ॥ हुर्ज प्रनात त

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नुज नवि दीसे, शुं कीधुं जगदीशें हे ॥ स० ॥ कुमर गयो जोवा दयिताने, इंम कहे पीउ प्रमदानें हे ॥ स० ॥ ॥ १४ ॥ लेहेशे आपद दुःख किम सहेशे, पग पालो किम वहेशे हे ॥ स० ॥ नूमि शयन करशे किम बालो, नंदन अति सुकुमालो हे ॥ स० ॥ १५ ॥ वधू सहित सुत मुखडुं जोस्यां, तहीयें कृतारथ होस्यां हे ॥ ॥ स० ॥ मात पिता इंम चिंता दाहें, दोहिले दिवस निवाहे हे ॥ स० ॥ १६ ॥ नूख गई सुख निद्रा थाकी, नृप नंदन एकाकी हे ॥ स० ॥ गामागर पुर करत प्रवेशा, निरखे देश विदेशा हे ॥ स० ॥ १७ ॥ श्री पंचासर पास प्रसादें, ज्ञान कथा संवादें हे ॥ स० ॥ पन्नरमी मीठी रसनाला, पूरण कीधी ढाला हे ॥ स० ॥ ॥ १८ ॥ पूरण त्रीजो खंड वखाण्यो, मलय चरित्र थी आण्यो हे ॥ स० ॥ मलया सरस कथा इंम जाखी, कांति वचन श्रुत साखी हे ॥ स० ॥ १ए ॥

इतिश्री ज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनि श्रीमलयसुंदरीचरित्रे पंडित श्री कांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत प्रबंधे मलयसुंदरी श्वसुरकुलसमागमनामा तृतीयः खंडः संपूर्णः ॥ ३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ श्रीचतुर्थखंड प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री मोहनलता, वान वधारण मेह ॥ जिन सद्गुरु शारद तणा, नमुं चरण ससनेह ॥ १ ॥ सुणतां मलयानी कथा, टले व्यथानी कोडि ॥ कहेतां जस मन अन्यथा, वृथा तेह पशु जोडि ॥ २ ॥ मलय कथा उचितारथा, करे व्यथानो छेह ॥ कथे विचें विकथान्यथा, वृथा यथा स स तेह ॥ ३ ॥ त्रीजो खंड कह्यो इहां, सरस वचन रस कुंड ॥ उब्राहें आदर करी, कहेशुं चोथो खंड ॥ ४ ॥ हवे महाबल वालही, मूकी निशि वन घोर ॥ कर्ण कठिन श्वापद तणा, सुणे शब्द अतिघोर ॥ ५ ॥ थरथरती फरती हिये, झरती आंसू नयण ॥ आरडती पडती कहे, विरहालां इम वयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, अम्मां मोरी पाणीडां गईती तलाव हे, हे मारुडे मेहेवासी डेरा ताणीया ॥ ए देशी ॥

॥ अम्मां मोरी अम्मां हे, सुसरे न पूछ्यो मुज को वंक हे, हे कोपेंनें कलकलियो राणो मोपरें हे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अम्मां० ॥ ठवीनें कूडुं काइ कलंक हे, हे ठानेशुं अपमानें काढी बाहिरें हे ॥ १ ॥ अ० ॥ अटवी ए विषमी दंझाकार हे, हे हियम्लुं थरकावे नयणें देखतां हे ॥ अ० ॥ सिंहना इहां बहुला संचार हे, हे शूरानें जमकावे विरुआ पेखतां हे ॥ २ ॥ अ० ॥ गुहरी गूजे गोहा ठेली हे, हे चित्तानें वनकुत्ता चोटे दोटशुं हे ॥ अ० ॥ हलके गेवरिया टोला टोलि हे, हे खेलंता आफलता जाखर कोटशुं हे ॥ ३ ॥ अ० ॥ सकलके सूअरनां मातां यूथ हे, हे तांतां हठें ठजातां थाता आकुलां हे ॥ अ० ॥ वढता उछलता मांझे युऊ हे, हे रोषाला दाढाला वाघ महाबला हे ॥ ४ ॥ ॥ अ० ॥ धमके सींगाला जरता फाल हे, हे शंबरिया अंबरिया लगें अति कूदणा हे ॥ अ० ॥ रखझे कूकंता पोढा श्याल हे, हे रोमालां हठवालां रींछ फरे घणां हे ॥ ५ ॥ अ० ॥ खझता दझबझता दोझे रोझ हे, हे हींझे ते विण ठींझे पीझे मारका हे ॥ अ० ॥ दीपझ करता जकनी सोज्ञ हे, हे टीबरीया गुंबरीया मारकपारका हे ॥ ६ ॥ अ० ॥ वलगे घुररंताके स्याहघोष हे, हे पेंझामें मद बेंझा गेंझा आथझे हे ॥ अ० ॥ चमके चीत्तलझलिया रोष हे, हे जाझा वन पाझा आझा आरझे हे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ७ ॥ अ० ॥ ऊलले हुंकलती नाहरकोडि हे, हे लुंकडि यां वांकडियां दडवडियां दीये हे ॥ अ० ॥ चुंपती खेले गेलें जरखां जोडि हे, हे उथडता चलचलता मृ तलपा लीये हे ॥ ८ ॥ अ० ॥ फितकें फेंकारी मु ख फाडी हे, हे ससला ते सलसलता तरु मूलें लुकें हे ॥ अ० ॥ महके सुरहा मशक बिलाड हे, हे विंजू ता अति खीजू मदमाता ऊके हे ॥ ९ ॥ अ० ॥ खमके खोजालो खांतें नील हे, हे हूके उल नवि चूके मांकड वानरा हे ॥ अ० ॥ पंथें विषधरनी अडखील हे, हे फुंकीनें परजाले जालां झींगरां हे ॥ १० ॥ अ० ॥ अ डके चमरी वांसांजाल हे, हे वेडुने वली सावज ऊजें रोषमां हे ॥ अ० ॥ खडके जडके विहगा माल हे, हे खच्चरिया उल जरिया दोडे सूसमां हे ॥ ११ ॥ अ० ॥ अरडे उन्नाला आरण उंट हे, हे दाढाला सुंढाला शर न घणा उमे हे ॥ अ० ॥ रडवडे रोहि बोहिड बूट हे, हे गोकरुणा कंदलिया मिलि बेसे खूंडे हे ॥ १२ ॥ ॥ अ० ॥ घुरले घूघडा मांफी घोर हे, हे नडहडतां ह डहडतां नूत घणां नमे हे ॥ अ० ॥ चरडा चोरा करता जोर हे, हे धाडानें लेई आवे आडा मागमें हे ॥ १३ ॥ ॥ अ० ॥ एहवा नीषण वनमां मुज्ञ हे, हे निर्दय नृप

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ना सेवक मेली ते गया हे ॥ अ० ॥ कहियें को आग
ल दुःख गुह्म हे, हे विण अपराधें नृप धीठा थया हे
॥ १४ ॥ अ० ॥ जाउं इहांथी क्यां हवे नाथ हे, हे
पीयरकुंनें अलगुं वैरी सासरो हे ॥ अ० ॥ पडियां
दुःखथी साही हाथ हे, हे राखे ते नवि दीसे कोई इ
हां आशरो हे ॥ १५ ॥ अ० ॥ सुसरानी शुं पलटी बु
द्धि हे, हे पढतावो हवे थाशे अेहथी आगली हे ॥
॥ अ० ॥ पीउडे लीधी नहिं कोई सुद्धि हे, हे निगमे
किम दाहाडा मो पाखें वली हे ॥ १६ ॥ अ० ॥ जनमी
कां हुं न मुई कांई हे, हे दुःखडामां नवि पडती इणवेला
इहां हे ॥ अ० ॥ विलवे मलवुं गोरी त्यांहिं हे, हे सं
जारे चित्त धारे श्लोक जणी तिहां हे ॥ १७ ॥ अ० ॥
अटवीमें प्रगटी पीडा पेट हे, हे बालायें त्यां सुत प्रस
व्यो जलो हे ॥ अ० ॥ रविनो ताजो तेज समेट हे, हे
अवतरीयो सुरवरीयो पुण्यें ऊजलो हे ॥ १८ ॥ अ० ॥ सु
तनें खोले ठविनें माई हे, हे आपणपें तिहां आप सूति
क्रिया करे हे ॥ अ० ॥ पजणे पुत्र वधावुं कांई हे,
पापिणी हुं इण वेला तुजनें आदरें हे ॥ १९ ॥ अ० ॥
सुतनुं मुखडुं जोती मात हे, हे हरखें ने तिम थरके
वन देखी करी हे ॥ अ० ॥ रजनी वीती थयो परजा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त हे, हे ऊठीने नावाने नदीयें उतरी हे ॥ २० ॥
॥ अ० ॥ निर्मल जलमां न्हाई ताम हे, हे पावन
थईने बेठी बाला कांठमे हे ॥ अ० ॥ समरी गुरुनें अ
रिहंत नाम हे, हे संतोषे निज आतम वनफल मीठमे
हे ॥ २१ ॥ अ० ॥ ठानी वन कुंजें पाले बाल हे, हे
हीयमलें हेजाले लालें गह गही हे ॥ अ० ॥ चोथा
खंमनी पहेली ढाल हे, हे कांतें इम जलि जांतें
पजणी ऊमही हे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंथें वहेतो ते समे, सारथपति बलसार ॥ आवी
नदीयें ऊतस्यो, वींट्यो बहु परिवार ॥ १ ॥ अवल
बनातां पाथरी, नवल किनातां तांणि ॥ मेरा दीधा
महकता, कारुजणें जलठाण ॥ २ ॥ जल तृण
इंधण कारणें, पसस्या जन वनमांहीं ॥ सारथपति
पण संचरे, तनु चिंतायें त्यांहीं ॥ ३ ॥ संचरतो वन
कुंजमां, पोहोतो मलया ठाम ॥ रुदन सुणी बालक
तणुं, निरखे विस्मय पाम ॥ ४ ॥ बाल सहित बाला
तिहां, देखी चिंते एम ॥ रूप अपूरव लवणिमा, व
सती तरुण इहां केम ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल बीजी ॥ आबू मन लागुं ॥ ए देशी ॥

॥ सारथपति पूछे हसी, एकलमी कुण आंहीं रे ॥ गोरी कहे साचुं ॥ उत्तम कुल संन्नव प्रत्यें, कहे आकृति तुज प्राहीं रे ॥ गो० ॥ १ ॥ मूकी इहां किणे अपहरी, के रीशाणी तुं आप रे ॥ गो० ॥ के कोइ इष्ट वियोगथी, कीधो तें वन व्याप रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पुत्र प्रसव ताहरे इहां, दीसे थयो गुणगेह रे ॥ गो० ॥ वनमांहिं बीहती नथी, कहे सुंदरी ससनेह रे ॥ गो० ॥ ॥ ३ ॥ धनवंतो व्यवहारीयो, नामें हुं बलसार रे ॥ गो० ॥ सागरतिलक पुरें वसुं, पर दीपें व्यापार रे ॥ गो० ॥ ४ ॥ नलुं कर्युं जगदीश्वरे, मेलवतां तुं आज रे ॥ गो० ॥ मुज घरे आवो वही, मूकी मननी लाज रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सा चिंतवे, ए नर चपल पतंग रे ॥ गो० ॥ मातो धन यौवन मदें, करशे शील विन्नंग रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ कूमो उत्तर वालतां, रहेशे शील अखंम रे ॥ गो० ॥ इम धारी बोली त्रिया, सुण गुणरयण करंम रे ॥ गो० ॥ ७ ॥ तनुजा हुं चंमालनी, कलहें कोपी आप रे ॥ गो० ॥ आवी रही वनमां इहां, मूकी निज माय बाप रे ॥ ॥ गो० ॥ ७ ॥ मेल मले किम ते घटे, जिम दिन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रजनी योग रे ॥ गो० ॥ देखी जोवा सारिखो, चहेरे सघला लोग रे ॥ गो० ॥ ए ॥ आवासें पोहोंचो तुमें, नहीं आवुं निरधार रे ॥ गो० ॥ फुःखियां मुज मा बापनें, मलशुं जई इण वार रे ॥ गो० ॥ १० ॥ आकारें इंगित गतें, ए नहीं नीची जात रे ॥ गो० ॥ कपट पणें उत्तर करे, कारण इहां न जणात रे ॥ ॥ गो० ॥ ११ ॥ सार्थपति इम चिंतवी, बोल्यो वचन विचार रे ॥ गो० ॥ तुज चंमालपणुं कहे, नहीं जांखुं सुण तार रे ॥ गो० ॥ १२ ॥ मुज आवासें मानिनी, स्वेछायें रहो आय रे ॥ गो० ॥ तुज वचनें बांध्यो सदा, रहेशुं हुं मन लाय रे ॥ गो० ॥ १३ ॥ इम कहेतो ऊरूपी लीये, अंकथकी तस बाल रे ॥ ॥ गो० ॥ तस्कर जिम चाल्यो धसी, आवासें ततकाल रे॥ गो० ॥ १४ ॥ शील विखंमन जयथकी, ते थई कार्यविमूढ रे ॥ गो० ॥ तोपण ते पूंठें चली, नंद न नेहारूढ रे ॥ गो० ॥ १५ ॥ हरख वचन बोलावतो, बालाने बलसार रे ॥ गो० ॥ सुत निज वसनें गोपवी, पेठो जई आगार रे ॥ गो० ॥ १६ ॥ फुःख करती ठानें ठवी, आसासें देई बाल रे ॥ गो० ॥ दासी एक प्रियंवदा, थापी करण संजाल रे ॥ गो० ॥ १७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अंबर भूषण भोजनां, आपें दाखी प्रीति रे ॥ गो० ॥ भांखे नहिं कम्हवुं मुखें, उपावण प्रतीति रे ॥ गो० ॥ ॥ १८ ॥ नाम पूछाव्युं अन्यदा, बलसारें करी शान रे ॥ गो० ॥ हलुयें सा कहे माहरूं, मलयसुंदरी अभि धान रे ॥ गो० ॥ १९ ॥ व्यवहारी इंम चिंतवे, मम कहे ए स्व चरित्र रे ॥ गो० ॥ पण नामें करी जाणीउं, कुल एहनुं सुपवित्र रे ॥ गो० ॥ २० ॥ चाल्यो तिहां थी वाणीयो, करतो पंथें मुकाम रे ॥ गो० ॥ उदधि तिलक पुर आपणें, पोहोतो कुशलें ताम रे ॥ गो० ॥ २१ ॥ पुत्र सहित छानी गृहें, राखी महिला तेम रे ॥ गो० ॥ दासी एक विना कहे, जाणी न पके जेम रे ॥ गो० ॥ ॥ २२ ॥ एक समय मलया प्रत्यें, निठुर इंम पभणं त रे ॥ गो० ॥ नाथ पणे मुजनें हवे, आदर तुं गुण वंत रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ मुज संपदनी सामिनी, था तां न कर विचार रे ॥ गो० ॥ सपरिवार हुं ताहरो, रहेशुं आणाकार रे ॥ गो० ॥ २४ ॥ पुत्र नहिं को मा हरे, ते छामें तुज पुत्र रे ॥ गो० ॥ थाशे जय जय मालिका, वधशे इंम घरसूत्र रे ॥ गो० ॥ २५ ॥ व चन सुणी कामांधनां, बोली मलया मुरू रे ॥ गो० ॥ कुलवंतानें नवि घटे, करवुं लोक विरुरू रे ॥ गो० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ २६ ॥ जाजो सर्वस आपथी, पम्जो पण ए पिं
म्रे ॥ गो० ॥ चंद्रकिरण सम ऊजलुं, रहेजो शील
अखंम् रे ॥ गो० ॥ २७ ॥ वार्यो बहुल प्रकार
थी, नाख्यो वचन निठेम् रे ॥ गो० ॥ रह्यो अबोलो
बापमो, न करे वलती जेम् रे ॥ गो० ॥ २८ ॥ रोषा
रुण घर बारणें, द्ये तालक सुत लेय रे ॥ गो० ॥ प्रि
यसुंदरी निज नारिनें, पुत्र पणे ते देय रे ॥ गो० ॥
॥ २९ ॥ कहे सुंदरी ए पामीउं, बालक वनिका मां
हि रे ॥ गो० ॥ गुण रूपें तेजें नर्यो, रह्यो लक्षण अ
वगाहि रे ॥ गो० ॥ ३० ॥ व्यनिचारिणी को मारीयें,
नाख्यो एह प्रछन्न रे ॥ गो० ॥ पुत्र रहित आपण
घरे, होजो पुत्र रतन्न रे ॥ गो० ॥ ३१ ॥ ते बालकनें
आपणा, नाम तणे एक देश रे ॥ गो० ॥ नामें बल
इति थापना, कीधी निज उद्देश रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥
राखी धाइ अनेकधा, करवा पोढो बाल रे ॥ गो० ॥
बीजी चोथा खंम्नी, कांतें पनणी ढाल रे ॥ गो० ॥ ३३॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यवहारी हवे एकदा, पूरे प्रबल जिहाज ॥ पर द्वीपें
चालण तणा; करे सजाइ काज ॥ १ ॥ दइ शीखामण
नारिनें, पूठी स्वजन कुटुंब ॥ बानी मलया जोरथी,

लेइ चाल्यो अविलंब ॥ २ ॥ साजित पूर्व जहाजमां, जई बेठो शुज संच ॥ सप्रपंच कारुक जनें, लीधां नां गर खंच ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ईमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवह्ण पूर्या पाधरो रे, वारु पवननें टेग ॥ जलनिधिमां जल मारगें रे, वहेतो तीरनें वेग ॥ १ ॥ धमकीनें चाले बाबर कूल ॥ हवे करशुं केहो सूल ॥ ध० ॥ इम चिंते सा सुधि जूल ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ परदेशें मुज वेचशे रे, के देशे बूझाम्भी ॥ के कुमरणथी मारशे रे, के किहां देशे गाम्भि॥ध०॥२॥हूणी इहां होजो हवे रे, पण मुज तनुज वियोग ॥ संतापें कापे हीयुं रे, जिम रोगी क्षय रोग ॥ ध० ॥ ३ ॥ जिवन मृत सम ते त्रिया रे, गल गलती गलनाल ॥ पूछे प्रवह्ण नाथनें रे, वहेती आंसु प्रणाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ शुं कीधो मुज नंदनो रे, कहे सत पुरुष यथार्थ ॥ ते कहे तो सुत मेलवुं रे, जो करे मुज चरितार्थ ॥ ध० ॥ ५ ॥ पम्भियो निरखी आपमां रे, वाघ नदीनो न्याय ॥ राखण शील सोहामणुं रे, ते रही मौन धराय ॥ ध० ॥ ६ ॥ अनुगुण पवनें प्रेरियुं रे, वहेतुं प्रवह्ण थल ॥ कुशलें केते वासरें रे, आव्यो बाबरकूल ॥ ध० ॥ ७ ॥ बंधारा उतरा विनें रे, आपी नृ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पने दाण ॥ व्यवसायी व्यवहारीउं रे, वेचे विविध क्रियाण ॥ ध० ॥ ७ ॥ रंगारा हीरा तणा रे, निर्दय कारू लोक ॥ ते कुलें मलया वेचिनें रे, कीधा शेठें दोकरू रोक ॥ ध० ॥ ए ॥ त्यां पण बहु कामी नरें रे, अद्भुत रूप निहालि ॥ काम महारस प्रारथी रे, ते पण न शक्या चालि ॥ ध० ॥ १० ॥ निज स्वारथ अण पूगतें रे, रूठा डुष्ठ जुवाण ॥ निम्महेरा गले नसा रे, प्रगटे रुधिर उधाण ॥ ध० ॥ ११ ॥ तास रुधिर जांमें करी रे, कृमिज चढावे रंग ॥ मूर्छागत बाला हुवे रे, नस नस पीरू प्रसंग ॥ ध० ॥ १२ ॥ विच विच अंतर गालीनें रे, पोषे अशनें अंग ॥ वलती महीरगतारथी रे, मांरू रुधिरें रंग ॥ ध० ॥ १३ ॥ बाला चिंते में कीयुं रे, गत नव पाप अथाग ॥ तेह थकी आवी पमयुं रे, मोटुं डुःख दोजाग ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ विफलाशा जूजारणी रे, कां सरजी किरतार ॥ देतां डुःख न हुवे दया रे, हे तुज सरजण हार ॥ ध० ॥ १५ ॥ नजरें आवी किहांथकी रे, एकज हुं जगमांहिं ॥ गाम न हुंतुं डुरकने रे, तो आव्यो मो पाहिं ॥ ध० ॥ १६ ॥ जनमी क्यां परणी किहां रे, आवी वली किण देश ॥ जाल लख्युं बनी आवशे रे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सुपरें तेह सहेस ॥ ध० ॥ १७ ॥ दुःख पूरें अबला
नरी रे, नाणे मनमां रोष ॥ एकांतें चिंते तिहां रे, स्व
चरित कर्म्मना दोष ॥ ध० ॥ १८ ॥ परहाकें गकें
चढ्यो रे, ताके अनुचित दाव ॥ रस पाके थाके वही
रे, अहो नव विषम बनाव ॥ ध० ॥ १९ ॥ घरमी तन
लोही लीयुं रे, मूर्छाणी नूपीठ ॥ खरमी रुधिरें एकदा
रे, पमी नारंम शूनि दीठ ॥ ध० ॥ २० ॥ पंखी नन
थी ऊतरी रे, आशंकी पलपिंम ॥ चंच पुटें लेई ऊ
मियो रे, सहसा ते नारंम ॥ ध० ॥ २१ ॥ नन मार्गें
ज्यां संचरे रे, जलनिधि मांहि विहंग ॥ तेहवे बीजो
सामुहो रे, आव्यो नारंम तुंग ॥ ध० ॥ २२ ॥ आ
मिष लोनें तेहशुं रे, मंमे जूऊ तिकोई ॥ लमतां चंच
थकी पमे रे, ठटके बाला सोई ॥ ध० ॥ २३ ॥ आसु
रिका के खेचरी रे, के सुरकुमरी काय ॥ लखमी के
कोई जोगिणी रे, जलमां रमवा जाय ॥ ध० ॥ २४ ॥
के धारा हरिवज्रनी रे, के दामिणी द्ये दोट ॥ इंम
मण सुरें दीठी तिहां रे, करी करी ऊंची कोट ॥ ध० ॥
॥ २५ ॥ बाला गुणमाला मुखें रे, गणती श्रीनवका
र ॥ तरता गज मत्स्य ऊपरें रे, पमी सुकृत आधार
॥ ध० ॥ २६ ॥ चोथे खंमें ए थई रे, निरुपम त्रीजी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ढाल ॥ पुण्यथकी लहियें सदा रे, कांति सुजश जय माल ॥ ध० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंखी मुखथी हुं पखी, जखपूंठें निर नाथ ॥ पण जो ए जल बूमशे, तो ग्रहेशे कुंण हाथ ॥ १ ॥ मरण समय इंम चिंतवी, कारण अंत अनिष्ट ॥ आराधन हेतुक नणे, महापंच परमेष्ट ॥ २ ॥ नमस्कार पद सांजले, जख वंको करी खंध ॥ तस मुख निरखी सूचवे, पूर्वागत संबंध ॥ ३ ॥ रहि क्षणिक थिर चित्त ते, दिशा एक निरधार ॥ तुरत तरंतो चालियो, नुज लंबो विस्तार ॥ ४ ॥ अहो महोदयनी दिशा, हजी अठे केतीक ॥ हाले नहीं जल उदरनुं, चाले इंम मत्स ठीक ॥ ५ ॥ जल रमले कमला चढी, गजखंधें दीसंत ॥ के सुरपादप वेलमी, चलगिरि शिर विलसंत ॥ ६ ॥ संशय एम पमाम्ती, खगकुलने गजगेल ॥ चाले ठांटी जल कणें, जोती जलनिधि खेल ॥ ७॥ सुखें सुखें प्रवहण परें, वहतो पंथ सपिठ ॥ उदधितिलक वेला जलें, कुशलें पोहोतो मठ ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ चंड्रावलानी देशीमां ॥

॥ उदधितिलक पूरनो धणी रे, कंदर्प नामें नूपा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लो, तेह समय रयवाभीयें रे, चढिउ अरिनो सालो॥ चढीयो नृपकुल शाल निशंको, दिगिरि डुमामें देवा भी भूको ॥ रंगें रमतो सायर कंठें, आव्यो वींट्यो सु नट उछंठे॥ जीराजेंद्र जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेल, पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणे डुर्दंत, सीमाभा नांज वी रे॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पुर साहामो जब आवतो रे, जलमां नूपें दीठो॥ निरख्यो जण सरिखो वली रे, बेठो तेहनी पीठो ॥ बेठो तेहनी करी असवारी, लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक वाध्युं जोवा सारू, मलया माणस खांते वारू ॥ जी० ॥ २ ॥ एक नणे गरुभें चभ्यो रे, दीसे जिम गोविंदो ॥ एह कवण जल मारगें रे, आवे बे स्वछंदो॥ आवे बे नृप नांखे मानो, कोलाहलथी जाशे पाठो॥ मौन धरी निरखो रही घाटें, जोवे जण ठाना रही थाठें ॥ जी०॥ ॥ ३ ॥ जणथी कांइक वेगलो रे, आवे सायर तीर ॥ शुंढादंभें सुंदरी रे, उतारे ग्रही धीर ॥ उतारि ग्रही बाहिर मोभें, सुंदर थल नूमि जइ ठोभे ॥ प्रणमी वलियो पाठो ठानो, वली वली जोतो मुख प्रमदानो ॥ जी० ॥ ४ ॥ थयो अदृश्य महा जलें रे, रयणायरमां मीनो ॥ नूपति त्यां मलया कन्हे रे, आवे विस्मय ली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नो ॥ आवे विस्मय देखी बाला, करपद आदें सकल चवाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम मीनें, मूकी इम कहुं राय नगीनें ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि नेहथी रे, मछ गयो कुंण हेतो ॥ एहज महिला पूछतां रे, कहेशे सवि संकेतो ॥ कहेशे सवि निज वीतक वातें, नक चक्रनां व्रण जूठे गातें ॥ ए अहिनाणें सिंधुवगाही, जमीय घणुं दीसे जलमांही जी० ॥ ६ ॥ कोपवशें को वयरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवहण जांगे पमी रे, मछवांसे किहां दूरें ॥ मछवांसें बेठी इहां आवी, इम कहेतो नृप पूछे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो नायक, कंदर्प नामें अछुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥ निज वीतक कहेतां हवे रे, सुंदरी कांइ म बीहे ॥ कुंण तु किम मीनें धरी रे, आफलती दुःख दीहें ॥ आफलती आवी पुर एणें, हर्ष लही रमणी नृप वयणें ॥ चिंते मुज सुत रहस्यें छिपावी, राख्यो छे ते पुरी हुं आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुकृत महाफल पाकियुं रे, मुज दीहा धनधन्नो ॥ पुण्य लता जागे हजी रे, जो लहुं पुत्र रतन्नो ॥ जो लहुं पुत्र तणी शुद्धि इहांथी, तो चरित्रार्थ होये दुःखमांथी ॥ पण कहीयें कांइ एरी गेरी, ए नृप मुज बिहुं पखनो वेरी ॥ जी० ॥

॥ " ॥ ए नृपनें हुं उलखुं रे, तात श्वसुर कुल द्वेषी ॥ शीलविखंमी माहरुं रे, लेशे सुत संपेखी ॥ लेशे सुत इम चिंती निःशासी, बोली बाला डुःस्क चकासी॥ मुज चिंता तुमनें ठे केही, पुण्य विना रजलुं बुं एही ॥ जी० ॥ १० ॥ सेवक पन्नणे न्नूपनें रे, न्नारी ए डुःख न्नारें ॥ न शंके इष्ट वियोगथी रे, कहेवुं कांई करारें ॥ कहेवुं कांई शंके मत पूठो, डुःखमां वली वली लागशे उंठो ॥ मीठें वयण हवे आसासी, उपचरणा कीजें कांई खासी ॥ जी० ॥ ११ ॥ वली नृप पूठे मानिनी रे, तो पण कहे तुज नाम ॥ मंदस्वरें कहे माहरुं रे, मलया नाम निकाम ॥ मलया नाम निकाम नठारो, तेहथकी न लह्यो डुःख आरो ॥ सन्मानी नृप मंदिर आणी, सुख साजें राखी जिहां राणी ॥ जी० ॥ १२ ॥ व्रण संरोहण उंषधि रे, रूऊवियां व्रण तासो ॥ दासी दास समीपनें रे, थापी पृथग आवासो ॥ थापी पृथग वसन शणगारें, संतोषी न्नूपें तेणी वारें ॥ मुजनें इम न्नूपति सतकारें, वारु नहीं आगें इम धारे ॥ जी० १३ ॥ ते दिनथी ततपर हुई रे, करवा धर्म विशेष ॥ ध्यान धरे अरिहंतनुं रे, ठांमि भ्रम विश्लेष ॥ ठांमि भ्रम विश्लेष ।ववेकें, आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राधे जिनधर्म सुटेकें ॥ चोथे खंमें चोथी ढाला, कांति कहे रहे सुखमां बाला ॥ जी० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिवस नृपति जणे, मलयानें धरी राग ॥ ज डे मुजनें आदरी, कीजें सफल सोहाग ॥ १ ॥ पट्ट बं ध तुजनें घटे, नहीं अवर त्रिय लाग ॥ उचित हेम मय मुद्रिका, अहेवा मणि पर नाग ॥ २ ॥ तुज वच नामृत चंद्रिका, चाहुं जेम चकोर ॥ बीजी दयिता मोजमी, तुं शिरशेखर गोर ॥ ३ ॥ नेह कदे रस दे नहीं, कीधो एक पखेण ॥ बे पख निवहे रस दिये, जिम रथ चक्र युगेण ॥ ४ ॥ मुज मन लागुं तुज्ज शुं, वारयुंही न रहंत ॥ कोमि विकल्प कदर्थना, लत्ता पात सहंत ॥ ५ ॥ जो मन जाणये आदरे, तो रस व धतो होय ॥ नहीतो पण बे मुज वसू, हीये विचारी जोय ॥ ६ ॥ जाइश कीहां पाने पमी, नहीं नूलुं हवे दाव ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, एहवो बन्यो बनाव ॥ ॥ ७ ॥ सा चिंते धुर जे हवी, ढानी हीये निघट्ट ॥ वचन गमें ते दुष्टता, नृपें करी प्रगट्ट ॥ ८ ॥ धिग मुज यौवन रूपनें, लवणिम पमो पयाल ॥ पग पग जास पसायथी, लहुं लाख जंजाल ॥ ९ ॥ बूमी कां नहीं जलधिमां, फ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

खे उतारी कांइं ॥ नरकोपम दुःखमां पमी, है है पाप प साइं ॥ १० ॥ चाहे शील विखंमवा, कामंधल नृप धी ठ ॥ मरण शरण जीवित थकी, अकृत व्रतनें इष्ट ॥ ॥ ११ ॥ काम कुचेष्टित मत्त नृप, जन्नो निरखी बा ल ॥ वधिशुं तन मन संवरी, बोली इंम ततकाल ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ ठेमो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ ठेमो नांजी, नांजी नांजी नांजी, ठेमो नांजी ॥ नारी नरकनी कूंमी ॥ ठे० ॥ आपे दुर्गति जंमी ॥ ठे० ॥ अनुचित करतां मीठमा बोलां, लोक कहे हा हाजी ॥ केई विरला हित मारग दाखे, ते हिज बाजी साजी ॥ ठे० ॥ १ ॥ परनारीथी संपद निकसे, विकसे अपयश माला ॥ पुरुष पतंगा झंपण ग्रतो, विषम अगनिनी जाला ॥ ठे० ॥ २ ॥ जोतां अनुपम चित्र विणासे, लागो जिम मशि बिंडु ॥ तिम परदारा संगति राहु, म लिन करे गुण इंडु ॥ ठे० ॥ ३ ॥ धवल महाजस पट वि णासाके, परनारी रस ढांटो ॥ उत्तम कुल कीरतिपग वींधे, व्यसन महाविष कांटो ॥ ठे० ॥ ४ ॥ दीपत क र विषधरनां मुखमां, जिम जीवितनो सांसो ॥ तिम सुख शील तणी शी आशा, सेवे परत्रिय पासो ॥ ठे० ॥ ॥ ५ ॥ निज नारीथी त्रूख न जांगी, शुं निरखे मुज

माटे ॥ भूत जाणे जो तृप्ति नहीं तो, शुं एवुं कर चाटे ॥ ठे० ॥ ६ ॥ काननना तृणमांहे तुं सूतो, आग उशीसें सलगे ॥ शीखमली साची हित जाणी, रहेनें मुजथी अलगें ॥ ठे० ॥ ७ ॥ हीये विचारी निरख रे घेला, महिलामां शुं राचे ॥ दीसे चटुक कटुक परिणामें, इन्द्रायण फल साचे ॥ ठे० ॥ ८ ॥ अनृत वचनगृह कंद कलहनुं, मोक्षपथिक पग बेमी ॥ अति आसंगें अबला विलगी, नाखे कुगति उथेमी ॥ ठे० ॥ ए ॥ शठ जन नें पण वलगी खटके, जिम खर पूंठे ढांची ॥ परदारा काराघर सरखी, निरखी रहो मत राची ॥ ठे० ॥ ॥ १० ॥ कामदेवने आहूति देवा, नारी हुताशन कुंमी ॥ कामी धन यौवन त्यां होमे, देता निजतनु पिंमी ॥ ठे० ॥ ११ ॥ न्यायी नृप जिम जनक प्रजानें, पाले तिम अति रागें ॥ तुं नय ठंमी अनय मग हींमे, तो कहीयें को आगें ॥ ठे० ॥ १२ ॥ चूकवतां दुष्कर जगमांहिं, साचो शील सतीनो ॥ ग्रहतां हुये दुलहो जीवंते, दृग विष नाग नगीनो ॥ ठे० ॥ १३ ॥ सत्यवती कोपे जे माथे, जस्म करे तस देहा ॥ तेह जणी अलगो रहे समजी, नाखे कां कुल खेहा ॥ ठे० ॥ ॥ १४ ॥ वंश विशाल विमल कुल ताहारुं, जरियो गुण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संदोहें ॥ तो कां कुमति प्रसंगें जोला, पररमणीशुं मोहे ॥ ढे० ॥ १५ ॥ समजाव्यो बहु नय देखाडी, रामायें रस जरियो ॥ महा कलुष परिणतिथी धीठो, तो पण नवि उसरियो ॥ ढे० ॥ १६ ॥ ए नारीनुं जोरें पण हुं, मूकीश शील विखंडी ॥ सुखें करजो जस्म वपुष ए, इम चिंति थिति ढंडी ॥ ढे० ॥ १७ ॥ विलख वदन कंदर्प नरेसर, राज काजमां वलग्यो ॥ प्रमदा मिलन महोत्सव वन्हि, हृदय सदनमां सलग्यो ॥ ढे० ॥ १८ ॥ निर्जल देश पड्यो जिम माठो, तिम नृप विरही तलपे ॥ दृष्टि प्रसंगादिक मन्मथनी, दशे दिशा वशि विलपे ॥ ढे० ॥ १९ ॥ आवर्जन करवा नृप तेहनें, वस्तु नवल नव मूके ॥ सती शिरोमणि वस्तु विशेषें, सुपनंतर नवि चूके ॥ ढे० ॥ २० ॥ वदन थयुं जांखुं मन पसर्या, चिंता जलधि तरंगा ॥ मरणोन्मुख मलया थई बेठी, राखण शील सुरंगा ॥ ढे० ॥ ॥ २१ ॥ धन्य धन्य शील धरे संकटमां, जे निज मन थिर राखी ॥ ढाल पांचमी चोथे खंडें, कांतिविजय बुध जांखी ॥ ढे० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवस एक सूडलो, तरुवर कोइ तका

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

य ॥ मुख ठवि फल सहकारनुं, गयणें ऊड्यो जाय ॥ १ ॥ चंचथकी नारें खिस्युं, जिहां अगासें राय ॥ नत्रथी नृपना अंकमां, ते फल पमियुं आय ॥ २ ॥ चकित चित्त करतल ग्रही, चिंते एम नरपाल ॥ अव सर विण किहांथी पम्युं, ए सहकार अकाल ॥ ३ ॥ अठे एक पुरपरिसरें, ठिन्नटंक गिरितुंग ॥ तास विषम शिखरें सदा, वनना अंब अनंग ॥ ४ ॥ आण्युं तिहांथी सूमले, ए फल मधुर मलूक ॥ लची पम्युं तस वदनथी, नारें एह अचूक ॥ ५ ॥ आपुं को व ल्लन प्रत्यें, के आरोगुं आप ॥ क्षण एक एम विमा सतो, नूपति थापे थाप ॥ ६ ॥ कहे सुनटने फल ग्रही, पोहोचो मलया पास ॥ अंतेउरमां आणजो, आपी अति विशवास ॥ ७ ॥ नूपति वचन तथा क री, सुनट विटल प्रसिद्ध ॥ आदरशुं तेणें जई, मल यानें फल दीध ॥ ८ ॥ विणकालें किम संनवे, ए फल अनुपम आज ॥ विस्मित इम नृपजणथकी, ली ये अंब तजी लाज ॥ ए ॥ सत्यापी फल आपीनें, थापी नूपति धाम ॥ उत्थापी कहे रायनें, पापी नि जकृत काम ॥ १० ॥ महादुःखें दिन नीगमे, तकत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नृपति निशि दाव ॥ एहवे समय विपाकथी, अस्त हूउं दिन राव ॥ ११ ॥

॥ ढाल ७मी ॥ बींदलीनी देशी ॥

॥ मलया एम विमासे, एतो जूंको मुज मन त्रासे हो ॥ नृपति मतिहीणो ॥ आणी हुं निज आवासें, कांइ न चढें मन विशवासें हो ॥ नृ० ॥ १ ॥ सुंदर शील वी गोशे, आकुं नें अवलुं न जोशे हो ॥ नृ० ॥ शाख लाखीणी खोशे, तो मूल किस्यो हवे होशे हो ॥ नृ० ॥ २ ॥ कामी होये निर्लज्जा, तस शी जगिनी शी ल ज्जा हो ॥ नृ० ॥ बांधे चावी धज्जा, नवि जाणे ख ज्जा अखज्जा हो ॥ नृ० ॥ ३ ॥ इंम धारी वेणी टंटो ली, काढी कचमांथी गोली हो ॥ नृ० ॥ आंबा रस मां चोली, बींदी करी सूधी घोली हो ॥ नृ० ॥ ४ ॥ नर हूउं फीटी नारी, दिव्य रूप कला संचारी हो ॥ ॥ नृ० ॥ सुंदर यौवन धारी, जाणे मन्मथनो अवता री हो ॥ नृ० ॥ ५ ॥ वेगे मंदिर जालें, अंतेउर ख्या ल निहाले हो ॥ नृ० ॥ सूको जिम रह्यो आलें, सुर तरुनी फाल विचालें हो ॥ नृ० ॥ ६ ॥ अद्भुत रूप निहाली, थइ राणी सवि कोजाली हो ॥ नृ० ॥ जा णे संचे ढाली, इंम थंजी रही विरहाली हो ॥ नृ०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ७ ॥ चिंते ए कुंण वारु, सुंदर नर अति दीदारु हो ॥ नृ० ॥ ए सुरपति अवतारु, कहुं अवर पुरुष ते कारु हो ॥ नृ० ॥ ८ ॥ वसुधाथी नीसरियो, कोइ प्रत्यक्ष ए सुरवरियो हो ॥ नृ० ॥ विद्याधर गुणें नरियो, के सिद्ध पुरुष अवतरियो हो ॥ नृ० ॥ ए ॥ पीडी काम विकारें, निहणे त्यां नयण प्रहारें हो ॥ नृ० ॥ वेधी आरें पारें, तस रूप महारस धारें हो ॥ नृ० ॥ ॥ १० ॥ थामिक संशय पेठो, जोखें कुंण गोखे ए बेठो हो ॥ नृ० ॥ अंतेउर वशि एणें, कीधुं समजावी नेणें हो ॥ नृ० ॥ ११ ॥ नृपतिनें वीनवियो, आव्यो नृप त्यां धसमसियो हो ॥ नृ० ॥ नीरुपम तरुणो दीठो, अति शांत सुखासन बेठो हो ॥ नृ० ॥ १२ ॥ कुंण ए पेठो सौधें, चिंते नृप चढिउं क्रोधें हो ॥ नृ० ॥ मलया बदले योऊं, कुण मूक्यो मुज अवरोधें हो ॥ नृ० ॥ ॥ १३ ॥ नृपतें तेह दबावी, पूछ्या नरु भृकुटी चढावी हो ॥ नृ० ॥ ते कहे मलया आणी, न गई क्यां बाहिर जाणी हो ॥ नृ० ॥ १४ ॥ बेठा छां घर द्वारें, राजेसरजी निरधारें हो ॥ नृ० ॥ कहे नृपति चित्त धारी, नर ए थयो तेहीज नारी हो ॥ नृ० ॥ १५ ॥ नृप पूछे जई पासें, तुम रूप किश्युं ए नासे हो ॥ नृ० ॥ ते कहे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जेहवुं देखो, तेहवो तुं इहां शुं लेखो हो ॥ नृ० ॥ ॥ १६ ॥ नहिं खेचर अणुहारो, सिद्ध साधकथी पण न्यारो हो ॥ नृ० ॥ मलयानां इणें जमही, पहेस्यां छे पट ते तिमही हो ॥ नृ० ॥ १७ ॥ में रति रस मागंतें, नर रूप धस्युं कोई तंतें हो ॥ नृ० ॥ जाणुं मलया एही, बेठी छलवानें सनेही हो ॥ नृ० ॥ १८ ॥ महीपति कहे सेवकनें, इम अंतेउरमां न बने हो ॥ नृ० ॥ करशे अनरथ गाढो, कर साही बाहिर काढो हो ॥ नृ० ॥ १९ ॥ मलय सुंदरी इति नामें, काढ्यो बहि भुज ग्रही तामें हो ॥ नृ० ॥ बाह्य गृहे नृप राखे, एक दिन वली एहवुं भांखे हो ॥ नृ० ॥२०॥ रूप कस्युं शे योगें, नरनुं कुण तंत्र प्रयोगें हो ॥ नृ० ॥ हतुं स्वाभाविक जेहवुं, थाशे किम क्यारें तेहवुं हो ॥ नृ० ॥ २१ ॥ तव चिंते सा हियडामें, विलखे भूतें भोगनें कामें हो ॥ नृ० ॥ मौन कस्यानी वेला, रहेशे बकी एहनी मेला हो ॥ नृ० ॥ २२ ॥ मलया बाजी जीती, नृपतिनी मति गति वीती हो ॥ नृ० ॥ छठी जोथे खंडें, कांतें कही ढाल घमंडें हो ॥ नृ० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कसी कसी नृप पूछीयुं, हसी न मेले मीट ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तींखो लागो ते तदा, जिम बावलनो जीट ॥ १ ॥
मलयकुमरी ऊपर हूउं, रोषारुण नूपाल ॥ मंत्रावे
तन तर्जना, दिन दिन बूरे हवाल ॥ २ ॥ ताफे ताते
ताजणे, मारे लाठी लात ॥ मुक्की वली चूकी दीये, पाफे
नाफी घात ॥ ३ ॥ घरसे कर्कश नूतलें, आकर्षे पग
बंध ॥ हर्षे पर्षद निरखतें, धर्षे दे पग खंध ॥ ४ ॥
सिंचे नीचें कूपमां, निहणे पूंठि निबंध ॥ मोटे सोटें
चोटीनें, नर्म करे तन संधि ॥ ५ ॥ नृपसुत इम ताफी
जतो, चिंते है किरतार ॥ कहीयें इहांथी नीसरी, ल
हीशुं दुःखनो पार ॥ ६ ॥ एक दिवस निडावशें, पड्यो
निरखी पुहरात ॥ रहस्यपणे पुर बाहिरें, वहे कुमर
मधरात ॥ ७ ॥ पथिशालायें वीशम्यो, धरी मरण मन
आश ॥ दीठो नमत इहां तिहां, अंध कूप तस पा
स ॥ ८ ॥ तस कंठें उनो रही, चित चिंते दिलगीर ॥
पफशुं जो कर नूपनें, तो दहेशे बे पीर ॥ ए ॥ शरण
नहिं महारें इहां, मरण विणा कोइ ठेर ॥ इष्ट संनारी
आपणो, इम बोली तिण ठोर ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥ ऊधवजी कहेशो बहु न
कहि ॥ ए देशी ॥

॥ प्रनुजी दुःखणी कांइ हुं सरजी ॥ ए आंकणी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पीयु विरहो तीखी कातरणी, काटीकरे हिय पूर जी ॥ प्रीतम विण न शके कोइ सांधी, लाख मले जो दूर जी ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ वाहालानो मुज देई वीछो, दुःख संकटमां नाखी ॥ भाग्य रहित ज्यां त्यां हुं भटकुं, मधु भूलि जिम माखी ॥ प्र० ॥ २ ॥ दैव अटारा महाबल साथें, ए भव दीधो वियोगो ॥ परभव कंत पणे मुज तेहनो, मेलवजे संयोगो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कृष्णा शिर ऊभी नररूपें, देती इम उलंभा ॥ सज्ज हूइ कूपें झंपावा, प्रेम भरी निरदंभा ॥ प्र० ॥ ४ ॥ एहवे त्यां दयितानें जोतो, महबल ते दिन शेषें ॥ पहियशालमां रातें सूतो, निंद लही नवि लेशे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हवे जावुं जोवा दिशि केही, इम चिंतवतो जागे ॥ मलयायें जे दीया उलंभा, ते कानें जई वागे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह अपूरव वचन प्रियानां, सरखा सुणतां लागे ॥ प्राण त्यागनां सूचक प्राहें, पकडंदे नभ मागें ॥ प्र० ॥ ७ ॥ संभ्रमथी ऊठ्यो त्यां भडकी, कहेतो इम मुख वाणी ॥ विफल महा साहस रस खेलें, मरण लीये कां ताणी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ शरण हजो मुज महबल पीयुनुं, इम कही झंपा दीधी ॥ कुमरें पण तस पूठें तिमहिज, ते अनुचरणा कीधी ॥ प्र० ॥ ए ॥ स्फुट चेतन

नर मूर्छा जाख्यो, लघु सादें इम जांखे ॥ मुज अब लाने ए दुःखमांथी, मह्बल विण कुण राखे ॥ प्र० ॥ १० ॥ कुमर जोवे विस्मित ते वचनें, कर पद तास उल्लासें ॥ सजग थयो नर मूर्छा नाठी, बेठो ऊठी पासें ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे किणे संबंधे, इणे मुज नाम संजाख्यो ॥ के मुज नामें कोइ सनेही, दुःखमां हियमे धाख्यो ॥॥ प्र० ॥ १२ ॥ पूब्युं कहे साचुं कुंण तुं डे, कां पमियो इम कूपें ॥ उलखीनें स्वरनें अनुसारें, पुरुष कहे अति चूंपे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुंण तूं डे किम आयो कूपें, पमियो कां मुज केमें ॥ इत्यादिक पूठी सहु पाठें, काम करो एक नेमें ॥ प्र० ॥ १४ ॥ निजथूंके मांजो मुज बिंदी, जांखुं जिम स्वसरूप ॥ तिम कीधुं तेणें तव मलयानुं, प्रगट हूउं धुर रूप ॥ प्र० ॥ १५ ॥ कूप जींतिथी एहवे नागें, बाहिर वदन विकास्युं ॥ अंधकूपमां तस मणि तेजें, दूरें तिमिर विणास्युं ॥ प्र० ॥ १६ ॥ दुर्लज दयिता दर्शन देखी, उत्कंठयो सरवंगें ॥ सहसा आगल आवी क्यांथी, चिंते इम उमंगें ॥ प्र० ॥ १७ ॥ विण आजें वूठा घर मेहा, थातां संगम नीको ॥ अण चिंतित साजन मेलाथी, बीजो सुख सवि फीको ॥ प्र० ॥ १० ॥ इम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

कहीनें नयणें जल नरतो, पूछे तस विरतंत ॥ सापि कहे हियके दुःख पूरी, धुरथी व्यतिकर तंत ॥ प्र० ॥ १९ ॥ कहे पिउ तें संकट सायरमां, पेसी दुःख अनुखंगें ॥ नोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट सह्यां किम अंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे बलसारें, ऊरूपीनें सुत लीधो ॥ अछे किहां ते सा कहे शेठें, मूक्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ लहेश्यो किम नंदन शुद्ध सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे सविहोशे जो इहांथी, बूटक बार कदापि ॥ प्र० ॥ २२ ॥ मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूब्युं वली दायतायें ॥ आप चरित्र सघलां ते नांखे, कुमर यथा इच्छायें ॥ ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संन्नाषण करतां बेहु,, रजनी त्यां निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंकें, पत्नणी कांतें उमाहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥रयणी गई प्रगको हूउ, ऊग्यो रवि अनुरूप ॥ अनुपद जोतो राजिउ, आवे जिहां छे कूप ॥ १ ॥ निरखी बे जण कूपमां, बोल्यो धरणी नाथ ॥ जूउ सहजरूपें त्रिया, विलसे छे किण साथ ॥ २ ॥ अहो रूप रति सुन्नगता, यौवन गुण विज्ञान ॥ युगती जोमी जोमतां, नू

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ल्यो नहिं भगवान ॥ ३ ॥ इंद्राणी सुरपति परें, रति रतिपति उपमान ॥ शोभे अनुपम जोमलुं, अनुगुण रूप समान ॥ ४ ॥ अभय हजो तुमनें बिन्हें, आवो कूपक कंठ ॥ दर्पांधल कंदर्प नृप, कहे राग रस बंठ ॥ ५ ॥ भूपें बिहुनें काढवा, कीधो मांची संच ॥ तव पीउनें भूपति तणो, मलया भणे प्रपंच ॥ ६ ॥ रस राच्यो आव्यो इहां, मुज पाठें कम जात ॥ कीधी को फि कर्दथना, कामांधें दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपें मोह्यो निलज, न गणे कुलनी कार ॥ आकर्षी निरखी नि खर, हणशे तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूप थी, नीसरशुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वालशुं, यथा यो ग्य करणेण ॥ ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रूमी जी ॥ श्यामा चढि बेसो आणो अंदेसो श्यावती रू०॥ कुशलें उतरीयें विपत्ति उऊरीयें रंगमां रू० ॥ बेठो इम कहे तो दोरी ग्रहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति जी बेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ भूपति कहे जणनें पहे ली धणनें खांचीयें रू० ॥ क्रम उचें नीचें सेवक खींचे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जोरशुं रू० ॥ गयणंगण गहेरो कीधो बहेरो सोरशुं रू० २ ॥ आतम उत्संभक जाणे करभंक सापना रू० ॥ निरखंत नराणा कलश पूराणा पापना रू० ॥ अंध कूपक आरें आवे करारें ज्यां त्रिया रू० ॥ नूपें लहि ताघा बे कर आघा ताकिया रू० ॥ ३ ॥ सुख माहिं उतारी बाहेर नारी राजिये रू० ॥ बेठी पिउ विहुणुं ऊणुं डुणुं मन किये रू० ॥ महबल तस केमें आव्यो नेमें कांठमे रू० ॥ कोपें कलुषाणो नरनो राणो दीठमे रू० ॥ ४ ॥ चिंते एह रूपें अधिको मोपें उदीयो रू० ॥ लावण्य पयोधि नारियें शोधि वर कीयो रू० ॥ मुज मीटथी रमणी भावी जमणी ए जुवे रू० ॥ मीठो गोल पामी खोलनो कामी को हुवे रू० ॥ ५ ॥ मादलिउं मास्यो स परिवास्यो गोठिनो रू० ॥ नाखुं अंध कोठीमां जिम पोठी पोटिनो रू० ॥ थापी इम टूंकी कापी मूकी दोरमी रू० ॥ बंधनथी बूटी मांची त्रूटी उथमी रू० ॥ ६ ॥ पम्मिउं ततखेवा खातो ठेबां कोरनां रू० ॥ नीचें ढल नाठा लागा कांठा जोरना रू० ॥ नारी तस पूठें पम्वा ऊठे साहसें रू० ॥ नूपें कर साही राखी वाहीनें तिसें रू० ॥ ७ ॥ आणी आवासे राय प्रकासे तेहनें रू० ॥ कुंण ए रस नरि

थो तें आदरियो जेहनें रू० ॥ पूठी नवि बोले आंसू ढोले दुःखनां रू० ॥ निःश्वास विछूटे आहार न बोटे इकमना रू० ॥ ॥ ८ ॥ मूर्छा लही जागी कहेवा लागी एहवो रू० भोजन पिउ पाखें न करुं लाखें जेहवो रू० ॥ मूकी एक महेलें थाप्या गयलें पाहरु रू० ॥ बेठो जइ काजें राज समाजें पाधरु रू० ॥ ए ॥ था शे किम कूपें नाख्यो भूपें नाहलो रू० ॥ नीसरशे क्यां थी किम करी त्यांथी वाहलो रू० ॥ चिंता चित्त धर ती हइडुं भरती शोगमें रू० ॥ आसंगल गाढो कर ती दाहाढो नीगमे रू० ॥ १० ॥ रति त्यां अण ल हेती, विरहें दहेती देहमी रू० ॥ ॥ निशिमां एक मा गें भूतल भागें ते पडी रू० ॥ डंकी विषधरियें रोषें भरियें क्यांहिंथी रू० ॥ बोली अहि विलगो न रहे अलगो आंहिंथी रू० ॥ ११ ॥ नोकार संभारे जिन मन धारे थिर मनें रू० ॥ पोहरायत आया हणवा धाया नागनें रू० ॥ जीवितथी टाल्यो नाग उछाल्यो वेगलो रू० ॥ विरतंत सुणायो भूपति आयो व्याकुलो रू० ॥१२॥ उपचार घणेरा कीधा भलेरा जे घट्या रू०॥ साहमा विष जोला लहेर हिलोला ऊमट्या रू० ॥ इंद्री थयां शून्य चेतन ऊना धारणें रू० ॥ एक सास

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उसासो मंझित मासो क्षण क्षणें रू० ॥ १३ ॥ ते दुःख निशि ग्रहेती न लहे वहेती विश्रमो रू० ॥क रवा तन ताजी प्रगव्यो गाजी प्रहसमो रू० ॥ था को उपचारें नृप तिवारें अति दुःखें रू० ॥ पम्हहो वजमावे साद पमावे जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देश कंन्या बंधुर रणरंग सिंधुर तेहनें रू० ॥ आपे नृप रा जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शेरी शेरीयें फस्या रू० ॥ त्रिक चाचर चोकें नृप पथ धोंके संचस्या रू० ॥ १५ ॥ थानक सवि नटकी पाठा ठटकी नें वल्या रू० ॥ नृप नवननी वाटें आवे उच्चाटें खल नल्या रू० ॥ चोथे खंमें चावी ढाल सोहावी आठमी रू० ॥ कहे कांति उमंगें रसने रंगें ए गमी रू०॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अजिनवो, पम्ह ठबे त्यां आय ॥ नृप सुन्नटें नृपति कन्हें, आएयो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि रखत मुख नृप उलखे, अहो पुरुषनें प्रांहिं ॥ कूप थकी किम नीसरी, आव्यो दीसे आंहिं ॥ २ ॥ दैव हएयो मुज वैरीयें, कीधो केण कुकज्ज ॥ मुजनें अल गो जाणीनें, काढ्यो ए निर्लज्ज ॥ ३ ॥ इम चिंति

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अण जेलखू, थयो गोपिताकार ॥ करवा स्वारथ साधना, बोल्यो वचन उदार ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ गाढा मारूजी, नमर पीवे नाठी चगें ॥ अमली पीवे कलाल रे ॥ गाढा मारु अति उनमादी माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ मोरा नेहीजी, अम वखतें आव्या नलें, उपकार क सत्यवंत हे ॥ मो० ॥ करुणा ते कीधी साहिबे, मोहनजी मतिमंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तुम सरिखे आजूषणें, पुहवी तल शोजंत रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ १ ॥ मो० ॥ मलया विष वालण तणुं, काम करो लेई हाथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रणरंग आपुं हाथियो, जनपद तनुजा साथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ २ ॥ मो० ॥ लाविणुं लोकां विषें, ए ठे यशनुं काम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ वली हुं मुख बोल्यायकी, आपीश अधिक इनाम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ ३ ॥ मो० ॥ महाबल कहे मुजनें इहां, आपीश मां तुं कांई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मागुं एहिज सुंदरी, जो पण निर्विष थाई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ४ ॥ ॥ मो० ॥ आवी देशांतरथकी, नहीं केहने संबंध रे ॥ मो० ॥ क० मो० ॥ एहवी मुजनें आपतां, कर

१५

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शे कुण प्रतिबंध रे ॥ मो० ॥क०॥ ५ ॥ मो० ॥ संकटपड्यि
यो महीपति, कहे तुज देईश तेह रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ मो० ॥ बीजां पण मुज केटलां, काम करीश जो ने
ह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ६ ॥ मो० ॥ जे कहेशे नृप का
म ते, करिनें तुरत सर्व रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ले
जाईश निज नारजा, चिंते एम सगर्व रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ ७ ॥ मो० ॥ नृप वचन अंगी करी, आव्यो
मलया समीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मूर्छागत दीठी
त्रिया, मूकी गरल उद्दीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ८ ॥
॥ मो० ॥ विषम अवस्था नारीनी, जोतां जलनरें नय
ण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रोधें मन काबुं करी, बो
ले इम वली वयण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ए ॥ मो० ॥ ग
त चेतन ए सर्वथा, न लिये श्वास लगार रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ मो० ॥ तोपण अंगें आगमी, करशुं हुं
प्रतिकार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १० ॥ मो० ॥ प्र
सर निषेधी लोकनो, धरणी करो जल सित्त रे ॥ मो०
॥ क० ॥ मो० ॥ तिमहिज नृपने सेवकें, कीधी
धरा सुपवित्त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ११ ॥ मो० ॥
नृपति आदें जन सवे, बेठा बाहिर आय रे ॥ मो० ॥
॥ क० ॥ मो० ॥ कुमरें मंडल मांडीयुं, विष बालक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नो उपाय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १२ ॥ मो० ॥ मंडल मां पूजी विधें, ध्यान धरी महा मंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ कटिपटमांथी काढीउं, विष वालक मणि तं त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १३ ॥ मो० ॥ ढाली मणि जल सिंचीयुं, विकस्यो लोयण लेश रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ढांक्या ज्यौं रवि तेजथी, कमल हशे एक दे श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १४ ॥ मो० ॥ मुखमां जल सिंच्युं तदा, वलिया सास उसास रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ लोचन पूरां उघड्यां, कमल ज्यौं पूर्ण प्रका श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १५ ॥ मो० ॥ सर्वंगें जल सिं चीयुं, पायुं उदक अशेष रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ऊठी आलस मोडती, करती हाव विशेष रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ १६ ॥ मो० ॥ पउधार्या प्रभुजी इहां, कू पथकी किण रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ साजी मुजनें किम करी, पूछे सा धरी प्रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ १७ ॥ मो० ॥ कुमर कहे मांची थकी, पडीयो हुं जई हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ त्यां मणि तेजें एक शिला, दीठी मणिधर हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १८ ॥ ॥ मो० ॥ ठाने जइ मूठी हणी, उघडियुं तदा बार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणिधर सलक्यो पर मुहें,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पेठो हुं तिण ठार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १ए ॥ मो० ॥ साहस धरि हुं चालीयो, विवरें धरणी मांहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ विषधर दीवीधर थयो, आवे पूंठें उब्बांहिं रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २० ॥ मो० ॥ एह सुरंगा चोरनी, तिण वली बीजुं बार रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ मो० ॥ होशे एहवुं चिंतवी, आघो कीधो प्रचार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २१ ॥ मो० ॥ तेहवे मुख आगें थई, मणिधर नाठो तेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ श्याम तिमिरकुल नठ्ठस्युं, जिम जरूता जरू चेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २२ ॥ मो० ॥ अनुसारें हुं चालतो, आथम्यो जई द्वार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ मो० ॥ चरणें हणी बीजी शिला, नाखी उलटी तिवार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २३ ॥ मो० ॥ बार विवरनुं उघरूधुं, नीसरियो बहि आय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ जन्म्यो गर्भावासथी, चिंत्युं ईम अकुलाय रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ २४ ॥ मो० ॥ आघेरा चाल्यो वही, जोतो अहिगति लीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ शिलाशिरें दीठो अही, बेठो थई निर्भीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २५ ॥ ॥ मो० ॥ मंत्र जाणी ते वश कीयो, लीधो तस मणि नंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ गिरि नदीयें सम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शानमां, दीसे तेह सुरंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २६ ॥ ॥ मो० ॥ पश्यतहर दीसे मूर्ड, चिंती इम शिल तेय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ढांकी बार सुरंगनें, नीसरियो उमहेय रे ॥ मो० ॥ क०॥ २७ ॥ मो० ॥ ठाने पुरमां पेसतां, निसुण्यो पम्ह निनाद रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ पूछ्युं जाण्युं ताहरें, व्याप्यो विष उन्माद रे० मो० ॥ ॥ क० ॥ २८ ॥ मो० ॥ तुज विरहो अण सांसही, पम्ह ठव्यो पण बंध रे ॥ मो०॥ क० ॥ मो० ॥ मणि योगें साजी करी, गाल्यो विषनो गंध रे ॥ मो० ॥ ॥ क० ॥ २९ ॥ मो० ॥ बांध्यो वचनें सांकमो, धीठो पण नरनाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो०॥ देशे तुजनें मुज जणी, हवे न करे मन दाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ॥ ३० ॥ मो० ॥ पीयु वचनें रंजी त्रिया, चोथा खंम विचाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ कांतिविजय जांखी रसें, निरुपम नवमी ढाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरें नृपति तेमीउ, आव्यो अधिक प्रमोद ॥ निरखे बाला हर्षथी, करती वात विनोद ॥ १ ॥ शिर धूणी नृपति जणे, अहो शक्तिनो खेल ॥ अम दुःख साथें जेणीयें, फेंश्यो गरल उवेल (प्रवाह) ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अति विस्मित वसुधाधवें, पूछ्युं नाम निवेश॥ सिद्ध पुरुष इति तेहनी, निज कहे नाम निर्देश॥३॥ जि मी नहीं गत वासरें, विरची बाला एह॥ उचित जमा को तेह नणी, कहे नृप ससनेह॥४॥पय पाकुं सा कर रसें, पावे कुमर सहाथ॥ स्वस्थ हुई वातो करे, ते नृप सुतनी साथ॥५॥

॥ ढाल दशमी ॥ पंथीमा रे संदेशमो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर नणे नृपति प्रत्यें, करो शीख सुजाण॥ द्यो मलया मुजनें हवे, पालो वचन प्रमाण॥ १ ॥ हुं रे विदेशी पंथियो, न सहुं ढील लगार, ॥ मुज मन ऊ ठयुं इहांथकी, चालण निरधार ॥ हुं० ॥ २ ॥ कांइ विचारो राजिया, करो कोइ विषाद ॥ रुसवा थाशो लोकमां, मूक्यां मरयाद ॥ हुं० ॥ ३ ॥ रवि जलधर जलनिधि शशी, मूके नहिं स्थिति आप॥ तिम नृप पण नवि उथपे, कुलवट स्थिति थाप॥ हुं० ॥४॥ आपो मलया एहनें, थाउं राजि प्रसन्न॥ दंपती दुः खियां मेलवी, करो सत्य वचन्न ॥ हुं० ॥ ५ ॥सम जावे इम नृपनें, पुरनां लोक समस्त ॥ आपूछ्यो ते सांनली, कोपें मदमस्त ॥ हुं० ॥६ ॥ दण एक अ ण बोल्यो रही, मांहे बीजी वात॥ हे हे निठुर पणा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तणी, जूठे जूंठी धात ॥ हुं० ॥ ७ ॥ पूछे नरपति सिद्धनें, लोयण कलुषाय ॥ कहे रे ताहरे एहशुं, श्यो सगपण थाय ॥ हुं० ॥ ८ ॥ सिद्ध कहे धण माहरी, पामी मुज्झ विजोग ॥ दैवदयाथी माहरो, लही आज संयोग ॥ हुं० ॥ ए ॥ अवनीपति आखे वली, कर एक मुज काम ॥ ढील नहीं देतां पछें, तुजनें एह दाम ॥ हुं० ॥ १० ॥ दुःखे शिर नित्य माहरुं, तेहनो एह उपाय ॥ लक्षणधर तुज सारिखो, नर आवे चलाय ॥ हुं० ॥ ११ ॥ चयमां बाली तेहनुं, कीजें जस्म शरीर ॥ लेपें शिर पीडा हरे, तेह जस्म सनीर ॥ ॥ हुं० ॥ १२ ॥ उंषध ए तुजनें जखें, करवुं माहरे काज ॥ सोंप्युं दुष्कर काम ए, मारण नरराज ॥ हुं० ॥ ॥ १३ ॥ लुब्ध्यो मलया देखीनें, निर्लज ए नरराज ॥ मुजनें हणवा कारणे, सोपें एहवुं काज ॥ हुं० ॥ ॥ १४ ॥ अधमें मुजनें सूचव्युं, पहेलुं पण एह ॥ करशुं जो मृत्यु आगमी, तो पण देशे छेह ॥ हुं० ॥ १५ ॥ मरण विना कुंण करी शके, दुःख संजव काज ॥ अंगीकस्युं में धुरथकी, न कस्या मुज लाज ॥ हुं० ॥ १६ ॥ एम धारी साहस ग्रही, बोल्यो त्यां नर सिद्ध ॥ चिंता न करो राजिया, कारज ए में लीध ॥ हुं० ॥ १७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

डुर्लन्न ठंषध ताहरुं, करवुं में निरधार ॥ तुं पण प्रम दा आपतां, मत करजे विचार ॥ हुं० ॥ १८ ॥ फो गट गाल फुलाविनें, कहे नृप हसंत ॥ उपकारकनें आपतां, कहो शुं खटकंत ॥ हुं० ॥ १९ ॥ कठिन हृदय नरराजियो, हरख्यो मन पापिष्ट ॥ राखे दंपती जूजू आं, जण थापी निःकृष्ट ॥ हुं० ॥ २० ॥ मंदिर आवे मलपतो, करतो रस चाल ॥ दशमी चोथा खंमनी, कांतें कही ढाल ॥ हुं० ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे नृपनें कहे, करवा उचित विधान ॥ काठ शकटन्नरि जोतरी, मूके ज्यां समशान ॥ १ ॥ निरखी विषम कर्त्तव्यता, डुःखियां पूस्यां लोक ॥ हाहा नरमणि विणसशे, इंम कहे थोकें थोक ॥ २ ॥ ते हलां आन्नूषण धरी, वींट्यो राज सुन्नट्ट ॥ पश्चिम पो होरें पितृवनें, पोहोचे कुमर प्रगट्ट ॥ ३ ॥ व्यतिकर लोकथकी लहे, मलया पिशुनो आप ॥ संतापी विर हानलें, विधविध करे विलाप ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ ऊठ कलालणी जर घं मो हे, दारुमारो मूल सुणाय ॥ ए देशी ॥

॥ धिग मुज यौवन रूपनें हे, धिग मुज जनम अ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काय ॥ आपद पमियो जेहथी हे, मोहें लोनाणो ना थ ॥ प्राण प्यारो बलवा हे कांइ जाय० ॥ १ ॥ पहेलो दुःख सागरथकी हे, तरियो तुं समरछ ॥ ए वेलामां साहेबा हे, कुंण ग्रहशे तुज हछ ॥ प्रा० ॥ २ ॥ काठ कुठी मां नीमियो हे, पंजरमां जिम कीर ॥ नीसरशे क्यां थी तदा हे, मुज नणदीरो वीर ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ कर सा ही नृपतिनमें हे, खेप्यो तुं चयमांहि ॥ सहेशे कि म पीमा घणी हे, कीधी पावक दाहि ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ क्यां आव्यो इहां मोहना हे, मलियो कां मुज आय ॥ कांइ जीवामी पापिणी हे, हुं हुइ जे दुःखदाय ॥ ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ विरहो ताहरो प्रीतमा हे, हियमे दे घसि घाव ॥ नेह निठुर नाहर थयो हे, खेले कठिन कुदाव ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ आशाथी तें नोमीयां हे, ए वेला जगदीश ॥ तरछोमी अधमारगें हे, काढी पूरी रीश ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ प्रीतमली हीयमे वसी हे, लागे मीठी गा ढ ॥ साले बूटी अधरसें हे, जिम तीखी यमदाढ ॥ ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ पमजो शिल शिर तेहनें हे, पाड्यो जेणे वियोग ॥ पारजन तेहनां रखमजो हे, जिम का प्यां थल फोग ॥ प्रा० ॥ ए ॥ विलपत प्रमदा खीज ती हे, दुःख पूरी महे मूर ॥ पीयुनें लोयण आंसुयें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हे, धे जल अंजली पूर ॥ प्रा० ॥ १० ॥ निरखुं नयणें नाहलो हे, तो मुज जोजन वात ॥ बेठी एहवुं आदरी हे, करवा आतम घात ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ नृप नंदन समशानमां हे, इहां तिहां निरखी ठोर ॥ खमके इछित थानकें हे, मोहोटी चय एक कोर ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ साहस देखी तेहवुं हे, पुर जण मलिया धाय ॥ दिल गिरी धरता हिये हे, नृपतिनें कहे आय ॥ प्रा० ॥ ॥ १३ ॥ देव विचार्या विण ईस्यो हे, मांड्यो कवण अन्याय ॥ राखमिशें पशुनी परें हे, हणियें नहीं सिऊराय ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मलया नापो तो जलें हे, पण मारो कां एह ॥ अम वचनें मूको हवे हे, करी करुणा गुणगेह ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ नृप जणें ए जामिनी हे, मुजने नवि निरखंत ॥ उपरांठी काठी हुवे हे, जो नर ए जीवंत ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ ए बाला विण माहरे हे, न पमे जक पल मात ॥ मत पमजो ए वातमां हे, सो वातें एक वात ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ निर्दय तव तिहां बोलीयो हे, जीवो नामें प्रधान ॥ शी एहनी तुमनें पमी हे, मेलो ठो इहां तान ॥ प्रा० ॥ १८ ॥ पोतानें पापें पची हे, मरशे जो डुःख आणि ॥ तो नगरीमां केहनें हे, ए होशे घर हाणी ॥ प्रा० ॥ १९ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राजानें मंत्री इहां हे, मलिया पापी दोय ॥ तो ते हवा नररतनें हे, कुशल किहांथी होय ॥ प्रा० ॥ २० ॥ गारमिशें आरंभियो हे, अनरथ विश्वा वीश ॥ सहि दुर्मति ए बेहुनें हे, गारज पकशे शीश ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ गलतां माखी जीवती हे, को करे एहवुं काम ॥ अन्योन्य कहेतां जण तिके हे, पोहोता निज निज गाम ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ अकल कला कोई केलवी हे, पियु लेहेशे जयमाल ॥ चोथे खंके अग्यारमी हे, कांतें पत्नणी ढाल ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इष्ट संनारी आपणो, परवरियो नरवृंद ॥ दक्षिण करें प्रदक्षिणा, चय पाखलि नृपनंद ॥ १ ॥ पुरजन मुख हाहा रवें, आपूर्यो आकाश ॥ लोक हृदय कसणें करे, शोक परीक्षा न्यास ॥ २ ॥ सहसा नृपसुत उतपति, पके चितामां जाम ॥ ततक्षण पुरजन नेत्रथी, पसर्यां आंसू ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ तमाकेत्तोमी ठे दुःख माला ॥ ए देशी ॥

॥ निरखे सुनट त्रिकट चयमांहि, पेठो कुमर जिवारें ॥ चिहुं दिशि प्रबल अनल सलगाव्यो, पसरी जाल तिवारें ॥ १ ॥ फबाकें जलकी ठे दिगमाला,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तापें कटकण लागा काठ ॥ चमाकें चमकी छे सुर बाला ॥ ए आंकणी ॥ धोरणी धूम तणी त्यां प्रसरी, दिशि दिशि अंबर छायो ॥ श्यामघटा करी पावक रूपें, जाणे पावस आयो ॥ रू० ॥ २ ॥ वन्हि पतंग उमे तगतगता, खजुआ जिम चिहुं ओरें ॥ जाल वीज ज्युं चिलकण लागा, अनल जलदनें जोरें ॥ रू० ॥ ३ ॥ सात जीभ शतजीभ थईनें, नभतल चाटण लागो ॥ तस उद्दीपक पवनसहायी, विशमो थई त्यां वागो ॥ रू० ॥ ४ ॥ धीरपणुं पुर लोक प्रशंसे, तस हा रव अण सुणतां ॥ ज्वलत रह्यो विश्वानल देखी, सुभट वव्या गुण थुणता ॥ रू० ॥ ५ ॥ जिम कीधुं तेणें तिम नृप आगें, भांख्युं सकल बनावी ॥ भूप प्रधान विना पुरजननें, ते निशि निंद न आवी ॥ रू० ॥ ६ ॥ हुर्ज प्रभात विभा तनु तारा, ढांक्या सूर प्रभा वें ॥ तव शिर रक्षा पोटि धरीनें, आवे सिद्ध स्वभा वें ॥ रू० ॥ ७ ॥ देखी विस्मित लोक उमंगें, पग प ग एहवुं पूछे ॥ अहो सुगुण तुं आव्यो किहांथी, शि शें एह कीस्युं छे ॥ रू० ॥ ८ ॥ ते चयनी रक्षा लेइ हुं, आव्यो छुं नृप काजें ॥ इम कहेतो पोहोतो नृप भवनें, सिद्ध पुरुष शुभ साजें ॥ रू० ॥ ए ॥ राख पो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टली आपे नृपनें, कहेतो एहवुं रंगें ॥ ए नाखो निज
माथे एहथी, रहेजो निरुआ अंगें ॥ ऊ० ॥ १० ॥
नृप जणे शुं न बल्या चयमां, आव्या दीसो साजा ॥
आग सगी नहीं जगमां केहनें, न गणे सतियां आजा
॥ ऊ० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे कूडा आगें, बनशे कू
डुं बोल्युं ॥ कहे नृपनें हुं दाधो चयमां, मन साहस
नवि डोल्युं ॥ ऊ० ॥ १२ ॥ मुज साहसथी सुरगण
रीज्या, अमृत रसें चय ठारे ॥ थयो सजी चित्त फरी
हुं तेहथी, आवी रह्यो चय आरें ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ ठा
र पोटली तिहांथी लेइ, आव्यो राज समीपें ॥ वाचा
तेह पले तो रूडी, बोली जेह महीपें ॥ ऊ० ॥ १४ ॥
नृप विचारे धूरत एणें, मीट सकलनी वंची ॥ ॥ इहां र
ह्यो ठाली चय बाली, सुन्नटें करी दृग उंची ॥ ऊ० ॥
॥ १५ ॥ कांत समागम जाणी मलया, मलवानें धसी
आवी ॥ आरक्षक परिवारें वींटी, निरखत हरख
न मावी ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ एकांतें जइ पूछे पतिनें, पा
वक पेठा स्वामी ॥ कुशलें केम मल्या ते नांखो, पी
यु कहे अवसर पामी ॥ ऊ० ॥ १७ ॥ अंध कूप गत
जेह सुरंगा, ते मुख में चय खडकी ॥ पृथुल गर्त्त घ
रनें आकारें, द्वार शिलायें अडकी ॥ ऊ० ॥ १८ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पेठो हुं चयमां थइ गनें, द्वार सुरंग उघाडी ॥ सबल सुरंग शिला तस द्वारें, दीधी पाठी आडी ॥ ऊ० ॥ १ए॥ सुन्नटें चय सलगाडी मूकी, बली बली थइ टाढी ॥ द्वार उघाडी कुशलें आव्यो, गार नृपति शिर चाढी ॥ ऊ० ॥ २० ॥ सुंदरी गुह्य कथा ए माहरी, कोइ आगें मत नांखे ॥ दुष्ट नृपति मुज रिद्ध विलोके, तुज लेवा अनिलाखे ॥ ऊ० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें थइ द्वादशमी, ढाल सुधारस मीठी ॥ कांति कहे धणनी पिउ संगें, विरह व्यथा सवि नीठी ॥ ऊ० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो नरपति तेहवे, कहे सिद्धनें जंत ॥ नोजन द्यो मलया नणी, अम हाथें न करंत ॥ १ ॥ तरुणी तुरत जमाडीनें, कहे सिद्ध सुण राय ॥ कीधुं कारज ताहरुं, हवे अम दीयो विदाय ॥ २ ॥ आपो मुज धण आदरें, थापो बोल प्रमाण ॥ निरखे जीवा सामुहो, वचन सुणी महेराण ॥ ३ ॥ संकल्पी जगव्यो वली, मंत्री ठल नुं धाम ॥ अहो सिद्ध साध्युं सबल, नृपतिनुं ए काम ॥ ४ ॥ उपकारी शिर सेहरो, महा सत्त्ववर सिंधु ॥ बीजुं पण महीपति तणुं, कर एक कारज बंधु ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल तेरमी ॥ विंजाजी हो रतन कूउ मुख सांकमो
रे विंजा, किम करी करुं रे ऊकोल ॥
रायविंजा, सयण मारू ॥ ए देशी ॥

॥ साधकजी हो एह पुरनें अति ढूकमो रे मित्ता, नामें गिरिछिन्न टंक ॥ सिऊ रूमा, सयण म्हारा ॥ ॥ सा० ॥ विषम ऊरध शिखरें तिहां रे मित्ता, अंब अछे निरऊंक ॥ सिऊ० ॥ १ ॥ सा० ॥ फल तेहनां अति सीयलां रे मित्ता, लहीयें बारही मास ॥ सि० ॥ सा० ॥ ते शिखरें उंचा चढी रे मित्ता, तलपी हवे आकाश ॥ सि० ॥ २ ॥ सा० ॥ विषम थलें आंबा शिरें रे मित्ता, पोहोचीनें फल लेय ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ ऊंपावो वली अंबथी रे मित्ता, नूतल ना ग तकेय ॥ सि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ आवो इहां कुशलें वही रे मित्ता, मूको फल नृप नेट ॥ सि० ॥ सा० ॥ पित्तविकार नरिंदनो रे मित्ता, टलशे तेहथी नेट ॥ ॥ सि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ कुमर विमासे दोहिलो रे मित्ता, ए पण नृप आदेश ॥ सि० ॥ सा० ॥ थानक मरण तणुं सही रे मित्ता, न फुरे जिहां मति लेश ॥ सि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ जो न करुं तो कामिनी रे मित्ता, नापे ए नरनाथ ॥ सि० ॥ सा० बिहुं वातें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मृत्यु माहरुं रे मित्ता, पमिया नूमि वे हाथ ॥ सि० ॥ ॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रनावथी रे मित्ता, करशुं उुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज सुंदरी रे मित्ता, ठे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥ ॥ सा० ॥ धारी एहवुं आदरें रे मित्ता, मंत्री वचन तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ आसनथी ऊठ्यो धसी रे मित्ता, साहसनुं कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥ मलया जल नयणें नरे रे मित्ता, उुःख पूरें दिलगीर ॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण वींट्यो घणे रे मित्ता, आवे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा० ॥ जिम जिम गिरि ऊंचो चढे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक ॥ ॥ सि० ॥ सा० ॥ नूपतिनें मंत्री हइये रे मित्ता, वाधे हर्षना डोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोने गिरि टूंके चढ्यो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ नृप सुनटें नीचो रह्यो रे मित्ता, अंब देखाड्यो डूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रूडुं जे में उपार्ज्युं रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेल ॥ सि० ॥ सा० ॥ सफल हजो माहरुं इहां रे मित्ता, तेहथी साहस खेल ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० इम कहेतो अंबा थकी रे मित्ता, आपे ऊंपापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हाहारव लोकां तणो रे मित्ता, गिरि कूहे नवि मात ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० पम्रुंयो गिरिकंदरें रे मित्ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साहस देखीनें रे मित्ता, बोल्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥ ॥ १४ ॥ सा० ॥ पमतो वेगें शृंगथी रे मित्ता, देखे चरनी भ्रांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य हुउं जन देखतां रे मित्ता, जिम थाशें नृप खांति ॥ सि० ॥ ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मित्ता, हाहा पाप प्रचंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पमतां एहना हामनो रे मित्ता, जमशे कहो किहां खंम ॥ सि० ॥ ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं नांखतां रे मित्ता, नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज घर आव्या वही रे मित्ता, तस साहस स लहंत ॥ ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहमें सकन्न सुणावियुं रे मित्ता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप कृतारथ मानता रे मित्ता, निवहे रात निरंत ॥ सि० ॥ ॥ १७ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रन्नातें आवियो रे मित्ता, लै सहकार करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी कहे रे मित्ता, आव्या केम अखंम ॥ सि० ॥ १ए ॥ ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेशुं पछें रे मित्ता, हवणां म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पूछशो कांइ ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहेतो इंम जन वीं टीयो रे मित्ता, नृप नवनें गयो धाई ॥ सि० ॥२०॥ ॥ सा० ॥ श्यामवदन राजा हूउ रे मित्ता, बीहीनो निरखी चित्त ॥ सि० ॥ सा० ॥ बोल्यो तेहवे मंत्रवी रे मित्ता, कुशल्यो किम तुं मित्त ॥ सि० ॥ २१ ॥ ॥ सा० ॥ इंमहीज इति मुख बोलतो रे मित्ता, मूके अंब करंक ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहे ए ल्यो खाउ सहू रे मित्ता, पित्त समावो उदंक ॥ सि० ॥ २२ ॥ सा० ॥ बीहीना हाकें बापका रे मित्ता, नृप प्रमुख करे मून ॥ सि० ॥ सा० ॥ बे त्रण तेह करंकथी रे मित्ता, सिद्ध ग्रहे फल धून ॥ सि० ॥ २३ ॥ सा० ॥ नृपनें पूठी संचरे रे मित्ता, मलया पास हसंत ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ सा घनथी जिम मोरकी रे मित्ता, पीउ दीठे विकसंत ॥ सि० ॥ २४ ॥ सा० ॥ सकल उचित वि धि साचवी रे मित्ता, बेठी पीउ संग बाल ॥ सि० ॥ ॥ सा० ॥ पंकितजी रे चोथे खंके तेरमी रे मित्ता, कां तें कही ए ढाल ॥ सि० ॥ २५ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोकी कामिनी कहे, नांखो कंत उदंत ॥
गत दिन गत आगम कथा, तव महबल पन्नणंत ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १ ॥ सुंदरी पहेलो मुज मल्यो, योगी वनमां जेह ॥ प्रजल्यो पावक कुंमसां, थयो व्यंतरो तेह ॥ २ ॥ ते व्यंतर इहां अंबमां, वसिउं मुज जाग्येण ॥ गिरिथी पमियो वचन वदे, उलखियो हुं तेण ॥ ३ ॥ आप करें मुजनें ग्रही, बोल्यो ते गुण लीह ॥ रे उपगारी मित्र तुं, मनमां कांइ म बीह ॥ ४ ॥ आप स्वरूप कह्युं तिणें, में पण मुज विरतंत ॥ करतां मैत्री संकथा, वीती राति तदंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुज मनडुं तुमथी हल्युं, रहो रहो मित्र सुजाण रे ॥ थावो अम घर प्राहुणा, पालो प्रेम पुराण रे ॥ मु० ॥ १ ॥ पूरवला संबंधथी, मलीयो जो मुज आई रे ॥ तो तुं एम उतावलो, उठीनें कांई जाई रे ॥ मु० ॥ ॥ २ ॥ प्राहुण गति शी साचवुं, कहे तुं मुखथी आप रे ॥ तुम आणा माथे धरुं, जिम जग नृपनी छाप रे ॥ मु० ॥ ॥ ३ ॥ तव हुं बोल्यो ते प्रतें, सुण बांधव गुणवंत रे ॥ नृप कामें हुं आवियो, ढील इहां न खमंत रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ पण बांध्यो में जेहवो, तेहवो हुये सुकयछ रे ॥ तो जाणुं मैत्री तणुं, सही सफल परमछ रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ बोल्यो सुर सुण मित्रजी, ए नृप शत्रु सरीख रे ॥ हणवा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चाहे तुजनें, कहे तो द्युं हवे शीख रे॥मु०॥६॥ में जांख्युं एह एटले, नहिं विरमे जई आप रे ॥ तो एहनें सम जावशुं, करी कूम्रो उपजाप रे॥ मु० ॥ ७ ॥ विषम प्रयोजन ताहरे, आवी पमे कोई जेथ रे॥ संजार्यो हुं ततक्षणें, करशुं सान्निध्य तेथ रे ॥ मु०॥ ७॥ इंम कहेतो सुर किहांथकी, लाव्यो एक करंम रे ॥ सरस रसाल तणे फलें, जरीयो तेह अखंम रे॥ मु० ॥ ए॥ मुजनें तेह करंमशुं, सुरवर आप उपामी रे॥ मूक्यो पुरनें उपवनें, जिहां जिन मंदिर आमी रे॥ मु० ॥ १० ॥ सुर बोल्यो ए फल जई, देजे तुं नृप हाथें रे ॥ अदृश्य गतिक रूपें तिहां, आवीश हुं तुज साथें रे॥ मु० ॥११॥ जे जे घटशे काम त्यां, करशुं गने हुं तेह रे ॥ शीख वियो इंम मुजनें, देवें आणी सनेह रे ॥ मु० ॥ ॥ १२ ॥ थाप्यो तेह करंमीउ, नृपति आगलें जाई रे ॥ लेई अनुज्ञा तेहनी, वेगो हुं इहां आई रे॥ मु० ॥ ॥ १३ ॥ एहवे तेह करंमथी, कमकमतो स्वर क्रूर रे॥ उबलियो बलियो महा, पमबंदे जरपूर रे ॥ मु० ॥ ॥ १४ ॥ खाउं पहेलो हुं नृपनें, के धुर खाउं प्रधान रे ॥ एक जणनें बिहुं मांहिथी, नहिं मूकुं हुं निदान रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ शब्द सुणीनें नरपति, पमि

यो चिंतानी जाल रे ॥ थरथरतो कहे सचिवनें, कर माहारी संभाल रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ सिद्ध पुरुष कोई सिद्ध ए, गूढातम विपरीत रे ॥ दुष्कर काम करे ह सी, अण चिंत्युं केणी रीत रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ फल मिशें एह करंडमां, आणी कांइ बलाय रे ॥ आपणनें क्षयकारिणी, वलगाडी कुपलाय रे ॥ मु० ॥ १८ ॥ सचिव कहे नृपनें प्रभु, एहनें मुख दियो धूल रे ॥ इंम कहीनें वारी जतो, आवे करंडनें मूल रे ॥ मु० ॥ १ए ॥ क्रूर सुणे रव तेहनो, जिम यमडुंडुभिनाद रे ॥ कर्ण विवर विष सारिखो, करत अशनि धुनि वाद रे ॥ मु० ॥ २० ॥ फल ग्रहेवा तस ढांकणुं, ऊघाडे ततकाल रे ॥ वज्रा नल सरखी तदा, प्रगट हुई माहाजाल रे ॥ मु० ॥ २१ ॥ भड भड शब्दें गाजती, प्रत्यक्ष जेम भडधाडि रे ॥ तेह करंडथी नीसरी, ऊरध भाग धूमाडि रे ॥ मु० ॥ ॥ २२ ॥ दुष्ट प्रधाननें तेणीयें, जाल्यो जेम पतंग रे ॥ क्षणमां जीवो त्यां हुउ, निर्जीवित दहि अंग रे ॥ मु० ॥ २३ ॥ मंदिर कांठें सलगिउं, अगनि म हा दुरवार रे ॥ बीहितो नृप तव सिद्धनें, तेडावे ति णि वार रे ॥ मु० ॥ २४ ॥ मुज आधीन सुरें तिहां, दीसे ठे कांइ कीध रे ॥ इंम धारी भूपति कनें, आवे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परें रा जियो, बोल्यो एम झरंत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालियें, त्रिज्वर एह दुरंत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धें तव जल छंटीयुं, अनल हुउं उपशांत रे ॥ ढांक्यो अंब करंडी उं, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते ह करंडनें, बेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शिं दरी, देखी कुण न डराय रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ कुशलें सिद्ध करंडीयो, उघाडी फल लेय रे ॥ विस्मित भूपा दिक जणी, आपहथु जव देय रे ॥ मु० ॥ २९ ॥ त व महीपति डरतो हीये, खंचे कर मुख फेरी रे ॥ थापी बीजानें करें, लेवरावे सिद्ध प्रेरी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥ जीवानो नंदन वड्यो, सचिव कस्यो गुण खाणी रे ॥ चोथा खंडनी चौदमी, कांतें ढाल वखाणी रे ॥ मु० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूछे किम ऊछल्यो, एह महाजय सिद्ध ॥ मंत्रीनें जेणें इहां, मरण अवस्था दीध ॥ १ ॥ कहे सिद्ध ए पल्लव्यो, तुज अन्याय कुवृक्ष ॥ हवे फूल फ ल एहनां, लहेशो तुं प्रत्यक्ष ॥ २ ॥ महीयल मांहिं महीपति, जेह करे नय पोष ॥ नासे आपद तेहथी, वाधे संपद कोष ॥ ३ ॥ नीतिमांहे आपद तणो,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आस्पद छे अविवेक ॥ संपद होय सयंवरा, निरखी नृप नय छेक ॥ ४ ॥ तेह भणी नय गोचरें, निगम विचारी गुज्ज ॥ आतम वचन प्रमाणवा, आपो मति त्या मुज्ज ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोलिया, करो देव ए वयण ॥ अनय रसें कोपाववो, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ योगीसर चेला ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी नरराजियो रे, पड्यो विमासण मांहि रे ॥ नारि रस रातो, पेठो छपांपल गोचरें होलाल ॥ हियरू चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्रांहीं रे ॥ करशुं विधि केही, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥१॥ मंत्र तंत्रादिक योगनारे, लहेतो विविध प्रकार रे ॥ साधे बाहिरनां, कारज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह भणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अन्यंतर कोई, डुष्कर ते करशे किहां होलाल ॥ २ ॥ कारज विण कीधे सही रे, जोतां पुरनां लोक रे ॥ होशे जं शीयाला, चोंठो पडशे बापडो होलाल ॥ फरि नहीं मागे सुंदरी रे, थाशे मसागति फोक रे ॥ पहेली जे कीधी, मलशे नहीं वली ताकडो होलाल ॥ ३ ॥ इम करे फावशे प्रिया रे, अपयश लोक विचाल रे ॥ नहीं होशे महारे, एहवुं विचारी बोलियो होलाल ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्रीजुं काम करे हवे रे, तो थुं महिला संन्नाल रे ॥ आठी ए तुजनें, वचन थकी हुं न न्नोलीयो होलाल ॥ ४ ॥ निज नयणें निरखुं सदा रे, पुंठि विना मुज अंग रे ॥ तेमाटे वांसो, देखुं हुं तेहवो करो होलाल ॥ मुज उपर करुणा करी रे, पूरो एह उमंग रे ॥ सुगु णा सोन्नागी, मानीश पाड इहां खरो होलाल ॥ ५ ॥ नृपनंदन चींते ईस्यो रे, एह स्यो सोंपे काम रे ॥ नृप हसवा सरिखो, कुमति कदाग्रह केलवी होलाल ॥ रीशाणो कहे रायनें रे, ए स्यो मांड्यो उधांम रे ॥ ए हथी कहीं आगें, सिद्धि किशी ताहरे नवी होलाल ॥ ॥ ६ ॥ पुंठ जोवे कोण आपणी रे, जो पण होय लख हाम रे ॥ इंम कहीनें खांचे, नाम्नी नृप ग्रीवा तणी हो लाल ॥ उलटी मुख वांकूं वल्युं रे, आव्युं ग्रीवानें ठा म रे ॥ ग्रीवा मुख ठामें, आवी रही तव आफणी होलाल ॥ ७ ॥ पूंठ निहालो खंतशुं रे, काम थयुं तुज ठीक रे ॥ न्नूपति गुण मानो, वचन सुणी इंम तेहवे होलाल ॥ सचिव नवो रोषें नस्यों रे, बोल्यो थई साहसिक रे ॥ सुण धूरत धींठा, लाज नहीं तुज ने हवे होलाल ॥ ८ ॥ जनक हण्यो तें माहरो रे, जीवो नामें वजीर रे ॥ खुनी अन्यायी, बीहितो नहीं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

असमंजसें होलाल ॥ अम जोतां वली नृपनें रे, कां दुःख द्यो बे पीर रे ॥ मरकी गलनारकी, कांई मरे वाहो रसें होलाल ॥ ए ॥ राज सन्नामां वाधीयो रे, सबलो हालकल्लोल रे ॥ देखी नृप विरुद्ध, लोक मल्या ल ख धाईनें होलाल ॥ जन मुखथी लही वातकी रे, पमियो महादुःख जोल रे ॥ राजानी राणी, बीह ती आवी उजाईनें होलाल ॥ १० ॥ दुःखीयो दीन दयामणो रे, रूपें अपूर्वाकार रे ॥ नृपतिनें देखी, द श आंगुली वदनें ठवे होलाल ॥ पमती रमती सिद्ध नां रे, प्रणमी चरण उदार रे ॥ अबला सुकुलीणी, दीन स्वरें तिहां वीनवे होलाल ॥ ११ ॥ मूको कोप कृपा करी रे, थाउ सुप्रसन्न चित्त रे ॥ साहेब गुणवं ता, अम अबला साहामुं जूउ होलाल ॥ पतिन्निक्षा अमनें दीउ रे, दातारां शिर ठत्र रे ॥ साधक करुणा ला, ताण्यो न खमे तांतुउ होलाल ॥ १२ ॥ जेहवो हतो तेहवो करो रे, धुरनुं रूप बनाय रे ॥ साचा उ पगारी, जश लेतां न करो गई होलाल ॥ थाशे कारज एटलुं रे, तो अम लाख पसाय रे ॥ मोहन रंगीला, न हीं होय तो गणजो मूई होलाल ॥ १३ ॥ शीक्षा दीधी आकरी रे, राखी नहीं कांई खोट रे ॥ माणस जो हो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शे, तो थई ठे एटले घणी होलाल ॥ सिद्ध विमासी ए
हवुं रे, बोल्यो एह जो दोट रे ॥ पाये अणुवाणे,
वनमां जिन प्रणमे थुणी होलाल ॥ १४ ॥ श्रीजिन
अजित जुहारीनें रे, पायें आवे आंहिं रे ॥ तो थाशे
साजो, बीजो उपाय नहीं तिश्यो होलाल ॥ असमरथू
पण राजियो रे, कहे हवे चालो त्यांहिं रे ॥ साजो जो
थाउं, तो मुज अजर अठे किश्यो होलाल ॥ १५ ॥
लोक कहे निज पापथी रे, वलगो आवी वींग रे ॥ नृ
पतिनें पूठें, करशे नहीं हवे खोजणी होलाल ॥ रूप
बन्युं जोवा जिश्युं रे, प्रत्यक्ष जिम जोटींग रे ॥ दीसे
ठे कोई, खेधें लत पाम्यो घणी होलाल ॥ १६ ॥ पुर
जन जोवा पेखणुं रे, चढिया गोखें धाय रे ॥ तिहां
होका होकें, ठामें ठामें टोलें मल्यां होलाल ॥ चाल
ण मांके नृपति रे, पण न पके वग कांइ रे ॥ जोतां
डुःखदायी, कारण बे वांकां मल्या होलाल ॥ १७ ॥
जो मांके पग पाधरो रे, तो दीसे नहीं माग रे ॥ लो
चन उपरांठे, लक थकतो पगें आथके होलाल ॥ अ
वले पग ज्यां संचरे रे, लेतो मारग जाग रे ॥ घेरणि त्यां
वाधे, प्रेरण शक्ति विना पके होलाल ॥ १० ॥ विहुं
वातें पुर लोकनें रे, करतो कौतुक डुःख रे ॥ जई आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ठ्यो पाछो, साले मार कुचोटनी होलाल ॥ लोक स
मझ समजाविउ रे, थाशे हवे अभिमुख्ख रे ॥ चिंते
इम बीजी, खांचे नशा शिक्ष कोटनी होलाल ॥ १ए ॥
वइन वलीनें पाधरुं रे, बेहुं पाछुं गाम रे ॥ लागी न
हिं वेला, हूउ अंतेउर त्यां खुशी होलाल ॥ कर जो
मी कहे सिद्धनें रे, वेचाणा तुम नाम रे ॥ सुगुणा
ससनेही, जोईयें ते मागो हसी होलाल ॥ २० ॥ सि
द्ध हवे मागशे इहां रे, चोंपे मलया बाल रे ॥ नृपति
पासेंथी, अरज करावी तेहशुं होलाल ॥ चोथी चो
था खंमनी रे, एह पन्नरमी ढाल रे ॥ नांखी रस ने
ली, कांतिविजय बुध नेहशुं होलाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर कहे राणी प्रत्यें, वंछित आप विचार ॥
जो होय चारो तुम तणो, तो देवरावो नार ॥ १ ॥
गोरमीयां गुणवंतियां, जो देवरावो वाम ॥ तो थोमामां
प्रीछजो, सरियां मुज लख काम ॥ २ ॥ वचन सुणी
राणी सवे, आवी नृपनी पास ॥ मलया मूकावण न
णी, करे कोमि अरदास ॥ ३ ॥ उत्तर न दीये महीप
ति, पाछो कांइ प्रगट्ट ॥ आने कानें काढतो, चिंते एम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निपट्ट ॥ ४ ॥ जाती मलया सुंदरी, राखुं किम जग
दीश ॥ बुद्धि नको मुज ऊपजे, जेहथी फवे सदीस ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय,
गायशुं राजीमती सतीजी ॥ ए देशी ॥

एहवे अनल उदंम, वाजीशालामांहिं जागीउ
जी ॥ उंचो जाल अखंम, दारुण गयणें लागीउंजी
॥ १ ॥ निरखीनें नरराज, सिद्धप्रत्यें पभणे इस्युं
जी ॥ चोथुं वली मुज काज, एक अछे करवा जिस्युं
जी ॥ २ ॥ वारु पाट केकाण, एह बले हयशालमां
जी ॥ काढो खेंची सुजाण, काम करो एक तालमां
जी ॥ ३ ॥ रीज्यो हुं तुज नारि, आजज सोंपुं ए घ
मीजी ॥ जोतां जण दरबार, वलीयो मणिमय पाघ
मी जी ॥ ४ ॥ निसुणी पुरजन लोक, नांखे ए नृप
चातस्योजी ॥ पाम्यो शीक्षा रोक, तो वली इम कां पां
तस्योजी ॥ ५ ॥ अति दुष्टाध्यवसाय, ठोमे नहीं ए दु
र्मतिजी ॥ करी कोइ व्यवसाय, योग्य दीयुं शीक्षा रति
जी ॥ ६ ॥ ध्यातो एहवुं त्यांहिं, उछाहें बमणो थई
जी ॥ पेसण हुतभुज मांहिं, वाजी शालें उभो जई
जी ॥ ७ ॥ मनसां नृपनें आप, निंदे आक्रोशें घणो
जी ॥ बांध्यो कोपनें व्याप, इष्ट संभारे आपणोजी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ७ ॥ संजारे तेह देव, करवा सफल मनोरथाजी ॥ ऊंपावे ततखेव, दीवें पतंग पमे यथाजी ॥ ए॥ हाहा कार करंत, शोक जस्था पुरजन तदाजी ॥ आंसूमे व रसंत, लोचन जिम जल वारिदाजी ॥ १० ॥ पाम्यो जूप प्रमोद, कुमर ऊंपाणो देखीनेंजी ॥ माणे हास्य वि नोद, सचिवनें साथ विशेषिनेंजी ॥ ११ ॥ चढियो ह य सिद्धराज, अगनिथी नीसरिउं तवेंजी ॥ दीसे जि म सुरराज, आराह्यो उच्चैःश्रवेंजी ॥ १२ ॥ दीपे तेज अपार, दीव्य वसन जूषण धस्यांजी ॥ फलहल ज्यो ति तुखार, अंगें साज जला जस्याजी ॥ १३ ॥ धो रादिक गतिपंच, (१ धोरितं २ वलितं ३ प्लुतकं ४ उत्तरकं ५ उत्तेजितं) जेदें तुरंग रमाम्तोजी ॥ तन विलसित रोमांच, जननें चित्र पमाम्तोजी ॥ १४ ॥ देतो हर्षविषाद, लोक जूपतिने पालटीजी ॥ मनमां अति आल्हाद, धरतो इम कहे उल्लटीजी ॥ १५ ॥ अहो अहो तीर्थनी जूमि, एह ठे वंछित दायिनी जी ॥ ज्वलित हुताशन धूम, फरसें जे अघ घायि नीजी ॥ १६ ॥ पमियो हुं इहां आज, बीजो तुरं गम ए वलीजी ॥ बलतां सिद्धतां काज, एहवा थया माग टलीजी ॥ १७ ॥ आजथकी अम अंग, रोग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जरा नहीं संक्रमेजी ॥ नहीं हूवे मरण प्रसंग, अमर हुआ बिहुं रंगमेंजी ॥ १७ ॥ सांजली वायक एह, राजादिक सवि जूजूआजी ॥ बलवा अगनिमां तेह, पखवानें ततपर हूआजी ॥ १९ ॥ जो जो प्रत्यक्ष ख्याल, तीरथ महिमानो शिरेंजी ॥ हूआ बेहु निहाल, तीर्थ प्रजावें इणी परेंजी ॥ २० ॥ आपणनें इण गाम, तन होम्यां फल ठे बहूजो ॥ धरता मोटी हो हांम, आव्या नर पखवा सहूजी ॥ २१ ॥ बोल्यो सिद्ध विचार, रे रे क्षण एक पखवीयेंजी ॥ आणो घृत निरधार, अगनि जूगतिशुं पूजीयेंजी ॥ २२ ॥ आण्या घृतना कुंज, उँ दह दह पच पच इस्योजी ॥ जणतो मंत्र सदंज, आहूति दे मन उल्लस्योजी ॥ २३ ॥ पहेलो पेशीश आंहिं, हुं इंम कही नृप पेशीउंजी ॥ पूंठें सचिव संबाह, जई नृप पासें बेसीउंजी ॥ २४ ॥ कुमरें वार्या लोक, पखता अवर हुताशनेंजी ॥ पखो पखो स्तोक, आववा द्यो नृप सचिवनेंजी ॥ २५ ॥ लागी वार विशेष, राय सचिव किम नावियाजी ॥ वेला तुमनें हो रेख, लागी नहीं जव आवियाजी ॥ ॥ २६ ॥ इंम पुरलोकना बोल, सांजलीनें सिद्ध बोलीउंजी ॥ कांरे जूल्या अटोल, अगनि पड्यो कोण

जीवीउंजी ॥ २७ ॥ अगनि पसिउं हुं आज, सुरसा न्निध्ययी नीसस्योजी ॥ बोली सकल समाज, वैर वाल ए रूमो कस्योजी ॥ २७ ॥ फलियो अनय कुवृन्द, नृप मंत्रिसुत मंत्रिनेंजी ॥ सामंतादिक दन्द, बोल्या व ली आमंत्रिनेंजी ॥ २ए ॥ राज्य निवाहक सिद्ध, हो जो राजा आपणेंजी ॥ इम कही राजा कीध, महो त्सव आम्बर घणेंजी ॥ ३० ॥ मान्यो जन सिद्धरा ज, पाले राज्य सुनीतिथीजी ॥ महिपतियां शिरता ज, राखे जनपद ईतिथीजी ॥ ३१ ॥ अन्के विषमे काम, लेजे सुऊ संनारिउंजी ॥ आनाखी सुर आम, सिऊं तेह विसर्जिउंजी ॥ ३२ ॥ चोथा खंन्नोषंग, मलय चरित्रथी संग्रहीजी ॥ कांतिविजय मन रंग, ढाल शोलमी ए कहीजी ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो देशांतर थकी, तेहवे तिहां बलसार ॥ लेई निरुपम नेटणुं, चली आवे दरबार ॥ १ ॥ नृप नेटी बेठे तिहां, दीठी मलया बाल ॥ मलयायें पण पेखीउं, सारथपति ततकाल ॥ २ ॥ एक एकनें उलख्यां, यातां नयणां नेट ॥ मन्नियां शत वर्षांतरें, चतुर न नूले नेट ॥ ३ ॥ फरतो तुरतज उठीउं, आव्यो मंदिर आप ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चिंते हैहै आवीयां, उदय महा मुज पाप ॥ ४ ॥ अहो महोदधि परतके, आव्यो एहनें ठोरु ॥ दैवें किम ए नृपशुं, मेली सांधा जोरु ॥ ५ ॥ जे कीधुं में एहनें, अनुचित करण अन्याय ॥ कहेशे ते जो नृपनें, तो मुज मरण सहाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सीतारा परजात' प्रणमुं हो प्रिया प्रणमुं पग नाथें करी जी ॥ ए देशी ॥

॥ मलया हो प्रिय मलया कहे सुविचार, निसुणो हो प्रिय निसुणो जे आव्यो वाणीयोजी ॥ नामें हो प्रिय नामें ए बलसार, तेहज हो प्रिय तेहज पापनो प्राणीयोजी ॥ १ ॥ मुजने हो प्रिय मुजने दीधी जेण, विधविध हो प्रिय विध विध दुष्ट कदर्थनाजी ॥ राख्यो हो प्रिय राख्यो ठानो एण, मुजसुत हो प्रिय मुजसुत करतां अत्यर्थना जी ॥ २ ॥ इंणी परें हो प्रिय इंणी परें प्रमदा बोल, निसुणी हो नृप निसुणी ततक्षण कोपीयोजी ॥ साह्यो हो नृप साह्यो शेठ निटोल, परिकर हो निज परिकरशुं कांठें दीयोजी ॥ ३ ॥ कीधी हो नृप कीधी क्रियाणां ठाप, वांकज हो वरु वांकज तास जणावीयोजी ॥ चित्तमां हो ते चित्तमां विमासे आप, सार्थप हो इम सार्थप चिंता नावीयोजी ॥ ४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

छूटण हो मुज छूटण कोई उपाय, दीसे हो नहीं दीसे नहीं कोई आशरी जी ॥ आवे हो वली आवे छे एक दाय, वखतें हो यदि वखतें थई आवे तरीजी ॥ ५ ॥ एहना हो नृप एहना वैरी दोय, परिचित हो मुज परिचित शूर नृपति धुरेंजी ॥ बीजो हो वली बीजो शूर समोय, धींगरू हो बल धींगरू वीरधवल शिरेंजी ॥ ६ ॥ जीती हो तेह जीती एहनें ताम, छोरुण हो मुज छोरुण विधि करशे वहीजी ॥ अरूलख हो हवे अरूलख सोवन डाम, परठी हो तस परठी जन मूकूं सहीजी ॥ ७ ॥ लक्षण हो धर लक्षणधर गज आठ, आएया हो घर आएया परदेशां थकीजी ॥ तेहनो हो वली तेहनो जणावी ठाठ, छूटीश हो हुं छूटीश एह नेदें थकीजी ॥ ८ ॥ समजू हो एक समजू सोमो नाम, माणस हो निज माणस सवि समजावीनेंजी ॥ मूक्यो हो तिहां मूक्यो ठानो ताम, वणिकें हो तिण वणिकें वीरधवल कनेंजी ॥ ए ॥ जातां हो मग जातां अधमग मांहि, मलिया हो बिहुं मलिया बिहुं ते राजवीजी ॥ डुर्गम हो अति डुर्गम तिलक गिरि त्यांहि, नीषण हो जिहां नीषण जिहां रुद्राटवीजी ॥ १० ॥ निसुणी हो नृप निसुणी जूठी वात, एहवी हो धुर ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हवी जनमुखथी कहीजी ॥ पल्ली हो तिण पल्लीपति किम जाति, नीमें हो वन नीमें मलयानें ग्रहीजी ॥ ११ ॥ आव्या हो तिहां आव्या बेहु नरिंद, निज निज हो जन निज निज जनपदथी वहीजी ॥ दुर्जय हो तेण दुर्जय नीम पुलिंद, रमतो हो रण रमतो रण बांध्यो ग्रहीजी ॥ १२ ॥ जोतां हो तिहां जोतां मलया बाल, दीठी हो नहीं दीठी नहीं किण थानकेजी ॥ वलीया हो नृप वलीया नृप तिण काल, मलियो हो जई मलियो सोम अचानकेंजी ॥ १३ ॥ वीरप हो नृप वीरपनो आदेश, पामी हो वर पामी वर तिम वीनवेजी ॥ सार्थप हो तेह सार्थपनो संदेश, सुणतां हो नृप सुणतां अंगीकरे सवेजी ॥ १४ ॥ आधुं हो धन आधुं देतो वीर, आवे हो विधि आवे शूर प्रत्यें हसीजी ॥ शूरो हो नृप शूरो नृप शौंडीर, लोकें हो बहु लोकें वात ग्रहे धसीजी ॥ १५ ॥ नृपकुल हो एह नृपकुल साथें द्वेष, चाल्युं हो नित्य चाल्युं आवे आपणेजी ॥ बेठो हो कोइ बेठो नूतन एष, तेहने हो हवे तेहने हवे हणशुं रणेंजी ॥ १६ ॥ सर्वस्व हो तस सर्वस्व लेशुं लूंटि, सार्थप हो वली सार्थपनें मूकावशुंजी ॥ थाशे हो अम थाशे यशनी बूटि, अरिनो हो वली अरिनो

गाम चूकावशुंजी ॥ १७॥ मंत्री हो इंम मंत्री दोय नरेश, करवा हो रण करवा सिद्ध नारिंदशुंजी ॥ चाल्या हो धकि चाल्या कटक निवेश, करता हो पथ करता पथ स्वछंदशुंजी ॥ १ॖ ॥ उदधि हो जिम उदधितिलक पुर पास, आव्या हो धर आव्या धर कंपावताजी ॥ वा दल हो दल वादल उंच आकाश, दीधा हो तिहां दीधा डेरा फावताजी ॥ १ए ॥ बे नृप हो हवे बे नृप मूकी दूत, आगम हो निज आगम हेतु जणावशेजी ॥ सा हमो हो नृप साहमो सेन संजुत्त, करवा हो रण क रवा रसमां आवशेजी ॥ २० ॥ चोथे हो एह चोथे खंडें ढाल, नांखी हो इंम नांखी सत्तरमी नावथीजी ॥ सुणतां हो घर सुणतां मंगलमाल, आवे हो नित्य आवे कांतें सुहावती जी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरप शूर बन्ने मली, शीखावी अदनूत ॥ सिद्ध नरेसर उपरें, मूके डुर्दम दूत ॥ १ ॥ अवसरविद वाचाल मुख, साहसिक निर्लोन ॥ स्वामीनक्त हित मग कथक, परखद मांहे अक्षोन ॥ २ ॥ दीर्घदर्शी दीरघगति, सर्वंसह मतिवंत ॥ नीति निपुण ग्राहक पिशुन, (शत्रुनो चाकिर्ज) ए गुण दूत वहंत ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ३ ॥ असवार्‍यो केकाण रथ, पहेर्‍यो जाव कुलिम्म ॥ सिद्धराय ज्ञवनांगणें, जइ पोहोतो जालिम्म ॥ ४ ॥ द्वारपाल नृप वीनवी, दीधो ज्ञवन प्रवेश ॥ करी स लाम सिद्धरायनें, जांखे इम संदेश ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ उदया ते पुररो मांकवो रे, गढ अरबुदरी जान महाराजा ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीठाणनो राजीउ रे, शूरपालण शूरपाल ॥ महाराजा ॥ दम दांतोने फोज लेइनें रुमेजी आवे ॥ चं द्रावती नगरी धणी रे, वीरधवल ठेगाल महाराजा ॥ द० ॥ १ ॥ ए बेहु एकमतुं थया रे, रूठो तोपर आ ज म० ॥ द० ॥ खेलि रण रस खांतशुं रे, लेशे ताहारुं राज म० ॥ द० ॥ २ ॥ सारथपतिनें रो कियो रे, नामें जे बलसार म० ॥ द० ॥ ते साथें बे ज्ञूपति रे, राखे स्नेह अपार म० ॥ द० ॥ ३ ॥ दा ता जग व्यवहारीयो रे, सहुनें बांधव तुल्य ॥ म० ॥ ॥ द० ॥ पेशकसी करता ज्ञली रे, मागे नहीं कांइ मूल्य म० ॥ द० ॥ ४ ॥ पुत्रपणे बांधव परें रे, जाणे एहनें ज्ञूप म० ॥ द० ॥ तो ते किम सहेशे प ड्यो रे, देखी दुःखने कूप म० ॥ द० ॥ ५ ॥ एणे जाते आवते रे, कीधो अमशुं नेह म० ॥ द० ॥ तु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

म नगरें वासो वसे रे, ते नणी मूको एह म० ॥ द० ॥
॥ ६ ॥ कहेवाफ्युं महारे मुखें रे, अम नूपें इंम तु
ज्झ म० ॥ द० ॥ सत्कारी मूको परो रे, पालो राज्य
सबुज्झ म० ॥ द० ॥ ७ ॥ खमियें पण एकवारनो
रे, कीधो वरांसे वंक म० ॥ द० ॥ पकिया पण मुख
फे ग्रह्या रे, दंत फिरि निज अंक म० ॥ द० ॥ ८ ॥
वाहाली पाटु गायनी रे, जो आपे पयपूर म० ॥
॥ द० ॥ मीठा माटे खाइयें रे, एठुं पण मामूर म० ॥
॥ द० ॥ ए ॥ धनपति कदिहिक पांतरें रे, तो ते कि
म न खमाय म० ॥ द० ॥ खिरतो पण दल अंगणे
रे, फलियो तरु न कपाय म० ॥ द० ॥ १० ॥ अ
म नूपें बांहें ग्रह्यो रे, ते डुःखीयो किम थाय म० ॥
॥ द० ॥ गूंजे जे वन केसरी रे, त्यां कुंजर न वसा
य म० ॥ द० ॥ ११ ॥ शूर अछे तुं साहेबा रे, पण
तुज कटक अलप्प म० ॥ द० ॥ सायरमां जिम सा
थुउं रे, थाइश त्यां तुं गफ्प्प म० ॥ द० ॥ १२ ॥
ते एहनें मूकावशे रे, तुजने शिक्षा देइ म० ॥ द० ॥
एह वातें मत आणजे रे, शंका बल उमहेइ म० ॥
॥ द० ॥ १३ ॥ थाइश मां तुं आकलो रे, नुजबल
नें विशवास म० ॥ द० ॥ बे जण उषध एकनुं रे, ए

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हवो जगत प्रकाश म० ॥ द० ॥ १४ ॥ म पर्मीश माता मोहमां रे , लंकेश्वर जिम मूंज म० ॥ द० ॥ उ चित हितारथ धारियें रे,आणी मननी सूज म०द०॥१५ ॥ दूत वचन सुणी लहे रे, आव्या सुसरो तात म० ॥ द० ॥ मनमांहे हरख्यो घणुं रे, बोल्यो फेरवी धा त म० ॥ द० ॥ १६ ॥ सैन्य घणुं जो नृपनें रे, तो शुं नहीं तुज दोय म० ॥ द०॥ एक एक देह नहीं किश्युं रे, केवल नर नहीं होय म० ॥ द० ॥ १७ ॥ एकलको पण दिणयरु रे, तेज तणो अंबार ॥ म० ॥ द० ॥ कोम्गि मे तारातणुं रे, हरे महातम सार ॥ म० ॥ द० ॥ ॥ १० ॥ आफलतो आत्ता लगें रे, मानीमां शिरदार म० ॥ द० ॥ एकाकी पण केशरी रे, गाले गजमद त्तार म० ॥ द० ॥ १ए ॥ तिम हुं जो पण एकलो रे, ते नृप ते बल साज म० ॥ द० ॥ बाणे रणमां ते होनी रे, फेम्मीश तुजनी खाज म० ॥ द० ॥ २० ॥ वा हलो पण अन्याईयो रे, शीखवीयें सुत आप म० ॥ द० ॥ अन्यायें थाता परखू रे, लाज्या नही अद्याप म० ॥ द० ॥ २१ ॥ जो नेही छे नृपनो रे, तो अम केहो लाज म० ॥ द० ॥ अम साथें तो छेम्तां रे, त्त रशे बाथां आज म० ॥ द० ॥ २२ ॥ न दीयें शिक्षा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दुष्टनें रे, न गणे साजन शर्म्म म० ॥ द० ॥ तो अ
म सरिखानें रहे रे, केहो नृपनो धर्म म० ॥ द० ॥ २३ ॥
अन्यायी तुज राजिया रे, आव्या जेह उमंग ॥ म० ॥
॥ द० ॥ तेहने पण समजावशुं रे, खग साखें रण
जंग म० ॥ द० ॥ २४ ॥ सर्व मनोरथ एहुना रे, पू
रीश हुं इणवार म० ॥ द० ॥ जा कहेजे तुज पूछलें रे,
आव्यो हुं निरधार म० ॥ द० ॥ २५ ॥ दूत गयो पाछो
वही रे, चोथे खंडें अनुप म० ॥ द० ॥ ढाल कही ए
अढारमी रे, कांतिविजय करी चूंप म० ॥ द० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहासनथी ऊठियो, बहि मंडपमां आय ॥ ढ
क्का तिहां संग्रामनी, वजडावे सिद्धराय ॥ १ ॥ रणरा
तो मातो मदें, तातो क्षत्रीय तेज ॥ आव्यो नृप मल्ल
या कन्हे, कहेवा रहस्य सहेज ॥ २ ॥ मल्लुलामां मल
या त्रणी, द्ये रहेवा निर्देश ॥ चतुरंगी सेना सजी, ध
रे आप रणवेश ॥ ३ ॥ असवारी कीधी गजें, रण रं
गे शणगार ॥ नीसरियो पुरथी महा, धिंग कटक वि
स्तार ॥ ४ ॥ नवल दमामां गडगड्या, वागां वड र
णतूर ॥ रसिया नाद जंजेरिया, अकिग उलट्यो शूर
॥ ५ ॥ उंपां द्ये करवालने, टोपां कै पहेरंत ॥ तोपां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

केता सज्ज करे, धोपां केई धरंत ॥ ६ ॥ गज गाजे हय हेषणें, रथ चितकार अखंम ॥ सिंहनाद शूरा तणे, बधिर हूउं ब्रह्मंम ॥ ७ ॥ कवच हरा आयुधधरा, पूरा रण खेलाम ॥ रणथंत्ने जई वागियां, फोजां तणां कमाम ॥ ८ ॥ बे दल आमा साहमां, अम्मियां आई सबाहिं ॥ तामलिअणपेठा वही, तारू नम रण मांहिं ॥ ए ॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ कमखानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप बे नमे सिझशुं, रण तणा दाव रमता न चूके ॥ उनम वनना महा मद ठक्या हाथिया, जेम गिरिवर तमे आई ढूके ॥ ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चढ्यो जेह ते गज चढ्याथी अमे, रथ चढ्यो रथचढ्याथी न मूंजे ॥ तुरंगधर तुरंगधर साथ ऊपटां लीये, पायचर पायगां संग ऊजे ॥ सजे० ॥ २ ॥ वजत शरणाईयां राग सिंधु शिरे, गुहिर निशाण चोसाल गुंजे ॥ पूर रणतूर रव वीर नैरव नणी, युद्ध रस निरखवा जई प्रयुंजे ॥ स० ॥ ३ ॥ सुणत रणनाद उनमाद रस पूरिया, देह ससनेह ज्यों द्विगुण फूलें ॥ त्रटक त्रटकी पमे कवच नींचां तणां, नेदीयां तिरवण रोमांच शूलें ॥ स० ॥ ४ ॥ शस्त्र चिलकार ऊबकार जलनो जिस्यो, गाहीयो गयणवर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुंडरीकें ॥ खड्ग कल्लोल नृपहंस खेले तिहां, फेर न हीं जलधि रणमां रतीकें ॥ स० ॥ ५ ॥ सुहड वच नोपरि वचन प्रतिहत करे, सिंहनादें महा सिंहनादं ॥ जुजयुगा फालणे जुज युगा फालता, करत रण नयें लीला विवादं ॥ स० ॥ ६ ॥ वीर शिरवाल रण चालमां उत्सुक्या, ऊर्ध्वमुख तास रुचि तेम शोन्नी ॥ ज्वलित मन रोप पावकथकी नीसरे, धूम धोरणी जिसी गग न शोन्नी ॥ स० ॥ ७ ॥ करत ललकार हलकार जड को पिया, चलत धमकारशुं शेष डोले ॥ कर. ग्रही ढाल धुंताल धुंकल रसें, बयल बंगाल करवाल तोले ॥ स० ॥ ॥ ८ ॥ जाति जुज वीर्य गुण वंश उदजावता, बंदिजन प्रबल शूरां जगाडे ॥ उमगिया योध बल बोध करि आपणा, रण तणी सबल बाजी फबाडे ॥ स० ॥ ॥ ए ॥ अश्व खुरताल पडतालथी ऊपडी, खेह अं बर चढी सूर बायो ॥ दिशि हुई धूंधली अरुण रंगें धरा, जाणे विण काल वरसाल आयो ॥ स० ॥ १० ॥ सगग शर धार वरषण लगी चिहुं दिशें, बगग बरछी चले अगग गेडी ॥ रणण रणकार जल्ली (फरसी) तणा वागिया, सिल्ल सुहडाण नाखे उथेडी ॥ स० ॥ ॥ ११ ॥ खड्ग खटकार गजदंत ऊपर पडे, जरर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जरहर झरे अगनि बुंदा ॥ तप तप्या शुंढ सित्कार जल वर्षणें, तुरत शीतल करे ते गयंदा ॥ स० ॥ ॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर ग्रही, जोरशुं वैरी सनमुख उछालें ॥ वहत नत्र शस्त्र देखी सुर खेचरा, वज्रशंकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥ प्रोइया सुनट केइ गांजरू गगनमां, ऊरध कीधा जिस्या नट्ट वंशें ॥ उरूत आकाश आयास विण गृध्रनें, बलि महोत्सव हुर्ज तास मंसें ॥ स० ॥ १४ ॥ अरूरू अरूराट करि बूटीयां शतघनी, धुमल धूंआं धुखें धुम्मरोला ॥ अगनि कण खिरत तग तगत ताता घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥ स० १५ ॥ दरूरू परनाल ज्यों खाल रुहिरा वहे, करूरू नर को परी खंरू फूटें ॥ गरूरू गेवरि गरूं नालि मुख आहणया, खरूरू खग खाटकें फलक त्रूटें ॥ स० ॥ १६ ॥ कलह खय काल सरिखो हुर्ज आकरो, सिद्ध नृप सैन्य नागुं दिगंतें ॥ थिर करी बल हवे आप समरंगणें, आवियो राय रोषाल खंतें ॥ स० ॥ १७ ॥ हाकतो सुनटनें युद्ध मंरूं तिहां, सिद्ध रणरंग गज बेसी ताजें ॥ विश्व नूषण गजें शूर चढि धाईयो, वीर संग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि पर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दल महा पूर्व परिचित तिहां, अमर संचारियो सिद्ध रायें ॥ आवियो करण साहाय्य वेगें वही, नृप हित हेत लागो उपायें ॥ स० ॥ १ए ॥ आवता वैरी हथियार अध मारगें, लेय सिद्धरायनें देव आपे ॥ सिद्ध शर धार वरसी घणा नृपनें, मोरचाथी परा दूर थापे ॥ स० ॥ २० ॥ कौतुकी अर्द्ध चंद्रात्र बाणें करी, शूरनां वीरनां छत्र छेदें ॥ चम चम नेजा धजा मांहिं मूरत वस्या, तोडियां चिन्ह नृपनां उमेदें ॥ ॥ स० ॥ २१ ॥ कर ग्रहे नृप बहुं शस्त्र जे नांखवा, तेह पण सिद्ध शस्त्रें विखंडे ॥ करत यतना घणी बेहुंना देहनी, समरनो खेल इम वारु मंडे ॥ स० ॥ ॥ २२ ॥ नृप जांखा पड्या चित्त संकल्पता, समर कला रह्या शस्त्र नांखी ॥ खंड चोथे नली ढाल उंग णीशमी, जाति कडखा तणी कांतें नांखी ॥ स० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दीन वदन शोकातुरा, जोतां नीची देह ॥ निरख्या सिद्धें महीपति, नाख्या जाणे बेह ॥ १ ॥ इम इम कारज साधना, करवी ते सुरराय ॥ इम सम जावीनें लिखे, लेख एक तिण ठाय ॥ २ ॥ बाण मुखें ठवी लेख ते, मूक्यो गुण संधेव ॥ नरपति कुल खो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जावतो, चढ्यो गगन ततखेव ॥ ३ ॥ पोहवी हेठो ऊतरी, करे प्रदक्षिण तीन ॥ शूरनृपतिने पाखती, ते शर थई आधीन ॥ ४ ॥ पय प्रणमी लोटेंगणे, मूके लेख तुरंत ॥ सिद्ध नरींद कन्हे वही, फरी आव्यो उमगंत ॥ ५ ॥ चरित निहाली बाणनां, विस्मित हूआ नरींद ॥ देव सगति विण किम हुवे, अचरिज एह अमंद ॥ ६ ॥ निश्चेतन चेतन तणा, खेले खेल कदापि ॥ परमारथ एहनो इहां, किम जाणीशुं आप ॥ ७ ॥ एम कही निज कर ग्रही, तुरत उखेके लेख ॥ जोतां अक्षर मालिका, लहे परम उल्लेख ॥ ८ ॥ लोक सकल मलिया तिहां, सुणवा पत्र उदंत ॥ हरख वशंवद पत्र त्यां, वांचे वसुधा कंत ॥ ए ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ थारानें माहारा करहला,
वरता नदीने तीर हमीरा ॥ ए देशी ॥

स्वस्तिश्री जिनपद नमी, जक्त्या श्रीमती तंत्र ॥ सनेही ॥ शूरप नृप चरणांबुजें, सुत महबल लिखि पत्र ॥ सनेही ॥ १ ॥ कुशल संदेशो पाठवे, ठे अमने सुखशात ॥ स० ॥ तात शरीर नीरोगता, चाहुं हुं दिनरात ॥ स० ॥ कु० २ ॥ वीरधवल सुसरा जणी, प्रणति करुं कर जोकि ॥ स० ॥ तात श्वसुर सुपसायथी, पाम्यो यशनी

कोमि ॥ स० ॥ कु० ॥ ३ ॥ निज दयिता पामी तिहां, लाधुं वली नृपराज्य ॥ स० ॥ पूज्य चरण शुन्न चिंतनें, कीधुं सबल साहाज्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ४ ॥ में नुज वीरज दाखवीउं, करवा बाल विलास ॥ स० ॥ खमजो अविनय माहरो, करजो कोप विनाश ॥ स० ॥ ॥ कु० ॥ ५ ॥ तात चरण नेट्या तणी, चाह हती निज नित्य ॥ स० ॥ ते शुन्नदैवें माहरी, पूरी आज अचिंत्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ६ ॥ कांई विषाद करो हवे, पउधारो पुरमांहिं ॥ स० ॥ वांचत लेख ईस्यो सुणी, पूख्या हर्ष उन्नाहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ ७ ॥ परमानंद महारसें, सिंच्या नृप सरवंग ॥ स० ॥ सैनिक समक्ष कहे अहो, अहो अहो ए दिन चंग ॥ स० ॥ ॥ कु० ॥ ८ ॥ कुमरीशुं सुतरत्नजी, मलियो महबल आई ॥ स० ॥ जीवित सफल थयुं हवे, जीवाड्या महाराई ॥ स० ॥ कु० ॥ ए ॥ उद्धरिया दुःख खाणथी, दुहिलममां लहि आथ ॥ स० ॥ काढ्या नरक निवासथी, पकमतां साह्या हाथ ॥ स० ॥ कु० ॥ ॥ १० ॥ शूरपाल नृप इम कही, वीरधवल लेई संग ॥ स० ॥ महबल साहमो चालियो, धरतो बहुल उमंग ॥ स० ॥ कु० ॥ ११ ॥ पूज्य बिनें साहमा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पगें, दीठा आवत तेह ॥ स० ॥ सहसा हरखें सामो हो, आवे आप रसेण ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलिया हेजें हरखता, टाली वैर विरोध ॥ स० ॥ मांहो मांहि प्रकाशीउं, पूरण प्रेम निबोध ॥ स० ॥ कु० ॥ ॥ १३ ॥ हर्ष तणे आंसू जलें, ठार्यो विरह हुताश ॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या, वाध्या रंग विलास ॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चंदन सीयलुं, तेथी शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो, वाहालानो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ क्षण एक इष्ट कथारसें, निरवाहे सुख शील ॥ ॥ स०॥ वैतालिक (नाटचारणादिक) बोल्या तिसें, न सहे वासर ढील ॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिंधूनृपें निजपुर प्रत्यें, पध राव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विंट्या निज निज परिकरें, आव्या नवनें सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ रोती दुःख संन्नारीनें, राणी मलया ताम ॥ स० ॥ बोलावी सुसरादिकें, आदर देय प्रकाम ॥ स० ॥ कु० ॥ १८ ॥ तुरत करावी महाबलें, अशनादिकनी नक्ति ॥ स० ॥ सैनिक सर्व संतोषियां, नूपालें नली युक्ति ॥ स० ॥ ॥ कु० ॥ १९ ॥ तात श्वसुर आदें सहु, बेठां सुखमां त्यांहिं ॥ स० ॥ ऋद्धि निहाली कुमरनी, चित्र लहे

चित्तमांहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ २०॥ सुत आगें जनका दिकें, नांखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम रें वली, नांख्या तिम अवदात ॥ स० ॥ कु० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें वीशमी, नांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥ कांतिविजय कहे सांनलो, आगल वात रसाल ॥ ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी डुःख विरतंत ॥ विषम कर्मगति नावतो, तनुजानें नणंत ॥ १ ॥ हे हे नृपकुल ऊपनी, पोषी लाम विलास ॥ रखमी दिशि दिशि रंक ज्यौं, पमी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां विविध डुःख आकरां, कोमल अंगें एम ॥ व्यसन महोदधि डुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें ॥ ए देशी ॥ अथवा, उठी नावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥ सूरपति महीपति बोले ए, पमिया मामा मोलें ए, खोले ए, निज मन डुःखनी गांठमी ए ॥ १ ॥ हा पुत्री हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूमो कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २ ॥ काज कस्युं में अण जाएयुं, जल पीधुं ते विण गाएयुं, अतिताएयुं, तुज साथें

मैं दुर्मति ए ॥ ३ ॥ गुनहो ते सवि माहरो, खम
जो गुणवंती खरो, आफरो, मननो हवे दूरें करो ए
॥ ४ ॥ जित कोपा तुं सुंदरी, था रलियायत गुणन्नरी,
दिलवरी, करीयें ते हियडे धरो ए ॥ ५ ॥ परमारथ
नी ज्ञापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तुं सत्य
शील कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुसरा त
णां, मलया ते धरी धारणा, कारणां, दुःखनां तुरत
विसारीयां ए ॥ ७ ॥ धन्य धरामां तुज मती, साहस
करुणा रात ठती, धृतिगति, सूरिम शुन्नकृत तुज न
लां ए ॥ ८ ॥ ईम महाबल गुण नांखता, नृपादिक
यश दाखता, जणकिता, सलहें महबलने तिहां ए
॥ ए ॥ जनकादिक पूछे तिहां, वत्स कहो सुत छे कि
हां, लीधो इहां, पापीडे जे वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र
कहे वाणिज घरें, ठानो किहां किण उबरे, पण खरें,
खबर नहीं छे ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेडीनें पूछां खरो,
ऊतरशे नहीं पाधरो, आकरो, करतां ते देखाडशे ए
॥ १२॥ ततक्षण सुन्नटें आणियो, पग बांधीनें ता
णीयो, वाणीयो, दुःख पीड्यो रोवे घणुं ए ॥ १३ ॥
कहे रे दुर्मति शुं कस्यो, पुत्र लेइनें किहां धस्यो, जाशे
ऊस्यो. किम तूजथी अम नंदनो ए ॥ १४ ॥ करवुं घ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टशे तुज शिरें, तेतो करशुं द्विज खरें, पण अवसरें, सुत जावा देशुं नहीं ए ॥ १५ ॥ बीहीनो ते कहे तो आपुं, पुत्र तुम्हारो करी थापुं, दुःख टापुं, माहरो जो दूरें करो ए ॥ १६ ॥ ठोम्हो मुज सकुटुंबनें, जो नवि पाम्हो विटंबनें, तो मुनें, देतां वेला छे नहीं ए ॥ १७ ॥ हरख्या तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवें, तिण लवें, पुत्र आणीनें सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कलानो ऊलकतो ए ॥ १९ ॥ नृपादिक सवि हरखीया, पुत्र रतन गुण परखीया, निरखीया, अंग सकल लक्षण नस्यां ए ॥ २० ॥ राय कहे बलसारनें, कहेरे सी निरधारिनें, कुमारने, कीधी नामनी थापना ए ॥ २१ ॥ ते कहे बल इति थापना, कीधी छे करी कल्पना, उत्थापना, चित्त माने ते कीजीयें ए ॥ २२ ॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो, तात तणे खोले रह्यो, गह गह्यो, लेवा धननी गांठडी ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांठडी, सो दीनारनी दीठडी, ऊथडी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोराथी गाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे वही, शतबल नाम त्यां थापीयुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिनें छोडीयो, घरवाखर लूंटी लीयो, जीवित दीयो, निज जाचित

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

परिपालवा ए ॥ २६ ॥ शूर कहे वरषांतरे, मलया प्रीतमशुं खरे, इणिपुरें, निश्चयशुं दीसे मली ए ॥२७॥ ज्ञानी वचन साचुं मल्युं, वरषांतें दुःख निर्दल्युं, दूरें टल्युं, संकट सघलुं आजथी ए ॥ २८ ॥ राज्य ग्रह्युं कौतूहलें, सिद्ध नृपें भुजनें बलें, ते तिण वेलें, तातनणी आप्युं वही ए ॥ २९ ॥ सकुटुंबा बे महीपति, वहेता स्नेह रसोन्नति, शुभमति, राज काज करता वहे ए ॥ ३० ॥ चोथे खंमें मीठमी, एकवीशमी रस पूरवी, इठमी, ढाल कही कांतें भली ए ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कालें तेणे समे, करता उग्रविहार ॥ पारस जिनना शिष्य मुनि, चंद्रयशा अणगार ॥ १ ॥ ते पुरवरने उपवनें, समवसस्या गुरु राज ॥ केवलधर सुर नर नम्या, वींट्या साधु समाज ॥ २ ॥ उपगारी त्रिहु लोकने, पूज्य कृपारस सिंधु ॥ भव अनंत नांखे यथा, रूपें श्रीजगबंधु ॥ ३ ॥ वनपालक जई वीनव्या, विहुं नृपतिने वेग ॥ पुरजन वृंदे परिवस्या, आवे नृप संवेग ॥ ४ ॥ पंचाभिगमन साचवी, प्रणमी जिननें जेम ॥ धर्मकथा सुणवा वन्हे, बेठा विनयी तेम ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ढाल बावीशमी ॥ वणझारानी देशी ॥

॥ चित्त बूजो रे कांइ छांमो मोहनी निंद, जागो वि षयघारिणीथकी, नवि बूजो रे ॥ चि० ॥ एतो विषमो काल पुलिंद, छल जोवे छानो तकी ॥ न० ॥ १ ॥ चि० ॥ थेंतो सांकमे ठेरामांही, सूता काल अनादिना ॥ न० ॥ चि० ॥ बोध न पाम्यो त्यांहिं, खोया फोकट के ई दिना ॥ न० ॥ २ ॥ चि० ॥ वरजो विषय कषाय, ए हमां स्वाद न को अछे ॥ न० ॥ चि० ॥ रहेशो जो ल पटाय, पछतावो होशे पछें ॥ न० ॥ ३ ॥ चि० ॥ वर्जो हिंसा दूर, सत्य वदो परधन तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ छां मो मैथुन नूर, परिग्रह मूर्छा मति नजो ॥ न० ॥ ४ ॥ ॥ चि० ॥ क्रोधादिक रिपु चार, संगति एहनी छांमजो ॥ न० ॥ चि० ॥ प्रेम नाव संचार, तजजो द्वेष नमा मजो ॥ न० ॥ ५ ॥ चि० ॥ कलहने अज्याख्यान, चा मी रति अरति तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ पर परिवादादा न, न करो माया मृषा रजो ॥ न० ॥ ६ ॥ चि० ॥ मि थ्यामति मय साल, काढी नाखो चित्तथी ॥ न० ॥ ॥ चि० ॥ कुगति तणा ए जाल, छाण अढारह नित्य थी ॥ न० ॥ ७ ॥ चि० ॥ जींतो इंद्रिय गाम, मन मां कमजुं वश करो ॥ न० ॥ चि० ॥ वावो चित्त सुठाम,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शील सुरंगो आदरो ॥ ज० ॥ ८ ॥ चि० ॥ परचो योगा ज्यास, अहनिशि जावो जावना ॥ ज० ॥ चि० ॥ सुगति दीये विलास, कारण एता पावनां ॥ ज० ॥ ए ॥ चि० ॥ कत्रिम ए संसार, तन धन यौवन कारिमां ॥ ज० ॥ चि० ॥ जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ ज० ॥ १० ॥ ॥ चि० ॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनां सहुको सगां ॥ ज० ॥ चि० ॥ स्वारथ विण नर प्रांहि, वालानें आपे दगां ॥ ज० ॥ ११ ॥ चि० ॥ पुण्य अने वली पाप, एहि ज साथें आवशे ॥ ज० ॥ चि० ॥ जोगवशे दुःख आप, तिहां नहिं को वेहेंचावशे ॥ ज० ॥ १२ ॥ चि० ॥ जुंरु तणुं जिम ठाण, नरजव धर्म विना तिस्यो ॥ ज० ॥ ॥ चि० ॥ सुलहा जवजव प्राणि, धर्म नहीं मलशे इस्यो ॥ ज० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टांत दुलंज, मानव जव पुण्यें लही ॥ ज० ॥ चि० ॥ पाम्या योग सुलंज, सफल करो हवे ते वही ॥ ज० ॥ १४ ॥ चि० ॥ थावो अति उजमाल, अवसर फिरि नहीं आवशे ॥ ज० ॥ चि० ॥ लाख गमे जंजाल, धर्म मारग विच थावशे ॥ ज० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चित्तमां आप, कहेशो पछी जाण्युं नहिं ॥ ज० ॥ चि० ॥ ॥ टालो जव संताप, शिव कारण संयम ग्रही ॥ ज० ॥ १६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंद्रयशायें इम दीयो ॥ ज० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो हरखियो ॥ ज० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंमनी ढाल, एह कही बावीशमी ॥ ज० चि० ॥ कांतिविजय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ ज० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूछे गुरुनें एम ॥ जगवन् मलया जलथकी, कखें उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शातायें जलधिथी, आणी उतारी कंठ ॥ कारण ते सुणवा तणो, छे अमने उतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दिवायरू, महिमावंत महंत ॥ चंद्रयशा सूरीश्वरू, इम कारण पजणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, मलया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती नामें हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का० ॥ ॥ १ ॥ उर्ध्यानें कालें मरी, ते अवतरी रे ॥ जलनिधि मां गजमीन ॥ का० ॥ पमतां नारक मुखथकी, अति छुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज मत्सनें वांसे पमी, जाणे चढी रे, कमला गजने पूंठ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ का० ॥ गाढें नवपद त्यां भएयां, श्रवणें सुएया रे, मीनें मनमां तूठ ॥ का० ॥ ३ ॥ ईहापोह कस्या थकी, मीनें चकी रे, दीठो गत भव आप ॥ का० ॥ ग्रीवा वाली नि रखतां, मन हरखतां रे, वाध्यो प्रेमनो व्याप ॥ का० ॥ ॥ ४ ॥ जोतां मलया उंलखी, पुत्री दुःखी रे, लागो विचारण मीन ॥ का० ॥ हैहै दुःखें अवघरूी, एहमां पमी रे, दुर्विधिनें आधीन ॥ का० ॥ ५॥ मुजथी कां ई न नीपजे, नवि संपजे रे, उपकारकनां काम ॥ का० ॥ तोपण मूकुं इहां थकी, रूकुं तकी रे, जिहां होवे वस तीनुं गाम ॥ का० ॥ ६ ॥ यदपि कदाचित् ए वली, दुःखथी टली रे, पामे वल्लभ योग ॥ का० ॥ इम चिं ति तेणे माछलें, धरी पाछलें रे, मूकी थल संयोग ॥ ॥ का० ॥ ७ ॥ कंधर वाली निरखतो, एहनें कितो रे, दुःख धरतो ऊख राय ॥ का० ॥ नेहें हियरूे ऊरतो, जल पूरतो रे, पाछो जलमां जाय ॥ का० ॥ ८ ॥ गतभव देखी जागीयो, सोभागीयो रे, माछो पामी विवेक ॥ का० ॥ फासु आहार आहारतो, मन धारतो रे, श्रीनवपदनी टेक ॥ का० ॥ ए ॥ पूरी ऊख आयुष तिहां, सुगति इहां रे, ऊपजशे लघु कर्म ॥ का० ॥ कालें परिणति पाकशे, भव थाक

शे रे, आराधि जिनधर्म ॥ का० ॥ १० ॥ सद्गुरु वचनें सद्दहे, साचुं कहे रे, भूपादिक नविलोग ॥ ॥ का० ॥ वेगवती नव सांनली, कहे एम वली रे, अहो अहो नावी जोग ॥ का० ॥ ११ ॥ लोक कहे एक एक प्रत्यें, भूउं मन्न उतें रे, पाल्यो जननी प्रेम ॥ का० ॥ दाख्यो पण लोहारिकें, अधिकाधिकें रे, वानी धारे हेम ॥ का० ॥ १२ ॥ मलया चरित्त सुहामणुं, रलियामणुं रे, कहेतां वाधे प्रीति ॥ का० ॥ ढाल त्रेवीशमी ए सही, मन गह गही रे, कांतिवि जय शुन रीति ॥ का० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूछे वली नर राजिउ, नगवन् करुणावंत ॥ मलया महबल पूर्वनव, नांखो स्वामी सुतंत ॥ १ ॥ बालायें वली महबलें, श्यां श्यां कीधां कर्म ॥ जेह थकी यौवन समे, लाधां डुःख विण मर्म ॥ २ ॥ सूरि नणे महीपति सुणो, थिरकरी चित्र बनाव ॥ मलयाने महबल तणा, नांखुं गत नवनाव ॥ ३ ॥

ढाल चोवीशमी ॥ हस्तिनागपुर वर नलुं, ॥ जिहां पांमु राजा सार रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवी ठाण तुज पुरवरें, एक गृहपति हुतो स

मृद्ध रे ॥ प्रियमित्र नामें श्रपुत्रिउं, धनवंतो पूर्वें प्रसिद्ध रे ॥ धनवंतो पूर्वें प्रसिद्ध, पूरवन्नव केवली, इम नांखे रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ त्रण दयिता तेहने हूती, रुद्रा वली नद्रा नाम रे ॥ त्रीजी तिम प्रियसुंदरी, नामें तस प्रीतिनुं गम रे ॥ ना० ॥ २ ॥ बहेन सगी धुरनी बिन्हें, मांहो मांहे धारे नेह रे ॥ बिहुं उपर प्रिय मित्रनें, नवि बेठो प्रेमनो नेह रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ प्रियसुंदरी साथें पिउ, अनुकूल रहे निश दीश रे ॥ निरखी ते बेहु अंगना, पोषे मनमां अति दोष रे ॥ पो० ॥ ४ ॥ प्रियसुंदरी प्रियमित्रथी, बिहुं कलह करे नित्यमेव रे ॥ प्राहिं सोकलडी तणी, दीसे जग एहवी टेव रे ॥ दी० ॥ ५ ॥ मदनप्रिय नामें तिहां, प्रियमित्रनें हुतो मित्र रे ॥ प्रियसुंदरी साथें तेणें, मांडी रतिप्रीति विचित्र रे ॥ मां० ॥ ६ ॥ काम महारस याचना, अब लाने करतो तेह रे ॥ प्रियमित्रें दीठो तिहां, तव जाग्यो कोप अछेह रे ॥ त० ॥ ७ ॥ निज बांधव आगें कही, तस चरित्र रहस्यनुं तेण रे ॥ पुरबाहिर काढ्यो परो, नित्रंछी कोप वशेण रे ॥ नि० ॥ ८ ॥ बोल्या तिहां केइ वाणिया, जाणे तेह गुह्यनी वात रे ॥ नहीं ए अजाणी अमथकी, पण न करुं कोइ परतां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त रे ॥ प० ॥ ए ॥ निज मोटा गुण लघु करे, परगुण अणु मेरु करंत रे ॥ धन्य धरामां ते नरा, विरला कोइ जननी जणंत रे ॥ वि० ॥ १० ॥ मदनवदन जांखुं करी, नाठो दिशि धारी एक रे ॥ दुर्वह अटवी मां पड्यो, जूख्यो वली तरस्यो ठेक रे ॥ जू० ॥ ११ ॥ पार लह्यो अटवी तणो, त्रीजे दिन तेणे नेठ रे ॥ आव्यो वही एक गोकुलें, दीठा पशुपालक देठ रे ॥ दी० ॥ १२ ॥ महिषी कुल वन चारता, बेठा तरु ठा या ठाम रे ॥ जोजननो अरथी थसी, आव्यो तेह पा सें ताम रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ पय याच्यां गोवालीया, आपे पय महिषी दोहि रे ॥ पामर जन पण आचरे, करुणा रस अवसर मोहि रे ॥ क० ॥ १४ ॥ खीर त णुं जाजन ग्रही, पशुपालक अनुमति लेय रे ॥ आ वे समीप सरोवरें, शीतल जल थानक केय रे ॥ शी० ॥ ॥ १५ ॥ पंथे वहेतो अनुक्रमें, चिंते चित्त एम सुहब्ब रे ॥ कोइकने आपी जमुं, होय तो मुज जनम कयब्ब रे ॥ हो० ॥ १६ ॥ चिंतवतां इम सामुहो, मलीयो मुनि पुण्य पसाय रे ॥ मास तणो उपवासियो, पारण दिन टाणे आय रे ॥ पा० ॥ १७ ॥ मुनि निरखी मन हर खियो, अहो सफल दिवस मुज आज रे ॥ प्रतिला

त्री एह साधुनें, सारुं मुज वंछित काज रे ॥ सा०॥
॥ १८ ॥ धारी मनशुं एहवुं, कर जोमी आगल आय
रे ॥ पत्नणे साधु प्रत्यें इस्यो, पय शुद्ध अछे मुनिराय
रे॥ प० ॥ १ए ॥ मुज उपर करुणा करी, वोहोरो
फासु पय एह रे ॥ ड्व्यादिकनी शुद्धता, निरखे मु
नि वोहोरे तेह रे ॥ नि० ॥ २० ॥ बांध्युं अनर्गल त्ना
वथी, मदनें शुन्न कर्म विशेष रे ॥ मुनिने प्रणमी आ
वियो, सरपालें लई पय शेष रे ॥ स० ॥ २१ ॥ आप
कृतारथ मानतो, पीवे पय शेष तिकोय रे ॥ विषम
तटें सरोवर तणे, जल पीवा बेठो सोय रे ॥ ज० ॥ २२ ॥
पग लपट्यो तिहांथी खशी, पमियो जल ऊंमे जाय रे ॥
मरण लही ए पुरवरें, मदनप्रिय दान पसाय रे ॥
म० ॥ २३ ॥ विजय नरेशरने घरें, सुत रत्न पणे उ
त्पन्न रे ॥ कंदर्प्प नामे थापियो, तस तात मरण
संपन्न रे ॥ त० ॥ २४ ॥ पाट पितानो आक्रमी, थई
बेठो पृथिवीपाल रे ॥ चोथे खंमें ए कही, कांतें चो
वीशमी ढाल रे ॥ कां० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुंदरीशुं प्रियमित्र त्यां, विलसंतो एकतान ॥ रु
ड्रा त्नद्रा नारिशुं, बांधे वैर निदान ॥ १ ॥ अन्य दिनें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रिय मित्रने निज ललनां लेइ लार ॥ यक्ष धनंजय ने
टवा, चाल्यो सपरीवार ॥ २ ॥ पंथें वहेतो अधमगें, आ
व्यो ज्यां वरु हेठ ॥ इक मुनि साहमो आवतो, देखे
त्यां निज डेठ ॥ ३ ॥ आपणनें साहमो मल्यो, अशु
न सुकृत ए मुंरु ॥ यात्रा थाशे निःफला, एहथी अ
शुन्न अखंरु ॥ ४ ॥ इम कहेती प्रियसुंदरी, जन वा
हन थोनारु ॥ करे परिसह साधुनें, पापिणी रांरु
कुहारि ॥ ५ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ नेसोदानें गोरीमें ढोला,
पखीरे नगारारी ठोर ढोला; नाग मजा जे
रे रणसिंघ नागोरा ॥ ए देशी ॥

॥ उदय आव्यो मुजने इहां हांजी, परिसह मो
टो एह हांजी, चिंति एहवुं रे, मुनि काउस्सग्ग ठावे ॥
त्रिविधें धारी रे, आतम वोसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नञ
उससियादिकें हांजी, आगारें निरवेह ॥ चि० ॥१॥ पद
अंगुष्ट नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्या
न महोदधि लहेरमां हांजी, झीले मुनि अविकार हां
जी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी अमशुं चाकरी हांजी, कत्नो
ए हठ मांहि हांजी, कहेती एहवुं रे, कोपी मठराली ॥
कुमतें व्यापी रे, आचरणें काली ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सेवक प्रत्यें हांजी, मर्यादा वट गांफि हांजी ॥ क० ॥३॥ साहमां ए इंटवाहथी हांजी, जारे लाव हुताश हांजी, ए पापीनें फांजियें हांजी, जिम होये अशुज्न विनाश हांजी ॥ क० ॥ ४ ॥ अशुकन फल एहनें हुवे हांजी, फीटे वली अहंकार हांजी, सुंदरी सेवक एहवां हांजी, निसुणी वचन विचार हांजी ॥ क० ॥ ५ ॥ कहे में चरणे पाडुका हांजी, पहेरी ठे नहीं आज हांजी, इटामां कुण जायशे हांजी, विषम थलें विण काज हांजी ॥ क० ॥ ६ ॥ मूकी कदाग्रह एहवो हांजी, चालो आगें सदीस हांजी, वचन सुणी पीज दासनां हांजी, बोल्यो चढावी रीश हांजी ॥ क० ॥ ७ ॥ कहेतां एहवुं रे, कोप्यो मठरालो ॥ कुमतें व्याप्यो रे, आचरणें कालो ॥ अहो सेवक सुंदरी तणा हांजी, बांध्यो वफशुं पाय हांजी, जूमी जिहां लागे नहीं हांजी, वली कंटक नन्न जाय हांजी ॥ क० ॥ ८ ॥ वाहनथी प्रियसुंदरी हांजी, ऊतरे हेठी तुरंत हांजी ॥ मुनिवर पासें आइनें हांजी, निठुर इम पन्नणंत हांजी ॥ क० ॥ ए ॥ इण अपशुकनें अमतणो हांजी, कदिमत होजो वियोग हांजी ॥ विरह हजो ताहरे सदा हांजी, वाहालानो वली सोग हांजी ॥ क० ॥ १० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाखंमी तुं पापीउ हांजी, राक्षसनो अवतार हांजी ॥ सब नयंकर सत्वनें हांजी, दुर्नग तुज आकार हांजी ॥ क० ॥ ११ ॥ निवुर इंम आक्रोशथी हांजी, तप सीनें त्रणवार हांजी, पाषाणे करी आहणे हांजी, करती कोप अपार हांजी ॥ क०॥१२॥ उंघो मुनिना हाथ थी हांजी, ऊम्पी लीये निरलज्ज हांजी ॥ निज वाह नमां थापीनें हांजी, टाले कुशुकन कज्ज हांजी ॥ क० ॥ ॥ १३ ॥ कुशुकन फल एहनें हुउ हांजी, चालो ह वे निहचिंत हांजी ॥ इंम कहेतां परिवारनें हांजी, सुखें दंपती पंथे वहंत हांजी ॥ क० ॥ १४ ॥ यक्ष नवन पोहोतां वही हांजी, पूज्यो धनंजय देव हांजी, बेठा करजोमी बिन्हें हांजी, सारे विधिशुं सेव हांजी ॥ क० ॥ १५ ॥ रागिणी श्रीजिनधर्मनी हांजी, तस घर दासी एक हांजी ॥ एहवुं बोली रे, सुंदरी सुगुणा ली ॥ सुमतें व्यापी रे, आचरणा वाली० ॥ कर जोमी दंपती प्रतें हांजी, समजावे इंम बेक हांजी ॥ए० ॥ १६ ॥ पापकरम बांध्युं महा हांजी, आज तुमें विण काज हांजी, उपशम धर तेहवो घणुं हांजी, संताप्यो रु षिराज हांजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ हासें पण जो को क रे हांजी, एहवा रुषिनी जेह हांजी ॥ इह नव परनव

मां लहे हांजी, दारिद्र दुःख अछेह हांजी ॥ ए० ॥ ॥ १० ॥ श्रीअरिहंतें सूत्रमां हांजी, वेष कह्यो वंद नीक हांजी, आदर करतो वेषनें हांजी, आणे मुगति नजीक हांजी ॥ ए० ॥ १ए ॥ दासी वचनें तेहवां हांजी, पाम्यां ते प्रतिबोध हांजी॥दुर्गति दुःखथी बीह नां हांजी, थरक्या थई गतक्रोध हांजी ॥ ए० ॥ २० ॥ पछतावो करता हीये हांजी, झरतां लोचन नीर हां जी, दीन मना थइ आपने हांजी, नींदे वली वली धीर हांजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ निजदासीनें प्रशंसता हां जी, पाछां आवे धाम हांजी, तेहिज मुनिपासे जइ हांजी, वंदे पग शिर नाम हांजी, ॥ ए० ॥ २२ ॥ चो था खंफ तणी हुई हांजी, ए पणवीशमी ढाल हांजी, कांति कहे धन्य ते नरा हांजी, मन वाले ततकाल हांजी ॥ ए० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जो धर्मध्वज आज हुं, पाछो फरी पामेश ॥ तोहिज ए थानक थकी, काउस्सग्ग पारेस ॥ १ ॥ क री प्रतिज्ञा एहवी, तिमहीज उनो तेह ॥ राग दोष परिणति तजी, पेठो उपशम गेह ॥ २ ॥ गुण निरखी संयम तणा, स लहे दंपती तास ॥ धर्मध्वज पाछो दि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ये, करता स्तुति अभ्यास ॥ ३ ॥ निजकृत कुचरित्त चेष्टना, संभारी सवि राग ॥ गदगद कंठें वीनवें, ध रतां दुःख अताग ॥ ४ ॥

॥ ढाल छत्रीशमी ॥ मारुजी केणे थांने चा
ल्योजी चालयो, किणे थांने दीधी शीख
मारा लोजी ॥ वारीहो दक्षिणरी हो
राजन चाकरी ॥ ए देशी ॥

॥ साधुजी मेंतो थांने चालोजी चालव्यो, म्हेंतो थांशुं कीधी जेम महारा साधु, वारी हो सुगुण रे हो जाउं भामणें साधुजी ॥ राज रूमी भांति हो आदरी, कोप नाख्यो दूरें फेमी ॥ मा० ॥ १ ॥ मेंतो थारी कीध हो अवगना, पमीयां मोहें बेहु आप ॥ मा० ॥ भव जप थाही इहां आकरुं, अलवें बांध्युं भुंरुं पाप ॥ मा० ॥ ॥ २ ॥ खमजो महोटी एह विराधना, करुणामें रूमे म नवालि ॥ मा० ॥ ताता कूता पूठें हो जो भसे, पण गज न पमे तेहने ख्याल ॥ मा० ॥ ३ ॥ जंबुक उभो कूके हो रोशमां, जोरे सोरें मुखमाने पास ॥ मा० ॥ तोही जो ही मातो हो केसरी, मांमे नहीं हणवानो क्यास ॥ मा० ॥ ४ ॥ दोषें पोष्यां भारी हो आतमा, थाशे केहा अमचा हवाल ॥ मा० ॥ जो कोई हेतु हो दाखीयें, बू

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

टां जेथी पातक जाल ॥ मा० ॥ ५ ॥ पारी काउस्सग्ग त्यां हो इंम कहे, कोपां जो में एम अकंरू ॥ जोला प्राणी, वारी हो संयमनां हो लीजें नांमणां प्राणीजी० ॥ जावे कोई नाहीं हो लोकमां, थाशे साधु धरम शत खंरू ॥ जो० ॥ ६ ॥ थेंतो खेलो शुरू विवेकशुं, पालो रूमो जिननो धर्म ॥ जो० ॥ ठांरु दूरें गाढी ए मूढता. ठेदो जवनां पोषक कर्म ॥ जो० ॥ ७ ॥ पामी सूधी शिक्षा हो साधुथी, श्रद्धा आणी साचे चित्त ॥ जो० ॥ बार व्रत जावें हो उच्चस्यां, समकित शुद्ध जाचाचि चित्त ॥ जो० ॥ ८ ॥ जक्तें पानें मुनिने आमंत्रिनें, आव्यां गेहें दंपती हर्षें ॥ जो० ॥ लीना जीना सार संवेगमां, नाखी मनथी कुमति निकर्षें ॥ जो० ॥ ए ॥ आवे पुरमां साधु ते गोचरी, जमतो जमतो घर घर बार ॥ जो० ॥ तेहनें गेहें आव्या पुण्यथी, देहाधारी उपशम सार ॥ जो० ॥ १० ॥ निरखी बेहु साधुनें हरखियां, मानें आतम नें सुकयत्र ॥ जो० ॥ फांसु आपे हो असना जावशुं, दंपति मनमां रीजी तत्र ॥ जो० ॥ ११ ॥ पाले बारे व्रत त्यां हो निरमलां, मिथ्यामत अदगो त ठोरू ॥ जो० ॥ चोथे खंरूं चावी ठवीशमी, कांतें जांखी ढाल मन कोरू ॥ जो० ॥ १२ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ रुद्रा नद्रा नारिनें, शोक्य अने पिउ साथ ॥ महा कलह एक दिन हुउं, तणें निभृंठी नाथ ॥ १ ॥ शोक्य धरम जगमां निपख, साले साल समान ॥ सहे मरण पण नवि सहे, शोक्योमां अपमान ॥ २ ॥ धिग धिग जीवित आपणुं, जनम निरर्थक कीध ॥ कलह टले नहीं को दिनें, डुहग पणे पिउ दीध ॥ ३ ॥ यथाशक्ति दानादिकें, कीधां परनव कज्ज ॥ मरण शरण हवे आदरी, नांखां डुःखशिर रज्ज ॥ ४ ॥ एक मनी बे बेहेनकी, चिंती एम एकांत ॥ ठानें जई कूवे पमी, करवा डुःख विश्रांत ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ नाथतानी देशी ॥

॥ रुद्रा मरण तिहां लही, जयपुर नृप श्रीचंद्रपाल रे लाल ॥ तेहनें घर पुत्री पणे, थई कनकवती इति बाल रे लाल ॥ ॥ १ ॥ नांखे गत नव केवली, निसुणे परषद धरी कान रे लाल ॥ वैर न करशो केहथी, जो होय हियमे कांई शान रे लाल ॥ नां० ॥ २ ॥ वीरधवल इणे राजिये, परणी ते प्रेम रसेण रे लाल ॥ नद्रा मरी थई व्यंतरी, बीजी परिणाम वशेण रे लाल ॥ नां० ॥ ३ ॥ नमती ते वन व्यंतरी, एकदिन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पुर पृथिवीठाण रे लाल ॥ आवी देखे विलसता, प्रियसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ जां० ॥ ४ ॥ देखी वैर संजारियुं, कोपें कलकलती चित्त रे ॥ लाल ॥ सुतां बिहूं ऊपर जई, नाखे निशिमां घरनिंति रे लाल ॥ जां० ॥ ॥ ५ ॥ शुज परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण अकाल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए ताहरो, थयो पुत्र महाबल बाल रे लाल ॥ जां० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो जीव ते, हुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी नंदनी, तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ जां० ॥ ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परजवें जे बांध्युं वैर रे लाल ॥ रुद्धा जद्धा नारिशुं, तस फल इहां लाधां घेर रे लाल ॥ जां० ॥ ८ ॥ पूरव वैर संजारती, तेह असुरी अवधें जाण रे लाल ॥ महबलनें हणवा वली, रस मांझे उद्यम आण रे लाल ॥ जां० ॥ ए ॥ पुण्य प्रजावें एहनें, न सकी कांई करण अनिष्ट रे लाल ॥ सूतो निशि देखी गृहें, करती उपसर्गह डुष्ट रे लाल ॥ ॥ जां० ॥ १० ॥ वस्त्र विजूषण कुमरनां, हरियां इणे क्रोधें व्याप रे लाल ॥ वट कोटरमां मूकीयां, लाधां ते कुमरनें आप रे लाल ॥ जां० ॥ ११ ॥ प्रथम मिलनमें आपिउं, कन्यायें कुमरनें हार रे लाल ॥ लख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मीपुंज मनोहरू, सुरत्नमाला अनुकार रे लाल ॥
॥ जां० ॥ १२ ॥ सूतो निरखी कुमरनें, तेह पण ह
रियो निशिमांहिं रे लाल ॥ व्यंतरीयें मंदिरथकी,
संचारी वैर अथाह रे लाल ॥ जां० ॥ १३ ॥ गतज
व बहिननी प्रीतथी, थाप्यो जई कनका कंठ रे लाल
॥ कोमी जवें पण रस दीये, है विषमी प्रेमनी गंठ रे
लाल ॥ जां० ॥ १४ ॥ चोथे खंडे सुंदरू, थई सत्तावी
शमी ढाल रे लाल ॥ कांति कहे हवे पूछशे, इहां वी
रधवल जूपाल रे लाल ॥ जां० ॥ १५ ॥

दोहा

॥ इणे अवसर विस्मित हीये, वीरधवल जूपाल ॥
पूछे इम केवली प्रत्यें, थापी करतल जाल ॥ १ ॥
स्वयंवर मंरूप विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मल्यो
नहीं मलया प्रत्यें, तो हार दियो किम राच ॥ २ ॥ हसे
कुमर कुमरी मनें, निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र
विचित्र ते, जांखे गुरु तेणें गण ॥ ३ ॥ कुमर मली
पहेलो जई, आव्यो पामी हार ॥ कनकायें जव वैर
थी, विरच्यो कूम प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री उपरें,
कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक धुरनी कथा, आखे
सुगुरु समर्थ ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल अठ्ठावीशमी ॥ जीरे जीरे स्वामी ॥
॥ समो सर्या ॥ एदेशी ॥

॥ वचन सुणी केवली तणां, बोल्या परषद लोको
रे ॥ कंदल कंद वधारवा, विष जलधर जोको रे ॥ १ ॥
धिग धिग चित्त नारी तणुं, अनरथ फल आपे रे ॥
कुमति कदाग्रह पोषीनें, रस रीतें उथापे रे ॥ धि० ॥ २ ॥
कहे वली आगें केवली, महबल निशि मांहीं रे ॥ व्यं
तरीयें हणवा भणी, अपहारयो उछाहीं रे ॥ धि० ॥
॥ ३ ॥ महबल मूठी आहणी, नाठो विकराली रे ॥
विषम चरित्ता व्यंतरी, न करे वली आली रे ॥ धि०
॥ ४ ॥ सेवक सुंदर ते मरी, थयो भूत उदंमो रे ॥
बाहिर पुहवीठाणने, ते वममां प्रचंमो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥
भमतो महबल विधिवशें, आव्यो वमतरु हेठ रे ॥
ते भूतें तिहां ऊलरव्यो, निरखी गतभव देठ रे ॥ धि०
॥ ६ ॥ वम मालें पग एहना, बांध्यो माथे नीचे रे ॥
जिम धरणी अमके नहीं, कंटक नवि खुंचे रे ॥ धि०
॥ ७ ॥ वचन संभारी एहवुं, प्रियमित्रनुं तेणें रे ॥ क
रवा पीमा कुमरनें, संच मांमयो एणें रे ॥ धि० ॥ ८ ॥
शबना मुखमां अवतरी, इम बोल्यो हसंतो रे ॥ मूढ
हसे कांइ मुजनें, देखी बांध्यो एकंतो रे ॥ धि० ॥ ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तुं पण एहिज वरुतलें, आगामिणी रातें रे ॥ बंधाशे ऊंचे पगें, नीचे शिर थातें रे ॥ धि० ॥ १० ॥ सहेशे बहु दुःख पापथी, टांग्यो जिम चोर रे ॥ तेपण तेहिज महबलें, सह्यां दुःख कगोर रे ॥ धि० ॥ ११ ॥ रुड्रायें एकण दिनें, लोनें लही लागो रे ॥ चोरी पिउनी मुद्रिका, गतनवमां आगो रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ मुद्रा सुंदर सेवकें, दीठी लेतां गने रे ॥ जोतो पियु मुद्रा प्रत्यें, समजाव्यो शानें रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ रुद्रा पासें मुद्रिका, दीठी में बे जाउं रे ॥ मांगी लीयो इंम हलफल्या, आकुल कांइ थाउं रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ वचन सुणी सुंदर तणा, रुद्रा मन रूठी रे ॥ सुंदर साथें चोरटी, लफवानें ऊठी रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ कोपाकुल बोली इस्युं, जूठ इंम कांइ नांखे रे ॥ दुर्मति काप्या नाकना, कांइ शरम न राखे रे ॥ धि० ॥ १६ ॥ मुद्रा में लीधी किहां, आल एम चढावे रे ॥ मुज सरखी नूंफी नथी, जाणे बे तुं चावे रे ॥ धि० ॥ १७ ॥ मौन करी सुंदर रह्यो, बीहीतो मनमांहिं रे ॥ प्रियमित्रें करी ताफना, लीधी मुद्रा त्यांहिं रे ॥ धि० ॥ १८ ॥ लघुता कीधी शोक्यमां, रुद्रा अपमानी रे ॥ दीन वदन जांखी थई, रही बापफी बानी रे ॥ धि० ॥ १ए ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दुर्वचनें बांध्यां जिके, रुडा जवें पापो रे ॥ जोगवियां फल तेहनां, कनका थई आपो रे॥ धि०॥२०॥ सूति पणे ए सुंदरी, जव वैरिणी जाणी रे॥ कनकवतीनी नासिका, लीधी मुखें ताणी रे॥ धि० ॥२१॥ हसतां बांधे जे जीवकर्म, तेह रोतां न बूटे रे॥ अनरस जावें परिणमी, चिरकालें ते खूटे रे॥ धि० ॥ २२ ॥ ढाल कही अमवीशमी, चोथे खंमें ए चावी रे ॥ कांति कहे मन उल्लसी, सुणो श्रोता जावी रे॥ धि०॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

कहे सुगुरु जूपति जणी, शेष कथा विरतंत॥ सावधानता आदरी, परषद् सकल सुणंत ॥ १ ॥ मदन धरंतो गतजवें, प्रियसुंदरीशुं राग॥ कंदर्प्प जव तेहथी हुउ, मलयाशुं रस लाग ॥ २ ॥ पूर्वें मलया महबलें, लही संकलपें मर्म॥ दीधुं दान सुसाधुने, पाल्यो श्रीजिनधर्म ॥ ३ ॥ तेहथी सुकुलादिक तणी, सामग्री लही आंहिं॥ आराधि विहरू नहीं, सुकृत कमाई क्यांहिं॥ ४ ॥ जवतारक जिनधर्मनें, रीजिजजो अह खीज ॥ उलटो पण सवलो फलें, जूमि पड्यां जो बीज ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥
॥ प्रियसुंदरी मुनिवरनें देखी, आप कुलवट कां णि उवेखी रे ॥ हुई साधुनी द्वेषी ॥ बंधु वियोग ह जो नित्य ताहरे, तुंतो दीसे राक्षस जाहरे रे ॥ हु० ॥ ॥ १ ॥ रूपें तुं दीसे नयकारी, प्राण नूतनें दे दुःख नारी रे ॥ हु० ॥ तुज मुख जोतां पुण्य पणासे, म ल मलीन वपुष तुज वासें रे ॥ हु० ॥ २ ॥ इम क हीनें पाषाण प्रहारें, हण्यो मुनिवरनें त्रण वारें रे ॥ ॥ हु० ॥ महबल पण तिहां मौन करीनें, अनुमोदे दृष्टि धरीनें रे ॥ हु० ॥ ३ ॥ बेहु जणें महापातक बांध्युं, नीषण नव बंधन सांध्युं रे ॥ हु० ॥ पडता वो करतां वली पाछें, बहु खेपव्युं समजी आछें रे ॥ हु० ॥ ४ ॥ खेपवतां दल ऊगस्या जेहवुं, इहां फ ल लह्युं तेहथी तेहवुं रे ॥ हु० ॥ त्रिहुं वारें लह्यो वधु वियोगो, न मटे पूरवकृत नोगो रे ॥ हु० ॥ ५ ॥ कनकाथी लाधो अतिवंको, एणी रात्रिचरनो (राक्ष सीनो) कलंको रे ॥ हु० ॥ वंक विना मूकी वन सी में, रखकी गिरि गहन तटीमें रे ॥ हु० ॥ ६ ॥ देश विदेश लह्यां दुःख केतां, पार आवे न कहे तेतां रे ॥ हु० ॥ बिहुं जण कर्म तणे अनुसारें, सह्यां संक

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ट त्रिविध प्रकारें रे ॥ हु० ॥ ७ ॥ ऊझपी मुनि रयह रणुं लीधुं, मलयायें तिम वली दीधुं रे ॥ हु० ॥ तेहथी पुत्र वियोग लहीनें, फरी पामी संयोग वहीनें रे ॥ हु० ॥ ८ ॥ करी उपसर्ग सुसाधु विराध्यो, अंतें तिम जे आराध्यो रे ॥ हु० ॥ तेहिज हुं बद्मस्थ टलीनें, हुउं केवली तपसीनें रे ॥ हु० ॥ ए ॥ विहुं जणनो बीजो जव एही, महारे जव एकज तेही रे ॥ हु० ॥ वचन सुणी मनमां कमखाणो, वली बोल्यो इंम महीराणो रे ॥ हु० ॥ १० ॥ जगवन् कनकवती तेम असुरी, तव वैर विरोधें प्रसरी रे ॥ हु० ॥ करशे एहुनें वली कांई मातुं, किंवा वैर पुरातन घातुं रे ॥ हु० ॥ ११ ॥ सूरि जणे असुरी कर तासी, गई वैर विरोध विठांसी रे ॥ हु० ॥ कनकवती जमती इहां आवी, विषमो एक दाव जपावी रे ॥ हु० ॥ १२ ॥ एक उपद्रव करशे कोपें, तुज सुतनें वैराटोपें रे ॥ हु० ॥ कनका असुरी डुरित डुरंता, जमशे जव काल अनंता रे ॥ हु० ॥ ॥ १३ ॥ मलया महबलनो जव जांख्यो, एहमां अव शेष न राख्यो रे ॥ हु० ॥ उंगणत्रीशमी चोथे खंमें, कांतें कही ढाल उमंगें रे ॥ हु० ॥ १४ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ मलया महबलनुं तिहां, निसुणी चरित विशाल ॥ नव निस्पृह परषद हुई, धरी वैराग्य रसाल ॥ १ ॥ दंपति सद्गुरु मुखथकी, निसुणी आप चरित्त ॥ अति वैरागें आदरें, बारे व्रत सुपवित्त ॥ २ ॥ मुनि सेवा करशुं सदा, आणी नक्ति विशेष ॥ ग्रहे अनि ग्रह एहवो, सुगुरु मुखें निर्दूष ॥ ३ ॥ केता संयम आदरे, श्रावकनां व्रत केय ॥ नद्रक नावी केई हुआ, रागादिक नाखेय ॥ ४ ॥ चरित आप संताननां, सांन लीनें बिहुं नूप ॥ नवनिरुक थई ऊमह्या, संयम ग्रहण अनूप ॥ ५ ॥

॥ ढालत्रीशमी ॥ जिनवचनें वैरागीयोहो धन्ना ॥ एदेशी ॥

॥ जिनवचनें वैरागीउ हो राया, इंम कहे बे कर जोम ॥ राज्य चिंता करि आपणी हो सामी, तुम पासें मन कोम रे हो मोरा सामी, संयम लेशुं बे ॥ १ ॥ संयम रस पीयूषमां हो सामी, केलि करण मन हुंस ॥ विषयादिक लागे तिसा हो सामी, जेहवा कटुक थल तूसरे ॥ हो० ॥ २ ॥ अवसरविद नाणी कहे हो राया, मा प्रतिबंध करेह ॥ तहत्ति करी ऊव्या बिन्हे हो राया, आव्या निजनिज गेह रे ॥ हो० ॥ ३ ॥ पो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हवीगाण तणो कीयो हो राया, सूरें महबल राय ॥ सागरतिलकें थापियो हो राया, शतबल अनिषेका य रे ॥ हो० ॥ ४ ॥ वीरधवल वसुधाधवें हो राया, मल यकेतु अनिधान ॥ आप तणे पाटें ठव्यो हो राया, तिहांहिज देई सनमान रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ पद चिंता आ प आपणी हो राया, कीधी जनपद हेत ॥ संयम ले वा संचरे हो राया, निज निज नारी समेत रे ॥ हो० ॥ ॥ ६ ॥ ते केवली पासें जई हो राया, संयम ल्ये श्री कार ॥ रूडे हितशिक्षा ग्रहे हो साधु, चरण करण गु णधार रे ॥ हो मोरा साधु, संयम पाले बे ॥ ७ ॥ संयम दूषण टालवा हो साधु, शम दम शौच पवित्र ॥ तृण मणिनें सरिखा गणे हो साधु, गणे समा रिपु मित्र रे ॥ हो० ॥ ७ ॥ गुरु पासें हुआ अन्यसी हो साधु, द्वा दश अंगी जाण ॥ ठठ अठम आदें घणां हो साधु, करता तप शुज जाण रे ॥ हो० ॥ ए ॥ महासती पासें ठवी हो साधु, नृपराणी देइ दीख ॥ सामायिक आदें ग्रहे हो साधु, शिवपद साधन शीख रे ॥ हो० ॥ १० ॥ दिन केताइं तिहां रही हो साधु, उपगारी गुरु राय ॥ विहार करे वसुधा तलें हो साधु, बिहुं मुनि सेवे पाय रे ॥ हो० ॥ ११ ॥ शोषी तन तप आकरे हो साधु,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सघलां ते व्रत पाल ॥ सुरलोकें थया देवता हो साधु, संलेषण संन्नालि रे ॥ हो० ॥ १२ ॥ महाविदेहें सिऊशे हो साधु, कर्मतणो करी नाश ॥ अक्षय अव्याबाह नुं हो साधु, लहेशे पद सविलास रे ॥ हो० ॥ १३ ॥ चोथे खंमें त्रीशमी हो साधु, ढाल कही अन्निराम ॥ कांति विजय कहे माहरो हो साधु, ते मुनिने होजो प्रणाम रे ॥ हो० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नगिनी पति नगिनी प्रत्यें, आपूढी अति प्रीति ॥ आवे आप पुरें वही, मलयकेतु वरु रीति ॥ १ ॥ सागर तिलकपुरें ठवी, सेनानी निन्नंग ॥ महबल आवे निजपुरें, शतबल सुत लेई संग ॥ २ ॥ पाले राज्य महाबली, गाले अरियण मान ॥ सेवे श्री जिन धर्मनें, सकुटुंबो महिराण ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥ मयणरेहा सती ॥ ए देशी ॥

॥ ते व्यंतर साहायथी रे हां, महबल देश अनेक ॥ साधे महाबली ॥ श्रीजिन वचनां धर्मनी रेहा, करे महोन्नति एक ॥ सा० ॥ १ ॥ पुरपाटण संबाहतां रेहां, थापी जिण प्रासाद ॥ सा० ॥ करे नक्ति मुनिवर तणी रेहां, ठांमी पंच प्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥ बी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जो सुत महबल तणो रेहां, हुउ सहसबल नाम ॥ सा० ॥ वर लक्षण गुण सायरू रेहां, वंश वधारण मान ॥ सा० ॥ ३ ॥ एकदिनें रयणी समे रेहां, मह बल मलया नारि ॥ सा० ॥ श्लोक पुरातन चित्त धरे रेहां, अन्वय अर्थ विचार ॥ सा० ॥ ४ ॥ विधिपदनी वक्तव्यता रेहां, नांखी अदृष्ट सरूप ॥ सा० ॥ धर्मा धर्म पदार्थनो रेहां, कथक अदृष्ट अनूप ॥ सा० ॥ ५ ॥ स्वर्ग मुक्ति गति साधना रेहां, हेतु प्रथमपद वाच्य ॥ सा० ॥ नरकादिक गति कर्षणें रेहां, बीजो हेतु अवा च्य ॥ सा० ॥ ६ ॥ कारण जुगपदनो कह्यो रेहां, एकज पद पर्याय ॥ सा० ॥ नावि प्रमुख अनेक डे रेहां, ते हना वाचक प्राय ॥ सा० ॥ ७ ॥ परिपाको रस ते दीये रेहां, चिंतित होये अकयत्न ॥ सा० ॥ शुन्न अशुन्ना दिक नावथी रेहां, द्ये परिणत फल सन्न ॥ सा० ॥ ८ ॥ अवश्यपणाथी तेहनी रेहां, शक्ति कही बलवंत ॥ सा० ॥ पूरवपक्ष विचारतो रेहां, हुइ निज वश तेह तंत ॥ सा० ॥ ए ॥ विषय कषायें वशें पड्या रेहां, ते न लहे तस व्यक्ति ॥ सा० ॥ न्यायें अशुन्न विन्नावनी रेहां, चाखे रस परिपक्ति ॥ सा० ॥ १० ॥ जाणो उ वेखे आपथी रेहां, सहज प्रत्यें परतीर ॥ सा० ॥ अ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हो अहो जननी मूढता रेहां, पीवे विष तजी खीर ॥ सा० ॥ ११ ॥ आज लगें नवि उलख्यो रेहां, निर्मल सहज स्वजाव ॥ सा० ॥ जूली जमी जवमां घणुं रेहां, जिम जलनिधिमां नाव ॥ सा० ॥ १२ ॥ दाव नहिं चूकुं हवे रेहां, करवा निज उचितार्थ ॥ सा० ॥ जीनी परम संवेगमां रेहां, धारी इम श्लोकार्थ ॥ सा० ॥ १३ ॥ महबल पण तव ऊजग्यो रेहां, जवथी विषय विमुक्त ॥ सा० ॥ परिणति संयम सारनी रेहां, हुइ बिहुंने अजिमुक्त ॥ सा० ॥ १४ ॥ विद्या शीखे शैशवें रेहां, यौवन साधे जोग ॥ सा० ॥ वृद्ध पणे व्रत आदरे रेहां, अंते अणसण योग ॥ सा० ॥ ॥ १५ ॥ नीति पुराणें एहवुं रेहां, जांख्युं नृप कर्त्तव्य ॥ सा० ॥ महबल मन धारी इश्युं रेहां, सजग हुउ मन जव्य ॥ सा० ॥ १६ ॥ पुत्र सहसबलनें ठवे रेहां, निजपाटें धरी प्रेम ॥ सा० ॥ सागरतिलकें थापीउ रेहां, पहेलो शतबल जेम ॥ सा० ॥ १७ ॥ मलया साथें उछवें रेहां, आवे सुगुरु समीप ॥ सा० ॥ पंच महाव्रत उच्चरयां रेहां, विधिपूर्वक अवनीप ॥ सा० ॥ ॥ १८ ॥ ढाल हूइ एकत्रीशमी रेहां, चोथे खंडे अदो

ष ॥ सा० ॥ कांति कहे सुणतां हुवे रेहां, अध्यातम रस पोष ॥ सा० ॥ १ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ डुविहा शिक्षा पालतां, बिहुं जण तप जप लीन ॥ कहे विहार महीतलें, थया सुगुरु आधीन ॥ १ ॥ गुरु आदेशें बिहुं जणां, जइ नंदननें पास ॥ वारे व्यसनथकी सदा, श्रीजिनधर्म प्रकाश ॥ २ ॥ आप कृतारथ मानता, बे बांधव नृप पूत ॥ मांहो मांहि सुशीखथी, थया नेह संजुत्त ॥ ३ ॥ बिहुंनी श्रीजिन धर्मथी, जेदी साते धात ॥ बीजानें पण शीखवे, मारग ते अवदात ॥ ४ ॥ राजरुषि महबल हवे, वहेतो व्रत असिधार ॥ आगमविद गीतार्थमां, हुउ शिरोमणि सार ॥ ५ ॥ एकाकी विचरण जणी, मागी गुरु आदेश ॥ कुरकी संबल महामुनि, विचरे देशविदेश ॥ ६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ रमतां फाटो घाघरो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपशमधर मुनि सेहरो रे, सुरगिरि थिर परें चित्त रे राजे ॥ सौम्यें रे जेह आगें पूरण चंड्मा रे लाजे ॥ १ ॥ सर्व सहे वसुधा समो रे, अप्रतिहत वायुनें रे तोलें ॥ कूजे रे परिसहथी जेहवो केसरी अमोलें ॥ २ ॥ आलंबन ईहे नहीं रे, गगननें निरपे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ह्र रे आपें॥ दीपे रे रवि झींपे ताजा तेजने प्रतापें
॥ ३ ॥ व्रतनो जार उपाडवा रे, समरथ शकटें जेह
वो रे धोरी॥ जाजे रे रागादिकना गढ सिंधुरा बल फो
री ॥ ४ ॥ पंकज पत्र तणी परें रे, रहे निर्लेप सदेव
रे रूडो ॥ दरियो रे गांजीयें जेहनें आगलें न ऊंडो
॥ ५ ॥ अंजन लेश धरे नहिं रे, निर्मल जेहवो शंख
रे छाजे ॥ आवे रे उपसर्गें सूरिम आदरी रे गाजे
॥ ६ ॥ विहरंतो मुनि एकलो रे, सांज समय एक दि
सनें रे टांणे ॥ आव्यो रे पुर सागरतिलकें उद्याणे
॥ ७ ॥ शतबल सुत ऋषि रायनो रे, राज करे तिहां
राजवी रे शूरो ॥ वारे खड्ग धारें अरिनें न्यायमां रे
पूरो॥ ८ ॥ ते ऋषि निरखी उलखी रे, हर्ष जर्यो
वनपाल रे दोडी ॥ आव्यो रे नूपतिने प्रणमी वीन
वे कर जोडी ॥ ए ॥ देव महाबल साधुजी रे, आज
जनक तुम पुण्यथी रे आव्या ॥ वनमां रे एकाकी सं
यम योगमां रे जाव्या ॥ १० ॥ शतबल नृपति सुणी
इश्युं रे, हरषवशें रोमांचशुं रे व्यापे ॥ प्रीतें रे वनपा
लकनें मणिजूषणां त्यां आपे ॥ ११ ॥ अवनीपति चिं
ते इश्युं रे, आज हुउं छे असूर रे माटे ॥ काले रे वां
दीशुं युक्तें ऋद्धिनें रे थाटें॥ १२ ॥ धन्य धरा हुई मा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हरे रे, पावन ए पुर लोक रे वारू ॥ दीधो रे जे पु एयें जनकें आइने दीदारु ॥ १३ ॥ एम कही पद पा डुका रे, मूकीनें नरनाथ रे वंदे ॥ त्यांहि रे अति नक्तें रातो पापनें निकंदे ॥ १४ ॥ तात चरण युग नेटिनो रे, लोजी ते निशि डुःखथी रे काढें ॥ प्रगट्यो रे हवे प्रगट्यो दिणयर दीपियो प्रगाढें ॥ १५ ॥ ढाल हुई बत्रीशमी रे, चोथे खंमें एह रे चोखी ॥ कांतें रे शुन्न शांतें नांखी रंगमां रस पोखी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती हवे ते समे, जनपद पुर नटकंत॥ दैवयोगथी डुरकणी, तिण पुर आवी रहंत ॥ १ ॥ तेहिज दिन संध्या समे, काननमां गई काम ॥ दृष्टि पड्यो महबल मुनि, रह्यो काउस्सग्ग ताम ॥ २ ॥ निरखी रूमें उंलखी, हुई महा नय नीती ॥ तेहिज ए सुत शूरनो, महबल मुनि अवनीत ॥ ३ ॥ मूलथकी ए माहरां, जाणे सकल चरित्त ॥ करशे प्रगट इहां कदे, तो माहारे कुण मित्त ॥ ४ ॥ तेह नणी विरचुं इहां, तेहवो कोई उपाय ॥ जेहथी को जाणे नहिं, मुज कुचरित्त पलाय ॥ ५ ॥ करुं उपेक्षा किम हवे, अनरथ चांपुं पाय ॥ नहिं मुज जीवत अन्यथा, वली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

इण पुर न वसाय ॥ ६ ॥ दुष्ट चरित्रा एहवुं, धारी मन मां पाप ॥ कारज अवसर परखती, जई बेठी घर आप ॥ ढाल तेत्रीशमी ॥ वीर वखाणी राणी चेलणाजी ॥ एदेशी ॥

सांज विहाणी पमी रातमीजी, व्यापिउं घोर अंधार ॥ तग तग्या गगनमां तारकाजी, लाग्या फिरण निशिचार ॥ सां० ॥ १ ॥ एकरूपें थया विश्वनाजी, जूजुआ वस्तु समुदाय ॥ आक्रम्या श्याम अलिकुलसमेजी, तमगुणें आप उल पाय ॥ सां० ॥ २ ॥ खेलता सुररमणी रसेंजी, जेह मधुपान रसलीन ॥ व्यसनथी तेह अलि बांधियाजी, कमल कारा घरें दीन ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ लोक निज निज घर विश्रमेजी, वली मव्या मार्ग संचार ॥ तेह समे निसरी गेहथीजी, रहस्य पणे तेह जिम जार ॥ सां० ॥ ४ ॥ अगनी धुखंती ग्रही हाथमांजी, आवी जिहां मुनिवर तेह ॥ मूर्त्तिधर धर्म ज्यों थिर रह्योजी, काउस्सग्गें जलकंते देह ॥ सां० ॥ ॥ ५ ॥ पोलिये द्वार पुरनां जड्यांजी, संत व्यवहार विधिमाण ॥ जाणे निज नेत्र मव्यां पुरेंजी, जाति मुनि कष्ट मन जाण ॥ सां० ॥ ६ ॥ लोकसंचार नहीं बाहिरेंजी, निरखीयो शून्य वन जाग ॥ दुष्ट कनका लही आपणोजी, साधवा कार्यनो लाग ॥ सां० ॥ ७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

काष्ट अंगारनें कारणेजी, किणहीकें थापिया आण॥ गतदिनें सीममां सहजथीजी, सामटा ते मल्या टांण ॥ सां० ॥ ८ ॥ तेह काठें करी पापिणीजी, आवरे साधुनें तेम॥ चिहुं दिसें निरखतां साधुनुंजी, अंग दीसे नहीं जेम ॥ सां० ॥ ए ॥ विंटंतां साधुने काठशुंजी, आणी हत्या महा व्याप ॥ चउगइ दुख्क संसारनेंजी, विंटीयो तेणीयें आप ॥ सां० ॥ १० ॥ पूर्व जव वैरथी तेणीयेंजी, निर्दयायें महाघोर ॥ अगनि सलगावीयो चिहुं दिसेंजी, पवनथी जागीयो जोर ॥ सां० ॥ ११ ॥ मुनिवरें काउस्सग्ग ध्यानमांजी, देखी उपसर्ग मरणांत ॥ कीधी आराधना चित्तथीजी, तेम रह्यो योग रस शांत ॥ सां० ॥ १२ ॥ खंरू चोथे खरी खांतशुंजी, एह तेत्रीशमी ढाल ॥ कांतिविजय कहे हवे इहांजी, साधशे साधु जयमाल ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उद्दीप्यो वनदव समो, ज्वालजिह्व चउफेर ॥ मुनिवरनें तन पाखतें, खातो घूम विघेर॥ १ ॥ कोमल तनु रुधिरायनुं, बाले वन्हि तपंत॥ मूलथकी कनका तणां, जाणे सुक्क १ दहंत॥ २ ॥विकटोपद्रव पीमता, सहेतो श्री रुषिबोध॥ जागो निज आतम प्रत्यें, देवा इम प्रतिबोध॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ढालचोत्रीशमी॥रागबंगाल॥राजा नहीं नमे ॥ए देशी
॥ रे जीउ क्रोधकूं दूरें मारि, शांतिदशासौं आप कौं तार॥ ज्ञानी आतमा ॥ हांरे तेरे घरका रूप संजार ॥ मेरे आतमा॥ हांरे रागादिककी संग निवार ॥ तेरे नातमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तरन उपाव, मत जूले तुं अबको दाव ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ काल अनादिका जटक्या अनंत, अजुअ न पाया जवजल अंत ॥ ज्ञा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल, तो फिरि न मिले औसा मेल ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ चढिके आठे जाव जिहाज, तर ले जवसागर बिनु पाज॥ ज्ञा०॥ जावमहा प्रवहनकौं फेर, ध्यान पवनसौं तैसें प्रेर ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वजावें करिकें करार, जैसें पावैं जवतटपार ॥ ज्ञा० ॥ दुःख पाय तैं नरक निगोद, करत बसेरा कर्मकी गोद ॥ ज्ञा०॥ ४॥ ता दुःख आगें या दुःख कौंन, घटमें बिचारिकें देखत कौंन ॥ ॥ ज्ञा० ॥ या महिलाको कबुअ न दोष, मत कर इन उपर तुं रोष ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काटन आयु, आइ जई हे साची सहायु ॥ ज्ञा० ॥ बाहिर तनकुं जारेंगी आगि, अज्यंतर तन नहीं इन लागि ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सगोल, अ

खय खजाना तेरा अमोल ॥ ज्ञा० ॥ मैत्री मेरे सब सौं होय, जीउ सकलसौं बैर न कोय ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ आप खमाउं दोषरतीउ, मोसौं खमहो सिगरे जीउ ॥ ज्ञा० ॥ ऐसे धरे मुनि निर्मल ध्यान, रूपकावलीकै चढी सोपान ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ घाति करमकौं प्रजारे निदान, उपज्यो तबही केवलज्ञान ॥ ज्ञा० ॥ शुक्क ध्यानानलको प्रयोग, अंतर बाहिर अगनि संयोग ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ए ॥ तिनसौं जव उपग्राही कर्म्म, जस्म करैं ।ठनुमैं तजी जर्म्म ॥ ज्ञा० ॥ अंतगरू केवली व्है के साध, पायो मुगतिपद जयो है अबाध ॥ ज्ञा० ॥ ॥ १० ॥ जनम जरा मृतके दुःख टार, जवकौं जलां जलि दे निरधार ॥ ज्ञा० ॥ चोथे खंमें राग बंगाल, चोतीसमी पूरी जइ ढाल ॥ ज्ञा० ॥ कांतिविजय कहे देखहुं खेल, समतासौं जयो कर्म उखेल ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्वलित प्राय हुताशनें, हुउ जिव्हारें तेथ ॥ नाठी कनका पापिणी, बीहिती केथ अनेथ ॥ १ ॥ अहो दुष्टता नारिनी, विधि विरची विष सींची ॥ मारे अलवें अपरनें, तस रस सरवस खींचि ॥ २ ॥ मति जेहनी पग हेठले, दाबी रहे सदाय ॥ अनरथ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

करतां तेह्नें, वासें कुण समजाय ॥ ३ ॥ एक साधु ह्णतां हुवे, जीव अनंत विनाश ॥ नांख्यो आगम मां इस्यो, तिह्नंकरें प्रकाश ॥ ४ ॥ भृष्ट हुई शुन्न कर्मथी, दुष्ट पाप रस लीन ॥ कष्ट सहेशे नवनवां, अष्ट कर्मवश दीन ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥ विनता विहसी रे वीनवे ॥ ए देशी ॥

॥ रयणि विहाणी प्रह थयो, दिणयर कीध प्रकाशो रे ॥ बहु परिवारें परिवस्यो, अवनीपति सविलासो रे ॥ १ ॥ आवे मुनिनें रे वांदवा, शतबल नक्ति विलुड्ढो रे ॥ जनक वदन जोवा नणी, उत्कंठित मन सूधो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अति उत्सव आडंबरें, काननमा जव आयो रे ॥ निरखे तेहवे रे साधुनो, देह नस्म मय ठयो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ असमंजस जोयाथकी, महीपति दुःखमांहें नड्यो रे ॥ नक्तें प्रीतें रे नोलव्यो, ध्रसके धरा तल पड्यो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ मोहें नाख्यो रे राजवी, मूर्च्छाणो मन ऊणो रे ॥ सजग हुउं उपचारथी, पामे तव दुःख दूणो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ परिकर दुःखियो रे नृपदुःखें, रोवे विलवे अनेको रे, शोकनृपतिनें रे आंसुयें, करता पट अनिषेको रे ॥ ॥ आ० ॥ ६ ॥ नूपति पजणे रे पापीये, किणे ए की

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

धुं अकाजो रे ॥ निर्ग्रंथ निःकारण वैरीयें, उपसर्ग्यों मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ नवभ्रमणथी रे दुर्मति, बीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हियडुं रे तेहनुं, वज्र कठिन सुविशेषो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ चरण तुमा रां रे तातजी, पामीनें पण दुहिलां रे ॥ प्रणमी न शक्यो रे पापथी, आवीनें हुं पहिलां रे ॥ आ० ॥ ए ॥ मीट तुमारी रे रस भरी, न पडी माहारे अंगें रे ॥ वचन तुमरां रे नवि सुण्यां, बेशी क्षण एक रंगें रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ माहरा, विलय गया मनमांहिं रे ॥ कामें नाव्या रे कारिमा, जिम कूआनी छांहिं रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात तणो आ गम सुणी, हरख हुउं मुज जेतो रे ॥ इण वेला मुज पापथी, थयो दुःखरूपी तेतो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ अशरण कीधो रे साहिबा, आजथकी हुं अनाथो रे ॥ सुतवत्सल जातां मुन्हें, लीधो कांइ न साथो रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ निरखी न शकुं रे तेहवी, एह अवस्था रे दीसे रे ॥ पुण्य किहांथी माहरे, दर्शन न लह्युं दी सें रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ शोकें पूर्यो रे जनकनें, विलपे इम नृपालो रे ॥ कांतें चोथा रे खंडनी, कही पणती समी ढालो रे ॥ आ० ॥ १५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ दोहा ॥

॥ पूरित लोचन आंसुयें, खेदाकुल नृपाल ॥ निजन टनें इम आदिसे, करि भृकुटीना चाल ॥ १ ॥ पग अनु सारें निरखता, करो शीघ्र परगट्ट ॥ जिम पापीनें पाप फल, आवे उदय विकट्ट ॥ २ ॥ आप हृदय गाणे ठव्यो, बीजो दुष्ट परिणाम ॥ दुःप्रधर्ष रस सींचतां, ऊग्युं क टक विराम ॥ ३ ॥ मुनि हिंसा शाखाशतें, पाम्यो अति विस्तार ॥ आशंकादिक कुसुमशुं, वाध्यो चिहुं पख नार ॥ ४ ॥ प्राणनाश फल तेहनुं, अनिमुख हूउं स मक्ष ॥ हिंसकनें फलशे हवे, पोष्यो पातक वृक्ष ॥ ५ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥ लाछलदे मात मलार ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी ततकाल, ऊठ्या नर मछराल, आज हो दुठा रे जण रूठा जाणे कालनाजी ॥ १ ॥ जोतां इत उत नूम, मांके सबली धूम, आज हो धारे रे अ नुसारे पगनें तेहनेंजी ॥ २ ॥ पुर बाहिर एक देश, पेखत कुंज निवेश, आज हो दीठी रे त्रियं धीठी पेठी खाम मांजी ॥ ३ ॥ नीचे मुख नयनीत, श्याम वसन अविनीत, आज हो बेठी रे ऊपरांठी काया गोपवीजी ॥ ४ ॥ सुहमें साही केश, काढी बाहिर देश, आज हो आणी रे कलुषाणी सोंपी रायनेंजी ॥ ५ ॥ नूपें तामी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जोर, पाखंती मुख सोर, आज हो पूछे रे कहे शुं छे कारण वैरनुंजी ॥ ६ ॥ हणिउं तें महाजाग, मुनिवरनें इणे जाग, आज हो लाखें रे तुज पाखें न करे को इ स्युंजी ॥ ७ ॥ हणी घणी जूपाल, सींची तरुनी झाल, आज हो जांखे रे सवि दाखे करणी आपणीजी ॥ ८ ॥ रूठो जूप तिवार, नानाविध देई मार, आज हो मारी रे तेह नारी सारी पातकेंजी ॥ए॥ आप चरितने यो ग, पामी फलनो जोग, आज हो छूठी रे डुःख पूठी न रकें ऊपनीजी ॥ १० ॥ नरक तणा संताप, सहेशे अ ति डुःख आप, आज हो वक्रें रे जवचक्रें जमशे बापमी जी ॥ ११ ॥ चोथे खंमें रसाल, छत्रीशमी एह ढाल ॥ आज हो कांतें रे जलि जांतें जांखी शास्त्रथीजी ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जूमिपाल निज ताननो, शोक अतीव करंत ॥ समजाव्यो सचिवादिकें, पण कृण नवि छांमंत ॥ १ ॥ जाणी तेहवुं तातंनुं, डुस्सह मरण विराम ॥ पमियो शोकसमुडमां, जूप सहसबल ताम ॥ २ ॥ शतबल दशशतबल बिन्हें, जनक शोक चित्त धारि ॥ लखमण राम तणी परें, तपे अरतिनें जार ॥ ३ ॥ कृष्णदेव बलिजडनें, द्वारावतीनें दाह ॥ शोक हुउ पितृनो जि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

स्यो, तिस्यो हुतं इहां प्रांह ॥ ४ ॥ अरति हेतु गजरा जनें, जिसी अजाखी खोह ॥ साहसधरनें पण तिस्यो, विषम स्वजननो मोह ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातत्रीशमी ॥ हुं दासी राम तुमारी ॥ ए देशी॥

॥ एहवें निर्मल चरित्त पवित्ता, सत्य शील संतोष विचित्ता ॥ पालंती व्रत एक चित्ता, साध्वी मलया तप जुत्ता हो राज, महासती धुर शोहे ॥ श्रुतधर्में जवि पडि बोहे हो राज ॥ म० ॥ १ ॥ एकादश अंगनी जाण, पामी शुन्न अवधिनाण ॥ जावंती थिर अप्पाण, संयम तव योग विहाण हो राज ॥ म० ॥ २ ॥ संदेह जविकना टाले, कुमतादिकना मद गाले ॥ एक अवसर अवधें जाले, महाबल निर्वाण निहाले हो राज ॥ म० ॥ ३ ॥ निज नंदन प्रतिबोधेवा, जवताप डुरंत हरेवा ॥ आवी तिण पुरि ततखेवा, होवे साधुनें धर्मनी टेवा हो राज॥म०॥४॥ साधुयोग वसतीनें ठामें, पशु पंडग रहित सुधामें ॥ साध्वीनें गण अनिरामें, विंटी रही आइ सुकामें हो राज ॥ म० ५॥ शतबल नृपति अति जक्तें, वांदे श्रावकनी युक्तें ॥ समजावा साध्वी युगतें, जिणथी पामे वली मुक्तें हो राज ॥म०॥६॥ राजेंद्र पिता तुज शूरो, उपशम संवेगें पूरो ॥ सत्य साहस शौच सनूरो, पाम्यो शिवसुखमह

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मूरो हो राज ॥ म० ॥ ७ ॥ उपसर्ग्यो कनकवतीयें, न कस्युं मन कलुष व्रतीयें ॥ नवसागर तरतां तीयें, अवलंबन दीधुं त्रीयें हो राज ॥म० ॥ ८ ॥ धन पुत्र कलत्र गृह नार, जस कारण तजीयें सार ॥ तप लोच क्रिया व्यवहार, साधीजें विविध प्रकार हो राज ॥ म० ॥ ए॥ सेवे जे गिरि वन घांटा, सहियें कटुक वचनना कांटा ॥ उपसर्ग उरगनी आंटा, खमीयें थई धीरजना सांटा हो राज॥म० ॥ १० ॥ दुर्लन ते पद तातें लाधुं, नीगमीयुं नवनय बाधुं ॥ हवे कां मन शोकें दाधुं, करे कांई वपुष ए आधुं हो राज ॥ म० ॥ ११ ॥ कृतकृत्य हुउ मुनिराय, तिणें हर्ष तणो ए उपाय ॥ ते माटे अहो महाराय, कांई शोक करे इंणे ठाय हो राज ॥ म० ॥ १२ ॥ पोताno वाल्हो कोई, निधि पामे सहसा सोई ॥ तिहां शोक के हर्षज होई,कहे हियके विचारी जोई हो राज॥म०॥ ॥ १३ ॥ विश्वानल पीका तातें, सांसही होशे एह वातें ॥ चिंता म करे तिलमातें, जय अरथी खिति सहे गातें हो राज ॥ म० ॥ १४ ॥ साधक नर विद्या साधे, पहेलुं तिहां दुःख सहे बाधें ॥ निज कारज सिद्धि आराधे, तव आयत फल सुख लाधे हो राज ॥ म० ॥ १५ ॥ पहेलुं दुःख सघले दीसे, पाछें सुख संनव हीसे ॥ इं

म जाणीने विश्वावीशें, मन नाखे शोकमां कीसें हो राज ॥ म० ॥ १६ ॥ जेट्या नहीं चरण पितान, मत कर इम नरि चिंताना ॥ पहेली परे हवणां दाना, तुज नक्तिना गुण नहीं गाना हो राज ॥ म०॥ १७ ॥ शोक मूकीने हवे नूप, संसारनो नावि सरूप ॥ दृढ धारी विवेक अनूप, तज दूरें ए नवकूप हो राज ॥ म० ॥ १८ ॥ डुःख सागर ए संसार, संगम सुपना अनुकार ॥ लखमी जिम वीज संचार, जीवित बुंद बुंद अणुहार हो राज ॥म०॥ १ए ॥ तुज सरिखा जो इम करशे, शोकाकुल हियडुं नरशे॥ बापडलो किहां संचरशे, धीरज थानक विण फिरशे हो राज ॥म०॥ २० ॥ इम धर्म तणो उपदेश, निसुणी प्रतिबुज्यो नरेश ॥ ठंडे सवि शोक कलेश, संवेग लह्यो सुविशेष हो राज ॥ म० ॥ २१ ॥ प्रणमे नित्य नित्य नूपाल, महत्तरिका चरण त्रिकाल ॥सारुत्री शमी ए कही ढाल, चोथेखंडे कांति रसालहोराज ॥ म०

॥ दोहा ॥

॥ महत्तरिकाना मुखथकी, सुणे धर्म उपदेश ॥ करे महोन्नति धर्मनी, धर्म धुरीण नरेश ॥ १ ॥ शतबल मुनि निर्वृतिथलें, मांड्यो नवल प्रासाद ॥ तात तणी प्रतिमा तिहां, थापे तजी विषवाद ॥ २ ॥

उत्सव रंग वधामणां, वर्त्तावे निशिदीश ॥ ल्ये लाहो लखमी तणो, अवसरविद अवनीश ॥ ३ ॥ सकल नगर लोकां प्रत्यें, करी महा उपगार ॥ नृपनें पूछी महत्तरा, तिहांथी करे विहार ॥ ४ ॥ पुहवीठाण महापुरें, लघु सुत बोधण काम ॥ समवसरी मलया महा, सती नमी नृप ताम ॥ ५ ॥

॥ ढाल आम्त्रीशमी ॥ जांजरीया मुनिवर
धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवीपति साधवी मुखेजी, निसुणी रे श्रीश्रुत धर्म ॥ सपरिवार जिन धर्ममांजी, थिर थयो प्रीठीनें मर्म ॥ १ ॥ गुणवंतो रे महीपति, जावी सहसबल नाम ॥ ए आंकणी ॥ दिन केताइक अंतरेंजी, शतबल नामें नरिंद ॥ महत्तरा वंदन जणीजी, थयो उतकंठ अमंद ॥ गु० ॥ २ ॥ लघु बांधवना प्रेमथीजी, आकरष्यो उमगंत ॥ आवे तिहां परिवारशुं जी, बे बांधव त्यां मिलंत ॥ गु० ॥ ३ ॥ बे बांधव दिन प्रत्यें जइजी, वांदी महत्तरा पाय ॥ सुणे धरमनी देशनाजी, मन थिरजावें ठहराय ॥ गु० ॥ ४ ॥ समकितधारी व्रतधरुजी, पूजितदेव त्रिकाल ॥ दानें पोषे पात्रनेंजी, जीवदया प्रतिपाल ॥ गु० ॥ ५ ॥ य

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थाशक्ति तप आचरेजी, साहमीनी करे नक्ति ॥ दान शाला मांके घणीजी, वारे अधर्म प्रसक्ति ॥ गु० ॥ ६ ॥ मारि शब्द जनपद थकीजी, काढे दूर तदंत ॥ वीतराग आणा धरेजी, धारे चित्त विकसंत ॥ गु० ॥ ७ ॥ गाम नगर पुर पाटणेजी, थापे जिनना प्रासाद ॥ जिनन्नवनें जिन बिंबनेंजी, पूजे अति आल्हाद ॥ गु० ॥ ॥ ८ ॥ अठाइ महोत्सव करेजी, रथ यात्रा विरचंत ॥ तीर्थ यात्रा आदें घणांजी, सुकृत अनेक करंत ॥ गु० ॥ ए ॥ धर्मन्नारना धुरंधरुजी, मांहो मांहि सनेह ॥ शासननी उन्नति वधीजी, करता रहे तिहां बेह ॥ गु० ॥ १० ॥ नृप अनुजाइ पुरतणाजी, लोक सकल सेवे धर्म ॥ लोकोत्तर धर्में तिहांजी, ढांक्यो लौकिक नर्म ॥ गु० ॥ ११ ॥ शुद्ध धर्ममां थापिनेंजी, पुरजनने समजाई ॥ आपूबी बिहुं पुत्रनेंजी, अनेथि महत्तरा जाई ॥ गु० ॥ १२ ॥ घणा वरस लगें पालीयुंजी, चारित्त निरतीचार ॥ तपोयोगध्यानें करीजी, लघु कस्या डुरितना न्नार ॥ गु० ॥ १३ ॥ अंतें अणसण आदरेजी, श्रीमती मलया नाम ॥ आराधीनें कपनीजी, अच्युत कल्पें ताम ॥ गु० ॥ १४ ॥ बावीश सागर देवीनुंजी, पालीने निरुपम आय ॥ महाविदेहें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमेंजी, ऊपजशे शुनगाय ॥ गु० ॥ १५ ॥ बोधिनाव लहेशे तिहांजी, सुगुरु संयोग लहेवि ॥ शुद्ध चारित्र तिहां पभिवजीजी, लेहेशे मुगति सुखहेवि ॥गु० ॥१६॥ ढाल कही अमत्रीशमीजी, चोथा खंमनी एह ॥ कांति कहे मलया इहांजी, पामी नवतणो छेह ॥ गु० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक श्लोक चिंतनथकी, पामी मलया पार ॥ ते माटे संसारमां, ज्ञान सकल शिरदार ॥ १ ॥ सुप रीक्षक सुविवेकीयें, करवो ज्ञानान्यास ॥ डुहिलम संकट नजूरे, ज्ञान निधान प्रकाश ॥ २ ॥ संकटमां पण पालीयुं, जिम मलयायें शिल ॥ तिम वली बीजो पालशे, ते लेहेशे शिवलील ॥ ३ ॥ महाबलें जिम सांसह्यो, माहा विषम उपसर्ग ॥ तिम वली जे सहेशे खरो, लेहेशे ते अपवर्ग ॥ ४ ॥ जिम प्रथम व्रत आदर्यां, दंपतीयें दृढ चित्त ॥ आदरवां तिम नावथी, बीजे पण सुपवित्त ॥ ५ ॥ कीधी मुनि आशातना, दंपतीयें धुर जेम ॥ डुरक हेतु जाणी तिसी, करशो मां कोई तेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ओगणचालीशमी ॥ दीठो दीठो रे वामाजीको नंदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥ नावे नावे रे नवि करजो ज्ञान अन्यास ॥ ज्ञानें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संकट कोमि पलाये, ज्ञानें कुमति न बाधे ॥ ज्ञानें सुजश लहे जगमांहीं, ज्ञानें शिवपद साधे रे ॥ नवि क रजो ज्ञा० ॥ १ ॥ यद्यपि नाणादिक समुदित इहां, मुगति हेतु जिन नांख्युं ॥ तोपण योगक्षेमनुं हेतु, पहेलुं ज्ञानज दाख्युं रे ॥ न० ॥ २ ॥ पासतणा निर्वाण दिवसथी, वरिस गयां शत एक ॥ तेहवे हुई सत्य शील सलूणी, मलया सुंदरी सुविवेक रे ॥ न० ॥ ३ ॥ श्लोक एकनो नाव विचारी, तेह लही नवपार ॥ ते कारण शिवसाधन साचुं, ज्ञानज एक उदार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ शंख नरेश्वर आगें पहेलुं, श्री केशीगणधारें ॥ मलय चरित नांख्युं विस्तरथी, ज्ञानतणे अधिकारें रे ॥ न० ॥ ५ ॥ तेह तणो रस सर्वस्व लेई, श्रीजय तिलक सूरींदें ॥ नूतन मलयचरित्त संक्षेपें, नांख्युं अति आनंदें रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ज्ञान रत्नव्याख्या इति नामें, त्रण अधिकारें प्रसिद्धो ॥ तेहमांहि इम संबंध सूधो, धुर अधिकारें लीधो रे ॥ न० ॥ ७ ॥ श्रीतपगण गणनायक गिरुआ, श्रीविजयप्रन्न सूरि ॥ गुणवंता गौतम गुरु तोलें, महीमां महिमा सनूर रे ॥ न० ॥ ८ ॥ तास शिष्य कोविदकुल मंमन, प्रेमविजय बुध राया ॥ कांतिविजय तस शिष्यें इणि परें, विध विध

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नाव बनाया रे ॥ ज० ॥ ए ॥ संवत सर मुनि मुनि विधु (१७७५) वर्षें, रही पाटण चोमास ॥ श्रीविजयक्षमा सूरीश्वर राज्यें, गाई मलया उल्लास रे ॥ ज० ॥ १० ॥ अखा त्रीज तणे शुभ दिवसें, रास हुउं सुप्रमाण ॥ बालकऋीमानी परें माहरी, हांसी न करशो सुजाण रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ श्रीजयतिलक वचनथी जे में, न्यूनाधिक कांई भांख्युं ॥ संघ सकलनी साखें तेहनुं, मिछाडुक्कम दाख्युं रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ उत्तमना गुण परिचय करतां, होय समकितनो शोध ॥ उत्तर लाभ अधिक वली पामे, श्रोता जे प्रतिबोध रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ पाटण नगरनो संघ विवेकी, तस आग्रहथी सीधी ॥ चिहुं खंमें थई सर्व संख्यायें, ढाल एकाणुं कीधी रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ जे भवि भावें भणशे गुणशे, लेहेशे ते जयमाल ॥ उंगुणचालीशमी कही कांतें, चोथा खंमनी ढाल रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ सर्व श्लोक संख्या ॥ ३४७७ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनाम्नि श्रीमलयसुंदरीचरित्रेपंमितकांतिविजयगणिविरचितेप्राकृतप्रबंधे शीलावदातपूर्वभववर्णनोनामाचतुर्थखंमःपरिसमाप्तः॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org